जय कीर्ति-गाथा

जयाचार्य निर्वाण शताब्दी के उपलक्ष्य में

जय कीर्ति-गाथा

प्रवाचक

युगप्रधान आचार्यश्री तुलसी

प्रधान सम्पादक

युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ

जैन विश्व भारती

लाडनूं (राजस्थान)

सम्पादक

मुनि नवरत्नमल

साध्वी चन्दनबाला

साध्वी कल्पलता

प्रकाशकीय

युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ द्वारा प्रस्तुत और जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित 'प्रज्ञापुरुष जयाचार्य' की शृखला यह दूसरा प्रकाशन है जो श्रीमज्जयाचार्य के व्यक्तित्व और कर्तृत्व विषय पर विशद प्रामाणिक प्रकाश डालता है।

श्रीमज्जयाचार्य का जन्म-नाम जीतमलजी था। आपने अपनी कृतियो मे अपना उपनाम 'जय' रक्खा, इसलिए आप जयाचार्य के नाम से प्रख्यात हुए। आप श्वेताम्बर तेरापथ धर्मसघ के चतुर्थ आचार्य थे।

श्रीमज्जयाचार्य की जन्मभूमि मारवाड का रोयट ग्राम था। आपका जन्म सं० १८६० की आश्विन शुक्ला १४ की रात्रि वेला मे हुआ था। आप ओसवाल थे। गोत्र से गोलछा थे। आपके पिताश्री का नाम आईदानजी गोलछा और मातुश्री का नाम कालूजी था। आप तीन भाई थे। दो वडे भाइयो के नाम सरूपचन्दजी तथा भीमराजजी थे।

आपके ज्येष्ठ भ्राता सरूपचन्दजी ने स० १८६९ की पौष शुक्ला ९ के दिन साधु-जीवन ग्रहण किया। आपने उसी वर्ष माघ कृष्णा ७ के दिन प्रव्रज्या ग्रहण की। दूसरे वडे भाई भीमराजजी की दीक्षा आपके वाद फाल्गुन कृष्णा ११ के दिन सम्पन्न हुई और उसी दिन माताजी ने भी दीक्षा ग्रहण की। इस तरह स० १८६९ पौप शुक्ला ८ एव फाल्गुन कृष्णा १२ की पौने दो माह की अवधि मे माता सहित तीनो भाई द्वितीय आचार्यश्री भारमलजी के शासन-काल मे दीक्षित हुए।

साधु-जीवन ग्रहण करते समय जयाचार्य नौ वर्ष के थे। दीक्षा के वाद आप शिक्षा के लिए मुनि हेमराजजी को सौंपे गए। वे ही आपके विद्या-गुरु रहे। आगे जाकर आप एक महान् आध्यात्मिक योगी, विश्रुत इतिहास-सृजक, विचक्षण साहित्य-स्रष्टा एव सहज प्रतिभा-सम्पन्न कवि सिद्ध हुए।

स० १९०८ माघ कृष्णा १४ के दिन तृतीय आचार्य ऋपिराय का छोटी रावलिया गाव मे देहान्त हो गया। आप चतुर्थ आचार्य हुए। आचार्य ऋपिराय के देवलोक होने का समाचार माघ शुक्ला ८ के दिन वीदासर पहुचा, जहा युवाचार्य जीतमलजी विराज रहे थे। स० १९०८ माघ सुदी १५ प्रात काल पुष्य नक्षत्र के समय आप पदासीन हुए और वडे हर्ष के साथ महोत्सव मनाया गया। आचार्य ऋपिराय ने ६७ साधुओ एव १४३ साध्वियो की धरोहर छोडी।

आपने श्वेताम्वर तेरापथ धर्मसघ के चतुर्थ आचार्य पद को ३० वर्षो तक सुशोभित किया। आपका निर्वाण स० १९३८ की भाद्र कृष्णा १२ के दिन जयपुर मे हुआ। स० २०३८ भाद्र कृष्णा ११ के दिन आपको निर्वाण प्राप्त हुए १०० वर्प पूरे हुए हैं।

श्रीमज्जयाचार्य ने अपने जीवन-काल मे लगभग साढ़े तीन लाख पद्य-परिमाण साहित्य की

रचना की। जैन वाङ्मय के पचम अग 'भगवई' का आपका राजस्थानी पद्यानुवाद 'भगवती जोड' राजस्थानी साहित्य का सबसे बडा ग्रन्थ माना जाता है। यह ५०१ विविध रागिनियो मे गेय गीतिकाओ मे निवद्ध है।

श्रीमज्जयाचार्य की साहित्यिक रुचि वहुविध थी। तेरापथ धर्मसघ के सस्थापक आदि आचार्य श्रीमद् भिक्षु के वाद आपकी साहित्य साधना वेजोड है। आप महान् तत्त्वज्ञानी थे। जन्म-जात कुशल इतिहास-लेखक थे। सजीव सस्मरणात्मक जीवन-चरित्र लिखने की आपकी प्रवीणता अनोखी थी। आप वडे कुशल सघ-व्यवस्थापक और दूरदर्शी आचार्य थे। आपकी कृतियों का सौष्ठव, गाभीर्य एव सगीतमयता—ये सव मनोमुग्धकारी हैं।

प्रस्तुत सग्रह-ग्रथ मे श्रीमज्जयाचार्य के जीवन-वृतात और सस्मरणो से सबधित ९ कृतिया समाविष्ट है, अतः ग्रंथ का नाम 'जय कीर्ति-गाथा' रखा गया है।

ग्रथ मे समाविष्ट नौ कृतियो का सक्षिप्त परिचय इस प्रकार है :

१. जय-सुजश

इस विशालकाय काव्य-ग्रथ के प्रणेता उक्त धर्म-सघ के पंचम आचार्य मघवागणि है। आपने लगभग ११ वर्ष की अवस्था मे युवाचार्य जय से मुनि-जीवन ग्रहण किया था। आपका जन्म स० १८१७ की चैत्र शुक्ला एकादशी के दिन वीदासर (थली, राजस्थान) मे हुआ था। आपने लाडनू (मारवाड, राजस्थान) मे स० १९०८ मार्गशीर्ष कृष्णा द्वादशी के दिन मुनि-जीवन अगीकार किया। आप चूरू (थली, राजस्थान) मे १९२० आश्विन कृष्णा त्रयोदशी के दिन भावी आचार्य के रूप मे प्रतिष्ठित किये गये। आप स० १९१८ भाद्रपद शुक्ला द्वितीया के दिन जयपुर मे आचार्य-पद पर आसीन हुए। आपका स्वर्गवास सरदारशहर मे स० १९४९ चैत्र कृष्णा पचमी के दिन हुआ। आपने अपने आचार्यत्व मे ग्यारह चातुर्मास किये।

प्रस्तुत कृति विपय की दृष्टि से चार खडो मे विभक्त है। इसमे विविध रागिनियो मे ग्रथित ६७ ढालें (गेय रचनाए) हैं, जिनके दोहो की सख्या २९७ और गाथाओ की सख्या १४४२ होती है। कृति सं० १९४३ मे उदयपुर (मेवाड) मे सम्पूर्ण कही गयी है।

मघवागणि ने ३० चातुर्मास श्री जयाचार्य के साथ उनकी सेवा मे व्यतीत किये थे, अतः जयाचार्य के जीवन-वृत्तो एव व्यक्तित्व की यह सस्मरणात्मक कृति अत्यन्त प्रामाणिक और वहु-मूल्य है। इसकी भापा राजस्थानी है।

श्री मघवागणि वहुश्रुत विद्वान थे। सस्कृत का आपका पाण्डित्य अत्यन्त प्रसिद्ध था। आप प्रतिभा सम्पन्न सहज कवि थे।

इस ग्रथ के परिशिष्ट मे छठे आचार्य माणकगणि द्वारा राजस्थानी मे रचित 'मघवा सुजश' काव्य-कृति मे आपकी विस्तृत जीवन-गाथा प्रस्तुत है।

२. जय छोग सुजश विलास

श्री जयाचार्य के समसामयिक मुनि छोगजी रचित इस पद्य-कृति मे ९ ढालें है। दोहे, सोरठे और गाथाओ की कुल संख्या २९६ है। यह कृति सं० १९२८ चैत्र शुक्ला १, शनिवार के दिन लाडनू मे सम्पूर्ण की गयी थी।

इस कृति मे जयाचार्य की स० १९२७ की लाडनूं से जयपुर और जयपुर से पुन लाडनू तक की यात्रा और जयपुर प्रवास का आखो देखा हू-व-हू वर्णन है।

३. लघु जय छोग सुजश विलास

इसमें राजस्थानी मे रचित ४ ढालें है। दोहो और गाथाओ की कुल संख्या १५६ है। यह कृति उपर्युक्त द्वितीय कृति का सार-संक्षेप है।

४. मघवागणि रचित द्वय ढालात्मक लघु जय-सुजश

इसमे कुल मिलाकर ७१ पद है। पहली ढाल स० १९३८ की भाद्र शुक्ला तृतीया के दिन और दूसरी उस वर्ष की कार्तिक पूर्णिमा के दिन जयपुर मे रचित है।

५. मघवा गणि रचित संस्कृत श्लोकात्मक जय-सुजश

इसमे अनुष्टुप, शिखरिणी तथा हरिणी छद मे रचित १९ स्तुतिपरक श्लोक है।

६. मुनि कर्मचन्दजी रचित सप्त ढालात्मक जय सुजश

यह विविध समय मे रचित ७ ढालो का सग्रह है। इसकी कुल पद्य सख्या ८५ है।

मुनि कर्मचन्दजी देवगढ (मेवाड़, राजस्थान) के निवासी थे। जाति से ओसवाल पोखरणा थे। आपने सं० १८७६ मे मुनि हेमराजजी से वाल्यावस्था मे मुनि-जीवन ग्रहण किया। आप अविवाहित थे।

आप प्रतिभाशाली कवि थे। वडे तपस्वी थे। आपकी अनेक साहित्यिक कृतिया आज भी उपलब्ध है। आपका स्वर्गवास स० १९२६ की ज्येष्ठ शुक्ला सप्तमी के दिन वीदासर (थली, राजस्थान) मे हुआ था।

७. जय स्थुई

इसके रचयिता पूर्वोक्त मुनि कर्मचन्दजी ही है। यह प्राकृत भापा मे रचित १६ गाथाओ की श्री जयाचार्य की स्तुति है।

८. मुनि गुलहजारीजी रचित पच्चीस पद्यात्मक ढाल

मुनि गुलहजारीजी नेगुरा (हरियाणा) के निवासी थे। जाति से अग्रवाल थे। उन्होंने सं० १८८८ मृगसर शुक्ला दशमी के दिन श्री जयाचार्य (उस समय मुनि जीतमलजी) से दीक्षा ग्रहण की थी। आपकी दीक्षा उनके हाथ की पहली साधु दीक्षा थी। उन्होने १४ वर्षो तक एकातर तप किया। स० १९३४ आसोज शुक्ला १२ के दिन उन्होने सथारापूर्वक समाधि-मरण प्राप्त किया।

९. मुनि जीवोजी कृत द्वय ढालात्मक जय-सुजश

मुनि जीवोजी की दीक्षा श्री जयाचार्य के जेष्ठतम भ्राता मुनि सरूपचंदजी के हाथ से स० १८७७ पोष कृष्णा ६ के दिन सम्पन्न हुई थी। उस समय आपकी अवस्था मात्र १३ वर्ष की थी। अविवाहित थे। आप गगापुर के निवासी थे। वडे वैरागी। आप साहित्यिक प्रतिभा-सम्पन्न मूर्धन्य कवि थे। आपकी विविध विषयो की अनेक काव्य-कृतिया उपलब्ध हैं। आपने दस हजार पद्यो की रचना की। आप कलाकार और शिल्पी सत थे। आपका स्वर्गवास सं० १९२८ मे हुआ

था। आपने कठोर आयम्बिल तप की तपस्या आरभ की और ४४ की श्रेणी तक पहुंचने मे सफल हुए।

इस तरह यह ग्रथ श्री जयाचार्य के समय मे विद्यमान सतो की लेखनी से प्रसूत काव्य-कृतियो का एक सुन्दर सम्पुट है।

२८ जनवरी, १९८४

श्रीचन्द रामपुरिया

भूमिका

तेरापथ के निरभ्र क्षितिज पर एक सूर्य का उदय हुआ, जिसकी सहस्र-सहस्र रश्मियो से नवीन आभा ने जन्म लिया, जिसके अनन्य तेज ने अधकार की परते भेद विश्व को नया आलोक दिया।

वे सूर्य थे—इतिहास की विरल विभूति जयाचार्य। जयाचार्य अप्रतिम अध्यात्म-योगी थे। उनका उदात्त व्यक्तित्व और कुशल कर्तृत्व अनूठा था। वे तेरापथ के चतुर्थ अनुशास्ता थे। आप प्रवर्तक आचार्य भिक्षु के सफल भाष्यकार थे। आचार्य भिक्षु ने जो रेखाए दी, जयाचार्य ने उन्हे स्थायित्व दिया, विस्तार दिया और सामयिक परिवेश दिया।

जयाचार्य ने सघ को दीर्घायु वनाने के लिए अनेक व्यवस्थाए दी। सविभाग के सूत्र को मौलिक आधार दिया। स्वतंत्र चिन्तन के झरोखे खुले रखते हुए अनुशासन की मूल्यवत्ता पर वल दिया। अनुशासन के साथ आत्मानुशासन को विकसित करने के लिए अनेक प्रयोग दिए।

जयाचार्य विलक्षण प्रज्ञा के धारक थे। उनकी प्रज्ञा से प्रसूत हुए विशाल साहित्य मे आगम ग्रन्थो का पद्यानुवाद, गद्यानुवाद, सस्मरण, जीवनिया, कथाकोश, आख्यान, भक्तिकाव्य, ध्यान आदि अनेक विषय गुम्फित है। लगभग साढे तीन लाख पद्य-प्रमाण साहित्य का प्रणयन कर जयाचार्य ने साहित्य जगत् मे एक नया कीर्तिमान प्रस्तुत किया है।

जयाचार्य महान् वैज्ञानिक थे। उन्होने हर तत्त्व को विज्ञान की कसौटी पर कसा। मात्र उपदेश नही, प्रयोग और प्रशिक्षण पर वल दिया। आपने धर्म-सघ को प्रयोगशाला का रूप दिया और कहा—

१. संघ के प्रत्येक सदस्य के लिए सेवा की अनिवार्यता है।
२. स्वतत्र चिन्तन और व्यवस्था मे सह-अस्तित्व की अनिवार्यता है।
३. देशकाल के अनुसार परिवर्तन अपेक्षित है।
४. सामयिक व्यवस्थाए वार्तमानिक है। उन्हे शाश्वत सत्य का रूप नही दिया जा सकता।
५. विनम्रता, ग्रहणशीलता और कृतज्ञता के मूल्यो की प्रतिष्ठा अपेक्षित है। आदि-आदि।

जयाचार्य अनुशासनप्रिय व्यक्ति थे। वे स्वय जीवनभर अनुशासित रहे और पूरे धर्म-संघ को अनुशासन पर अवस्थित किया।

ऐसे विराट् व्यक्तित्व की पावन सन्निधि मे रहने वाले उन्ही के प्रिय शिष्य मघवा गणी ने अपने गुरु के जीवत प्रतिविम्बो को आकार देने का सकल्प किया। मघवा गणी जयाचार्य के विनम्र

उत्तराधिकारी थे। उन्होंने जो कुछ देखा, सुना, समझा, उसे सहेजा और साहित्य का आकार दिया, जिसकी निष्पत्ति है—'जय कीर्ति-गाथा'।

'जय कीर्ति-गाथा' ग्रन्थ जयाचार्य के विराट् व्यक्तित्व की जीवन झांकी प्रस्तुत करता है। प्रस्तुत ग्रन्थ मे चार खण्ड है और ६७ ढालें है। ग्रन्थ की भाषा राजस्थानी है। कहीं-कहीं गुजराती और सस्कृत भाषा भी संमिश्रित परिलक्षित होती है। लेखक ने जयाचार्य के जन्म से लेकर निर्वाण तक विविध प्रसग बहुत कमनीयता से प्रस्तुत किये है।

ग्रन्थ की लेखन शैली विवरण-प्रधान है। इतिहास की दृष्टि से इसका अपना अतिरिक्त महत्त्व है। प्रत्येक घटना प्रसग को स्थान, समय और व्यक्ति तक के नाम से प्रस्तुत कर इतिहास को जीवत बनाने का अच्छा उपक्रम है।

प्रस्तुत ग्रन्थ विस्तार और सक्षेप के मध्यम मार्ग से गुजरा है। कही-कही घटना प्रसग बहुत सक्षेप मे वर्णित है; लेकिन वास्तविकता को समोसा गया हो, ऐसा महसूस नही होता।

भाषा के बहाव मे भावाभिव्यक्ति यथार्थता के तटो से बधकर प्रवहमान है। इस कृति में कवयिता ने अपने आराध्य का आखो देखा हाल प्रस्तुत करने की चेष्टा की है। जयाचार्य बचपन से विरक्त थे। उनका रोम-रोम अध्यात्म से अनुप्राणित था। साधु जीवन के प्रति आपका शैशव अवस्था से ही आकर्षण था। जिसका साक्ष्य है यह पद्य—

> पला मे घाल वाटकी ताय, बोले काका रे घर आय।
> देखो साधुपणो म्हे आदर्‌यों, मुझ सूझतो अन्न वहिराय ॥१।२।६
> इम कोड करे अधिकाय, वारु वालपणे चित व्रत धर्‌यो।

एक वार जयाचार्य भयकर व्याधि मे ग्रसित हुए। तव आपकी अवस्था वहुत छोटी थी। माता कल्लूजी निराश हो चुकी थीं। जीवन के आसार टूटते नजर आ रहे थे।

उन्हीं दिनो आपकी ससार पक्षीय भुआजी जो कुछ वर्ष पूर्व दीक्षित हो चुकी थी, रोयट पहुंची। उन्होंने स्थिति को देखते हुए कहा—

> तुम करो वरजण रा त्यागो, तव त्याग किया घर रागो।
> ए अभिग्रह किया तुरत ही जानो, कारण मिटियो खावण लाग्या धानो ॥

अगर यह वालक ठीक होकर दीक्षा के लिए तैयार हो जाए तो तुम्हे इन्कार नही करना है।

माता कल्लूजी ने इसे स्वीकार किया। वालक जीत उसी क्षण से स्वस्थ होने लगे। यह एक आश्चर्य था। लेकिन सत्य था, इसे नकारा नही जा सकता।

इस प्रकार प्रथम खण्ड मे जयाचार्य के जन्म, दीक्षा और अग्रणी पद तक का विवेचन वहुत रोचकता और वेधकता से प्रस्तुत किया है।

दूसरे खण्ड मे अग्रणी अवस्था मे विविध स्थानो मे हुए चातुर्मासो का विवरण है। कहा-कहां कव चातुर्मास हुए, कितने व्यक्तियो ने उपदेश से प्रभावित होकर वोधि प्राप्त की, कितनो ने दीक्षा स्वीकार की—आदि-आदि प्रस्तुति के साथ युवाचार्यपद प्राप्ति तक का पूरा विवेचन है।

तृतीय खण्ड मे युवाचार्य अवस्था मे किये गए विविध चातुर्मासो का व्यवस्थित विश्लेषण है।

चतुर्थ खण्ड मे आचार्यपद प्राप्ति के वाद सघीय आन्तरिक और वाह्य अनेक प्रसंग वर्णित

३. श्रमण पत्र साथे भलो जी, श्री जय दिली सैहर।
धर्मोपदेश वहु विध दीयु जी, करी भविक पर मैहर॥
४. वहु लोक आवण लागा कने, पुजेरा ना अवधार।
वलि वावीस टोला तणा, सुणै वखाण वाणी सुविचार॥
५. दान दयादिक ऊपरे, समय न्याय श्रीकार।
भिन्न भिन्न कर दर्शाय नै, तारचा वहु नर नार॥
६ वावीस टोला मे श्रावक वडो, खडेराय तिण स्थान।
तिण सू चरचा वहु थई, ते धुर गुणठाणे कहै वे ध्यान॥
७ ते धर्मध्यान न कहै धुर गुणे, तिण ऊपर दिया जाव विशेष।
पूरण, तामली वालतपसी तणै, कह्री अनित्य चितवणा जिनेश॥
८ अनित्य चितवणा भेद धर्मध्यान नो, कह्यो 'सूत्र उववाइ माय'[1]।
तिण सू धर्मध्यान ए धुर गुणे, देखो सूत्र नैं न्याय॥
९ जद लोक माहोमा इम भणै, खडेराय तणा दोय ध्यान।
अने तीन ध्यान जय मुनि तणां, सूत्र माहि नही किण स्थान॥
१० न्याय थकी वेहु कहै, कुण साचा कुण और।
यथातथ्य समझ पडै नही, इम करवा लागा झोड॥
११ तसु प्रगटपणै समझायवा, जयवर स्वाम जिवार।
देखायु पाठ 'भगोती'[2] तणो, असोच्चा नौ अधिकार॥
१२ तप करता वालतपसी तणै, अन्यदा किवारे जेह।
शुभ परिणाम विशुद्ध लेश्या करी, कर्म तणै क्षयोपशमेह॥
१३ इहा, अपोह करता थका, इहा सद्धर्म चेष्टा जान।
अपोह अन्य पक्ष रहीत ही, अर्थ माहि कह्यु धर्मध्यान॥
१४ मार्गण गवेपणां करता थका, तसु ऊपनो विभंग अज्ञान।
तिण सू ए छै धुर गुणे, ए प्रगट देखो धर्मध्यान॥
१५ जद घणा लोक धर्मध्यान ना, अक्षर देख उदार।
जाण्या साचा जय महा मुनि, जीत फतै हुइ जिह वार॥
१६ विस्तार चरचा नो वहु, इहा कह्यु अल्प अधिकार।
घणा लोक समझ्या तदा, श्रद्धा ग्रही तत सार॥
१७ लघु कृष्ण नैं पिण तदा, कर्मग्रथ ने टीका माहि।
वहु विरुद्ध वात वतावता, तसु आसता ऊतरी ताहि॥

---

१. उववाइ सूत्र ४३
२. भगवती श० ९ उ० ३१ सूत्र ३३

१८. तव वृत्ति तणा कर्त्ता भणी, परख लिया जिहवार।
हिये वेठी आसता सूत्र नी, पको थयु समझ श्रीकार॥
१९ करवा लागो सामायिक भणी, पछै आयो मन वैराग।
दीक्षा नैं त्यारी थयो, हाडमीजा रंगी धर्मराग॥
२०. ए संसार मांहि पिण दीपतो, वे गुमासता आप प्रसिद्ध।
इक पुत्र नें पुत्र-वहु पर हरी, वलि छांडी वहु रिद्ध॥
२१ वहु खप कर नैं पुत्र नी, आज्ञा लेइ कृष्णचंद।
मृगशिर विद एकम दिने, धर मन में आनंद॥
२२. गाजा वाजा सूं दिल्ली थकी, एक कोश उनमान।
पाहड़ी तिहा दीक्षा देई, एक रात्रि रह्या तिह स्थान॥
२३. ए अष्टादशमी ढाल मे, कह्यु धर्मचरचा अधिकार।
वहु जन नैं समझाय नैं, कियो दिली थी विहार॥

ढाल १९

दोहा

१. मुनि छः संगे विहार करि, मृगशिर विद पख माय।
तेरस दिन जयपुर मझे, आया जय मुनिराय॥
२. रात्रि अठारै त्यां रही, देश मेवाड़ आय।
सैहर गोगुदे स्वाम ना, वलि रावलिया माय॥
३. दर्शण करि हर्षित हुवा, दिल्ली नो 'अवदात'।[1]
जिम उपगार कियो जिका, कही यथारथ वात॥
४. सुण आनंद लहि कह्यो, ऋषिराय वचन अभिराम।
हिव जांणो गुजरात में, जव अर्ज करी जय स्वाम॥
५ हेम तणा दर्शण किया, वर्ष आसरै दोय।
थया हिव लागै दिन अधिक, ते पिण खवर न कोय॥
६. तिण सू जो आज्ञा हुवै, तो मारवाड मे जाय।
हेम तणा दर्शण करी, सामल होउं झट आय॥
७. तुरत आज्ञा दीधी तदा, तिहां थी करी विहार।
'षट् रात्रि वासे आविया, सिरियारी सुखकार'[2]॥

---

१. पवित्र
२ जय मुनि गोगुंदा मे चले, रास्ते में केवल छह रात ठहरकर सातवें दिन सिरियारी पहुंचे।

८. *तिहा हेम तणी सेवा करी, दश दिवस आसरै चित्त धरी।
चित्त धरी सेवा करी पाछा, देश मेवाड पधारिया।
काकरोली मे मुखाजी तव, कहै वयण सुखकारिया।
पच रात्रि आप जो इहा रहो तो, हू सजम लेसू सही।
जद जय कहै पच रात्रि नी तो, हिवडा थिरचा मुझ नही॥

९. इम कही रात्रि इक त्यां रही, श्रीजी दुवारे आया जय सही।
सही आया तव सुखाजी ना, हुता जेठ जेठाणी तिहा।
भाया नै समझाय ने जय, रात्रि एक रहि नै जिहा।
विच एक रात्रि रही ओढण, खमणोर आया गुणनिला।
तिहा सुखाजी नै वलि त्यारा, जेठ जेठाणी भला॥

१०. त्या आया नाथद्वारे ना भाया वलि, एक रात्रि रह्या त्या रगरली।
रंगरली त्या सुखाजी नै, चारित्र रत्न दे ऊमही।
वृद्ध चंदणाजी प्रते सूपी, गोगुदे आया सही।
तिहा सरूप शशी प्रते स्वामी, ऋपिराय पुस्तक भोलाय ने।
दश ठाणे गुजरात कानी, विहार कियो थो शुभ मने॥

११. तिहा सरूपचदजी स्वाम ना, दर्शण करी जय शुभ मना।
शुभ मना जय रात्रि इक रही, थया दोय भाया साथे जिहा।
छः मुनिवर संग विहार करी नै, झारोल मे आया तिहा।
जीवो मुनि नै जवान स्वामी, हुता त्या कने उमही।
रामसुख मुनि कह्यु हू पिण, तुझ सगे आवू सही॥

१२ हिवे सप्त ठाणे जय महामुणी, गुर्जर देश नी दिशि चाल्या गुणी।
गुणी मुनि अति गहन अटवी, विहु पास मग डूगर घणा।
'उत्तुग अति'[1], फुन भील तस्कर, स्वापद[2] शव्द विहामणा[3]।
पिण साहसिक मन लघै मार्ग, सग वे श्रावक सेवा करै।
वेचावडी थइ ईडर आया, पछै अमनगर आया तरै॥

१३. हिवे मोती आदि पंच मुनिवर भणी, कह्यु थे ता धीरे-धीरे आइजो गुणी।
गुणी थे भलाइ धीरे आवो, हू तो आगल जावसू।
इक कोदरजी नै साथे लेइ, गुरु संगे सुख पावसू।

---

१. वहुत ऊचे।
२ हिसक जानवर।
३. डरावना।
*लय—जकड़ी नी...

इम कही दांती होयनै झट, अमदावाद आया तिहां।
विहु ठाणै स्वामीनारायण नी, जागा में ऊतर्‍या जिहां।।
१४. लोक बोल्या अठासूं आज ही, थारे गुरु विहार कीधो सही।
सही कीधो विहार तुझ गुरु, सुण एक रात्रि तिहां रही।
बीजे दिन 'सानंद' में गुरु, दर्शण कर सुख पावही।
तिहां श्रद्धा में हुती अबू बाई, ते समझाए पारख पुरुषोतमे।
तिहां स्वामीजी संग रात्रि त्रिहुं रही, हिव विचरन्त मुनिपति अनुक्रमे।।
१५. सैंहर लींबडी में आया तिहां, पुरुषोतम ना समझाया जिहां।
जिहां समझाया हुंता श्रावक, तेरे इण श्रद्धा तणा।
दश रात्रि रही उपगार करी, हिव वढवाण आया शुभ मना।
शंकर ऋषि दरियापुरी त्यां, करी रहिवा नी हठ अधिक ही।
जद पूज कहै कच्छ जावणो मुझ, सो 'रिण'[1] में जल आया जवायैं नहीं।।
१६. इम कही रात्रि इक त्यां रही, गणी धागध्रे आया सही।
सही आया उतरी रिण, कच्छ वागड़ में वेलें आय नैं।
तिहां हुती टीकम तणी श्रद्धा, घणा लोका नैं समझाय नैं।
दश रात्रि रही अंजार थइ नैं, मदरे आया वही।
तिहां जेठो भाइ दीपतो अति, टीकम री श्रद्धा सही।
१७. तिणा भाव भक्ति कीधी घणी, तिहां तीन रात्रि रह्या महामुनि।
महामुनि ऋषिराय नैं जय, आया मांडवी बंदर मझे।
त्यां पुरुषोत्तम ना समझाविया बहु, श्रावक अति सेवा सझे।
तिहां चरचा वारता हुइ बहु विध, अन्य श्रद्धा ना पिण बहु जना।
अति दीपता गणी कनें आवैं, सुणैं व्याख्यानादि शुभ मना।।
१८. हठ तो चौमासा री बहु करी, पिण गणी वीनती चित्त नहीं धरी।
नहीं धरी चित्त चउमास मन, मारवाड़ करवा तणो।
षट् रात्रि रही त्यां देख, उदधि समीप नगर सुहामणो।
वलि जलधि नी पिण देख रचना, नालिकेरादिक वन वलि।
तिहां थकी हिव विहार कर नैं, ली देश मरुधर दिशि भली।।
१९. बेला मू थोडी छेटी रही जाम है, तव आडेसर आया ताम है।
ताम आडेसर स्वाम आया, जब बेला ना भाया भणी।
खबर पड्या करी आय नै झट, अर्ज चौमासा तणी।
जद कर्मचन्द नैं सत मोती, वलि किरानचन्द जी नैं तदा।
ए तीनूं नैं चउमास बेले, ठहराय नै गणपति मुदा।।

---
१. नमक पैदा होने वाला निर्जन स्थल।

२०. अने ईसर आदि मुनि मतिवत हे, रह्या गुजरात मे त्रिहु सत हे।
सत त्रिहु त्या, 'ग्राम वीरम'[1], कियो चउमास सुहामणो।
वहु लोक ना तिहां थोक समझ्या, हुवो उपगार तो ज्या अति घणो।
हिवै पूज तो पाली पधारया, चउमाह नेउए त्या कियो।
ऋषि जीत ने चौमास नेउवे, वालोतरे भोलावियो ।।
२१ कच्छ सू जय शीतलवाणे होय ह्वै करी, गुढे नगर अने थइ सणदरी।
सणदरी थइ जसोल आया, पछै चौमास वालोतरे ठाव हे।
वर्ष मे आसरै सप्त सत कोश, विचरया तिण प्रस्ताव हे।
उगणीसमी ढाले दिली सू ले, जैपुर मेवाड मे जइ करी।
गुजरात कच्छ मे उपगार करिजय, चौमास 'म्हेवे'[2] कियो चित्त धरी ।।

ढाल २०

दोहा

१. संवत् अठार नेउवे, वालोतरे चौमास।
पंच मुनि सू प्रगट जश, थयो अति धर्म उजास ।।
२. घणा लोक समज्या तिहा, थयो अधिक उपगार।
चरचा पिण वहुली थइ, कहु सक्षेप विचार ।।

*धिन धिन जीत ऋषिश्वर जग में, धिन धिन ज्ञान रसालो रे।
हेतु युक्ति दृष्टात देइ वहु, तारया जीव सुविशालो रे ।।ध्रुपद।।

३. जन भर्म मेटण नै जय स्वामी, श्री पूज रै उपासरे जायो रे।
असजती नै दिया एकत पाप नु, पाठ प्रगट देखायो रे ।।
४ कुल गण सघ अने साधर्मी, साधु भणी हिज कहियै।
सूत्र उववाइ नु पाठ[3] वतायो, इण मे श्रावक नै नहिं लहियै ।।
५. कह्यु आचारग[4] मे धर्म माहरो छे, आज्ञा माहिज जानो।
वहु जन नै ए पाठ वतायी, कराइ गुरु धारणा सुविधानो ।।

---

१. वीरमग्राम।
२. वालोतरे का धडा (पचायत) म्हेवा मे था अत यहा म्हेवा कहा गया है।
***लय—एक दिवस रुक्मण०...**
३. उववाई सूत्र ४१
४. आचाराग श्रु० १ अ० ६ उ० २ सू० ४८

६. पछै चौमास ऊतरचा जय मुनिवर, सखर फलवधी सैहर पधारचा।
एक मास रह्या उपदेश देइ नै, बहु जन ने तिहा तारचा ।।
७ पछै विहार करी कांठा री कोर आया, गणि दर्शण करी सुख पायो।
श्री ऋपिराय महाराज कह्यो तव, लूणीया मालीराम कने ताह्यां ।।
८. चंदपन्नत्ती है जयपुर मे, कोइ ल्यावे तो लेवा सिखायो।
जद कोदर कह्य छठो जय पास, म्हेलो मुझ तो हूं ल्यावू तिहा जायो।
९. गणपति तुरत दीधी तव आज्ञा, तपस्वी कोदर जैपुर कानी।
विहार कियो चित्त हर्ष लह्य अति, मन चिंतित काम थयु जानी ।।
१०. हिव स्वामीजी साथ आया जय पाली, पछै पाली सू श्री ऋपिरायो।
देश मेवाड पधार नै जय ने, चोमास फलोधी भोलायो ।।
११ हिव चैत शुक्ल एकम सू एकतर, करवा लागा गुणकारो।
पछै विहार करी जोधपुर मे पधारचा, सतरे रात्रि रह्या सुविचारो ।।
१२. हिव विचरत विचरत काणणे आया, आखा तीज दिने उपवासो।
अठ कोश ना हाल्या आथण नी वेला, हेम[1] दर्शण कियो हुलासो ।।
१३ पछै 'सुवर्णराजजी' स्वामी सगे, जशोल बालोतरे जाई।
तिहा थी पचपदरे वाघावास थई, हिव आया स्वाम आगोलाई ।।
१४ तिहा पच रात्रि रही ढूढिया सेती, चरचा करी जन तारचा।
त्या गुरु धारणा कराइ वहु जन नै, विहार करि नै फलोधी पधारचा ।।
१५ वर्ष एकाणुए पट् मुनिवर सू, कियो फलोधी चौमास उदारो।
वहु स्त्री नर समज्या करी गुरु धारणा, त्या थी क्षेत्र थयो सुखकारो ।।
१६ जग जशधारी पर-उपगारी, मिथ्या-तिमर विडारी।
'घणा क्षेत्र सर किया मुनि जय'[2], भव्य बोधि व्रत दातारी ।।
१७ तिहा वीकानेर ना कागद आया, 'फतैचदजी'[3] रो चउमासो।
देशणोक छै सो चौमास उत्तरचा, इहा आवतो दीसै विमासो ।।
१८ तिण सू अठै आप पधारजो वेगा, जद चौमास ऊतरचा जाणो।
विहार करी जय मुनिवर वेगा, आया वीकानेर गुणखाणो ।।
१९ तिहां फत्तैचदजी लोका रै मन, घालतो थो तव सका।
जय हेतु युक्ति समय न्याय वतावी, पाछा कीधा तेह नि.संका ।।

---

१. हेमराजजी।
२. जय मुनि ने अनेक गाव नगरो मे अपना प्रभुत्व जमा लिया।
३. सघ मे वहिर्भूत।

२०. तिहा फतैचंद संग 'उदैचंद'[1] थो, ते तसु छोडी नै तिह्वारो।
श्री जय पास आवी ली दीक्षा, जद पाम्या जन चिमत्कारो॥
२१. ए वीसमी ढाल मांहि जय स्वामी, चौमास वालोतरे कीधो।
वलि फलवधी चौमास करी नै, वीकाणै आय जश लीधो॥

ढाल २१

दोहा

१ हिवै फतैचंदजी विहार करि, नागोर आयो ताम।
जद तिण 'केड़'[2] नागोर मे, आया जय गुण धाम॥
२ पनर रात्रि नै आसरै, रह्या नागोर मे ताम।
तसु विहार कियो जाण नै, आया भदाणे स्वाम॥
३. ते ऊतरचो थो जिण पोल मे, तिण पोल मे ऊभा आय।
तसु पूछयो पहिला तुम्हे, सात दोष गण माय॥
४ काढचा था फुन सुण्या पछै, आसरै दोप वत्तीस।
अवै वताओ अधिक फुन, सो किम ए वात कहीस॥
५ जव ते वोल्यो जय भणी, ज्यू देखतो जावू जास।
ज्यू ऊतारतो जावू तसु, कोइ वात पूछी फुन तास॥
६. जद तिण कह्यु मुझ भाव नहीं, पछै दूजे दिन तेह।
'देह' आयो तसु केड ही, आया जीत गुण गेह॥
७ पछै ऊतो 'देह' माहे रह्यो, जय मुनि वुद्धि विशाल।
लाडणू पधारचा वाधवा, पाणी पहिली पाल॥

*सुण सुण रे श्रोता सुखकारी, जय सुजश सुधा रस भारी।
जय सुजश अमृत रस आगे, पट् रस थी श्रेष्ठ ए लागे॥
॥ध्रुपद॥

८ लाडणू सैहर मझार, चद्रभाणजी री तिहवार।
केइ भाया तणै हुती पक्ष, त्या नै सरधता साध सुदक्ष॥

---

१. गण से वहिर्भूत।
२. पीछे
*लय—सुण सुण रे सीख सयाणा ..

९ लालचदजी पाटणी आदि, जिके श्रद्धना था त्या नै माय।
ते भाया नै जय गुण धाम, समझाया विविध पर ताम॥
१० जव त्या अर्ज करी तिह्वारो, अबकै चौमासा री अवधारो।
आप म्हानै वदणा देवो कराय, ते म्है चद्रभाण नै 'छा वोसिराय'[1]॥
११. जब गणी आज्ञा री बात न्यारी रखाय, चौमासा री वंदणा कराई ताय।
तव ते भाया नमी जय पाय, आगला गुरु नै दियो वोसिराय॥
१२ त्या सतगुरु नो सिक्को सिर धरचो ताम, पछै फतेचंद आयो तिण ठाम।
पिण ते पहिली समझ गया लोकनाय, तिण सू 'तिण री टीप्प न लागी काय'[2]॥
१३ पूछचो लालचद पाटणी नै जाइ, आगला गुरु नै श्रद्धो थे काइ।
जद लालचदजी बोल्या वाय, जय श्रद्धे ज्यू सरधां म्है ताय॥
१४. जद तसु आशा तूटी भाया री ताम, दोय रात्रि रही तिण ठाम।
पछै चूरू कानी विहार तिण कीधो, तिण रो वछित काम नही सीधो॥
१५ जय स्वाम सुबुद्धि भडारो, आगूच आय कियो उपगारो।
तिण सू खडी नो जोर नही लागो, वारु वुद्धि उत्पात अथागो॥
१६. पछै जय पिण चूरू कानी सुविचार, तुरत विहार कियो तिह्वार।
तसु चूरू माहि जइ ओलखाय, पाछा आया लाडणु मांय॥
१७ पछै बोरावड मे दर्शण दे ताय, ऋषिराय नी आज्ञा मंगाय।
पट ठाणे लाडणु सुविमास, कियो वाणुए वर्ष चौमास॥
१८. हिवै चौमासो ऊतरचा चित्त धार, बीदासर में आया सुविचार।
तिहा खालड[3] सू जीवोजी आय, मृगशिर छठ कृष्ण तिथ ताय॥
१९. जीवाजी नै देइ संजम भार, बीदासर सू करि नै विहार।
'हरिदुर्ग'[4] माहि मुनि आया, त्यां गणी दर्शण कर सुख पाया॥
२०. बोरावड ताइ गणाधिप साथ सुजान, रह्या उगणीस रात्रि तणै उनमान।
हेम दर्शण री आज्ञा लेइ ताम, विहार कियो जैपुर कानी जाम॥
२१ जयपुर एक मास रही जिहवार, तिहा केइ भायां रे संका थी तिवार।
तसु सका मेट विहार करि ताहि, हरिगढ थइ मेडता माहि॥
२२ तिहा हेम दर्शण करि त्या रै संग, तिहा अठाइस रात्रि रह्या मन रंग।
तिहा थी विहार करी पादु आय, कालू मे हेम दर्शण कर वलि ताय॥

---

१. छोड दे।
२ उनका कोई असर नही हुआ।
३ खालड—सवलपुर (बोरावड के पास)
४ कृष्णगढ

२३ पछै दोय साधा सू खेरवा माहि, स्वामीजी रा दर्शण किया सुखदाई।
इकवीसमी ए ढाल मझारो, कह्य‍ु वाणुए वर्ष तणो उपगारो।।

ढाल २२

दोहा

१. त्या अमीचद जी तिह समै, सात सत सू सोय।
नाथदुवार चौमास करि, तिहा आया अवलोय।।

२. इकतालीस वोला तणी, गुलावजी रै मन माहि।
सका पडी ते वोल सहु, लिख्या पत्न मे ताहि।।

३. तास जाव जय दे करी, सक मेट तिह ठाम।
प्रायच्छित दे तेहनू, लिखत करायो ताम।।

४. तिण मे सत सतिया तणी, जेह उत्तरती वात।
करवा रा जावजीव लग, त्याग कियां विख्यात।।

५. पछै गणाधिप सग ही, आया सिरियारी माय।
चौमास भोलायु जीत नै, वीकाणै ऋपिराय।।

६. सिरियारी सू विहार कर, वीदासर मे आय।
वीकानेर पधारिया, अपाढ सित पख माय।।

*मेरे स्वाम भला

स्वाम भला गुण ज्ञान निला, जसु तप जप क्रिया गुण अधिक झिला।
।।ध्रुपद।।

७ सवत् अठारै त्राणुएवास, श्री जय वीकानेर चौमास।
पट् मुनिवर सगे सुविमास, थयु त्या अधिक सुधर्म उजास।।
तपसी सत भला।

तपसी सत भला गुण सघन निला, सोहै तप जप क्रिया गुण अधिक झिला।
।।ध्रुपद।।

८ तिहा रामसुख तपसी सुप्रसिद्ध, तेसठ दिन तप थोकडो कीध।
तिण मे द्वादश दिन पियो उन्हो जल सार, शेप एकावन दिन चोविहार।।

९. वले कोदरजी तपसी तिहवार, छठ छठ तप करतो इक धार।
करी गोचरी वहु सता नै सुजाण, एकला अशन जल देवै आण।।

*लय—मेरी आस फली...

१०. इस्या व्यावच्चिया मुनि जय सग, ज्यां रै कर्म काटण रो अधिक उमंग।
वलि जय वान सुधा रस धार, सघन जडी सम हिये धर सार।
ज्ञानी संत भला ॥

११ नथमलजी वैद मूहता आद, बहु समझ्या जन धर अह्लाद।
त्या थी क्षेत्र थयो ए तंत, बहु जन जय गुण जश गावंत ॥

१२ हिवै चौमासो उत्तरचा करि नै विहार, थली माहे कियो उपगार।
'खंडी'[1] थली मे रहितो थो ताम, तिण सू ऋषिराय आणा रा स्वाम ॥

१३ थली देश माहि रही ताय, भिन्न भिन्न 'तिण नै'[2] दियो ओलखाय।
तिण अवसर मेवाड़ मझार, श्री जी दुवारे गणी गुणधार ॥

१४. आषाढ मास ऋषिराय विशाल, श्री जय पर शुभ दृष्टि निहाल।
परम विनीत हृद नीत विचार, जाणी गणवच्छल गुणकार ॥

१५ आचार संजम मे कुशल अति जाण, प्रवचन मे अति निपुण पिछाण।
प्रज्ञप्ती जे गण नीं संभाल, करवा में अति निपुण निहाल ॥

१६. वलि 'संग्रह'[3] 'उपग्रह'[4] करवा प्रवीन, फुन चरण करण गुण मे लहलीन।
वलि धीर वीर अति जाण गंभीर, फुन गण प्रतिपाल विमल गुण हीर ॥

१७. इत्यादिक गुण जय मे जाण गणिद, लिखि निज कर अक्खर सुख कंद।
सरुप-शशी नैं सूप्या ताम, ते अक्खर इण विध अभिराम ॥

युवराज पदवी नो पत्र

*गणीश्वर वच प्यारे

वच प्यारे शासण सिणगारे, गणाधिप वच प्यारे ॥ध्रुपदं॥

१८. 'ॐ नमो'[5] सिद्ध सुख करणं, गुरु भिक्खू भारीमाल ताको सरणं।
ऋषि भिक्खू पाट भारीमालं, ऋषिराय पाट गुण - मालं ॥

१९. ऋषि जीतमल्ल गुण - वन्नं, जुवराज पदवी स्थापन्नं।
विनयवंत जावजीव जाणं, चालसी ऋषिराय आज्ञा प्रमाण ॥

---

१. गण मे वहिर्भूत फतैचंदजी

२. फतैचंदजी को

३. वस्त्रादिक अनेक प्रकार ना कार्य करवा ना संग्रह नै विषै कुशल।

४ पाणेसणादिक उपग्रह नै विषै।

५ ॐ नमो सिद्धं भीक्खू गुरु भारीमाल, त्या को सरण, ऋषि भीक्खू पाट भारीमाल, ऋषिराय पाट ऋषि जीतमल जुगराज पदवी स्थापन विनैवंत ऋषराय नी आज्ञा प्रमाणै चालसी जीवे जितरे घणा हरख सू स्व मत थी ए काम कीधो वीजा नो जश इण मे छै नही।

*लय—कलूजी के सुत प्यारे...

२० वहु हरष स्वमति थी ए काम कीधो, वीजा नो जश इण मे नही लीधो।
एहवा अक्षर ऋपिराय गणनाथं, इक लघु पत्र लिखी निज हाथ ।।
२१ मूप्यो सरूपशशी नै स्वामी, कह्यु चौमास ऊतरया हितकामी।
ऋपि जीत मिल्या गुण-गेहो, जद वात प्रगट कराला एहो ।।

२२ *इम कही नै ऋपिराय चौमास, श्रीजीदुवारे कियो सुविमास।
जय मुनि थली सू करि नै विहार, आया आषाढ मे पाली गुणधार।।

२३ ए वावीसमी ढाल उदार, तिण मे त्राणुए वर्ष नु कह्यु अधिकार।
करता मुनिवर अति उपगार, धरता 'गुण-गण'[1] सघन अपार।।

ढाल २३

दोहा

१. पिण ऋपि जीत भणी जदा, दीधो पद जुवराज।
खवर नही ए वात नी, कियो प्रच्छन्न गणी ए काज।।

+मुनिवर सिरमणी सोभताजी, वारू जीत मुनि जयकार।
वर ज्ञान ध्यान गुण रयण ना जी काई, भरिया जसु भडार जी काई।।
।।ध्रुपद।।

२. संवत् अठारै चोराणुए जी काई, पाली सैहर प्रसिद्ध।
पच श्रमण सू जय मुनिजी, चउमासो करि जश लीध जी काई।।
३ तिहा रामसुख तपस्वी तदा जी, कियो अडसठ दिन तप सार।
तिण मे एकादश दिन जल पियोजी, शेष सत्तावन दिन चौविहार।।
४ त्या रो दुक्कर तप अति देखने, अन्य मति स्वमति ताम।
आश्चर्य चित्त पाया घणो, करता अति गुण ग्राम।।
५ विच मे इक वार द्वादश दिन लगे, जल नही पीध जिवार।
द्वेषी श्रावक वावीस टोला तणा, ते पिण आय वेठा तिहवार।।
६ ते कहै हिव पाणी पावो एह नै जी, एहवो तपसी दुक्कर कार।
नही तुझ मत नै मुझ मत विपै, यारा तप नै करा नमस्कार।।

---

१. गुण समूह

***लय—मेरी आश फली .**

+लय—म्हारा सासूजी रे पांच पुत्र कांइ दोय देवर दोय जेठ...

७. इम घणी हठ कीधी तदा, जद तेरम दिन जल पीध।
तिण चौमासे जिन धर्म नो वहु, उद्योत थयो सुप्रसीध ॥
८ तिहा 'वे पूज वावीस टोला तणी'[1], त्या सूं चरचा थइ तिहवार।
तिहा फतै थइ जिन मार्ग नी, छै तिण रो वहु विस्तार ॥
९ हिवै चौमासो ऊतरचा, खेरवे आया स्वाम।
रामसुखजी रो शरीर तप जोग सू, 'कचो'[2] थो तिण सू ताम ॥
१०. तिहा दोय साधा नैं थाप ने, जय तीन ठाणे तिहवार।
फलवधी - वावडी आय नै, वाई सिरदारा नैं जिवार ॥
११ दीक्षा री वात कढाई तदा, साहज्य देई श्रीकार।
पछै खीचन मे आया तिहां, आवै पदवी ना समाचार ॥

१२ *इह समय मुनी युग आवै, समाचार श्रेष्ठ अति ल्यावै ॥

१३ देश मेवाड मे सोभावै, ऋपिराय तिणे प्रस्तावै ॥
१४. पद युवराज तणो सुप्रभावै, कागद मुनि संग म्हेलावै ॥
१५. वलि गणपति इम फुरमावै, ए कागद इण प्रस्तावै ॥
१६ तुझ वांचण आण नही थावै, जय नै सूपी जो शुभ भावै ॥
१७ इम कही वे मुनि नै पठावै, खास रूको खीचन मे ल्यावै ॥
१८. सूप्यो जय नै शुभ भावै, वलि मुख सू समाचार कहावै ॥
१९. गोचरी मे आहार जे आवै, तसु पाती वगसीस करावै ॥
२० करो विना पाती आहार जे भावै, तसु ए अभिप्राय जणावै ॥

२१ †अनै छोटो कागद जय वाचनै, जाण्यो युवराज पद मुझ दीध।
वले वडो कागद गणी हाथ रो, म्हेल्यो श्रमण साथे सुप्रसीध ॥

२२ तिण मे समाचार लिख्या इह विधे, शिष्य जीतमल सू जान।
म्हारी सुखसाता वाचजो, था ऊपर मुझ सुविधान ॥
२३. दिन दिन हेत विशेष घणु घणु, छै जाणसी मन सुप्रसन्न।
पिण ताकीद सू वेगो आवजै, कीजै शरीर का अधिक सुतन्न ॥

---

१ अमरसिंघजी रा टोला रो पूज जीतमलजी अनैं रुघनाथजी रा टोला रो पूज जैतजी त्यां सू चरचा थई।

२ कमजोर

*लय—अलवेली गुजरी

†लय—म्हारा सासूजी रे पांच पुत्र...

२४. थां आयां कामकाज होसी भला, आसी रसायण अधिक विसेख।
कसर नही छै किण ही वात री, थारी म्हारी सला छै एक ॥
२५. वाकी समाचार छै लघु कागद विषै, तिके जाण लीजो मन माय।
पिण अति ही वेगा आवजो, ढील म कीजो काय ॥
२६ सरूप ऊपर म्हारी 'मुरजी'[1] घणी, सती दीपाजी नो जान।
था सू मन राजी छै घणो, या री वदणा लीजो मान ॥
२७ उदैपुर उपगार कियो मोकलोजी, म्हारै सहु जिन मग नो भार।
था ऊपर छै एहवो, लिखि कागद अति श्रीकार ॥
२८. साधा रै साथ म्हेल्यो तिको, ते पिण वाच्यो जय मुनिराय।
पछै विहार करी खीचन थकी, आया लोहावट रै माय ॥
२९ तिहा त्रिण मुनि नै तो जय कह्यो, थे तो धीरे-धीरे आयजो ताम।
पोते विहार कियो वे मुनि थकी, एहवो अभिग्रह कियो तिण ठाम ॥
३० स्वामीजी रा दर्शण हुवै जितै, जिके ग्राम आवै इण माग।
दूजे दिन रही तिण ग्राम मे, च्यारू आहार भोगवण रा त्याग ॥
३१ एहवो अभिग्रह धार नै, जोधपुर थइ पाली आय।
पछै खेरवे वाते होय नै, दायलाणे रात्रि रही ताय ॥
३२. जीलवाडे केलवे इक इक निशा, रही राजनगर करी आहार।
पछै श्रीजीदुवारे इक निशी रही, विहार करि आया सैहर वार ॥
३३ इतरै उदैपुर सू पधारिया, ऋषिराय महाराज मुनिद।
नगर समीप ही जय दर्शण करी, पाया अधिक हर्ष आनद ॥
३४ पछै गणपति संगे आविया, श्रीजीदुवारा माहि विख्यात।
पद युवराज दीधो तिको, प्रसिद्ध करी तिहा वात ॥
३५ ए ढाल भली तेवीसमी, तिण मे पाया पद युवराज।
मुनि दिशावान अति दीपता, ज्या रै मन वछित हुवै काज ॥

कलश

३६ द्वितीय खण्ड सुभड मुनिवर, जीत कीर्व सुहामणी।
वर रीति समय सुन्याय विध विध, वताय नै गुणी जन भणी।
मेवाड मरुधर दिल्ली मंडल, कच्छ गुजरात मालव थली।
वहु देश मे वहु जन भणी, समझाविया जय मन रली ॥

1. कृपा

इति मघवागणिविरचते जय मुजश रसायणे जय मुनिना शृघाटकवध—पदतया यथा-यथा विहार करणेन भव्य जनाना प्रतिवोधिर्दत्ता यथा-यथा चतुर्मासा' कृता. यथा-यथा जिन-मार्गस्योन्नति विधाय भव्याना वैराग्य उत्पाद्य चरित्र रत्न दत्त युवाचार्य पद प्राप्त तद्गुण-वर्णननाम द्वितीय खड समाप्त ।

तृतीय खंड

ढाल २४

दोहा

१. अरिहत सिद्ध साधू भणी, विधि पूर्वक नमस्कार।
त्रिहु नै करी दाखू हिवै, तृतीय खड अधिकार ॥
२. ज्ञान दर्शण सम खड बे, कह्या संक्षेप विचार।
चारित्र सम हिव तृतीय खड, सुणो भविक सुखकार ॥
३. पद युवराज लह्या पछै, विचरचा जिण जिण देश।
किया उद्योत जिम धर्म नू, कहु वात लव लेश ॥
४ 'दिशावान'[१] 'पुन्य पोरसा'[२], ऋषिराय गण-इद।
सुगुरु शिष्य जोडी भली, दीपै जिम रवि चद ॥
५ तिण अवसर मेवाड मे, पुर माहि मुनि पच।
रहितां गुलाव जी रे पडी, मोह उदे मन. खच ॥
६ भीलाडा थी भोपजी, सिघी करी मडाण।
दर्शण कीधा तेहना, करै सेव गुण जाण ॥
७ गुलाव तणी तप जोग सू, महिमा तिहा अत्यंत।
पिण दर्शण मोह उदये दियो, अजोग एक दृष्टत ॥
८. जिम कोइ साहुकार रे, घर मे घाटो हुवै ताम।
ऊपर सू काम चलाव ही, ते चलै किता दिन काम ॥
६ जाव दियो जव भोपजी, घाटो जाणी जेह।
भेलो रहै नित्य तेह नै, स्यू कहिणो कहो तेह ॥

*जोयजो रे मोह कर्म मयमंतो, करत जीवा प्रति 'जेरो'[३] रे।
समकित चरण सुरयण अमोल, गमाय रुलावै घणेरो रे ॥ध्रुपद॥

---

१. भाग्यशाली।
२. सुकृत के पुतले।
*लय—लाल हजारी को जानो
३ परास्त।

१० एह वचन सुण गुलाव तणे, झट मोह उदय तत्र आयो रे।
गण ना अवगुण बोलवा लागो, मन माने ज्यू 'वदं' वायो रे।
११ भाई ईसर ऋषि गलगला थइ नैं, घणु वरज्या रह्या बोलता नामों।
दूजै दिन वलि तिमहिज बोल्या, तब त्या नै छोडी नैं 'ऋषि रामो'[1]
१२ विहार करी नै श्रीजीदुवारे, पूज दर्शण करि सुविचारो।
गुलाव तणा समाचार सुणाया, जद ऋषिराय जीत गुणकारो।।
१३. गणि युवराज सुअतिशयधारी, पर - उपगारी भारी।
'सदेह तिमिर घन पटल'[2] भविक हिये, मेट करत उजियारी।।
१४. आठ श्रमण सग विहार करि नैं, काकरोली गंगापुर होई।
कारोही आया सू बोल घणा तव, गुलाव संकोच्या सुजोई।।
१५. तिहा भोपजी सिघी पूज तणा तव, दर्शण करि कहै वायो।
गुलाव कहे मुझ च्यार वोलां री, संका है मन माह्यो।।
१६ सो हेमराजजी स्वामी पासे, समाचार मंगायल्यो सोई।
ते कहै सो म्हारै कवूल है, जद उत्तर जय दियो जोई।।
१७. थेटका है ए वोल च्यारूंइ, काइ समाचार मगावा यांरो।
पछै वीजे दिन पुर माहि आवता, ऋषि गुलाव कहायो तिवारो।।
१८ श्रमण एक जो आय कहै मुझ, म्हारै स्वामजी री सारी।
मर्याद कवूल है तो म्हे साहमा, पगा आय पडा इहवारी।।
१९ जद जय कह्यो स्वामी जी री माहरै तो, कवूल छै मर्याद सदाई।
हिवे नवेसरू साधु म्हेल नै या नै, समाचार कहावां काई।।
२०. ऋषिराय महाराज नैं कह्यु युवराजा, या सू आहारपाणी न्हाखणो तोडी।
जो इतरी करै तो वात है न्यारी, साहमा पगा पडे मान मोडी।।
२१ लोका साधु म्हेलण री अर्ज करि अति, पिण म्हेल्यो नही मुनि ताह्यो।
जद च्यारा माहि सू एक साधु तो, जीवराज मुनिरायो।।
२२ एक कोस आसरै स्हामो, आई नै पगा लागो।
चोवीसमी ढाले पूज परम गुरु, पुर में आया महाभागो।।

१. मुनि रामजी (१००)।
२. सदेह रूप सघन अधकार।

ढाल २५

दोहा

१ दुकाना में ऊतरचा, गणपति नै युवराज।
गुलाव प्रमुख नै नजीक ही, पूज्य भवोदधि पाज ॥

*ए तो चरचा करवा जय अति सूरा, वलि कुमति करै चकचूरा रे।
समय धारणा बुद्धि वल पूरा, त्या रा वाजै महि जग तूरा रे ॥ध्रुपद॥

२ हिवे जय महाराज लोकां रा वृंद मे, बे वर्ष पहिला रो ताह्यो रे।
अवगुण वोलण रा त्याग किया ते, लिखत देखायो लोका माह्यो रे ॥
३ गुलावजी आय कहै जव जन-जन नै, हू स्वामी भिक्खु नै सारो।
देव तीर्थंकर समान जाणू छू, इम वोलै वचन उदारो ॥
४. जव राश माहिली गाहा घणेरी, सभलाई जय स्वामी।
अनेक दिवस ना दोष कहै तसु, इम निषेध्यो अतरजामी ॥

वार्तिका

घणा दिना पछे दोष कहै, अवगुण वोलै, तिण नै भीखनजी स्वामी कह्यो।
"तिण नै इण विध घालणो कूडो, घणा बैठा देणी मुख धूडो" ॥

*जोयजो रे मोहकर्म अति जवरो, जीव भणी झखझोलै रे।
तास उदय थी सतगुरु नै पिण, मन मानै तिम वोलै रे ॥ध्रुपदं॥

५ तव वहु रीस मे आय नै वोल्यो, थे मुझ मुख धूल देवण रो दाख्यो।
जद जय कह्यु थे ज्या नै तीर्थंकर सरिखा, जाणी त्या हीज इम भाख्यो ॥
६ जद वोल्यो पहिला तो हुवै, साकडो मार्ग जेहो।
पाछै जो ढीलो पड जावै, तो किम मानै मर्यादा तेहो ॥
७ जद जय दाख्यो वे वर्ष पहिला थे, लिखत कियो इह रीतो।
तिण मे अवगुणवाद वोलण रा, त्याग किया धर प्रीतो ॥
८ जद तो काइ साकडो हुतो, हिव ढीलो पडियो काई।
जद कह्यो अवगुण वोलण रो दड मुझ आसी, पिण माथो तो कटै नाहि ॥
९ तव वोल्या ऋषिराय इता वर्ष, थे भेला रही क्यू कीधी ठगाई।
जद रीस मे आय नै ऊचे शब्दे, ऊधो अवलो वोल्यो घणु त्या ही ॥

*लय—सीता वभीखण नै कहै...

१० पछै त्या थी ऊठ नै चाल्यो ठिकाणे, 'बीजे दिन फिर वोलवा लागो'[1]।
आथण रा ऋषि जीत भणी कह्यु, हू गला तांइ भरियो अथागो ॥
११ पिण म्हारी कोइ श्रवण वालो नही, जद जय महाराज विचार्यो।
इण नै 'चिहु'[2] चोडै जाण लियो हिव, समेटू वात इह वारो ॥
१२ इम विचार सध्या प्रतिकमणो, करि नै गणी आणा लेई।
'नेवा'[3] हेठे थइ गुलाव कने जय, तसु वात सुणी चित्त देई ॥
१३ न्यारा-न्यारा संता रा नाम लेइ नै, अवगुण वोल्या अनेको।
पिण था री मुझ नै खवर पडी नही, था रै कपटाइ के संवेग विसेखो ॥
१४ इम दोय अढाइ मुहूर्त्त आसरै, मन री 'धप'[4] काढी धारो।
जद समय देख जय मीठा वचन सू, ठडो पाड्यो तिह्वारो ॥
१५ वलि च्यार वोला रा जाव दिया जद, राजी हुवो तामो।
थे म्हारी सहु वात सुणी पिण, न करी रीस इह ठामो ॥
१६ वलि विविध प्रकारे लेखो वतायो, दड छः मासी लग थी धारो।
आहार-पाणी तो तूटै नाहि, दोष री थाप किया तूटै आहारो ॥
१७. ए वात तणो तो विस्तार घणो छै, पिण संक्षेप थी इहा आखी।
पछै गणपति पे युवराजा आवी, विवरा सुध सहु भाखी ॥
१८. पछै तीजे दिन तसु व्यावचियो अति, उदैचंद तपस्वी ताह्यो।
तेह भणी जय विविध प्रकारे, एकाते समझायो ॥
१९ जद ते गुलावजी थी फिर मड्यो जद, पक्ख तूटा ढीलो पड्यो ताह्यो।
वलि जय विविधपणै समझायो, जद वोल्यो ते इम वायो ॥
२० थारी परतीत है मुझ मन मे, आराधक मुझ कर देवो।
जय कहै प्राछित किण ऊपर थापो, जद जय ऊपर थाप्यो ततखेवो ॥
२१ थे देवो सो कवूल है म्हारै, जय कहै पूज्य कने जाई।
वंदणा कर नै प्राछित मागो, जद तीनू जय सगे आई ॥
२२ तदा तिक्खुत्ता रो पाठ गुणी नै, वहु लोका रा वृद माह्यो।
वदणा करि नै प्राछित माग्यो, जद जन वहु अचरज पायो ॥
२३ सुमति सुधारी बुद्धि वल भारी, पद युवराज उदारी।
चक्रवर्त्ती रे सेन्यापति जिम, पूज्य रे जीत जयकारी ॥

---

१. दूसरे दिन फिर गृहस्थो के आगे अवगुण वोलने लगे।
२ चार तीर्थ।
३. छज्जा।
४. भाप।

२४. पछै तपसी गुलाव प्रमुख नैं, दंड देई सुविशालो।
गणपति नै जय विहार कियो तव, कह्यो चोराणुए रो शेपे कालो॥
२५. पणवीसमी ढाले पुर मे पधारचा, ऋषिराय जीत मुनिराया।
तपस्वी गुलाव प्रमुख नी शंका, मेट प्रमोद सुपाया॥
२६. जग जशधारी गणपति वंदो, वलि जय स्वाम मुनिंदो।
आप तिरै वलि पर नै तारै, देइ ज्ञान चरण सुखकंदो॥

ढाल २६

दोहा

१. संवत् अठार पचाणुए, कियो चौमास सुचंग।
सात श्रमण सू लाडणू, त्या सरूप-शशी पिण सग॥
२ चतुर्मास उतरचां पछै, चूरू सैहर मझार।
श्री जय स्वाम पधारिया, करता उग्र विहार॥

*सुण भव्य प्राणी रे वाणी, काई जय मुनिवर गुण खाणी।
ज्यां रो जश अति महि में रे जाणी, मुनि मति श्रुत विमल सुनाणी।
भवि भाग्य दिशा थी रे आंणी, काइ प्रगटचा उत्तम प्राणी॥ध्रुपदं॥

३. कोदरजी रै पग रो कारण, पडियो जिण सू पेख।
रहिणो विशेप हुवो जिहां, तिण उष्णकाल मे देख॥
४ रामसुख तपसी तिहा काई, उदक तणै आगार।
दिवस पैताली तप कियो, वलि आतापना अवधार॥
५. आपाढ सुध तिथ तीज नो, काई तपसी पारणो कीध।
शुक्ल अष्टम चलता रह्या, मुनि जश नगारो दीध॥
६ कोदर तपस्वी पिण तदा, तप अठम अठम अवधार।
करता आविल पारणे, 'वे द्रव्य'[1] तणो लियै आहार॥
७. कहै म्हा पहिला चलतो रह्यो, कांई रामसुख अणगार।
इम कही अठम पारणे, करि सेर आसरै आहार॥

---

*लय—कोरो कलशो जल भरयो...

१. बाजरा की रोटी तथा पानी के अतिरिक्त खाने-पीने का त्याग कर दिया।

अति पुन्यवंता रे प्राणी काई, तपसी गुण मणी ग्वाणी।
ज्या रै जय मुनिवर सूं रे जाणी, काई परम प्रीत पहिछाणी।
तो अंत समै लग रे आणी, तसु सहाज्य दियो गुण्वदाणी ।।ध्रुपदं।।

८. सित दशम जन वृद में काई, छती शक्ति तिह वार।
अति हठ करि जय मुनि कने, कियो जावजीव संथार ।।
९ श्रावण विद एकम दिने, सीझयो तपसी नो अणसन।
चवद वर्ष रै आसरै, तप कियो तीन सहस्र दोय दिन ।।
१० काकडाभूत तपस्वी विहु, त्या नै ठेट उतारया पार।
चूरू चौमासो छन्नूए, कियो चिहुं ठाणे गुणकार ।।
११. चौमासो उतरयां हिवै काई, सैहर रामगढ होय।
वीदासर थइ लाडणु काई, आया जय अवलोय ।।
१२ ऋषिराय महाराजा जय कने, म्हेल्या कृपा करि वे संत।
हिव विहार करि लाडणु थकी, आया मारवाड मतिमंत ।।
१३ पूज महाराज ना पाली मझे काई, दर्शण करि सुविचार।
पछै पीपाड ताइ गणीराज रै काई, साथे रहि श्रीकार ।।
१४ पछै आज्ञा ले गणपति तणी, आया सोजत होय मेवाड़।
बोध पमाय भव्य जीव ना, दे अंतर नयण उघाड ।।
१५. ऋषि कर्मचद राम नै काई, 'आवावती'[1] चौमास।
भोलाय चिहु मुनि सग ले, आया चंदेरे सुविमास ।।
१६. तिहा लालजी नैं दीक्षा भली, कियो देवा तणो उपाय।
स्त्री कहै चौमासो ऊतरयां, आज्ञा देसू ताय ।।
१७. उदियापुर तव आविया, आगे चदणाजी तिण ठाम।
हुता ते गोगुदे जइ कियो चौमास सुधाम ।।
१८. ए छवीसमी ढाल मे, सारया वे तपस्या रा काम।
चूरू चौमास कर आविया, जय उदियापुर गुण धाम।
अति पुन्यवंता रे प्राणी ।।

ढाल २७

दोहा

१. संवत् अठार सत्ताणुए, अधिको धर्म उजास।
उदयापुर जय महा मुनि, चिहु ठाणे चौमास ।।

---

१. आमेट

२. मदिरपंथी त्यां हुंता, मोतीचंदजी आद।
चरचा थइ त्या सू तदा, सुणो तास संवाद॥

*स्वामी जीत मुनि जणधारी रे।
ज्या री वुद्धि उत्पात उदारी, मेल्या समय न्याय सुविचारी रे॥ध्रुपदं॥

३ जय पूछ्यो महावीर स्वामी रो, देवानंदा री जाणो।
कुक्षि माहि सू साहरण कियो त्यां, कल्पसूत्रे कहि वांणो रे॥
४ साहरण कियां पहिला प्रभु जाण्यो, मुझ साहरण हुस्ये जेहो।
साहरण किया पछै जाण्यो मुझ, साहरण हुओ एहो॥
५. अनें साहरती वेला नवि जाण्यो, मुझ साहरण हिवडा हुवै छै।
कल्पसूत्र मांहे इम आख्यू, हिव धुर अग में जिम कहै छै॥
६ कह्यु 'द्वितीय स्कंध पनरमध्ययने'[1], साहरण हुवा पहिला पहिछाण्यो।
साहरण हुवा पछै ने साहरती वेला, ए तीनूइ काल मे जाण्यो॥
७. इम आचारग मे तो वर्त्तमान काले, जाण्यो कह्यो उदारो।
अनें कल्पसूत्र मे वर्त्तमान काले, न जाण्यो कह्यो विचारो॥
८. ते माटे कल्पसूत्र में कही ते, वात साची कै नाही।
जद मोतीचंदजी देहरापंथी, वोल्यो इह विध त्या ही॥

यतनी

९. इम तो सूत्र मांहि पिण तांम, वाता विसंवाद वहु ठाम।
समवायंग में अवलोय, आवती चोवीसी माहि जोय॥
१०. कृष्ण ना पाछिल भव ना नाम मांहि, तेरमो नाम कह्यो छे तांहि।
अने किणहि सूत्र मे कह्यो आंम, तू होसी वारमो अमम जिन नाम॥
११. जद जय समवायंग खोल्यो ताम, जद देख्यो कृष्ण नो तेरमो नाम।
मोतीचंद कहै कृष्ण नु पेख, ए तेरमो नाम कह्यो त्यो देख॥
१२. जद ऋषि जीत कह्यु जिवार, कृष्ण नाम कह्यु ते आगे धार।
नाम द्वादश छै कै एग्यार, इम कहि नाम गिण्या तिहवार॥
१३. सो आगे वारे नीकल्या नाम, इम पणवीस नाम थया ताम।
चोवीस जिन ना पूर्व भव ना जोय, नामा मे पणवीस नाम किम होय॥

---

*लय—स्वामी सरूप सुखकारी

१. आचारांग द्वितीय श्रुत स्कंध (आचार चूला) अध्ययन १५ सूत्र ७।

१४. जीव तो चउवीस जगीस, अने ए नाम थया पणवीस।
ते भणी एकण रा वे नाम, जद मोतीचंदजी वोल्यो तांम॥
१५. किण जिन ना इहा वे नाम, जद उत्तर दियो जय स्वाम।
'अतगड मे'[1] श्री नेमीनाथ, कह्य कृष्ण भणी सुविख्यात॥
१६. थासी आवती चोवीसी माय, वारमो अमम नाम जिनराय।
ते भणी अमम नाम रै स्थान, कृष्ण नाम हुवै सुविधान॥
१७. ते माटे कृष्ण नाम थी धुर जोय, शेप नाम विपै अवलोय।
सभवै एक जीव रा वे नाम, तिण सू कृष्ण होस्ये वारमा जिन ताम॥
१८ जिम लोगस्स मे अवलोय, नवमा जिनवर ना नाम दोय।
तिम अमम पहिला नामा मे जोय, एकण का नाम वे होय॥
१९ ए उत्तर सुण नै ताहि, मोतीचद नै जाव आयो नाहि।
ज्या त्या रा मत रा अठी रा वहु जन्न, सुण पाया चिमत्कार अति मन्न॥
२० तव मोतीचंद तिह ठांम, नरमाइ करि वोल्यो तांम।
तेरै नामा मे किण रा वे नाम, जद उत्तर दियो जय स्वाम॥
२१. इसी विगत सूत्र मे नाहि, वलि ते वोल्यो करे नरमाई।
आप रै धारणा हुवै जो कोय, हिवडा सो ही वतावो मोय॥
२२. जद उत्तर दियो जय स्वाम, आनंद ने सुनंद वे नाम।
ए एक जीव रा हुवै एहवी वडेरां री धारणा ए लेवी॥

२३. *पछै ऊठ नै गयो ठिकाणे, ते मोतीचंद विख्यातो।
कष्ट[2] हुवो तेह सैहर में, ठाम-ठाम विस्तरी वातो॥

२४. जिन मार्ग नो उद्योत हुवो वहु, अति उद्यमी आप उदारो।
वखांण वाणी चरचा तप जप करि, तारै वहु नर नारो॥
२५. ढाल भली ए वीस आठमी, तिण मे कही चरचा री वातो।
हिव सरदाराजी चरण लेण नै, आवै ते सुणो उदातो॥

---

१. अतगड सूत्र० वर्ग० ५ अ० १ सूत्र० १८

*लय—स्वामी सरूप सुखकारी

२. निरुत्तर।

ढाल २८

दोहा

१. सिरदाराजी इह समै, अति हठ कर अवलोय।
फलवधी सू आज्ञा लेइ, सासरिया री जोय॥
२. चुरू जड नै आविया, उदियापुर अवधार।
काती विद पंचम आसरै, चरण लेण श्रीकार॥

*पद युवराज उदारी २, मुनि जय चरण करण गुण वलिहारी जी काई।च०।
शासण भार धुरा हद वहिवा, धोरी जिम जशधारी॥ध्रुपद॥

३. हिव चौमास ऊतरचां मुनिवर, मृगशिर विद एकम धारी जी काई।मृ०।
सैहर वाहिर रह्या विहार करि जय, महियल भाग्य दिशा भारी जी काई।म०।
४. वीज दिवस रह्या कोस देवाणी, म्हेल्या सती चंदणा त्या सुखकारी।
गोगुदा सू दोय आर्य्या नै, तीज थेट आया धारी॥
चरण महोच्छव भारी २, सतिय सिरदार तणो अति श्रीकारी।
अधिक हंगामे परम हरप मन, करता जन धर हुसियारी॥ध्रुपद॥
५. सेठ जोरावरमल नी वाडी मे, रह्या तीज दिवस जय जशधारी।
सती सिरदारा नी हिव भवियण, कह्यु सखेप कथा भारी॥
६. सुलतानचंदजी सेठ ढढा घर, सासरो फलवधी श्रीकारी।
चूरू पीहर जेतरूप घर, प्रवर जाति जसु कोठारी॥
७. वहु ऋद्धि वहु परिवार छाड सती, परम वैराग्य हिये धारी।
जय मुनिवर पे चारित्र लेवा, सेवा सखर करी भारी॥
८ उदियापुर मे उमंग धरी जन, एक मास लग अवधारी।
अति हठ नित्य जीमावत घर-घर, थइ चोथ दिवस दीक्षा त्यारी॥
९. पवर पालखी माहि वैसाण्या, सिविका नै अति सिणगारी।
गज सिणगारचा आगल हालै, वलि पलटण हय कोतल भारी॥
१०. स्व मति अन्य मति मनुष्य हजारा, वलि गावत गीति सुहव नारी।
विविध वाजित्र नी ध्वनि अति ऊठत, होवत शब्द मनोहारी॥
११ सती विहुं पास चामर वीजंता, माणकचदजी भंडारी।
फोजमल्ल ऋपभदास प्रमुख वहु, होडाहोड सू तिहवारी।
१२. वहु मंडाण पुला कै मारग, तरु अंव पंच तिहा भारी।
तेह तरु तल चोथ दिवस जय, दीक्षा दीधी जयकारी॥

---

*लय—नाहरगढ ले चालो वनांजी अव तो जयपुर देखालो जी कांइ अव-२...

१३ लाडू अने नालेर पतासी, वाटचा है वहु तिह वारी।
ए सावज कार्य पिण उमंग धरी जन, करता मोहच्छव धर प्यारी॥
१४. दीक्षा दे ह्वि विहार करि पांचम, गाम चदेरे गुणकारी।
आवी मुनि दियो लालजी नै तव, चरण रयण महा जशधारी॥
१५. दोय पुत्र नै दोय बंधव फुन, तज दीधी मुनि वलि नारी।
विद छठ चरण देइ पछै आया, गोगुदे जय जशधारी॥
१६ त्या चंदणाजी नै दर्शण दे नै, दिवस आठ मे अवधारी।
वडी दीक्षा सिरदार भणी दे आया, श्रीजीदुवारे श्रीकारी॥
१७ पछै घाटे उतर नागौर सैहर मे, किया गुरु दर्शण जय गुणकारी।
सतीया संग सिरदार वीजे दिन, दर्शण कर लह्या सुख भारी॥
१८. तिहा रूपकुवर नै चरण देई, ऋषिराय गणी अतिशय धारी।
डीडवाणे आय कियो सिघाडो, सिरदारा नो सुखकारी॥
१९. मुखांजी कनला ले ऋद्धूजी, वलि जेतांजी नै जिहवारी।
दीपांजी कने ले नै सूप्या, सिरदारा नै श्रीकारी॥
२० कल्प नावै त्या लग सिघाडो, कियो ऋद्धू नामे अवधारी।
या नै कल्प आया सिंघाडो, सिरदार तणी है सुखकारी॥
२१ सिरदाराजी नै चउमासो, भलायो डीडवाणे धारी।
युवपद नै जयपुर चौमासो, भोलायो अठाणुए वर्ष नो भारी॥
२२. आप चौमासो कियो लाडणु, ए ढाल वीस नवमी भारी।
सतीय सिरदार तणी कही दीक्षा, वलि विचरचा जिम जय जश धारी॥

ढाल २९

दोहा

१. संवत् अठार अठाणुए, जयपुर सैहर चौमास।
व्याख्यानादि उद्यम वहु, षट मुनिवर जय पास॥
२. वासी फलवधी नां तिहा, नवला नै सुविचार।
विविध उपदेश देइ करी, किया सयम नै त्यार॥
३. भागचद जवहरी भणी, वलि हीरालाल नै ताय।
उपदेश दियो ऋषिराय ना, करो दर्शण सुखदाय॥
४. विनती अर्ज कियां इहां, पधार जाय जो स्वाम।
तो समण सत्या ना मास इक, ह्वै जैपुर माहि हंगाम॥

५. पछै उणा दर्शण किया, लाडणु सैहर मझार।
अर्ज करी जयपुर तणी, विविधपणै सुविचार।।
६. चौमास ऊतरचा पूज ना, दर्शण सिरदारा कीध।
जैताजी नै तो तदा, दीपाजी ले लीध।।

*श्री ऋषिराय गणीश्वर गिरवा, सुरगिर जेम सधीरा हो।
सुरगिर जेम सधीरा म्है वारी जावू, गुण उज्जल जिम हीरा हो।।ध्रुपद।।

७ हिव ऋषिराय महाराज गणाधिप, वहु मुनि सग उदारो हो।
दीपाजी सिरदारा प्रमुख, वहु सतिया परिवारो हो।।
८ गणपति जयपुर सैहर पधारै, ए खवर पडचा अवधार।
सागानेर थी जय तव आवी, किया दर्शण जैपुर वार।।
९ आया गणपति ने जय सैहर मे साथे, पछै मृग सित चोथ गणिराय।
वहु मोहच्छव नवला नै चारित, दियो मोहनवाडी माय।।
१० तिहां दीक्षा दे ऋषिराय गणाधिप, नवला नै तिहवार।
सिरदारा नै सूपी जयपुर मे, रह्या एक मास अवधार।।
११ पछै गणपति ने युवराज प्रमुख मुनि, जयपुर सू करि विहार।
सीकर सैहर फतैपुर थइ नै, आया चूरू मे सुविचार।।
१२ गणि चूरू मे रहि दिवस कितायक, करता वहु उपगार।
वीदासर ने लाडणु कानी, कियो विहार गुणकार।।
*श्री ऋपिराय महाराज तणी जय, करता तव पर्युपास हो।
करता तव पर्युपास म्है वारी जाऊ, आणी चित्त हुलास हो।।ध्रुपद।।
१३. पछै सवत् अठार निनाणुए वर्षे, वीदासर चउमासं।
श्री ऋषिराय महाराज रै साथे, ग्यारै सत गुण रासं।।
१४ 'समणी वड रंगू'[1] सिरदारा, प्रमुख आठ सुविमास।
जव कुमारी किन्या हरखू सीखी, 'जाणपणो'[2] जय पासं।।
१५ मास आसोजे हरखू नै गणी, संयम दे सुविमास।
सती सिरदाराजी नै सूप्या, हिव ऊतरीया चउमासं।।
१६. हरखूजी नी मा सिणगारा, तेहनै मृगशिर मास।
गणपति दीक्षा देइ करि सूपी, सिरदार भणी सुविमास।।

---

*लय—पारस देव तुम्हारा दर्शन भाग्य भला सोही पावै हो...
१. साध्वीश्री रगूजी वडा (१५४)
२ तत्त्वज्ञान।

१७ फिर सूखा भणी सूप्या ऋद्धूजी, तव सिरदारा सुविमासं ।
नवला नै सिणगारा हरखू, रह्या चिहु ठाणे गुण रासं ॥
परम विनीत जीत नीत हद, युवराजा जयकारं हो ।
युवराजा जयकार म्हे वारी जाऊं, गुण मणि रयण भंडारं हो ॥ध्रुपदं॥

१८. हिव उगणीसै सइकै चौमासो, लाडणु सैहर मझारं ।
युवराजा जय पट् मुनिवर सू, त्या कियो सखर उपगारं ॥

१९. तिहा जाति गोलेछा तेजपाल नै, कियो संयम नै त्यारं ।
वहु ज्ञान भणाय मृगशिर विद एकम, जय दीधो संयम भारं ॥

२० हिव उगणीसै एके चौमासो, सैहर जैपुर श्रीकारं ।
आसरै मुनि पट् अति ही ओपै, सेव करंता सारं ॥

२१ चौमास ऊतरचा हरिगढ माहे, वाजोली रा सुविचारं ।
मा सहित वीजराज वालक वय, लियो जय पे संयम भारं ॥

२२. पछै मेवाड में गणपति ना जय, करी दर्शण दीदारं ।
सुप्रसन्न चित्त अति सेवा करता, वरवा शिव सुख सारं ॥

२३ तीसमी ढाले तीन चौमासा, आख्या अधिक उदारं ।
वन्नि सेखेकाल तणो संक्षेपे, कह्यो संबंध विचारं ॥

ढाल ३०

दोहा

१. उगणीसै वीये वरस, साथ मुमुक्षु सात ।
कृष्णगढ माहे कियो, चतुर्मास विख्यात ॥

२. त्या चउमासे लघु नेमजी, कीडीमाल थी आय ।
वनिता तज जय मुनि कने, लियो चरण सुखदाय ॥

३. तिहां संचेती तेजमल, पालेचा जेठमल्ल ।
प्रमुख केयक समझिया, छोड मिथ्यात नु सल्ल ॥

४. हिवै चौमासो ऊतर्यां, दीक्षा ग्रही हमीर ।
युवराजा जय मुनि कने, तिरण अथग भव नीर ॥

५. हिव दर्शण गणपति तणा, किया धामली माह ।
पछै सैहर पाली मझे, आया अति ओच्छाह ॥

६. सेहर वाहिरिगणि राज संग, 'मसीत'[1] पे मुनिराज।
सप्त वीस मुनि पुव्व उत्तर, दिशि ले रह्या विराज॥
७. गुमानजी रै गण माहिलो, कनीराम कहिवाय।
अणसहितो जिन मग सुजश, आयो तिहा चलाय॥
८. चरचा करवा कारणे, जय मुनिवर जिहवार।
'कृष्ट'[2] कियो जन वृद मे, तेहनो वहु विस्तार॥

*सुगुणा! जवर गुणी जय स्वाम।
जवर गुणि जय स्वाम, ज्या रा नित्य करियै गुण ग्राम।
तो लहै अविचल सुख आराम, वारू चितामणी सम नाम॥ध्रुपद॥

९ सवत् उगणीसै वर्ष तीये, श्रीजीदुवारे स्वाम।
हेमराज मुनि सग चौमासो, द्वादश मुनि गुण धाम।
१०. तिहा श्री भीक्खू महा मुनिद ना, दृष्टत अति अभिराम।
हेम ऋषि रै थी हिये धारणा, ते निशि याद कराये ताम॥
११ हेम ऋषि पासे जय दिन रा, लिखिया पत्र मझार।
अति सुदर अक्षर सुघडपणै वर, वचन कला सुविचार॥
१२. जय मुनि उद्यम करी चउमासे, चीज करी हद त्यार।
समण सत्या रै काम वहु आवै, सुण पावै जन चिमत्कार॥
१३ तिण हिज वर्ष ऋषिराय गणाधिप, जैपुर सैहर चौमास।
अश्व की जाति तिहा चोट लगाया, उतर गयो कर तास॥
१४ साहसिक पणै सही वेदना, मुनि कीधा वहु उपचार।
चैत्र शुक्ल चउदश लग गणि नो, रहिणो हुवो सुविचार॥
१५. तिहा जय आदि मुनि वहु समण्या, किया दर्शण जैपुर माहि।
दीपाजी आदि चौमासे था भेला, ते पिण रह्या चेत लग ताहि॥
१६. चेती पूनम विहार कियो गणि, पछै समण सत्या ना विहार।
चोके वर्ष चौमास करायो जय नो, जैपुर सैहर मझार॥
१७ सप्त मुनि सू चौमास जैपुर मे, त्या छोटूजी मोटे मडाण।
मोहनवाडी मुनि जय पे लियो, संजम उद्यम आण॥

---

१. मस्जिद
२ निरुत्तर।
*लय—नीकी सीखड़ली रे...

१८. तिहा 'धुर अंग ना प्रथम स्कंध नीं, करी जोड़ आधी उनमान'[1]।
पछै चउमास ऊतरचा गणपति ना, किया दर्शण जय गुण-खाण ॥
१९ पछै सवत् उगणीसै वर्ष पांचे, कियो उदियापुर चउमास।
आसरै पट् मुनिवर सू, जय अति करता ज्ञान अभ्यास ॥
२० त्या 'प्रथम स्कध नी जोड करो पूर्ण,[2]' वलि उद्यम विविध प्रकार।
हिव चउमास उतरचां विहार करी, आया वडेगाम सुविचार ॥
२१. त्या नाथूजी री माता वनिता नै, समझावी विविध पर स्वाम।
बहु हेतु युक्ति कर नै दीक्षा री, आज्ञा लेई गुण धाम ॥
२२ पछै पदराड़े गाम आया जय स्वामी, नाथूजी नै तिहवार।
दीक्षा देइ रांणपुरे थइ आया, मरुधर देश मझार ॥
२३ 'नाथाजी रै गुडे' गणपति ना, दर्शण किया जय स्वाम।
पछै गणाधिप साथे मुनि जय, आया थली देश गुणधाम ॥
२४ ढाल भली ए तीसमी तिण में, दाख्या तीन चौमास।
हिव थली देश उपगार कियो ते, साभल आण हुलास ॥

ढाल ३१

दोहा

१. उगणीसै छ. के वर्ष, पट ठाणे गुण खाण।
वीकानेर जय मुनि कियो, अधिको धर्म मंडाण ॥
२ सघन झडी सम स्वाम नी, मुणी वान सुखकंद।
जाति राखेचा अति जवर, मदनचंद गुण-वृंद ॥
३. तसु लघु बंधु फकीरचंद, ए राज मान्य अवधार।
ससार मे अति दीपता, समज्या अति श्रीकार ॥
४ वलि समझचा केई अवर, थयो अधिक उपगार।
चौमासो उतरचां किया, गुरुदर्शण गुणकार ॥

*धन्य धन्य जय मुनि ज्ञान गुणोदधि रे, सुरगिर जेम सधीर।
अथग भवोदधि पार उतारव रे, उद्यमी अति सूरवीर ॥ध्रुपदं॥

---

१. आचाराग के प्रथम श्रुत स्कध की जोड (पद्यबद्ध) प्रारभ की, जिसका लगभग अर्ध भाग सम्पन्न हुआ।

२. आचाराग के प्रथम श्रुत स्कध की जोड पूर्ण की।

*लय—भला नै पधारया हो पार्श्व संतानिया जी...

५. दर्शण कर विचरया थली देश मे रे, पछै ऋषिराय महाराज।
करण चौमास पधारया जयपुरे रे, गणि तिरण तारण गुण-ज्याज।

६ ऋषि जीत भणी चौमास भोलावियो, वीदासर सुख वास।
जद आषाढ मास वीदासर आविया, करवा नै चउमास ॥

७ वीकानेर थकी इह अवसरे, मदनचदजी जोय।
ऋषिराय समीप कराई वीनती, ऋषि जीत भणी अवलोय ॥

८. वीकानेर चौमास करावियै, 'अवरके'[1] अवलोय।
इसो ही अवसर छै ते थी इहा, ए अरज मानीजै मोय ॥

९ जद गणिराज हुकम दियो जय भणी, सरूपचद सुविमास।
दीक्षा माहि वडा ज्या रै साथ ही, कल्पै तिहा द्वितीय चौमास ॥

१० ए समाचार आया वीदासर मे जय पे जदा, जद विहार करण थया त्यार।
जद आषाढ मास लूआ अति आकरी, तपै तावडो अति तिहवार ॥

११ और साधा रो मन नही विहार थी, अति तप्त देख असराल।
वीदासर रा श्रावक पिण तिह समै, वहु कीधी अरज सुविशाल ॥

१२ छै स्वामीजी री आज्ञा वीकानेर की, पिण काढो गली इहा कोय।
जद ऋषि जीत कह्यो गली तो इहा, कोई 'हाली'[2] काढै अवलोय ॥

१३ या सतगुरु नी मुरजी उपरंत ही, कोइ करणी नावै काम।
लोका हठ अति कीधी पिण मानी नही, जद उदास थया अति ताम ॥

१४ तव जय सरूपचदजी स्वाम नै, साथे लेइ सुविचार।
वलि आहार लेई नै विहार लवो कियो, सह्यो तृखा परिषह अपार ॥

१५ मरणात सदृश कष्ट सह्यो तिण दिने, रसते तावडो अति 'तिह वेर'[3]।
अषाढ सित चोथ विहार करि आसरै, दशमी पूगा वीकानेर ॥

१६. अति सुविनीत जीत हद महामुनि, गुरु आज्ञा ऊपर वहु नीत।
परम प्रतीत रीत मुनि मार्ग नी, धारक जग सुवदीत ॥

१७ ग्रीष्म ऋतु अति कष्ट सही करी, आया वीकानेर गुण राश।
साते वर्ष सरूप-शशी आदि दे, दश मुनि सग चौमास ॥

१८ धर्म उद्योत त्या अति घणो, वलि अधिक थयो उपगार।
ए ढाल इकतीसमी हिव मुनिराज नी, साभलो चरचा सार ॥

---

१. इस साल।
२. नौकर।
३ उस समय।

ढाल ३२

दोहा

१. नव संवेगी तिहा हुंतो, तसु वंदन नैं काम।
आया लोक नागोर नां, साहमी-वच्छल थयो ताम ॥
२. प्रभात समय जय महामुनि, दिशां जावता जाम।
वड़े उपाश्रय पास मिल्यो, ढढो भेरुदान नाम ॥
३ तेहनें कह्यो जयवर मुनि, साहमी-वच्छल रै माहि।
सीरो कियां तिण में केई, धर्म श्रद्धै छै ताहि ॥
४. तिण ऊपर कही वारता, सेर सीरा थी सोय।
दश सेर का सीरा मझे, धर्म घणेरो होय ॥
५ ते थी मण ना सीरा मझे, धर्म घणेरो थाय।
इम गणो आरंभ ज्यूं धर्म बहु, तुझ लेखे कहिवाय ॥

*श्रोता जन सुणियै ॥ध्रुपद॥

६. जब भेरुदानजी बोल्या वायो, संघ व्यावच कही सूत्र माह्यो रे।
जद ऋषि जीत बोल्या तिहवार, इहां वियावच्च कै अधिकार रे ॥
७ संघ ते चउविध संघ छै तांम, एहवूं अर्थ नहीं इह ताम।
इहा गण ना समुदाय नैं संघ कहीजै, पिण यां श्रावक श्राविका नही लीजै ॥
८. अनैं साधर्मी ते साधु साधवी कहियै, वियावच्च ठाम अर्थ इम लहियै।
तब निणे कह्यो घणी 'खेंच'[1] कर वाह्यो, संघ ते चउ विध संघ कहायो ॥
९. वलि कह्यो आप उपाश्रे पधारो, जद उपाश्रय दिशि अवधारो।
किता पावडा चाल्या जय स्वामी, पछै उभा रहि त्यां नैं कह्यो तामो ॥
१०. हूं कहूं ज्यूं निकल्लेला सूत्र माह्यो, तो मानणो पडेला तुझ ताह्यो।
जद त्यां वात करी अंगीकारो, जद उपाश्रय आया अणगारो ॥
११ त्यां श्री पूजजी ते वेला नहीं हुंतो, पिण त्यां रे मूंहढै आगे जे 'मानीतो'[2]।
जती हमराजजी बेठो तिह वेलां, जिते लोक थया बहु भेला ॥
१२ वले बावीस टोला रा श्रावकां में अगवाणी, 'ते पिण'[3] आय बेठो तिहा जाणी।
वले हीराचंदजी डागो आदि घणेरा, सुणतां जय स्वाम भलेरा ॥

---

*लय—आसण रा रे जोगी

१. आग्रह।

२. माना हुआ।

३. गवनमलजी कोठारी।

१३ कह्यो उववाइ री टीका छै इह ठामो, जद जती काढ नै सूपी तामो।
जद मुनि जय लेई निज हाथो, वाची उववाइ वृत्ति[1] विख्यातो ॥

कलश

१४ कुल वियावच्च ते गच्छ नु, समुदाय कुल सु कहीजियै।
अरु कुल तणो समुदाय ते, गण वियावच्च लहीजियै।
अरु गण तणो समुदाय तेहने, संघ वियावच्च आखियै।
साहमी ते साधु अथवा, साधवी विहुं दाखियै ॥

१५ *इम सुण जन वहु इचरज पाया, वलि वोल्या जीत ऋषिराया।
इहा श्रावक श्राविका नै थापै केई, ते किहा गया अर्थ तेही ॥
१६ ते जती नैं पिण क्यू ही जाव न आयो, तव 'ढढा'[2] नै कह्यो जय ऋषिरायो।
थे कहिता जो निकलै सूत्र माह्यो, तो अगीकार करसू हूं ताह्यो ॥
१७ सो अवे मानणी पडेला ए धारो, तव 'ते'[3] वोल्या वयण उदारो।
इसो किण री लोह सू जडयो माथो, जे उथापै ए वचन विख्यातो ॥
१८ तव जिन मग नी थइ शोभ सवाई, जय महिमा थइ अधिकाई।
जन चिमत्कार पाया मन माह्यो, हिव 'कोठारी'[4] निज हवेली आयो ॥
१९ किण ही पूछ्यो आज चरचा थइ काई, जद रावतमलजी वोल्या हित ल्याई।
इण चरचा मे तो 'उणा'[5] कह्यो तामो, तिम नीकल्यो अर्थ इह ठामो ॥
२० इसा चरचावादी जय मुनिरायो, त्या तो जिन-मग अधिक दीपायो।
ए ढाल वत्तीसमा सुविचारो, कह्यो चरचा नो अधिकारो ॥

---

१. मूल पाठ—से किं वेआवच्चे ? २ दसविहे पण्णत्ते, तजहाअ—ायरियवेआवच्चे उवज्झायवे-आवच्चे सेहवेआवच्चे गिलाणवेआवच्चे तवस्सिवेआवच्चे थेरवेआवच्चे साहम्मिअवे-आवच्चे कुलवेआवच्चे गणवेआवच्चे सघवेआवच्चे, से त वेआवच्चे।
टीका—'वेआवच्चे' त्ति वैयावृत्य-भक्तपानादिभिरुपष्टम्भ, 'सेह' त्ति अभिनवप्रव्रजित, तपस्वी—अष्टमादिक्षपक, 'थेर' त्ति स्थविरोजन्मादिभि, सार्धमिक साधु साध्वी वा, कुल गच्छसमुदाय, गण कुलाना समुदाय, सघो गणसमुदाय इति।
२ भैरुदानजी
३ भैरूदानजी।
४. रावतमलजी।
५. जय मुनि।
*लय—आसण रा रे जोगी...

ढाल ३३

दोहा

१. एक दिवस जय महामुनि, दिशां जावतां जाम।
कोठारी-प्रति पंथ में, प्रश्न पूछ्यो तिह ठाम॥
२. तृषित देख अनुकंप करी, काचो पाणी को पाय।
तिण मांहि कहो स्यूं थयो, तव ते बोल्या नाय॥
३. नहीं जाव देवण रा भाव मुज, वलि साहमी-वच्छल नैं जोय।
बावीस टोला रा साधु फुन, श्रावक निंदै सोय॥
४. तिण ऊपर जय स्वाम इम, कह्यो जाव सुविचार।
साङ नैं घास न्हवावियां, पुन्य कहै अवधार॥
५. तो साहमी वच्छल भणी, निंदै क्यूं अवलोय।
इण में तो ए मनुष्य नैं, जीमावै छै जोय॥
६. इम अनेक चरचा थई, दिया विविध पर जाव।
कहां तक ते वर्णन करूं, तसुं गुण 'सघन'[1] 'सताव'[2]॥

*साभल हो भविजन, शिवपद दायक श्री जय महामुनि॥ध्रुपदं॥

७. हिवै चौमासो उतरयां बीकानेर थी, आया हरिगढ सैहर रै माहि।
गणपति ना दर्शण करी अति हरष थी, 'बहु दिवस'[3] सेवा करी ताहि।
८. पछै अजमेर सैहर रह्या गणि साथ ही, अति सुविनीत उदार।
पछै ऋषिराय महाराज मेवाड़ नीं, दिशि कानी कियो रे विहार॥
९. ऋषि जीत आज्ञा ले जयपुर आविया, तिहां कोठारीजी रामचंद।
तिण वंदणा छोडी थी मुनि सनियां भणी, तिण नैं समझायो जय गुण वृंद॥
१०. तव ते बोल्यो दोषण वाला बोल नैं, 'खांच'[4] करी साधु कहै एम।
इण बोल माहे कहो क्यांरो दोष छै, तिण नैं वंदणा करूं हूं केम॥
११. तिण नैं तव मुनिवर उत्तर इम दियो, 'कह्यो भगवती सूत्र मझार।'[5]
धुर पुलाक निर्ग्रंथ तणा भेद पांच छै, इक नाण पुलाक विचार॥
*सांभल हो सगुणा, वारू तो उत्तर श्री जय स्वाम ना॥ध्रुपदं॥

---

१. गहन
२. तेज
३. १३ दिन लगभग
४. आग्रह।
५. भगवती शतक २५ उ० ६ सू० २७९।
*लय—महिलां में बैठी राणी कमलावती...

१३. या दंसण ते शुद्ध श्रद्धा छै तेहनै, पुलाक ते करै रे असार।
तो समकित गया[1] थी चारित्र किम रहै, वलि किम रहै नियठो विचार ।।
१४. तेहनो इम उत्तर[1] समकित मे तिको, लगावै अतिचार उपाध।
तथा रीस थी कहै हूं थानै मुनि सरधू नहीं, पिण मन मे तो सरधै साध ।।
१५. पिण वचन द्वार करी दर्शण प्रते, कीधो कहियै असार।
ते पिण वाह्यपणै जे कहिणो वचन सू, ते जोग आश्रव अवधार ।।
१६. अने मन मे तो साधु श्रद्धै तेह थी, तसु मिथ्यात आश्रव न कहाय।
वचन नु जोग ते आश्रव अशुभ जोग छै, तिण रो प्रायछित्त लियां शुद्ध थाय ।।
१७. इम उधो श्रद्धया विन वोल्या वचन थी, तसु सम्यक्त्व तो नहीं जाय।
जद कोठारी ए उत्तर श्रवणे साभली, अति राजी थइ वोल्यो वाय ।।
१८ दोष नै दोष नही इम दाखिया, मुनि तो दंड लेइ शुद्ध थाय।
पिण वीजो तो डूव जाय ए वचन थी,
तिण नै तो उण रा मन री खवर न काय ।।
१९ पछै ओर ही वोल पूछया तिण मोकला, तसु उतर हियै अवधार।
ज्ञान थी समझ थयो दृढ अधिक ही, तिहा इक मास रह्या अणगार ।।
२० हिवै विहार करी नै हो जयपुर सेहर थी, आया कुचामण ताहि।
तिहा सेठजी नो सुत हुतो दीपतो, ते वावीस टोला री श्रद्धा माहि ।।
२१ ते शोभा तो सुण नै हो श्री जय स्वाम नी, तिहा आयो मुनि पे चलाय।
वहु लोक सुणता हो प्रश्न पूछियो, कोई कहै आप नै आय ।।
२२ कहो तो हु त्याग करू मृग मारण तणा, कहो तो मूली खावा रा करू त्याग।
तो आप किण रा हो त्याग करावो तेह नै जव वोल्या जय महाभाग ।।
२३ म्हे तो तसु भाखा हो त्याग दोनू करो, जद सेठ सुतन वोलंत।
ऊ कहै विहु तो त्याग करण मुज मन नही, एकण रा त्याग करावो तत ।।
२४ तव उत्तर इम आख्यो श्री जय महामुनि, तुझ मन हुवै ते इक त्याग करेह।
वले वीजी वार पूछ्यो विहु माहिलो, आप कहो ते त्याग करू एह ।।
२५. जद जय तो पाछो जाव ऊ ही दियो, म्है कहा दोनू ही करले एह।
जद ऊ वोल्यो इक त्याग करावो मो भणी, म्है कहा इक तुझ मन ह्वै सो लेह ।।
२६. इम वहु वार प्रश्न तिण पूछियो जद, ऊ को ऊ ही दियो जाव।
इम प्रश्न नो उत्तर तरक सहित ही, सुणी जन समझ्या 'सताव'[1] ।।
२७. मुनि वुद्धि अति भारी हो उपगारी घणा, जन हितकारी जोय।
मिथ्यात विडारी हो भरत मे भानु सा, मुनि अतिशय धर अवलोय ।।

---

१. शीघ्र

२८. इम चरचा तो कीधी हो मुनिवर अति घणी, तसु कह्यो संक्षेप विचार।
ए ढाल तेतीसमी श्री जय महामुनि, कियो शेपे काल उपगार॥

ढाल ३४

दोहा

१ वलि कुचामण सैहर मे, श्रावग्या सू हुइ वात।
श्री जय पासे आय नै, त्यां पूछयो प्रश्न सुजात॥

२. आप महाजन विन ओर नै, नही द्यो चरण विख्यात।
ते तो रीति वहु ठीक छै, पिण अन्न जल ल्यो अन्य हाथ॥

३. जद त्या नै श्री जय मुनि, दियो युक्ति स्यू जाव।
साभलता भव्य जीव नै, उपजै प्रेम सताव॥

*श्री जय जाव सुणो भव जीवां, पावो ज्ञान जल पूर जी।
ज्यू समकित दीवो गुल[1] न होवै, 'सीवो'[2] वैराग तेल सनूर जी॥ध्रुपदं॥

४. श्री जय मुनिवर उत्तर आख्यो, म्हे लेवा ओसवाला रो आहार जी।
अने ओसवाला रै रसोइ करै छै, 'वडारणिया'[3] सु विचार जी॥

५. वले ओसवाल नाई कै हाथ नी, करी रसोइ पिण खाय।
जो ओर जाति रो आहार न लेवां, तो ओसवाला रो पिण छोडणो थाय॥

६ वलि कह्यु लाडणु नागोर पाली रा, श्रावगिया सू सबंध तुझ हुत।
त्या नै वेटी देवो लेवो छो, ते श्रावगी ओसवाल भेला जीमत॥

७ ते श्रावगिया री बेटी ओसवाल तणै घरे, वडारण की करी रोटी खाय।
तिण नै थे परणीज ल्यावो छो, इण लेखे थारै पिण टालो रह्यो नाय॥

८ थे तो सगपण करता ही नही सको, उवा पीहर जाये जद जाम।
ओसवाला रै घरे जीमवा रो, टालो करै नही ताम॥

९ अने सासरे आवै जद जीमवा रो, टालो करै इण हेत।
था रै पिण टालो रह्यो नाही, थे पिण समझ ल्यो देख 'न्याय नेत'[4]॥

---

१ बुझ नही सकता।

२. सीचो।

३. दरोगा आदि जाति की स्त्रिया।

४. न्याय दृष्टि से।

***लय—दूजो मंगल सिद्ध नमूं...।**

१०. जद उणा पिण मन मे जाण लीधो, पाछो उत्तर दीधो नाहि।
हिव त्या थी विहार करो नै विचरता, आया थली देश रै माहि॥
११ हिव सवत् उगणीसे वर्ष आठे कियो, वीदासर चउमास।
सरूपचदजी स्वामी पिण साथे, द्वादश मुनि गुण राश॥
१२ विहु टक आप वखाण वाचता, सघन झडी सम सार।
अणुयोगद्वार समय वलि वारू, वाणी अमृतधार॥
१३ वलि विविध हेतु दृष्टत देइ मुनि, कीधो वहु उपगार।
मुझ नै पिण वैराग वधाय नै, कियो दीक्षा ने त्यार॥
१४ ससार लेखे मुझ मात वनाजी, त्या रै हुतो पहिला ही वैराग।
कर्मचूर प्रमुख तप वहुलो, कीधो धर धर्म-राग॥
१५ किता मास पहिला महासतिया, सिरदाराजी सुखकद।
आज्ञा माग जागा मे उतरचा, मुझ तारण सती गुण वृद॥
१६ कथा हेतु दृष्टात विविध पर, सभलावी गुणधाम।
वनाजी रै वैराग वधायो, हुवा चरण लेण परिणाम॥
१७ वलि म्हारा पिण चारित्र लेवा रा, कायक भाव हुवा तिण वेर।
पछै शेषे काल अने चौमासे, करी जय महाराज वहु म्हेर॥
१८ जाणपणो सीखायो स्वामी, विविध प्रकारे ताम।
गुलावाजी ना पिण चरण लेवा सू, थया तव दृढ परिणाम॥
१९ जय वचनामृत जल पीवता, थया तीनू ना दृढ परिणाम।
भेला रमता वहु वालक मुज नै, कहता तमासा मे वच ताम॥
२० मघजी स्वामी करा वंदणा, वले निज मन थी कहै ते जीय।
थारा पात्रा मे घी इम कही वे कहै, बेठो बेठो ठडो पाणी पीय॥
२१ श्री जय स्वाम वचन सुण जाण्यो, छै तो ए वाक्य श्रीकार।
पछै युवराज पद दीधा जय भाख्यो, फल्यो वचन छोरा नो विचार॥
२२ पछै चौमासो ऊतरचा मुझ नै, रह्या दीक्षा देवा महाराज।
छो मृगशिर विद पचम नो मुहूर्त्त, आप पधारचा दीक्षा देवा काज॥
२३ पचम दिन पहिला पोहर माहे, थयो दिख्या मोछव मडाण।
काके भेला वेस नै जीम्या, पछै टीको काढचो गुण जाण॥
२४. हिव जीम नै अश्व नी जाति नै ऊपर, चढता चित्त ओच्छाह।
किण ही लोका रा कहण सू काको, उठाय ले गयो रावला माह॥

२५. उण दिन तो दीक्षा नही आई, तव श्री जय महाराज।
दडीबे रात्रि रही लाडणु आया, जमु हृदय गभीर 'अग्राज'[1] ।।
२६ पछै राज वाला सू पडुत्तर कर नै घर आय काका नै जणाय।
मात वहिन सहित हू तीनू, आया लाडणु सैहर रै मांय ।।
२७ श्री जय स्वाम तणा किया दर्शन, प्रसन्न थया तन मन्न ।
तव कर जोडी नै अर्ज करी म्हे, हिव दीजे चरण रतन्न ।।
२८. मृगशिर विद वारस तिथ स्वामी, पुर वाहिर पीराजी रे स्थान ।
सइकडा जन वृद माहि सामायिक, उचरायो चरण निधान ।।
२९ धिन धिन मात वनाजी धर्मणी, भलो लियो आज्ञा नो लाह।
हिव सुता भणी सयम दिवरावा, पोते रह्या संसार रै माह ।।
३० माह विद मे वीदासर आया, पछे माह सित अष्ठम धार।
मेवाड देश थी कागद आया, तिण मे ए समाचार ।।
३१ माघ कृष्ण चउदशि नी तिथि, लघु रावलिया मे जोय।
ऋषिराय महाराज परलोक पधारया, वारू गणि अतिशय धर अवलोय ।।
३२. ए समाचार सुण च्यार तीर्थ नै, घणी दोहरी लागी ताम ।
पिण काल सू जोर कोइ नही चालै, इम भाख्यो त्रिभुवन स्वाम ।।
३३ इम जाणी मुनि मन दृढ करी नै, तिण दिन कियो उपवास।
हिव पट्ट मोछव नो वर्णन प्राणी, सांभलो आण हुलास ।।
३४ ढाल भली ए च्यार तीसमी, कह्यो आठै ताइ अधिकार।
पद युवराज पणै जय स्वामी, तारया वहु नर नार ।।

कलश

३५ युवराज पद पणै खंड तृतीय, चउमास किया जय जिह विधे।
जिन मार्ग नो उद्योत अति फुन, कीध मुनिवर मन सुधे।
जिह रीत जीत सु वदीत समकित, चरण दे जन तारिया।
तिह रीत गुण सक्षेप थी, म्है ढाल कर सुविचारिया ।।

इति मघवागणिविरचिते श्री जयसुजशरसायणे जय मुनिना युवराजपदतया यथा यथा चतुर्मासा कृता, यथा यथा जिन मार्गस्योन्नति विधाय भव्य जना प्रतिवोधिता यथा-यथा जनाना वैराग्य विधाय चारित्र रत्न दत्त तद्‌गुण वर्णन नाम तृतीय खड समाप्त ।

---

१. अग्राह्य।

चतुर्थ खंड

ढाल ३५.

दोहा

१ अर्हन् सिद्ध मुनि जिन-धरम लोगुत्तम् मगलीक।
चिहु सरणा चित्त धर कहू, तुर्य खंड 'तहतीक'[१]॥

२. दानशील तप तीन सम, कह्या तीन वर खड।
भाव समो खंड तुर्य हिव, दाखू घणे 'घमड'[२]॥

३. ज्ञान दर्शन चारित्र त्रिहु, शिव मग साधक सार।
पिण तप थी कर्म दूर करी, पामै जन भव पार॥

४ तप समान हिव साभलो, तुर्य खड अवदात।
पाट विराज जय गणपति, पायो सुजश विख्यात॥

५. विचरचा जिम जनपद विषै, कीयो जिम उपगार।
जिम जिम भव्य जन तार नै दियो ज्ञान चरण गुणकार॥

६. जिन सदृश श्री जय गणि, तिरण भवोदधि पोत।
जिण मार्ग नो जिह विधे, कियो अधिक उद्योत॥

७. चउमासा जिह विध किया, सलेखण सुखकद।
अणसण जिह विध आवियो, कहु संक्षेप सवध॥

*महाराजा थारै पाट महोच्छव छिव भारी।
च्यार चीर्थ ना थाट सपदा, अति गह घाट उदारी जी।
महाराजा जय पाट महोच्छव छिव प्यारी॥ध्रुपदं॥

८. सवत् उगणीसै वर्ष आठै, माघ शुक्ल सुखकारी।
पूनम तिथ गुरु पुष्य नै योगे, 'विष्टि करण'[३] सुविचारी॥

---

*लय—महाराजा थारी निरखण द्यो असवारी...।

१. यथार्थ।

२. वीरता से—जोश पूर्वक।

३ विष्टि अर्थात् भद्रा नामक ज्योतिष के ग्यारह करणो मे से सातवा करण।

९. जय-जय नंदा जय-जय भद्दा, इम बोलै शब्द सुखकारी।
अण जीत्या नैं जीत, जीत्या री रक्षा कीजो गणधारी॥
१० इत्यादिक मंगलीक शब्द मुनि, स्तवना करी अति भारी।
वलि बीदासर वसती नो नायक, ते पिण आयो मोच्छव मे तिवारी॥
११ 'रामो'[1] तपसी पिण तिह वेलां, जावजीव सुविचारी।
'छठ-छठ'[2] निरंतर धारयो, अति उचरंग उदारी॥
१२ बहु त्याग वैराग थयो तिह वेला, थइ गुण रंगरेला अति भारी।
अतिशय धारी पर - उपगारी, उठ्या गोचरी सैहर मझारी॥
१३ तव जन मन हरष आनंद लह्यो अति, आया देख आगग गणधारी।
'असन वसन बहु वेहर नै ल्याया'[3], पाया चिमत्कार नरनारी॥

गणाधिप चरण करण गुण भारी।
ज्यारी मूरत मुद्रा प्यारी जी, गणीश्वर वान सुधा सुखकारी।
श्रवण किया भव्यजीव हृदय विच, उगै बोधि अंकुर उदारी॥ध्रुपदं॥

१४ ओपै गणपति नी अष्ट संपदा, गुण छत्तीस उदारी।
बहुश्रुत नी ओपम हद सोलै, शोभ लहै श्रीकारी॥
१५ विविध मर्याद बांधी हद गणपति, अति सुमति दीर्घा श्रीकारी।
सपति च्यार तीर्थ नी सखरी, वृद्धि करण सुविचारी॥
१६ गणि मुख आगल मुनि अति गेहरा, ज्येष्ठ बंधु जशधारी।
उपाध्याय सम अधिक ओपता, अति शांति श्रीकारी॥
१७ सतिया नी पिण संपदा सखरी, वर सतिय सिरदार उदारी।
वीर तणै जिम चंदनबाला, तिम आपरै ए गुणकारी॥
१८ ज्या विनय भक्ति करी विध-विध सूं, सुप्रसन्न किया गणि भारी।
तिण सू गणाधिप कुर्ब वधायो, किया सतियां में अधिकारी॥
१९ अतिशय धर मुनिराज तणै हिव, पट्ट वेसत ही श्रीकारी।
फागुण विद छठ तीन दीक्षा नो, थयो महोच्छव अधिक उदारी॥
२० संसार लेखे मुक्त सगी सहोदरि, गुलाबाजी अकन कुंवारी।
गर्भ सहित नवमा वर्ष माहे, वलि मात बना गुण भारी॥
२१. वलि तीजी हस्तु वृद्ध वय माहे, ए तीन दीक्षा ततसारी।
बहु मोच्छव इक साथ उचराई, स्व हस्ते सुखकारी॥

१. मुनि रामजी।
२. बेले-बेले (दो-दो दिन का उपवास)।
३. श्रावकों द्वारा दिया गया बहुत आहार और कपड़ा आदि लाये।

२२. दिशावान गणी पट बैठा, थइ धुर शिष्यणी अति भारी।
कुवारी किन्या अति बुद्धिवती, वहु विनय विवेक विचारी॥
२३ ढाल भली ए पाच तीसमी, तिण मे श्री जय गण सिणगारी।
तसु पट्टोत्सव विस्तार कह्यो फुन, कही तीन दीक्षा गुणकारी॥

ढाल ३६

दोहा

१. वीदासर इक मास रही, विहार करी गण-इद।
लाडणु पधारचा आविया, वहु मुनि धर आनद॥
२ दर्शन करवा कारणे, सतीदासजी आद।
वलि समण्या दर्शण निमत्त, आया धर आह्लाद॥
३. समण चालीस सहु थया, समण्या चोमालीस।
एक मास तिहा रही, विहार कियो गण ईश॥
४ पैतीस मुनि साथे पवर, सुजाणगढ वर सैहर।
रह्या दिवस वहु त्या गणि, करी भविक पर मेहर॥
५ शोभाचद जी तिह समै, विनती करी विशेष।
इक मेलो वीदासरे, कीजै वली गणेश॥

*गुणीजन साभलो हो सुगुणा, श्री जय-सुजश रसाल।
जे गणपति गुण ओलख जपै हे, तिण रे फले मनोरथ माल॥ध्रुपद॥

६. तव मानी वीनती मुनिपति हे, आया वीदासर महाराज।
त्या चिहु वाया वीकानेर थी हे, आई चारित्र लेवा काज॥
७ गोलेछा हस्तीमल्लजी, तसु वनिता सुविचार।
वरजूजी नामे भली, दोय सुता तसु लार॥
८ चादकुवर नामे वडी, 'शील-सप्तम'[1] सुविचार।
पनर वर्ष नी वय मझे, थइ मा साथ चरण नै त्यार॥
९. आठम शील व्रत आदरचो, नवमी दिन अवधार।
पिउ परदेशे परभव गयो, सुणिया 'तीज'[2] दिवस समाचार॥

---

१ चैत्र कृष्णा ७।
२. चेत सुदि ३।
*लय—नवलीचद नी हेक साजन विन ऋतु वरसै मेह...

१०. लोक तदा धिन-धिन कहै, सती नै आगूच सूज्यो एह।
पछै वहु हठ सू सासरियां तणी, आज्ञा ले गुण गेह॥
११. कुवारी किन्या लघु सुता, हरखू पिण मा संग।
वाठिया सिरदार सिघ सुत वहु, चोथी मोता पिण उचरंग॥
१२ ए चिहु नैं चारित्र दियो, इक साथ गणि निज हाथ।
वैशाख विद सप्तम दिने, गणपति सुजश जगत् विख्यात॥
१३ सहु ठाणा तयासी त्या थया, 'इक मास रही गणनाथ'[1]।
लाडणु डीडवाणे होय नै, आया वोरावड़ विख्यात॥
१४ तिहा ठाकुर मंगलसिंघजी, 'कुमर'[2] 'भमर'[3] ले संग।
गणपति सन्मुख आविया, करी सेवा धर उच्चरंग॥
१५. वखाण वाणी विध-विध करी, वांचत आप गणिद।
वहु सुमति सुधा रस पावता, करी मर्यादा सुखकंद॥
१६. तिहा सिघाडावंध सतियां कने, अक्षर लिखाया ताय।
सूप्या पाडिहारा पुस्तक सत्या, ते छै गणपति की नेश्राय॥
१७ ते चतुर्मास उतरया छता, सतिया दर्शण करै जिवार।
सूप देणा पुस्तक सत्यां, तिण री ममत न करणी लिगार॥
१८. वलि तिण वर्षे मेरा वहु, वाधी तनु कारण मे संच।
आथण उष्ण मंगाविया, मुनिवर विघय न लेणी पंच॥
१९. इत्यादिक सीमा वहु, तेहनो वहु विस्तार।
संवत् उगणीसै आठ आदि की, जय कृत वडी मर्याद मझार॥
२०. ते देखी भवि जाणज्यो, वडी तणो अपेक्षाय।
'लघु मेरा लकारादि नी'[4], गणपति करी वंधोवस्त सवाय॥

---

१. जयाचार्य माघ शुक्ला १५ को बीदासर मे पदासीन होने के पश्चात लाडनू पधारे। वहा वहि-विहारी साधु-साध्विया गुरु-दर्शनार्थ आये। उन्होने दुवारा पट्टोत्सव मनाने की प्रार्थना की। शोभाचन्दजी बैंगानी ने भी पुन बीदासर को उक्त अवसर दिलाने के लिए निवेदन किया। तव जयाचार्य उन सवकी भावना को पूर्ण करने के लिए बीदासर पधारे और एक महीने तक विराजे। वहा ज्येष्ठ कृष्णा ४ को दूसरी वार पट्टोत्सव मनाया गया उसका स्वय जयाचार्य ने उल्लेख किया है :

'सवत् उगणीशे आठे समे, ज्येष्ठ कृष्ण चोथ जाण।
पट मगल पद पामियो, बीदासर सुविहाण॥'
(भिक्षु गुण वर्णन ढा० २० गा० १३)

२. पुत्र।
३. पौत्र।
४. छोटी मर्यादा लड्डू आदि खाद्य पेय द्रव्यो की।

२१ त्या निरणो जुदा-जुदा वर्ष नो, तिण थी जाण लीजो सुविचार।
ठाम-ठाम वर्णन किया, वधै ग्रथ विस्तार॥
२२. हरिगढ होय पधारिया, जोवनेर गण - इद।
तव भोलायो सती सिरदार नै, तिहा चतुर्मास सुखकद॥
२३ उगणीसै नवकै समै, जैपुर मे चौमास।
चउदश मुनि थी गणपति, कीधो धर्म उजास॥
२४ त्या उपगार थयो घणो, हरियाणा थी आय।
श्री जय वचनामृत सुणी, पायो वैराग अधिक मन माय॥
२५ रामदत्त सुत पोतादिक तजी, थयो चारित्र लेवा त्यार।
वहु मोच्छव मोहनवाडी मझे, गणि अदरायो चरण उदार॥
२६. ए ढाल छत्तीसमी मे, शेषे काल विचर गणिराय।
जयपुर चौमासे धर्म नो, गणि उद्योत कियो अधिकाय॥

ढाल ३७

दोहा

१. मृगशिर विद एकम दिने, विहार करी रह् वाग।
झूठवाडे वीजे दिने, रह्या गणी महाभाग॥
२. वीकानेर थी तिह समय, वाई मघु गुणमाल।
'समय'[1] सत्तावीस सग ले, आई चरित लेवा चाल॥
३. तसु दीक्षा देवा तुरत, झूठवाडा थी जोय।
जयपुर सैहर पधारिया, स्वाम समय अवलोय॥
४. जोवनेर थी जिह समय, सती सिरदारा आद।
दर्शण करण गणश ना, आया धर आल्हाद॥
५ मृगसर विद पचम दिने, मघुजी नो जाण।
दीक्षा ना मोहच्छव तणो, मड्यो वहु मंडाण॥

*स्वाम सुखकारी रे, गणि जशधारी रे।
जशधारी महिमा निला गु०, मुनिपति मुक्ति दातार।
भवि जन्म-मरण दुख मेट ने गु०, गणि उत्तारै भव पार॥ध्रुपद॥

---

१. सूत्र।
*लय— मोजी तुर्रा रे...

६. मोहनवाडी मे महामुनि गुणधारी रे, तिहा मघुजी नैं सुविचार।
समायक चरण समापियो, थयो ओच्छव अधिक उदार॥
७ महासती सिरदार नैं, सूप्या मघुजी नैं सुखकार।
हिव जयपुर थी जय गणपति, कियो जोवनेर दिशि विहार॥
८ रह्या एक मास जोवनेर मे, तिहा आया समाचार।
मुनि सतीदास गुण-सागरू, अति सोम्य प्रकृति श्रीकार॥
९ सखर वीदासर सैंहर मे, कियो अचाणचक काल।
तव सरूप - शशी तिण अवसरे, वहु साहज्य दियो सुविशाल॥
१०. ते चल्या सुणी चिहुं तीर्थ नैं, अति दोहरी लागी मन माय।
तव जेष्ठ वंधु थली देश थी, आया गणि पे तुरत चलाय॥
११. तव गणपति मुनि जन - वृंद सू, दीक्षा वडा ज्येष्ठ वधु जांण।
सन्मुख जइ वदना करी, अधिक हरख मन आण॥
१२ तव विनय देख गणिराज नो, जन पाम्या चित्त चिमत्कार।
पछै ज्येष्ठ वधु संग आविया, वारू जोवनेर जयकार॥
१३ सतसठ ठाणा त्यां थया, हिव विहार करी गण-इंद।
हरिगढ सैहर पधारिया, पेखी पाम्या जन आनंद॥
१४. तिहां समण सत्यां रै स्वामी, वाधी इक मर्याद।
सतिया नै आहार देवा तणी, कोइ पुष्ट प्रयोजन लाध॥
१५. कह्यो सूत्र मे पुरुप नो, वत्तीस कवल नों आहार।
स्त्री नो कवल अठवीस नों, ए समय वचन अनुसार॥
१६ तिण प्रमाण समण्या भणी, आहार देणो ठहरायो स्वाम।
इम आहार लेइ सतिया सहु करै, पाती 'वडी रै ठाम'[1]॥
१७ तिहां एक मास रह्या गणपति, तव एक वाई गुण-राश।
दीक्षा लेवा देशणोक थी, आइ नाम जसोदा जास॥
१८ वहु मोच्छव सजम आदर्यो, सती जसोदा जयकार।
अति घाट देख मालव तणा, जन अर्ज करै जिहवार॥
१९. जाति काकरीया उजीण ना, वासी मोतीचंद।
कहै मालव धरा कृपा करी, दर्शण द्यो गग-इंद॥
२० विविध अरज वच साभली, थया दर्शण देवा रा भाव।
जिम चक्री साधै देश नैं, तिम कियो विहार तिणे प्रस्ताव॥
पूज्य सुखकारी रे॥ध्रुपदं॥

१. वड़ी (प्रमुख) साध्वी के स्थान पर।

२१. हरिगढ थी मार्ग पाधरै, आया वणेरे स्वाम।
तिहा राजाजी दर्शण करी, पाया गणि वच सुण मन आराम ॥
२२ तिहा पट् दिन रहिनै आविया, 'भीलोडे'[1] गणनाथ।
त्या ठाणा छयासी छाजता, तव जोगीदास कहै जोडी हाथ ॥
२३ मोखणुदे मुज ग्राम मे, मुझ पुत्री खेमा नाम।
गुणवंती वैरागण तेहनै, द्यो स्वहत्थ सजम स्वाम ॥
२४ तव कृपा करी स्वाम सरूप नै, म्हेल्या सजम देवा काज।
वलि समणी नवलाजी भणी, गणि तारण तिरण जिहाज ॥
२५ शीघ्र चरण देइ खेमा भणी, ल्याया गणपति पे गुणखान।
सती सिरदारा नै स्वामजी, सूपी सती खेमा सुखदान ॥
२६ हिव विहार करी भीलोडा थकी, पुर मे पधारचा स्वाम।
ठाणा इक सौ वीस नै आसरै, थया नित्य प्रति पवर हगाम ॥
२७. ए ढाल भली सैंतीसमी, तिण मे पूज्य भवोदधि पाज।
वर देश मेवाड पधारिया, जैपुर हरिगढ साज ॥
स्वाम सुखकारी रे ॥

ढाल ३८

दोहा

१. तिहा दर्शण करवा पूज ना, आया ग्राम ग्राम ना लोक।
दर्शण कर हरषित हुवा, जिम रवि दर्शण 'कोक'[2] ॥
२ केइ आता केइ जावता, केइ हर्ष हिलोला खात।
केइ भणता गुणता विध विधे केइ गुण स्तव करत विख्यात ॥
३. उदैपुर श्रीजीदुवार ना, वले राजनगर विख्यात।
गंगापुर प्रमुख वहु, कहै सहु मिल श्रावक साथ ॥
४ अवके देश मेवाड़ पर, कृपा करी गणिराज।
दर्शण दे पावन सुजन, करो गणी गुण ज्याझ ॥
५ दर्शण दे मेवाड मे, चतुर्मास उतरेह।
महिमा धर मालव जना, पवित्र करो गुण गेह ॥

---

१. भीलवाडा।
२. चकवा

६. ऋषभदास फोजमलजी, आदि श्रावक अरदास।
साभल गणि मेवाड मे, रह्या अधिक हुलास॥

७. *पुर मे रहि इक मास, विहार कियो गणी।
करता धर्म उजास, प्रगट जिम दिन मणी।
वागोर 'वाहुला'[1] होय, आमली आविया।
पछै गगापुर गणि आय, वचोमृत पाविया॥

८ त्या जवरी भेरूलाल, दर्शण किया पूज ना।
त्या थी कोशीथल सुविशाल, आया गणि शुभ मना।
त्या ठाकुर ले जन-वृद, दर्शण करवा आविया।
पाया परमानंद, गणि गुण गाविया॥

९ त्या तपसी अनोप सु तत, आय अर्जी करी।
दिन इक सो एकाणु भदंत, पचखावो हित धरी।
जल आछण आगार, रीति मुनिवर तणी।
पच्चखायो तप सार, मनुहार कर गण-धणी॥

१० त्या थी रायपुर ताम, स्वाम आया जिहा।
लाडणु थी गुण धाम, वाई इक आई तिहा।
दूगड़ सिवजीराम, तास वहु दीपती।
अति अभिराम सु नाम, गुन्नावा गुणवती॥

११ तिण धारचो अठतरे शील, जाणपणो दिल घणो।
वहु परिवार समील, तज उम्हावो व्रत तणो।
'नृपपुर'[2] मोखणदे आय, लाभ धर्म नु अति।
लियो ल्हावा रै माय, परम गुरु गणपति॥

१२ पछै आवावती जन तार, आगरिये आविया।
करी ठाकुर वहु मनुहार, गणि रीझाविया।
त्या वे दिन रही गणनाथ, पधारचा केलवे।
त्या ठाकुर पुर जन साथ, भक्ति करी इम 'लवे'[3]॥

१३ धुर सू चरण चौमास, गणाधिप इहा किया।
तिण सू आप सुविमास, कृपा वहु राखिया।

*लय—नदी जमुना के तीर...
१ वावलास।
२. रायपुर।
३ कहते है।

तव गुलावाजी गुणवंत, अर्ज विध विध करी।
लियो चरण रयण कर खंत, आत्म निज उद्धरी॥

१४. तज वहु रिद्ध भरतार, परिवार फुन महासती।
श्री जय कर व्रत धार, हर्ष पायो अति।
महासती सिरदार, भणी गणी सूपिया।
तव लह्यु हर्ष अपार, गणि वच अमृत ज्यू पिया॥

१५ हिव राजनगर रै माय, पूज्य पधारिया।
वर वयण अमी रस पाय, भविक वहु तारिया।
काकरोली धोइदे होय, कोठचारे कृपा करी।
पछै श्रीजीदुवारे सुजोय, रह्या चित्त हित धरी॥

१६. तव देश मेवाड मझार, उपगार घणो थयो।
केइ लिया व्रत वार, सार धर्म केइ ग्रह्यो।
श्री जय स्वाम दयाल, विशाल गुणोदधि।
तसु वच अधिक रसाल, सुण्या होय मन शुद्धि॥

१७ ए तीस नै अठमी ढाल, कृपाल जय गणपति।
मेवाड में गुणमाल, न्हाल गुण मुनि सती।
वहु परिवार समेत, सचेत संजम गुणे।
सहु पर जसु 'सम नेत'[1], चौमास कियो महामुने॥

ढाल ३९

दोहा

१. उगणीसै दश के वर्ष, श्रीजी दुवारे सैहर।
द्वादश मुनि चउमास मे, राख्या करी वहु मैहर॥

२ सिरदाराजी आदि दे, पनर सत्या गुण पूर।
करै सेव गणपति तणी, दिन दिन चढत 'सनूर'[2]॥

*वारी रे जाऊ म्हारे सतगुरु की, वलिहारी श्री जय मुनिवर की।
म्हारे सतगुरु महा उपगारी।
'ज्ञान चरण नौ'[3] दे भवि तारै, भीम भवोदधि भारी॥ध्रुपद॥

---

१. समान दृष्टि।

२. तेज

***लय—वारी रे जाऊं म्हारे...**

३ ज्ञान, चारित्र रूप नाव

३ जग सिणगारी पर उपगारी, महिमा गर गुण भारी।
वोधि चरण विहुं वस्तु अमोलक, दायक जन जश-धारी॥
४. त्यां दर्शण करवा देश देश ना, आया वहु नर नारी।
दर्शण कर अति प्रसन्न हुवा, देख देख सुगुरु दीदारी॥
५ फुन देश मेवाड जन 'उलट धरी'[1] अति, आया दर्शण करण उदारी।
लोक वोल्या इहां आया 'जात्री,'[2] वे सहस्र अधिक सुविचारी॥
६. दीपमालिका रै दिन गणपति, त्या समण सत्या रैं सारी।
पांती आहार नी सहु रैं वरोवर, ए रीति ठहराई भारी॥
७. करणी ते मुनिवर नैं ठिकाणै, पाती सखर श्रीकारी।
अठाइस वत्तीस कवल न राख्या, अवसर देख उदारी॥
८ हिव चौमास ऊतरयां आया, थइ गोगुंदे गुणधारी।
ऋषिराय महाराज रै जन्मभूमि हद, गांम रावलियां गुणकारी॥
९ तिहा पोह विद नवमी दिन प्रभाते, भीक्खू स्वाम लिखत अति भारी।
मुनि ऊभा थइ नै नित्य सुणवारी, करी स्थापन अति गुणकारी।
१०. तसु गण-विशुद्ध-करण हाजरी, दियो गुण-निप्पन नाम भारी।
गण अति निर्मल करण गणाधिप, वांधी मर्याद उदारी॥
११. थयो इक मास आसरै हाजरी, ऊभां सुणतां मुनि सुविचारी।
जयाचार्य नै स्वपन आयो तव, ते सांभलजो सुखकारी॥
१२ मुनि ऊभा हाजरी सुणता जन नै, दर्शण न ह्वै धारी।
तिण सू वेठा सुणै तो ठीक है, तठा थी वेठा सुणै श्रीकारी॥
१३. पछै लघु रावलिया नांनसमे, पदरारे सेमल सुविचारी।
सायरे सेरानला मे विचरि, आवै उदियापुर उपगारी॥
१४. सैंहर थकी वे कोश आसरैं, आया वेदले गाम मझारी।
रात रह्या त्यां प्रात रावजी, तव कुवर प्रमुख ले लारी॥
१५ लोक समूह सू सुण वचनामृत, पाया चित्त चिमत्कारी।
धर्म देशन दे विहार करी गणि, आया उदियापुर उपगारी॥
१६ पछै तलेसरा ऋषभदास नौहरा मे, मुनि रह्या इकतालीस उदारी।
फुन तास हवेली मे रह्या समण्या, इक सौ तीन विचारी॥
१७ ए इक सौ चमाली मुनि अज्जा नी, पांती आहार नी सारी।
मुनि नैं ठिकाणै करता मुनिवर, वर चोक[3] अधिक हुशियारी॥

---

१. उमड-उमड कर।
२. मेवाड़ी भाई-वहन।
३. चार फुलकों का एक चोक होता है।

१८. राणाजी रै पिण गणी त्या रहिता, थई धर्म रुचि भारी।
असवारी मे देख मुनिश्वर, कियो नमस्कार सुविचारी ।।
१९. ए उणचालीसमी ढाल विषै गणि, विचरी मेवाड मझारी।
लघु मास खमण उदियापुर रहि करी, मालव जावा नी त्यारी ।।

ढाल ४०

दोहा

१ हिवै गणी महिमानिला, मालव नी मन धार।
वहु मुनिवर परिवार सू, विहार कियो सुविचार ।।
२. सैहर कानोड पधारता, वड मोती मुनि लार।
गाम डवोक पे डूविया, तीन मुनी भव-वार[1] ।।
३. थयो जीवराज लघु कर्म वश, कर्म जवर जोधार।
धनजी नै दीधो धको, हमीर गयो भव हार ।।
४ राजनगर वासी जवर, लिखमीचंद जइ लार।
दड दराय समझाय नै, लियो लघु जीव नै तार ।।
५. दोय जणा समज्या नही, वदता अवर्णवाद।
जवर कर्म जिण जीव रै, ते किम लहै समाध ।।
६. सुखे सुखे गणिराज हिव, आया सैहर कानोड।
भाया वायां वहु ग्राम ना, सेव करै धर कोड ।।
७. वयालीस सतिया तिहा, 'वाचंयम'[2] वत्तीस।
ठाणा चिहोत्तर थाट अति, रह्या रात्रि इकवीस ।।

*नित्य वंदो पूज्य महिमानिला, भवि तारक हो भला भरत मझार क।
जस ज्ञान चरण गुण ऊजला, कला चढती हो दिन-दिन श्रीकार क ।।
ध्रुपद।।

८. तिहा सैहर कानोड मे स्वाम जी, अति वहुलो हो कीधो उपगार क।
जन सुलभ वोध वहुला थया, केइ करता हो जन भव निस्तार क।

---

१. भवजल (ससार-समुद्र)
२ साधु
***लय—हूं बलिहारी हो यादवां**

९ तिहा मालव देश थी आविया, मयाचंदजी हो अग्रवाला जात।
वले भेरजी गाधी भाव सू, सेवा करवा विहुं गणपति साथ॥

१० हिव विहार कियो कानोड थी, 'देशन'[१] हो गणि अमृत वाण।
तिहां भीलोडा थी आवियो, गंभीरमलजी सिघी गुण खाण॥

११ हिव चिताखेडा मे आय नै, समझाया हो तिहा वहु जन जान।
विहार कर नै अव तरुवर तले, दीधी देशन हो भवि अमिय समान॥

१२ हिव मदसोर सैहर पधारिया, तव सहु ठाणा हो थया अडतालीस।
त्या वादरमलजी वाठियै, कीधी सेवा हो मन अधिक जगीस॥

१३ तिहा दर्शण करवा जन ऊमटचा, वहु आवै हो थइ झूलरा जेह।
गणि वयण सुणी विकसित हुवै, गुण गावै हो पाछा जाता गेह॥

१४ हिव रतलाम थी तिहा आविया, गणि वंदण हो मन आण ओच्छाह।
जणा पचास रै आसरै, देखी पाम्या हो जन अचरज ताहि॥

१५ हिव त्रिण रात्रि मंदसोर रहि, 'रत्नपुरी'[२] नै हो कीधो गणि विहार।
मजले मजले हो जावरै थइ करी, रत्नपुरी मे हो आया जिह वार॥

१६. तदा श्रावक ने वहु श्रावका, साहमा आया हो करवा गुरु सेव।
सप्त वीस मुनि संग परवरचा, जन तारक हे जिन जिम गुरुदेव॥

१७ पछै सरूप शशी पिण आविया, सन्मुख पधारचा हो पूज्य महा पुन्यवान।
सती सिरदाराजी आदि दे, थया ठाणां हो पैसठ गुणखान॥

१८. तिहां दर्शण करवा वहु आविया, उजेणी नगरी हो इंदोर ना ताम।
वखतगढ प्रमुख वहु ग्राम ना, विनती करता हो दर्शण दीजै स्वाम॥

१९. तव सतीय गुलाव भणी तिहा, निकली 'माता'[३] हो स्वामी तिण पर जोग।
सतीय सिरदार भणी तिहां राख नै, आप तारै हो हिव 'जनपद लोग'[४]॥

२० ए चालीसमी ढाल मे, मालव देशे हो गणपति मतिवत।
भवि भाग्य दिशा थी पधारिया, 'जंगम-तीर्थ'[५] हो 'देशक शिव पथ'[६]॥

---

१. प्रवचन।
२. रतलाम।
३. चेचक नामक रोग।
४. देशे (मालव) की जनता।
५. चलता-फिरता तीर्थ।
६. मोक्ष मार्ग का उपदेश देने वाले।

ढाल ४१

दोहा

१. रह्या रात्रि रतलाम मे, सप्तवीस जय स्वाम।
विहार करी वदनावरे, गणि आया गुणधाम ॥

कपूरजी कृत जयाचार्य

*सावलाजी आयजो म्हारे सैहर।
पूजजी पधारो म्हारे सैहर, दीज्यो सुख सायर नी लैहर ॥ध्रुपद॥

पूज वादी नै पाछा गया जी काई, रतलाम ना नर वृद।
वखतगढ ना श्रावक भला जी, आई भेटचा भाजण भव फद।
ऋपभदास मोदी नै रंग सू जी, स्वाम कहै सता धारी सीख।
ऋपभदास दाखै दयानिधि रे, एक दृष्टात राजा नो ठीक ॥
"सभू चाकर! सुण उदरा रे, तू हिव दीजै समझाय।
मोहरा कोला खात्रै नही रे, पदमसिह पाट पद पाय"[१] ॥

दोहा

२. वखतगढ गुण दृढ गणी, ठाणा थया सेतीस।
त्या सरूपचंदजी स्वाम नै, चतुर्मास गण-ईश ॥

ऋपभदासजी द्वारा दिया गया दृष्टान्त—

१. एक जागीरदार के यहा 'शभूडा' नामक नौकर रहता था। जागीरदार साहब के निकटतम रहने से वह कुछ उनके मुह लगा-सा हो गया। जागीरदारसाहब अपने जो भी गहने, कपडे आदि उसे रखने के लिए देते उनमे से समय देखकर वह अपने घर ले जाया करता। पूछने पर कहता कि जिस मकान मे जेवर, कपडे आदि रखता हू वहा 'कोल ऊदरे' (वडे चूहे) वहुत है। अत वे गहने, कपडे आदि ले जाते हे। जागीरदार मन-ही-मन समझ तो लेते पर कृपापात्र होने से कुछ नही कहते। इस तरह कई दिनो तक काम चलता रहा। आखिर जव जागीरदार साहव वृद्ध व वीमार हो गये तव उस शभूडे से कहा—देख! मै तो अव परलोक जाने वाला हू, मेरे पीछे मेरा यह पुत्र पद्मसिह गद्दी पर वैठेगा, उसकी प्रकृति कुछ और है अत तू अपने सारे कोल ऊदरो को समझा देना कि वे मोहरे आदि खाये नही अन्यथा वह पद्मसिह तुम्हारा समूचा खाया-पीया निकलवा लेगा। यह सुनकर शभूडे ने विना ननुनच के उनकी वात मान ली और अपनी आदत को वदल ली।

इस दृष्टान्त की तुलना करते हुए ऋषभदासजी वोले—प्रभुवर! आपके प्रभावशाली व्यक्तित्व एव प्रखर तेज से सभी साधु समझ गये है और आपके चरणो मे समर्पित होकर श्रद्धापूर्वक आपके अनुशासन मे चलते है।

*लय—सांवराजी

३. खरतरगढ भोलाय नै, वलि शिव ऋषि कर्मचंद ।
अनोपचंद 'मेरा'[1] भणी', जूजूए गाम गणिंद ॥
४. चतुर्मास भोलाय नें, विहार करी गणिराज ।
रत्नपुरी हिव समवसर्या, जन तारक जिम ज्याझ ॥

*गणि गुण सागरू हो ॥ध्रुपदं॥

५. संवत् उगणीसै इग्यारे, वर्ष पुरि रतलाम ।
पनर मुनिवर सू चौमासो, कियो स्वाम गुण धाम ॥
६ सिरदारांजी आदि देइ, सतियां तीस उदार ।
वलि चरचा वार्त्ता करी वहु विध, थयो अति उपगार ॥
७ देहरापंथी वावीस टोला, —तणा श्रावक वहु ताम ।
प्रश्न पूछ चित्त प्रसन्न थई, वहु करत जन गुण ग्राम ॥
८ त्या मेवाड मालव फुन थली ना, दर्शण जन वहु कीध ।
अन्यमति पिण चित्त लह्या अचरज, अति देख जय समृद्ध ॥
६ इक दिवस विभूतसिंघजी, पटवा आदि पिछाण ।
मंदिरपंथी जन वृंद सुणतां, पूछ्यो प्रश्न इक 'द्विज'[2] ताण ॥
१०. कने वेठा मुनि देख पूछ्यो, काई श्रद्धो छो यां नै आप ।
जव जयाचार्य मन विचार जाण्यो, इण रै दीसै मन कपट किलाप ॥
११. या नै हू साधु सरधू इम कहै मुझ, कदा ओ कहेला एम ।
या माहिलो कोई अभव्य ह्वै तो, थे साधु कहो छो केम ॥
१२. या रा मन री काई खवर तुझ नै, इण रा दीसै ए अभिप्राय ।
तो हिवडा इण नो जाव एह नें, नही देणो इह ठाय ॥
१३. इम विचार तर्क कह्यो तिण नै, कोई किण नै पूछ्यो ताम ।
कहै तुझ जनक नों नाम काई, तो ऊ किण रो वतावै नाम ॥
१४. तव ते धर्म द्वेषी न दियो उत्तर, रह्यो ताम चुपचाप ।
जद विभूतसिंघजी जाव दीधो, मात जाणै सो वाप ॥
१५. जद जयाचार्य कह्यो ऊ नर कहै, जिन जनक नो नाम ।
तेहनो पिता तेहिज छै के, अन्य जन कहै तांम ॥
१६. तिण रै पिता री खवर निश्चै, अवर नै किम होय ।
पिण ववहार मे जसु सुत न वाजै, कहै नाम् तेहनो लोय ॥

---

१. साध्वी सेराजी (१६६)

*लय—राघव आवियो हो...

२. ब्राह्मण ।

१७ तिम म्हे या नै साध कहा ते, ववहार मे कहा जोय।
निश्चै तो केवली जिनवर, कहै ते सत्य होय॥
१८ इम जाव सुण नै लोक वहुला, पाया चित्त चिमत्कार।
गणपति ना गुण ग्राम सुगुणा, करत वहु नर नार॥
१९ वलि देहरापंथी प्रमुख जन वहु, पूछ्या प्रश्न विविध प्रकार।
सघन झडी सम जाव सुण नै, केइ सुलभ वोधि थया सार॥
२०. तव माधोपुर नै पास हुतो, सूरवाल इक ग्राम।
त्या चिमन ऋषि नी सुता भतीजी, कुवारी किन्या ताम॥
२१ श्री जयाचार्य पास आवी, अर्ज करती आम।
हरवगसा नै वृधु कहै विहु, मुझ तारो गणी गुण धाम॥
२२. आसोज विद छठ गाम वारे, मोच्छव वहु मडाण।
'म्याना'[1] मे वेठी चमर ढुलता, वलि गज कोतल निस्साण॥
२३ जयाचार्य हाथ सजम, लियो धर उचरग।
थयो धर्म नो उद्योत अति ही, जन लह्यो अधिक उमंग॥
२४. ए एक चालीसमी ढाल माहे, कही रत्नपुरी नी वात।
वलि मालव मे थइ धर्म महिमा, निसुणो ते अवदात॥

ढाल ४२

दोहा

१. वलि चौमास मे आविया, 'फोजमलजी'[2] आद।
हिव ऊतरियो चौमास पिण, गणि सेव करै आल्हाद॥
२. दर्शण देई वखतगढ, रह्या तिहा गणिराज।
तपसी रामा नै दियो, सखरो अणसण स्हाज॥
३ तप तो त्यां वहुलो कियो, दोढ मास इक वार।
दिन इकताली वार वे, तप छुटकर वहु धार॥

---

१. एक प्रकार की डोली, पालकी या पालना, जो चारो ओर मे ढका हुआ होता है, इसके दोनो ओर मुंह होते है। यह पर्दानशीन स्त्रियो के आवागमन के काम आता है।
२. नाथद्वारा के प्रमुख श्रावक फौजमलजी तलेसरा।

कलश

४ कहू तप तणो अधिकार, वार इग्यार मास किया भला।
आठा लगे एकाणवा थी, नित एकंतर निर्मला।
आठे वर्ष जय पाट मोच्छव, छठ-छठ तप नित धारितं।
वखतगढ ग्यारे मृग विदे, जज पास कार्य सारितं॥

दोहा

५ विहार करी हिव आविया, झखणावद मे आप।
विविध प्रकार उपदेश दे, मेटत भवि सताप॥

६. पटलावद दिया पूज जी, दर्शन मृग सित माह।
मेवाड ना फोजमल प्रमुख, करै वहु सेव सोच्छाह॥

७. हिव पोह विद पचम नै दिने, झखणावद गण-इद।
आछ आगार पट् मासी नो, स्व हत्थ धर आनंद॥

८ ऋषि अनोप अणगार नै, कराय पारणो आप।
लाभ लियो अति धर्म नो, जसु रह्यो जगत् जश व्याप॥

*हो म्हारा तिरण तारण गुण ज्याझ गणाधिप, मालव देश तणा जन तारचा॥
ध्रुपदं॥

९. हिव झखणावद सू विहार करी नै, सैहर पटलावद श्रीकार।
पाछा पधारचा पूज परम गुरु, करिवा भविक निस्तार॥
हो म्हारा तिरण तारण गुण ज्याझ गणाधिप, मालव देश मे धर्म दीपायो॥ध्रुपद॥

१० पटलावद थी विहार करी नै पधारचा, थाट थांधले धर्म नु कीधो।
समय न्याय चरचा विविध पणै करी, वारू लाभ अधिक गणि लीधो॥

११ त्या दर्शन करवा इंदोर थी आया, खूवचंदजी श्रावक भारी।
हिव झाडी वंके झावुए जावा नै, जन तारण थया गणी त्यारी॥

१२ श्रावक साथे इंदोर आदि ना, हिव झावूए सैंहर मझारी।
जिन धर्म नो उद्योत कियो हद, त्या चिमत्कार लह्या नर-नारी॥

१३. त्या खूवचदजी करी अति अरजी, हिव मुरजी करी आप पधारो।
सैहर इदोर मे दर्शण दीजै, कीजै भविक जीव निस्तारो॥

१४. इह अवसर हिव राणापुर ना, भाया अरज़ करी अधिकेरी।
आगे त्या मुनि नो पधारणो न हुवो, थास्यै धर्म वृद्धि वहुतेरी॥

---

*लय—हो म्हारा तारण तरण

१५ तव वहु उपगार विचार गणाधिप, स्वाम सरूप भणी तिहा राखी।
त्या थी पंच कोश राणापुर मे पधारचा, भल देशन अमृत भाखी ।।
१६ त्यां साधु नो आचार विध-विध ओलखायो, वलि श्रद्धा नी रहिस वताई।
तव घणा जणा गुरु धारणा कीधी, वारू जिन धर्म जोति जगाई ।।
१७. तिहां दोय रात्रि रही फिर आया, पाछा झावूए सैहर मझार।
वहु उपगार करी विहार हिव कीधो, इदोर दिशि सुखकार ।।
१८ त्यां थी दत्ती गाम राजगढ नै खिलोडी, थइ नागदै नै केसूर।
सैहर इंदोर हिव पूज पधारचा, प्रगटचो भवि जन आनंदपूर ।।
१६. अन्य मति स्वमति लोक वहु आवै, वाणी सुण नै हर्प वहु पावै।
ठाणा वोहितर थया तिहा भेला, गुरु दर्शण चित्त हुलसावै ।।
२० त्या माह सुद पूनम वहु मुनिवर समणी, ढाला जोड गुणा री गाई।
ते वर्प थी पाट मोच्छव रीत ठेहरी, प्रगट वर्पोवर्प सुखदाई ।।
२१ 'मोतीझरो'[1] मुझ ने त्या निकल्यो, थइ खासी अति तिहवारी।
मास खमण रही विहार करी नै, पधारचा वे कोश सुविचारी ।।
म्हारा तिरण तारण गणिराज, कृपा कर दर्शण दीजै कै सग लीजै।ध्रुपद।।
२२ तव म्है मुनि सग अर्ज कराई, मुझ नै साथे ले चलो स्वामी ।।
आप विना मुझ रहिणो न होवै, दर्शण द्यो हिव अतर्जामी ।।
हो म्हारा तारण तरण गुण ज्याझ गणाधिप, पाछा इदोर मे दर्शन दीजै।ध्रुपद।।
२३ जव उठाय नै संग लेवण रो कियो मन, तव लालचन्द वोरड वैद्यराज।
खूवचंदजी प्रमुख 'शक्त'[2] अरजी कीधी, स्वाम सुणो गरीवनिवाज ।।
२४ हाल पाणीझरा नै सप्तवीस दिन न हुवा, पहिला उठाय सग ल्यो केमो।
मार्ग मे रखो[3] रहिणो है अति दुक्कर, तिण सू दर्शण देइ करी शिष्य क्षेमो ।।
२५ इम अर्ज सुणी गणि पाछा पधारचा, ए ढाल वियालीसमी कही ततो।
मालव देशे जिन मार्ग जमायो, जय स्वाम जवर जशवतो ।।

ढाल ४३

दोहा

१. दिवस कितायक त्या रही, मुज पाणीझरो पिछाण।
ढलिया थी गणिराज हिव, विहार कियो गुण-खाण ।।

१. एक प्रकार का ज्वर।
२ जोर देकर।
३. पथ्य परहेज।

२. वालक वय मुज नै तदा, ऊंचाय नै अणगार।
गणि हुकमे निज साथ मुज, ल्याया उजेण मझार।।
३. हिवे पूज्य उजेण पुरि, कियो अधिक उपगार।
मुझ तनु पिण ओपधि किया, थयो 'करार'[1] तिवार।।
४. विहार करी हिव गणपति, वडनगर वड भाग।
केयक दिन त्या रही लियो, रत्नपुरी नो भाग।।
५ दिवस किना रतलाम रही, खाचरोद धर कंत।
समण सत्या परिवार सू, आया गणी महंत।।

*गणी गुणधारी रे, गणी गुणधारी रे।
चिहु तीर्थ सपति, पुन्य दिशा हद भारी रे।।
वर अति जश महिमा, फैली मुलक मझारी रे।
म्हारै परम पूज्य नी, मुद्रा भवियण प्यारी रे।।

६ खाचरोद मे दिवस किता रही, कर उपगार सुभारी रे।
मालव देश ना वहु जन तारी, आवै देश मेवाड मझारी रे।।
७ मदसोर थइ जावद मैहर मे, आया जय जशधारी।
अन्यमति स्वमति लोक वहु मिल, पूछ्या प्रश्न धर प्यारी।।
८. विहार करी चित्तोड मेवाड़े, आया गणि मणिधारी।
वखाण वाणी गणि संपति देख जन, पाया चित्त चिमत्कारी।।
९. त्या थी पहुने पूज पधारया, तव मेवाड नां नर-नारी।
वहु वदण आया हिये हुलसाया, मेला मंड्या भारी।।
१० पुर गगापुर थइ गणाधिप आया, आंवावती उपगारी।
ले आगरिये लाहवे धर्म लाहो, केलवे कला विस्तारी।।
११ राजनगर काकरोली रही नै, आया श्रीजीदुवारी।
त्या ग्राम-ग्राम मे मनुष्य सइकडा, थया मंडाण सुभारी।।
१२ हिव उदियापुर अधिक हंगामे, परम पूज्य जशधारी।
कियो उगणीसै वारे चौमासो, त्या तेर संत ततसारी।।
१३ सिरदाराजी समणी गुणमणि, आदि वत्तीस उदारी।
चतुर्मास मे सेवा साझै, सतिया सहु सुखकारी।।

---

१. ताकत।
*लय—हींडे हालो रे ए...

१४. धर्म-उद्योत अधिक 'जश-परिमल'[1], फेल्यो नगर मझारी।
गणी वच-पीयूष पीय नागर जन, करै प्रफुल्ल गुणवाडी॥

वर हेतु युक्ति कर, उत्तर दिया उदारी रे।
उत्पात तणी हद, वुद्धि नो वहु विस्तारी रे।
जाव सुणी लहै, चित्त माहे चिमत्कारी रे॥ध्रुपद॥

१५. राणा तिहा सरूपसिघजी वारू, अति वुद्धिवत उदारी।
मोखजी खीवसरा नै साथे, प्रश्न पूछाया भारी॥
१६ मोखा! ए मुनि रात्रि विषै तो, राखै नही उदक लिगारी।
कदाच दसत नां काम पडै तो, किम करै कर निरधारी॥
१७ मोखजी आय पूछ्यो जद जय नै, तव भाखै गणधारी।
निर्जला एकादशी या रै, कोई करै 'निघोट'[2] उदारी।
१८. रात्रि विषै जो वमन हुवै तो, काइ करै सुविचारी।
जल तो मूहढा मे जिण वेला, घालणो नही लिगारी॥
१९. ए पेट माहिली वस्तु है तेहि, निकली है मुखद्वारी।
ते पिण प्रात थया थाये, शुद्ध तो, एह द्वार ही अवर विचारी॥
२०. रात्रि विषै तो 'समय'[3] विषै जिन, भाख्यो जिम करै धारी।
पिण अशुचि थका सूत्र नही वाचै, प्राते जाचै वारी॥
२१. जे करणो हुवै ते कार्य करै, वलि अवर ही प्रश्न उदारी।
पूछ्या तसु उत्तर सुण 'पृथिपति'[4], यथा राजी रुचि थइ भारी॥
२२. हिव जय गणपति विहार टाकडे, कह्यो मोखजी ने सुविचारी।
हाथी लडवा नां पुर वाहिर छै, दिवानखानो अति भारी॥
२३. तिहा रात्रि रहा तो दरवार नी, स्यू मुरजी है सारी।
जद मोखजी जाय कह्यो हिव काल्हे, करसी विहार गणधारी॥

कलश

२४. मुनि वात करता गज युद्ध ह्वै, जे दिवानखानो हे तिहा।
दरवार नी मुरजी किसु जो, रात्रि रहिणो ह्वै जिहा।

१. सुयश सुगध.
२ निराहार और निर्जल।
३ सिद्धान्त।
४. महाराणा।

जव 'हिन्दुपति'[1] इम वचन आख्यो, इक मास रहै तो मुझ 'रजा'[2]।
फुन जदी आवै जद रहै तां, रजा है निमुणो प्रजा ॥
२५. फुन प्रात वेला वेग आवै, इम कही दीधी सीख हीं।
जद मोखजी गणि पास वतका, जिम हुइ ते आवी कही।
वलि गयो प्रात दरवार पे जद, च्यार वच आख्या तदा।
प्रथम मुझ दंडोत कहिजै, वलि द्वितीय वच मुणियै मुदा ॥
२६ पधारजो वलि वेग पाछा, कृपा म्हां पर राखजै।
वलि तुझ कृपा सू भलो है, एम जड तू दाखजै।
ए समाचार तव मोखजी, जय पास आवी नै कह्या।
चिहु वाक्य मुण करी तीर्थ च्यारूं, हृदय विच अति 'गहगह्या'[3]॥
२७. चोमास उतरचा हिवै गणि रह्या, विहार करी मुविचारी।
दिवानखाने त्या लालसिंघजी, किया दर्शण धर हुसियारी।

*सतियां स्याणी रे।
स० इह अरक सु दुक्कर, तप कियो उद्यम आणी रे।
स० पटमासी पारणो करै, गुरु दत्त हरप भराणी रे ॥ध्रुपदं॥

२८ गणि विचरत-विचरत गाम पहुने, आया उद्यम आणी।
त्या रंभा सती आछ आगार करी, पट्मासी गुणखांणी ॥
२९. पारणो त्या नै पूज करायो, पछै 'पुर' आया गुरु ज्ञानी।
त्या आछ आगार 'हस्तु' पट महिना, पचख्या पहिलां जाणी ॥
३० हिव पूज आया दिन तेरे ऊपर, पचख्या उद्यम आणी।
वलि 'जेता'[4] 'ज्ञानांजी' विहुं, पटमासी गुणखाणी ॥
३१. पारणो तो ए त्रिहु नै पोते, परम पूज्य सुखदाणी।
स्वहत्थ कराय लियो धर्म लाहो, जग महिमा जवर फैलांणी ॥

---

१. महाराणा।
२. आज्ञा।
३. उल्लसित हुए।
*लय—तेहिज...।
४. जयाचार्य रचित आर्या दर्शन ढा० ४ गा० १२ मे जेताजी की उक्त छहमासी की जगह १५२ दिन की तपस्या पाई जाती है जो यथार्थ लगती है।

मुनि जशधारी रे, मुनि जशधारी रे।
वर खट मासी तप, कीधो धर हुसियारी रे।
ए 'तप-असी'[1] कर ग्रही, जीपै 'अघ-रिपु'[2] भारी रे।
तसु दीपै किरिया, विमल ज्यू गगा वारी रे।।ध्रुपद।।

३२ हिव मोखणुदे आय मुनिपति, आछ आगार सु भारी रे।
'मोडजी'[3] तपसी नै छ मासी नो, पारणो परम उदारी रे।।
३३ स्व-हृत्थ आप करायो स्वामी, वलि खूमजी मुनि तप भारो।
तप पट्मासी ऊपर तुर रो, दिन तेरे अधिक उदारी।।
३४ दिन इकसो त्राणु नो मोखणुदे, तप कियो आछ आगारी।
पारणो 'खूम ऋषि' नै पिण तव, करावियो गुणकारी।।
३५ हिव विहार करी नै श्रीजीदुवारे, आया गणि उपगारी।
त्या तपस्वी अनोप तप आछ आगारे, किया दिन वे सो अठार सुभारी।।
मु० तप सवा सतमासी, कीधो धर हुसियारी।।
३६. त्या नै पिण स्व-हृत्थ जय स्वामी, गुणधामी गुणकारी।
पारणो करायो अति सुखदायो, जग जश पायो भारी।।
३७ चिहु पट्मासी ना सतिया नै, वलि वे सता नी सारी।
सवा सप्त मासी ए सात पारणा, कराया गणि गुणकारी।।
३८. हिव विहार करी गोघूदे आया, खीवसरो सुखकारी।
दर्शण कर ने कह्या मोखजी, समाचार सुविचारी।।
३९. दरवार कह्यो है गोघूदे तो, आप पधारचा धारी।
तो उदैपुर चोरी करी काई, इम कह्या वच अति भारी।
४० तीन चालीसमी ढाल विषै गणि, देश मेवाड मझारी।
विचरचा अरु तपस्या तप कीधो, ते कही वात सुविचारी।।

---

१ तप रूपी तलवार।
२. पाप रूपी शत्रु।
३. मुनि मोडजी।

ढाल ४४

दोहा

१. 'वडा गाम'[१] सूं विहार करी, रावलिया ऋपिराज।
नानसमे रह्या महामुनि, भवि जन तारण काज।।
२ पदराडे नें सायरं थइ, भाणपुरे गुण-खाण।
राणपुरजी रात्रि रह्या, त्यां मंड्या वहु मंडाण।।
३ घाटे उतरता घणा, मेवाड ना महाजन्न।
पहुचावण साथे हुवा, मुनि मेवा मे मन्न।।
४. उदियापुर चित्तोड नां, नाथद्वार ना साथ।
काकडोली वडा गाम ना, राजनगर विख्यात।।
५ इत्यादिक वहु ग्राम नां, आया पिण हा साथ।
अने वायां पिण सेवा मझे, रही राणपुरे रात।।
६ अने लाला भेरूलालजी, मोखणुदा रै मांय।
मुनि पारण क दिन थी तदा, करता सेव सवाय।।
७. त्या थी आया सादडी, गणपति गुण गंभीर।
त्या भाया वायां पाली तणा, स्हामा आया धर धीर।।

*सुणो सुगुण जन हो, मुनिपत जी हो।
सुगुणा भवि प्राणी हो।ध्रुपदं।।

८. हिव पाली मे पूज पधारिया, तिहां रह्या इक मास।
व्याख्यान वाणी विधविध करी, कीधो धर्म उजास।।
९. जीत गणि जिनवर सभा, करवा धर्म उद्योत।
भव दधि थी भव्य जीव नै, प्रगट्या ज्यू तारक पोत।।
१०. त्या जोधाणपुर थी आविया, भंडारीजी धर भाव।
वादरमलजी दर्शण किया, वहु मडाण ओच्छाव।।
११. त्यां तुलछी वाई सोनारी श्राविका, करती पारणा तप सात-सात।
पछै पैंतीस दिन तिण पच्चखिया, किता दिवस गया सुविख्यात।।
१२ पाली पधारचा पूज्य जी, दिया दर्शण पैतीमां माय।
विविध वैराग्य नी देशना, ते सुण लहै हर्ष सवाय।।

---

१. मोटाग्राम (गोगुदा)।
२. जहाज।
*लय—भाभी जी हो डूंगरिया...

१३. तिण रै साठ वर्ष आयां पछै, हुता तीन आहार ना त्याग।
हिव गणपति वच सुणिया घणो, वध्यो अति चित्त वैराग।
सुगुणी बाई हो ।।

१४. तुलछी अरज करी स्वाम सू, हिव मुझ त्याग माहि अवधार।
गणपतिजी हो।
साठ वर्ष मे दिन इक वे घटे, करावो जाव जीव सथार।
सुगुणी बाई हो ।।

१५. पैतीस दिवस नै पारणे, बहु हठ सू करि सुविचार।
अणसण माग्यो उच्चरग सू, तव पचखायो गणधार ।।
१५ अधिक उद्योत थयो धर्म नो, स्वमति अन्यमति ताय।
जन चिमत्कार वहु पामिया, हिव विहार करी गणिराय ।।
१६ खैरवे शहर पधारिया, हिव तुलछी नै पाली माय।
तिविहार दिवस इकतीस नो, आयो सथारो सुखदाय ।।
१७ वारू सैठी रही व्रत मे तदा, तसु महिमा थइ पुर माय।
धिन-धिन जन वहु उच्चरै, गाता गुण अधिकाय ।।
१८. पछै काठा री कोर मे महामुनि, विचरी जय गण-इंद।
'सुरगढ'[1] सैहर पधारिया, तारण मेदपाट जन-वृंद ।।
१९. त्या हाजरी मे अन्यमति स्वमति, सइकडा 'मनु-समुदाय'[2]।
गणि वच सुण हिये धारता, प्रफुल्ल थइ मन माय ।।
२०. हिव घाटे उतर नै पधारिया, पाली सैहर चौमास।
उगणीसै तेरे समै, संग तेरे सत गुण-राश ।।
२१ सती सिरदाराजी आदि दे, सतिया सहु चउतीस।
गणि वच अमि-जल पीयनै, जीतै राग नै रीस ।।
२२. थली देश थी आय नै, घणा मास सेवा कर ताहि।
मोतीजी आज्ञा लेइ मातनी, वारू नव वर्ष नी वय माहि ।।
२३. जाति डागा गणि हाथ सू, मोच्छव अति मडाण।
आसोज सित तिथ बीज नै, लियो चरण रयण गुणखाण।
२४ वलि सैहर फलोधी सू आय नै, चूना जडावजी दोय।
जाति गोलेछा दीक्षा जय हाथसू, ली कानी सित ग्यारस जोय ।।

---

१. देवगढ।
२. मनुष्य-समूह।

२५. किण ही अन्यमति इम पूछियो, किता मुनि अज्जा इहवार।
जद उत्तर दियो चवदै मुनि, समण्या छत्तीस विचार॥
२६. जद उ बोल्यो हजार हजार ही, ठीठ आया इक एक।
ज्यू प्रभु रे चवदै छतीस हजार, तिम ए चवदै छत्तीस संपेख॥
२७. ए चमालीसमी ढाल में, मरुधर देश रै मांह।
वहु भव्य जीव प्रति बोध नैं, लियो अति धर्म नुं लाह॥

ढाल ४५

दोहा

१. हिव चौमासो ऊतरयां, विहार करी गणनाथ।
खैरवे सैहर आया तिहां, समण सत्यां वहु साथ॥
२. मोतीझरो त्यां निकल्यो, सती सिरदार नै तन्न।
मास खमण इक तिण मुदे, रह्याज रूडे मन्न॥
३. त्यां सेरां नवै शहर का, गजमलजी मुणोत।
तसु वहु पति ऋद्धि तजि लियो, चरण करण उद्योत॥
४. हिवै कांठा री कोर में, आया जय महाराज।
चिरपटियै दर्शण दिया, भविक जीव हित काज॥
५. त्यां मोतीजी मुनि तणी, माता नै मुनि-इंद।
स्व-हत्थ समाप्यो स्वामजी, चरण-रयण सुखकंद॥
६. मांडे आय हिव महामुनि, स्त्री सुता वहिन सहीत।
चरण देवा छजमल भणी, त्यार कियो सुवदीत॥

*हो गणिराजा, भव्य जन-तारण आप लियो अवतारो।
अतिशय गुण जाझा, बोधि चरण गुण दायक अति श्रीकारो॥ध्रुपदं॥

७. हिवै विचरत-विचरत गणधारी, आया सैहर कंटाल्ये गुणकारी।
कियो पूनम पट्ट मोच्छव भारी।
८. सुधरी चंडावल थइ स्वामी, जैतारण होय अंतर्जामी।
आया वलूंदे कालू शिवकामी॥

*लय—एक दिवस विर्षे...

हो मुनिराजा, सुखे सुखे विचरता देश थली दिशि आवै।
लहै सुख जाझा, भविजन सुण मन हर्ष प्रमोद सुपावे॥ध्रुपद॥

९ 'हिव तूठी कालू मे मुझ माता, लघु मास रह्या त्या मुनि वाता।
किये विहार थया मुझ सुखसाता'[1]।

१० आया पादू महुडे मणिधारी, त्या श्रावक लाडणू ना भारी।
किया दर्शण चित्त धर हुसियारी॥

११. शिवजीराम दुगड़ अति श्रीकारी, वैद गुलाव-शशि गुणधारी।
प्रमुख श्रावक अर्ज करी भारी॥

हो गण-इदा, कृपा करी हिव देश थली मे पधारो।
ले मुनि-वृंदा, गुणीजन सघन व्रत वोधि देइ हिव तारो॥ध्रुपदं॥

१२ पूज थली देश पगल्या कीजै, म्हारे लाडणू प्रमुख दर्शण दीजै।
त्या लाभ धर्म नो वहु लीजै।

१३ ईडवे वाजोली थइ आया, पछै सैहर लाडणू गणिराया।
हिव वहु थली देश डेरा छाया॥

१४ हिव मुजाणगढ थइ सुविचारी, आया सैहर वीदासर सुखकारी।
कियो वर्ष चवदे चौमासो चित्तधारी॥

१५ त्या चउदश मुनिवर गुण मालं, सिरदार प्रमुख सति सुविशाल।
सहु समणी संख्या अडताल॥

१६ त्या गाम माडे ना गुण-खाणी, छजमलजी भंडारी सुखदाणी।
सित भाद्रव दशम सुविहाणी॥

१७ वारू स्त्री उमेदा लेइ साथं, वलि सुता केशर पिण गणि हाथ।
लियो चरण वरण सहु शिव आथ॥

१८ वलि भगनी कुनणा पिण भारी, लियो चरण चिहु भव निस्तारी।
दियो सजम गणि जय गुणधारी॥

१९ चरण महोच्छव थयो अति भारी, पर गाम ना सइकडा नर नारी।
आया दर्शण ओच्छव नी दिलधारी॥

---

१. कालू मे मघवा मुनि के चेचक निकल जाने के कारण जयाचार्य २७ दिन लगभग विराजे। मघवा मुनि के स्वस्थ होने के वाद वहा से विहार किया। वहा वहुत साधु-साध्वी एकत्रित होने से आसपास के वाहर गावों की गोचरी होती थी।

मैहर करी नै गणी विराज्या, तिहां ठाणा थया वहु भेला रे।
वारै गांम नी हुती गोचरी, त्या थी विहार करचो सुभ वेला रे॥
(मघवा० मु० टा० ६ गा० ६)

२०. थयो घणा हगाम सू चउमासो, हुओ श्रावक भवि मन हुलासो।
वारू वीदासर मुनि सुखवासो ॥
२१. त्या थी करी विहार मृगशिर मासं, गणि सैहर लाडणू सुविमास।
करै लोक घणा गणि पर्युपास ॥
२२ त्या जाति श्रावगी जशवंती, 'मृगा' पति तज चारित पुन्यवंती।
लियो गणपति कर अति गुणवंती ॥
२३. वलि बीकानेर तणा वासी, रतनगढ पीहर गुणराशि।
वारु कुनणांजी अति सुविमासी ॥
२४. सुता कुवारी किन्या साथ, लेवा सिरै कुवरजी 'शिव-आर्थ'[1]।
लियो लाडणू चरण गणी हाथं ॥
२५ कही पच चालीसमी ए ढालो, गणि जश उज्वल मोक्तिक मालो।
किया थाट थली में सुविशालो ॥

ढाल ४६

दोहा

१. उगणीसै पनरै वरस, लाडणू मे चौमास।
जयाचार्य प्रमुख सहु, सतरै मुनि गुण-राश ॥
२. सिरदारांजी आदि सहु, सतिया पैंतालीस।
ज्ञान ध्यान व्याख्यान करि, धर्मोद्यम निशि दीस ॥
३ जल आगार छत्तीस दिन, कियो तप मुनि दीपचद।
बीस दिवस बन्ना सती, फत्तू इक मास सोहद ॥
४. देशणोक थी आय नै, सेराजी गणि हाथ।
श्रावण मे सजम लियो, लघु छोग सुत साथ ॥
५. चारित लीधो चूप सूं, मास भाद्रवा माय।
चूनांजी चूरू तणा, सैहर लाडणूं आय ॥
६ रामलाल दुगड सुता, वखतावर सुविचार।
कुंवारी किन्या पूज पे, थइ संजम नै त्यार ॥
७ 'भ्रातृ-स्वसा'[2] मा तात तज, सझ सजम सिणगार।
मृग विद पचम स्वाम कर, लियो चरण हितकार ॥

---

१. सपत्ति
२. बुआ।

८. हो जी सोले वर्ष श्रीकार, सुजाणगढ मे सही हो लाल।
हो जी गणपति आदि उदार, अठार मुनि ऊमही हो लाल।
हो जी सिरदाराजी आदि, सत्या चउमास मे झे लाल।
चालीस इक सु समाधि, रहै हुलास में हो लाल।

९. फत्तूजी दिन सैतीस, कियो तप उजलो।
वनाजी इक मास, इकतीसो अति भलो।
अन्य तप विविध प्रकार, कियो साधु सती।
दोय दीक्षा चौमास, माहि थई दीपती।

१०. अमरचद सुखदाय, बेगवानी भलो।
वीकानेर थी आय, चरण लियो गुणनिलो।
सुजाणगढ सुवास, नाम तीजा सही।
चरण लियो सुविमास, स्वाम कर ऊमही।

११. उगणीसै सतरे वास, चौमास वीदासरे।
चउद मुनि गुण राश, सखर सेवा करै।
आप सहित सहु पनरै, सिरदारा आद ही॥
वावन समणी सेव, करै आह्लाद ही।

१२. फत्तू तप चालीस, मोता चूना वलि किया।
विहु तप दिन इकवीस, पख पख वहु फुन पच्चखिया।
वीदासर जसु वास, पीहर सेखाण्या तणै।
'मोता' मृग विद चोथ, चरण उचरग घणै।

१३ पछै लाडणू थइ गणिराज, विहार जयपुर भणी।
पूज भवोदधि पाज, ज्याझ जिम जय गणी।
डीडवाणे गणिराय, आया उचरग घणै।
त्या 'कोहीथल'[1] थी आय, रत्नजी तत्क्षिणे।

१४ चरण लियो गणि हाथ, हिव साथ सेवा करी।
'लालाजी'[2] सुविख्यात, थेट ताई खरी।
वलि फोफलिया जाति, छजमल महादेवजी।
प्रमुख भाया वाया साथ, करी गण सेवजी॥

*लय—हो जी चालणहार तैयार हुई निज घर भणी हो ला...।

१. कोशीथल।

२. भैरुलालजी।

१५ कुचामन नावे होय, जोवनेर आविया।
तव जयपुर ना जन जोय, हरख वहु पाविया।
जयपुर सैहर रै माहि के, पूज्य पधारिया।
सरस सुमति-जल पाय, भवकि वहु तारिया॥

१६ पाट महोच्छव नो थाट, कियो जैपुर सैहर मे।
च्यार तीर्थ 'गहघाट'[1], सुगण मन अति गमै।
इण अवसर अवलोय, हरियाणा थीं तदा।
गुलहजारी जोय, तपसी आया अति मुदा॥

१७ दर्शण करण विख्यात, साथ श्रावक घणा।
वलि वैरागी रामनाथ, भाव दीक्षा लेवा तणा।
तसु चरण देण गण-इंद, रह्या वाहिर तदा।
गोलेछा मानकचद ना, वाग माहे तदा॥

१८. फागुण विद पख माह, चरण उच्चरावियो।
रामनाथ देइ चरण लाह, परम सुख पावियो।
जोवनेर कुचामन वाट, डीडवाणे आविया।
थली देश मे थाट, अधिक जमाविया॥

१९ सूरवाल थी आय, वीदासर मे कहू।
'वृद्धिचंद' 'भूरा' ओच्छाह, सजोडे पति स्त्री विहूं।
विद चौथ आपाढ नी ताहि, चरण गणि आपियो।
जणधारी गणिराय, जगत् जश व्यापियो॥

२० उगणीसै अठारे वास, चौमास गणपति तणो।
वीस मुनि गुण राशि, लाडणू जश घणो।
सिरदारांजी आदि, पणतालीस महासती।
कर तप जप ज्ञान ध्यान, कर्म-रिपु त्रासती॥

२१. भाद्रवे मास विख्यात, वासी सूरवाल ना।
किन्या पार्वती साथ, नोहंदाजी शुभमना।
चरण लियो जय हाथ, तिरण भव-सागरू।
मा-बेटी विहु साथ, थई गुण-आगरू॥

२२. काती विद पख माहि, ईडवा सू आयनै।
उत्तमचद सुहाय, चारित्त चित्त ल्याय नै।
पुत्र त्रियादिक ताहि, छांड संजम लियो।
वृद्ध अवस्था माहि, सहाज्य तसु वहु दियो॥

---

१. जमघट।

२३ माघ मास गुण-सिधु, चैनसुख चूंप सू।
चिमन मुनि वड वधु, तिरचा भव-कूप सू।
तसु साथे फुन तत, सैहर चूरू ना सही।
गुलाव सती गुणवंत, चरण लियो ऊमही॥

२४. माधोपुर सुखाल, वासी इक घर तणा।
वे वधव परिवार, चारित्त लीधो घणा।
राममुख 'पमुह'[1] चिहु वंधु, चिमन चैनसुख सही।
सुत त्रिय पुत्री पमुह, चरण लियो सोलही॥

२५. केयक लीधो चरण, ऋषिराय हाथ ही।
केयक श्री जय हाथ, कही चैन प्रसग ए वात।
छव चालीसमी पेख, ढाल ए अति भली।
चिहु वर्ष वात संक्षेप, कही मन नी रली॥

ढाल ४७

दोहा

१. हिव उगणीसे वर्ष कियो, सुजाणगढ चौमास।
जयाचार्य प्रमुख सहु, सोल सत गुण रास॥

२ सिरदाराजी आदि दे, सतिया चौमालीस।
गणी 'आणा गलतान'[2] सहु, सुख मानै निश दीस॥

३ सेहर फलोधी सू तदा, जोताजी जय पाहि।
सयम लीधो आय नै, काली सुद पख माहि॥

४ मोखणुदे थी 'अति 'मुदा'[3], जोगीदास सुविचार॥
सती हस्तु खेमा पिता, लीधो चरण तिवार॥

५ जाति भंडारी जोरजी, माडे ना मतिवत।
छजमलमुनि वधव वडा, तज सुत आदि सु तत॥

६. आउआ नो वासी 'अवल'[4], रूपचद सुविख्यात।
आयो चारित लेण कू, तजी त्रिया अरू भ्रात॥

---

१ प्रमुख।
२ गुरु आज्ञा मे अनुरक्त।
३. अधिक आनद मे।
४. श्रेष्ठ।

७ रूप जोरजी ए विहुं, वीदासर वर सेहर।
गणपति कर साथे विहुं, लियो चरण गुण गैहर॥

८. *हिव करवा चौमास, पूज्य महाराज सही।
वर चुरू सैहर विमास, पधारचा चित्त उमही॥
चित्त उमही वीसे वर्ष वही, वहु समण सत्या नै संग लही।
ए तो धिन्य धिन्य श्री जय स्वाम, कीर्त्त किम जाय कही॥
९ त्या शेखेकाल सुविचार, जेठाजी चरण लियो।
तज बंधु परिवार, सुमति-रस सरस पियो।
सरस पियोजी धन्य तास जियो, सुण सुगुण तणो विकसे जु हियो।
हिवै गणपति वीसे वास, चूरू चौमास कियो॥
१०. गणपति आदि सु साध, सोल तप सुमति धरै।
सिरदाराजी आद, सत्या छत्तीस सिरै।
छत्तीस सिरै जी गणि सेव करै, वचनामृत हिये पूर भरै।
जिके शिव रमणी वेग वरै।
भवि जय गणि पद ज्याझ, ग्रह्या भव-उदधि तिरै॥
११. हिव जैपुर सू आय, छोटांजी श्रीकारी।
चैनसुख वाठिया ताय, 'वेन'[1] अति गुणधारी।
गुणधारीजी महिमा भारी, सावन सित छठ सुखकारी।
लियो चरण स्वाम कर सुविचारी।
ए तो धिन धिन श्री जय स्वाम, करै भव निस्तारी॥
१२. हिव मास आसोज अमद, तेरस विद अति भारी।
सइकडा लोकां रा वृन्द, देखता सुविचारी।
सुविचारी जी गणि जगधारी, वलि सतिय सिरदारां श्रीकारी।
वलि वनां गुलाव पिण तिहवारी, त्रिहुं तीर्थ पेखत मणिधारी।
दियो मुझ नै पद युवराज, गणाधिप गुणकारी॥
१३. निज कर श्री गणिराय, पछेवड़ी आप तणी।
दीधी मुझ ओढाय, महर कर अति ही घणी।
अतिहिज घणी जी गण-मुकुटमणी मर्याद गुणसठे वर्ष वणी।
तेह लिखाय निज हाथ वणी।
लिख्यु भारीमाल नाम सुठाम, नाम मुज महामुणी॥

---

*लय—धिन धिन भिक्षु स्वाम दिपाई दान दया...।

१. वहिन।

कलश

१४. तिण लिखत मे मर्याद ए सहु, सत नै समणी सही।
मघराज नी आज्ञा मझे नित, चालवो चित्त ऊमही।
ऋतुवद्ध काल चौमास करणा, तेह आज्ञा ले करी।
आज्ञा विना रहिणो नही क्या, 'मेर'[1] ए महाराज री।।

१५ किण ही भणी जे देणी दीक्षा, तेह पिण तसु नाम ही।
चरण देइ आण तेह नै, सूपणा ते ताम ही।
इत्यादि मेरा लिख मुनि ना, लिखत हेठे गणि यदा।
आखर करार्य ते काम 'पाखर- तुल्य'[2] कीधो गणि तदा।।

१६. *इसा ओजागर आप, गणी गुणवत भला।
दियो पद युवराज सु स्थाप, आप गुण-ज्ञाननिला।
ज्ञाननिला जी अति ही उजला, गंगा-जल सम 'शुचि'[3] विमला।
ए तो धिन धिन श्री जय स्वाम, रह्यो जश छाय 'इला'[4]।।

१७ हिव जैपुर सेती आय, मुनिपति लघु वय मन रंगे।
आज्ञा लेइ मात नी ताहि, चरण लियो चित्त चगे।
चित्त चंगे जी जिम जल गगे, वलि जडाव जोताजी विहुं सगे।
आमेट वासी अति उमंगे।
तिहु मृग विद प्रतिपद चरण, लियो अति उच्चरगे।।

सोरठा

१८. जडावजी अवलोय, सुता जु ओटा साह नी।
अमरचद नी जोय, वहिन पिउ तज चरण ग्रह्यु।।
१९. सवेग्या थी आय, चूनीलाल लेई चरण।
अल्प दिवस रहि माय, ज्या थी आयो त्या गयो।।

२० *हिव एकम नी रात, सैहर वारे स्वामी।
रह्या ते दिवस विख्यात, रिणी थी गुणधामी।।

---

१. मर्यादाए।
२. युद्ध के समय हाथी या घोडे पर डाली जाने वाली लोहे की झूल के समान मजबूत।
३. पवित्र।
४. पृथ्वी।
*लय—धन धन भिक्षु स्वाम...

गुणधामी सजम कामी, नाम सुलताना शिरनामी।
कहै मुझ संजम द्यो स्वामी।
तसु मृग विद वीज सुचरण, दियो अनर्जामी॥
२१. इम चूरू सैहर रे माहि, उद्योत ह्वां अति भारी।
वलि पद युवराज ओच्छाह, थयो अति श्रीकारी।
श्रीकारीजी गणि जश धारी, तसु दर्शण करवा नर-नारी।
इक वे सहस्र नग सुविचारी।
ए तो आया धर आणद, अधिक मन हुसियारी॥
२२ हिव चूरु सैहर सू विहार, करी नैं ऋषिराया।
लाडणू नी दिशि धार, सुजाणगढ में आया।
गढ मे आया अति हुलसाया, त्यां सरूपशशी दर्शण पाया।
ए सात चालीसमी ढाल, गणाधिप गुण गाया॥

ढाल ४८

दोहा

१. हिव कसूभी कै दिवस रही, विहार करी कर मैहर॥
माह सित पुष्प दिन पूज जी, आया लाडणू सैहर॥
२ कपूर जीवोजी संत जी, लघु छोग पिण लार।
तिण दिन छांने नीकल्या, ए च्यारू अविचार॥
३ आथण लग आया नही, जव जांण्यो मुनिराय।
पूठे रहिवा नु नहि पूछियो, नीकल्या एह जणाय॥

*सुगण जन सांभलो रे॥ध्रुपदं॥

४. हिव माह सित पूनम दिने, नवी ढाला मुनिराय।
जोड़ गाई तव चतुरभुज, गाई नवीन वणाय॥
५. चतुरभुज पिण ते चिहुं, सामल हुतो सोय।
गणपति सू तिह अवसरे, अरज करी अवलोय॥
६. लघु छोगजी पव मुझ, लेइ गयो गण वार।
हुकम हुवै जो आपरो, तो ल्यावू जइ लार॥

*लय—राजग्रही नगरी भली...।

७. जय कहै जाण्या पत्र नो, लेइ गयो जो जेह।
तव कहै समझै जीव को, अधिक लाभ है एह।।

८ इम सुण भाखै स्वाम जय, वडा छोग प्रति जेह।
म्हेला मरुधर देश मे, तिण मारग है तेह।।

९. जो अवसर देखो तुम्हे, 'हस'[1] भणी ले साथ।
जाज्यो इम कही छोग सग, म्हेल्या तव गणनाथ।।

१०. गया गाम 'माथासुखे'[2], हस चतुर्भुज दोय।
चतुर्भुज तव तेहथी, सामल हुवो सुजोय।।

११ जिलो वाध पाचू जणा, वोल्या अवर्णवाद।
फिर आया फिर नीकल्या, तेहनो वहु सवाद।।

१२. ग्रथ वधतो जाण नै, सकोच्यो सुविचार।
तसु वात सविस्तार छै तिहा, जय कृत 'रास'[3] मझार।।

१३ मुनिपति मुनिवर नो पिता, तसु खोले थो ताय।
तिण लेखे दादो तिको, थानजी नाम कहाय।।

१४. द्वेष्या नी संगत करी, तिण दीधी अरजी ताम।
तव भडारी अति जवर, वादरमलजी नाम।।

१५. मुनिपति नी आज्ञा मुदे, करी 'मुदत'[4] अधिकाय।
समझावी तसु म्हेलियो, गणपति केरे पाय।।

१६. तिण सू गणपति जी तदा, सुप्रसन्न हुवा विशेष।
भंडारीजी ऊपरे, ते कहू वात लवलेश।।

१७. ए आठ चालीसमी ढाल मे, कह्यो सक्षेप प्रवध।
हिव दर्शण दै किण विधे, सुणजो तेह सवध।।

ढाल ४९

दोहा

१ हिव जोधपुर चौमास नु, मतो कियो मुनिराज।
'भडारी'[5] श्रावक भणी, दर्शण देवा काज।।

---

१ मुनि हसराजजी जो वडा छोगजी के साथ थे।

२. नागोर के रास्ते मे जवालिया के पास 'माथासुख' नाम का गाव।

३ 'चतुर्भुज रास'।

४. मदद।

५ राजमान्य वादरमलजी भडारी।

२ चेत शुक्ल पख में सही, लाडणू थी गण-इंद।
खाटू चादारुण थई, विहार कियो सुखकंद॥
३ हिव वाजोली ईडवै थइ, आया पादू सैहर।
सती चदणा तपसण भणी, दिया दर्श करी मैहर॥
४ वलि कालू उपगार कर, वलूदे सुविचार।
लोटोती थइ गणपति, आया सैहर पीपाड॥

[1]गणाधिप जवर ज्ञान धारी रे २।
उद्योत करण वर सहस्र किरण सम, भरमहरण भारी॥ध्रुपद॥

५. मुनिपति मुनिवर नी मात त्या, हरकुवर हुसियारी।
वैशाख सित छठ चरण लियो वर, तिरवा भव वारी॥
६. हिव त्या रहिता जोधाणा सू, भंडारीजी भारी।
आसरै तीन सै नर स्त्रिय साथे, किया दर्शण गुणकारी॥
७ अरज करी दर्शण हिव दीजै, कीजै 'कृपा भारी।
'महर करी हिव मुनिपति दर्शण, दीधा जशधारी॥
८. जेठ मास मे रही किता दिन, तारी नर नारी।
'उदय-मदर' रही सैहर मे आया, गणपति गुणकारी॥
९. वर्ष इकीसे कियो चौमासो, भव्य तारण भारी।
द्वादश मुनि सू पुर जोधाणे, गणि जय जशधारी॥
१०. सतिय सिरदारा आदि देइ सहु, सतिया सुखकारी।
पणतीस ठाणे तप जप सेवा, करवा हुसियारी॥
११. गणि जश परिमल सुणजन मिल २, धर मन अति हुसियारी।
अन्यमति स्वमति प्रश्नोत्तर कर, प्रतिबोध लहै भारी॥
१२. ज्ञान ध्यान व्याख्यान सघन जल, वर्षत गणधारी।
तृषित भविक अति तृप्त थइ, हिय हर्ष लहै भारी॥
१३. दान दया व्रत अविरत सावद्य, निरवद्य निरधारी।
हेतु वताय वहु द्वादश व्रत, फुन तार्‌या नर नारी॥
१४ सइकडा पुरुष अने वलि नारी, गुरु धारण धारी।
सुलभ वोधि थया जन वहुला, पाया भव पारी॥
१५. गाम ईडवा नो जे वासी, तज माता नारी।
महकरणजी सजम लेवा, थइ आयो त्यारी॥

---

[1]लय—स्वामी रायचंद राजा रे..।

१६. मात तात अरु भ्रात तजी नैं, मालव थी धारी।
दुलीचंदजी दीक्षा लेवा, आया सुविचारी॥
१७. ए विहु नै इक साथे संजम, दीधो गणधारी।
भैरू वाग काती सुध सातम, थयु मोच्छव भारी॥
१८ वलि दर्शण करवा देश देश ना, आया नर नारी।
तसु भक्ति जलूस देखी जन केई, लह्य विस्मय भारी।
१९. हिव विहार कियो चौमास उतर्‌या, गणपति गुणकारी।
चादपोल वारे परिपद नी, देखी छिव भारी॥

यतनी

२० वावीसटोला रो श्रावक एक, द्वेषी धर्म तणो सुविसेख।
ते पिण साथ पहुचावा आयो, परिपद देख वोल्यो इम वायो॥
२१ आज मनुष्य बे सहस्र रै माय, अठारै सै ऊपर देखाय।
ऐसा गणपति अति गुणवंत, ज्या रै सेवा मे परिपद सोभंत॥

२२ *ए उणपचासमी ढाल विषै गणि, श्री जय जशधारी।
जोधाणे उद्योत धर्म नो, कीधो अति भारी॥

ढाल ५०

दोहा

१. जोधाणा थी विहार कर, आगोलाई होय।
कोरणे वाघावास मे, दर्शण दे अवलोय॥
२ थोभ पाटोदी दर्श दे, गणी किया तव त्याग।
गण थी नीकल नै रह्या, टलकर जेह कुमाग॥
३. ते टालोकर नै तदा, थया छ मास उपरंत।
ते माटे हिव एहनैं, दड दियो ए तत॥
४. नवी दीक्षा लीया विना, माहि लेवा रा त्याग।
पचपदरे दर्शण हिवै, दिया गणी महाभाग॥

*लय—स्वामी रायचद राजा रे

५ इकवीसे वालोतरे, माह सित सातम जान।
मर्याद मोच्छव की रीत थइ, पूनम मोच्छव स्थान॥
६ पछै दर्श वालोतरे, जसोल माहि गण-इंद।
दर्शण दे भव्य जीव नां, मेटत भ्रम तम-फंद॥
७ सित सप्तम दिन मोच्छवे, वालोतरे जन-वृंद।
गाम परगाम तणा थया, सहस्र-गमे मोहद॥
८ पचपदरे पूनम तणो, ओच्छव करी गणेश।
टालोकरा प्रति विधि विधे, ओलखाया सुविशेष॥
९. पछै वीठोजे काणणे, पाडलावू पहिछाण।
समदरडी थइ जोधपुर, कियो माम मडाण॥
१०. झालामंड मे रात रहि, विचरत रोयट मांह।
तीन दिवस गणपति तदा, दिया दर्श ओच्छाह॥

*संजम तप जप विमल सु किरिया, गुण रत्नागर भरिया जी॥ध्रुपद॥

११ हिव वर्ष बाइसे प्रगट पाली, श्री जय गणि चउमासो जी।
वर चउदश वाचयम वारु, लहै गणि आण हुलासोजी॥
१२ सती सिरदारा प्रमुख सोभती, सतिया सहु इकतीसो।
अष्ट दीक्षा वर थई दीपती, थयुं मोच्छव सखर जगीसो॥
१३. चूना उदयकुंवर विहु साथे, तीजा गोरा गोरखी जेठा।
ए चिहुं साथ फुन वरजु हस्तु विहुं, परिणाम सहुं नां सेठां॥

सोरठा

१४. पटलावद ना सोय, जाति मेहर चूनां सती।
उदैकुवर अवलोय, सुता कुवारी साथ विहु॥
१५ पाली सैहर सुहाय, भाद्र शुक्ल तेरस दिने।
जय गणि मोच्छव माय, विहुं नें चरण समापियो॥
१६. वीदासर वसिवान, जाति भंडारी सासरचा।
पिउ तज चरण प्रधान, लियो तीजाजी तिह समय॥
१७ गोराजी गुणवान, फलवधी वासी सासरचा।
लूंकड जाति सुजान, दोय सुता साथे करी॥

*लय—इण स्वार्थ सिद्ध के चंद्रवे..।

१८. किन्या कुमारी एह, गोरखाजी जेठा युगल।
सगाई तज गुण गेह, पाली मे गणपति कने ॥
१९. ग्यारस विद आसोज, घणे हगाम आडवरे।
दीक्षा चिहुं धर मोज, तीजा सहितज ए त्रिहु ॥
२० वरजूजी सुविचार, वासी उदैपुर सैहर ना।
साथे वहु परिवार, सजम लेवा सचरी ॥
२१ फुन हस्तु अकन कुवार, मोखणुदा थी मन धरी।
गणपति पे गुणधार, त्रिहु आय ग्रहै सजम सिरी ॥
२२ पाली सैहर मझार, ए आठ दीक्षा सतिया तणी।
इम अवर ही उपगार, धर्म उद्योत हुवो घणो ॥

२३. *उपगार थयो त्या अति ही मोकलो, वलि परभव गई वे अज्जा ॥
चोमासी चउदश वेसत उतरत, वगतावर मोता सुलज्जा ॥
२४ हिव चौमास ऊतरचा खेरवे थइ, कोर काठारी आया।
मुखे मुखे विचरता स्वामी, वचनामृत प्याला पाया ॥
२५ लाडणू मे रह्या सरूप-शशी स्वामी, अल्प शक्ति वृद्ध वय जानी।
त्या रा जोग सू पूज्य कियो हिव, विहार लाडणू कानी ॥
२६. सिरियारी कटाल्ये अरु वगडी, दर्शण दे गण-इंदो।
पछै रामपुरे मुनिवर नै राते, आपी शीख अमंदो ॥

जयाचार्य कृत सीख रूप सोरठा

'वर उपयोग सु वृद्ध, चित्त मे अति राखो चटक।
शासण वृक्ष समृद्ध, रत्न जत्न 'मघराज'[1] इम ॥
वारू समय विनोद, कीधो चित्त अति हित करी।
मन मे परम प्रमोद, सखरो राखे 'कर्मसी'[2] ॥
दिन दिन विनय दिनेश, अतर उजुआलो अधिक।
वाधै सुजश विशेप, ताजक सीख 'तलेसरा'[3] ॥

---

*लय—इण स्वार्थ सिद्ध के चन्द्रवे

१. युवाचार्य श्री मघवा।

२ मुनि कर्मचन्दजी 'देवगढ'।

३. मुनि अनोपचन्दजी 'नाथद्वारा'। मुनि हरखचन्दजी और अनोपचन्दजी दोनो ही जाति मे तलेसरा थे। पर उस समय मुनि अनोपचन्दजी जयाचार्य के साथ थे। आगे की ढाल ५१ दो० ३ मे उनका जयाचार्य की सेवा मे रहने का तथा तप का उल्लेख मिलता है।

सुविनीतां रो सग, परम प्रीति गणपति थकी।
अलगो तज खल अंग, महिमा वाधै 'मोतिया'[1] ॥
मत दे निद्रा मान, ज्ञान ध्यान उद्यम गुणी।
सखर सग सु विधान, निरखी रहिजै निमल चित्त ॥
चारित्त सू चित्त चंग, नरक निगोद पड़ै नही।
अमल चित्त उचरंग, हृदय सीख धर 'रत्न सी'[2] ॥
चरचा सू धर चूप, प्रकृति वस कर प्रेम सू।
आदर विनय अनूप, मान वधै इम 'मुन्निया'[3] ॥
सखरी मुनिवर सेव, पुद्‌गल प्यासा परहरी।
भण नव तत्व सु भेव, वर समकित धर 'वींजिया'[4] ॥"

२७. *पछै जेतारण वलि वलूदे, फुन कालू थइ सुखकंदोजी।
वलि पादु थइ ईडवे गणपति, आया धरी आनंदो जी ॥
२८. तिहा टालोकर संतजी आवी, प्रश्न पूछ संशय मन टाली।
नवी दीक्षा ले गण में आवी, निज आतम उजवाली ॥
२९. पछै वाजोली पूज पधारचा, त्या टालोकर किस्तूरो।
पगां पडचो निज आतम निंदी, नवी दीक्षा ली थइ सूरो ॥
३०. हिव चादारूण खाटु थइ आया, लाडणू सैहर मझारो।
जन हजारा स्हामा आया, वलि ठाकुर वहु परिवारो ॥
३१. वलि सरूप-गणी पिण स्हामा आया, पुर वाहिर दर्शण पाया।
जवर मेलो मुनि जन नो मंडचो, तव गुणी जन अति हुलसाया ॥
३२ वड वंधव नी वृद्ध वय जांणी, गणपति नों गुणकारो।
विशेप रहिणो थली देश मे, थया थयो उपगारो ॥
३३ पछै विहार करी पूज्य पधारचा, सैहर वीदासर माह्यो।
त्या देशनोक नो लघु छोगजी, नवी दीक्षा लेइ माहि आयो ॥

---

१. मुनि मोतीजी 'लक्खासर'। सोरठा ५—मत दै निद्रा मान...इन्ही से सम्बन्धित लगता है।
२. मुनि रत्नजी 'कोशीथल'।
३. मुनि मुनिपतजी 'जयपुर'।
४. मुनि वीजराजजी 'वाजोली'।
*लय—इण स्वार्थ सिद्ध के चंद्रवे

यतनी

३४. पछै जयाचार्य कह्यो एह, हिव वाकी रह्या टालोकर जेह।
त्यां नै दीक्षा तो देणी ताय, पिण इतरो दंड फेर सवाय॥

३५. पहिला "आर्या"[1] नै अवलोय, वंदणा कराया विना जोय।
या नै माहि लेण रा त्याग, ऐसा गणपति महा वडभाग॥

३६. पछै पाली की तरफ पिछाण, तेजपाल मुनि गुणखाण।
त्या पासे जीवोजी आय, आर्य्या नै वदणा कर ताय॥

३७ मुझ नै माहि हिव लीजै, छेदोपस्थापनी चारित्त दीजै।
तव तेजपाल ऋषिराय, नवी दीक्षा देइ लियो माय॥

३८. *पछै हुकमचंदजी थोभ रा वासी, तज स्त्री पुत्र पोता ली दीक्षा।
प्रथम जेठ विद चवदश लाडणू, धारी जय गणि पै शिक्षा॥

३९. वलि लाडणू सैहर तणी जे वासी, ऋधूजी मतिवंती।
प्रथम जेठ सित वीज चरण लीयु, गणपति पे गुणवती॥

४०. त्या उदैराज तपसी तप जवरो, दिन वावीस मे सुविचारो।
अति हठ कर नै सरूप-शशी पे, पचख्यो जावजीव सथारो॥

४१. त्यां उदैराज नै दर्शण देव, हिव लाडणू स्वाम पधारचा।
विविध प्रकार समय रस पावी, तपसी ना काज सुधारचा॥

४२. तव विविध त्याग वैराग किया जन, वलि छजमल मुनि गुणधारो।
तीन आहार ना त्याग किया त्या, सीझै ज्या लग सथारो॥

४३ त्या दर्शण करवा वहु जन आवै, मडै जवरा मेला।
त्याग वैराग कर गाम परगाम ना, गुण गावै जन थइ भेला॥

४४ द्वितीय जेठ विद पंचम सीझ्यो, दिन पैसठ मे सथारो।
'लघु मास'[2] थी छजमल मुनि नो, फल्यो अभिग्रह सारो॥

४५ ए पचासमी ढाल मे आख्यो, पाली सैहर चौमासो।
करि शेषेकाल विचर कियो गणी, अधिको धर्म उजासो॥

---

१. साध्विया।

२ २७ दिन।

*लय—इण स्वार्थ सिद्ध के चन्द्रवे।

ढाल ५१

दोहा

१ उगणीसै तेवीस नू, बीदासर चौमास।
गणि प्रमुख सतरै मुनि, करता ज्ञान प्रकाश॥

२. सती सिरदारां आदि दे, समणी सैंतालीस।
गणि आणा तप जप सखर, करती धर सुजगीश॥

३. अनोपचंद तपसी अमल, थोकडो तप पणतीस।
'उदक आगार चउ विहार'[1], वर तप विश्वावीस॥

४. शेषे काल हिव चोखले, दर्शण दे गुण-राश।
ग्यान ध्यान व्याख्यान कर, करता अति सु प्रकाश॥

*सुगुणा स्वामजी, भारी भवदधि थी तारै।
सेवै सिरनामजी, ते सुजश लहै मारै॥ध्रुपदं॥

५ वर्ष चोवीसे श्री जय स्वामी, सुजाणगढ चउमासो।
गणपति प्रमुख चतुर्दश मुनिवर, अधिक धर्म उजासो॥

सुगुणी महासती, तप कर अघ नैं तोडै।
गणि विश्वास थी, कर्म कटक मोड़ै॥ध्रुपदं॥

६. सिरदाराजी आदि सत्या सहु, बयालीस गुण-वृंदो।
सती चूनाजी देश मालव नां, कियो तप मास अमंदो॥

७ सतिय तीजाजी रत्नगढ नां, तप इकतीसो मासं।
उदक आगारे ए विहु समण्या, कियो तप आण हुलासं॥

सुगुणा सज्जना, गणि चरण कमल सेवो।
तो मतो कर शुभ मनां, सुख मुक्ति तणा लेवो॥ध्रुपदं॥

८. इम मुनि अज्जा तप बहु कीधो, लीधो लाभ सु लारं।
ज्ञान रयण वर गणपति देवै, जिम उतरै भव पारं॥

सतिया शोभती, वारु चरण रयण लेवै।
गुण रस लोभ थी, गणि चरण कमल सेवै॥ध्रुपदं॥

---

१ ३५ दिनों में कुछ दिन पानी लिया और कुछ दिन नहीं लिया।

*लय—ले गागर भरवा नैं बेठी छला मेल कनारे...

९ तिहा महतावाजी आय चूरू सू, कार्तिक विद सुविमासो।
अष्टम तिथ गणपति पे सजम, लीधो आण हुलासो ।।
१०. वलि सिरदारा हीराजी आई, चूरू सू सुविचारो।
कार्त्तिक विद तेरस विहु गणिकर, लियो चरण गुणकारो ।।
११ हिव विहार करी चौमास ऊतर्‍या, लाडणू पूज्य पधार्‍या।
त्या झूमाजी नै मृग सित एकम, चरण देई नै तार्‍या ।।
१२ पछै वीदासर रही विहार कियो तव, टमकोर सेती आई।
चरण सिणगारा पोही-पूनम, लियो गाम वेनाते माही ।।
१३ सुजाणगढ मे वलि सिणगारा, आढसर सेती आई।
माह सित वारस गणिकर सजम, लीधो अति हित ल्याई ।।
१४. जाति श्रावगी सती भूराजी, लाडणू ना गुणधारी।
किन्या कुमारी तजी सगाई, थइ सजम नै त्यारी ।।
१५ मागोतरा नी तरफ थी 'मेजर'[1], कियो ठाकुर प्रमुख तिहवारी।
तसु आज्ञा पर करी 'मुदत'[2], अति भडारीजी भारी ।।
१६. वडा साहिव लग वात थइ पिण, शासण दिशा सुभारी।
लाडणू प्रमुख जन सन्मुख थया, चरण देण हितकारी ।।
१७. मा तात नी आज्ञा ले गणि, 'पावोलाव'[3] सुविचारी।
फागुण विद छठ चरण दियो तव, थयो महोच्छव अति भारी ।।
१८ दीक्षा दे लाडणू दर्श दे, वीदासर गणि आया।
'भडारीजी ना नदन'[4] त्या, दर्शण कर हुलसाया ।।
१९ भडारीजी पर महर करी कियो, विहार जोधपुर कानी।
किस्नमलजी प्रमुख तणी तव, अरज गणाधिप मानी ।।
२० लाडणू खाटू चादारूण थइ, वाजोली ऊम्हाया।
ईडवे पादू दर्शण दे हिव, 'आनदपुर'[5] गणि आया ।।
२१ गाम पडियारे थी तिहा, आवी मोताजी मतिवती।
वैशाख विद तेरस गणपति कर, लियो चरण गुणवती ।।
२२ पछै पीपाड मे पूज पधार्‍या, घणा जीवा नै तार्‍या।
विविध प्रकार नी धर्म देशना दे, वहु भविक उधार्‍या ।।

---

१ झगडा।
२. मदद।
३. लाडनू से १ कोस दूर।
४ किसनमलजी।
५ कालू (मारवाड) को आनन्दपुर भी कहा जाता है।

२३. भंडारीजी वहु हंगामे, त्यां दर्शण कीधा तांमों।
सैहर जोधांणे करण चौमासो, गणि विहार कियो गुणधामों ।।
२४. एकावनमी ढाल में आख्या, चारू दोय चौमासा।
समकित चरण गुण दे जय स्वामी, पूरै भविक मन आसा ।।

ढाल ५२

दोहा

१. सैहर जोधांणे स्वाम जय, आया मास आसाढ।
समझाया जन अति सघन, ज्ञान देइ अति गाढ ।।
२ वर्ष पचीसे हिव तियो, जोधाणे चौमास।
द्वादश मुनि महिमानिला, गणि सहित गुण राश ।।
३ सिरदाराजी आदि सहु, समण्या गुणचालीस।
ज्ञान ध्यान तप सेव गणि, करती धर सुजगीश ।।

*श्री जय गुण मणि सागरू, ओजागर गणिराया रे।
'प्रवोध-दिवाकर'[1] देखने, भव्य हृदय कमल हुलसाया रे ।।ध्रुपदं।।

४ सैहर जोधाणे स्वाम जी, कियो गणी अति उपगारो रे।
त्या लोक समझ्या वहु धर्म मे, चित्त माहि लह्या चिमत्कारो रे ।।
५ त्या श्रावण विद अष्टम दिने, वहु मोच्छव मंडाणो।
वैठा जुहार भोप विहु पालखी, आगे वे गज 'नगी निस्साणो'[2] ।।
६ आया भैरूं वाग वहु थाट सू, तव दोयां नै गण इंदो।
इक साथे सजम दियो, लह्या चिमत्कार जन-वृंदो ।।
७ जुहारजी श्रावगी जाति पाटणी, तजि षट् वधु परिवारो।
वारू वासी लाडणू सैहर ना, लियो लघु वय सजम भारो ।।
८ भल श्री श्रीमाल जाति भोपजी, तज्या दोय पुत्र सुविख्यातो।
वासी लोटोती नो लाभ चरण नो, लियो जोधाणे विहु इक साथो ।।

---

*लय—शल्य कोई मत राखज्यो. .।

१ ज्ञान-सूर्य।

२ नगारा निशान।

९. त्या धर्म उद्योत थयो घणो, थयो तप पिण अति सुविशालो।
समणी मोता बीकानेर ना, किया तप दिन सखर तेयालो॥
१०. गोगुदा ना रंभा सती, किया पैंतीस दिवस उदारो।
मासखमण चपा सती, वलि किया दिवस इग्यारो॥
११. चूनाजी मालव तणा, कियो सैंतीस दिन तप सारो।
बीदासर ना तीजा वलि, कियो दोढ मास श्रीकारो॥
१२ ए उदक आगारे महासती, कियो तप आण हुलासो।
अवर मुनि सतिया वलि, किया थोकडा अति सुविमासो॥
१३ हिव चौमासो ऊतर्‌या, विहार करी गणिराया।
पीपाड कालू पादू ईडवे थई, सैहर लाडणू आया॥

श्री जय गणि गुण सागरू, वारू वाग्रत वाण उदारो।
ते सुणिया थका भव्य जीव रे, होवै हृदय अधिक चिमत्कारो॥ध्रुपद॥

१४ त्या सरूपचदजी स्वामी ना, किया दर्शण धर आनदो।
पछै सुजाणगढ बीदासर थई, आया लाडणू जय गण-इदो॥
१५. द्वितिय वैशाख लाडणू मझे, विद पख मे सुविचारो।
सतीय 'वना' ना शरीर मे, उपनो दस्त कारण अवधारो॥
१६ तव गणपति सरूप-शशी वलि, सुत मघराज[1] तिवारी।
सिरदार सती गुलावा वलि, दियो सती नै सहाज्य सुभारी॥
१७. गणि महाव्रत तव आरोपाविया, आलोवाया पाप अठारो।
सुमति गुप्ति महाव्रत तणा फुन, आलोवाया अतिचारो॥
१८ 'गणि ज्ञान सुणायो अति घणो, वलि सतिय गुणा नी गाहो।
नवी जोड जोड तिण अवसरे, बहु सुणाई आण उच्छाहो'[2]॥

धिन धिन श्री जय गणपति, जसु संपति अति श्रीकारो रे।
वारू श्रमण सत्या नै स्वामजी, दियो सजम सहाज्य उदारो रे॥ध्रुपद॥

१९. अणसण सागारी उच्चराविया, तेरस साझ श्रीकारो।
ऊचै स्वर त्याग किया सती, हरष सहित सुविचारो॥
२० विद चउदशि तिथ पाछली, सीझ्यो सती नो सथारो।
इग्यारै पोहर नै आसरै, आयो अणसण सागारी उदारो॥

---

१ मघवागणी की माता।
२ जयाचार्य ने साध्वी वन्नाजी के सम्बन्ध की—'वनाजी सुधारे हो कार्य आपणा रे' इस देशी मे कई नई गाथाए तत्काल जोडकर उन्हे सुनाई।

२१ साढा सतरै वर्ष जाझो सती, पाल्यो सजम सुविमासो।
प्रथम चरम चौमासा विना, करी गणपति नी "पर्युपासो"[1] ॥

कलश

२२. तप चोथ छठ अठम भक्त फुन, दशम द्वादश भक्त ही।
दिन पच सात नव दश द्वादश, तेर चवदै दिन सही ॥
पख अठारै इकवीस दिन नो, थोकडो इक इक भलो।
इक मास सहु तप जल आगारे, कियो वना अति उज्जलो ॥

२३ *पछै सरूपचंदजी स्वाम नै, सैहर लाडणू मांह्यो।
सहाज्य पंडित मृत्यु तणो, दियो गणि अधिक सवायो ॥
२४ तास सवंध अति ही कह्यु, 'सरूप-नवरसा' मांहि।
पिण प्रसंगे सक्षेप थी, सुणो इहा सुखदाई ॥

सोरठा

२५. सरूप-शशी गुणधाम, ज्येष्ट सहोदर स्वाम ना।
मुनि जन अति विश्राम, चित्त आरामकारक वहु ॥
२६. जवर शासण नी दृष्ट, विमल नीति अति प्रीति जय।
कीरति जग मे 'श्रिष्ठ'[2], मिष्ट वयण गुण गरिष्ट अति ॥
२७. झीणी रहिम्य सुजाण, चरचावादी अति चतुर।
मधुर सुधा सम वान, उपाध्याय सम ओपता ॥
२८. तास वृद्ध वय जान, वलि तनु कारण देख नै।
गणपति जय गुण-खांन, मास अधिक रह्या लाडणू ॥
२९. ज्येष्ठ कृष्ण तिथ तीज, कारण अचिंत्यो ऊपनो।
अणसण सागारीज, महुर्त्त निशि गयां आसरै ॥
३०. उच्चरायो अवलोय, जोय कारण अनशन जिसो।
जवर दृष्टि गणि होय, सहाज्य दियो अति तिण समै ॥
३१. विविध वैराग्य नी वात, तिण रात्रि विषै जय गणपति।
उपदेश सरण साख्यात, विविध पणै गणपति दिया ॥

---

१. पर्युपासना (सेवा)।

२. श्रेष्ठ।

*लय—शल्य कोई मत राखज्यो

३२. हूं अनै अवलोय, कालु भवान प्रमुख ही।
रह्या जागता जोय, सेवा मे वहु मुनि तदा ॥
३३ च्यार पोहर उनमान, अनशन चोथ दिन सीझियो।
मंडी अधिक मडाण, संसारिक महोच्छव वहु ॥

३४. *इम जवर गुणी जय महामुनि, दियो सहाज्य घणा नै साख्यातो।
ए वावनमी ढाल मे कही, वर्ष पचीसा नी वातो ॥

ढाल ५३

दोहा

१ कियो छाईसे गणपति, वीदासर चौमास।
पुज्य प्रमुख सोलै मुनि, करता धर्म उज्जास ॥
२. सिरदाराजी आदि दे, समणी अडतालीस।
तप जप उद्यम कर सत्या, सेव करै गण-ईस ॥

+सुगुण जन गणपति जय जश धार।
चरण रयण देइ करी, ज्या तार्‌या वहु नर नार ॥ध्रुपद॥

३ त्या वासी मालव देश ना जी, गूदेचा मुहता मयाचद।
सजम लेवा सेवा करै, साथे लिया जडाव सोहद ॥
४. सरस सवेग रसे भरी जी, सुणि गणपति वाण विशाल।
थया जडाव तणा पिण तिह समै, भाव चरण लेण उजमाल ॥
५ मयाचद जडावजी वारू, वीदासर सुविमास।
सजोडै विहु सजम लियो, सित वारस सावण मास ॥
६. राजलदेशर थी आविया काई, 'तीजा'[1] विदामाजी तत।
ए तिहु नै साथ संजम दियो काई, श्री जय स्वाम महत ॥
७ त्या लाडणू सेती आय नै, दादी राजाजी दीपत।
पोती कुवारी किन्या सगाई तजी, वारू मखतुला गुणवत ॥

*लय—शल्य कोई मत राखज्यो
+लय—जगत गुरु त्रिशलानंदन वीर...।
१. तीमरा।

८. भाद्र शुक्ल तेरस दिने कांई, मैहर बीदासर माह।
दादी पोती संजम लियो कांई, श्री जय कर सोल्लास ॥

९. चलि ईडवा गाम थी आय नैं जी, सदाजी गुण भरतार।
छोड़ आसोज विद तेरसी, लियो जय कर संजम भार ॥

१०. जाति डागा ऊमरदासजी कांई, नाम लिया गुणखान।
नाम चादा बीदासर तणां, वय सोल वर्ष उनमान ॥

११ छतो ऋद्धि पति छोड़ नैं, थया चरण लेण परिणाम।
त्रिया दूजी त्याग परणवा, पति आज्ञा दी हर्ष मन ताम ॥

१२ कियो मोच्छव पति हर्ष सूं, नानी गुमाना बाई नाम।
रूपड्या वासै मैं आसरै, सरस्या सुखादि मोच्छव ताम ॥

१३ घणै हगाम दीक्षा ग्रही जी, चादाजी धर नूर।
काती विद पडवा[1] दिने, धर शील असिधार सूर ॥

१४. फुन राजलदेसर मैहर थी जी, ऊमाजी जेताजी आय।
काती सुध त्रयोदशी, चरण लियो बीदासर मांय ॥

१५. ए नव दीक्षा बीदासरे थई, छासैं वर्ष चौमास।
पछै लाडणू मैहर पधार नैं कियो गणपति धर्म उजास ॥

१६ त्या वासी लाडणू मैहर ना कांई, नानूजी चादाजी दोय।
श्री जय हाथ संजम लियो कांई, शुभ दिन सोध सुजोग ॥

१७ हिवै सुजाणगढे संजम लियो कांई, जाति श्रावगी जाण।
जसरासर ना रामसुखजी कांई, सित पंचम पोष माण ॥

१८ वासी सिरदार सैहर नी कांई, वरजूजी सुविचार।
उवखू तीज दिने संजम लियो, पछै छत्तीसे निकली बार ॥

१९. वासी बीदासर तणा, त्या फत्तुजी संजम लीध।
ज्येष्ठ कृष्ण बारस दिने, पछै पूनम आयु पूरी कीध ॥

२०. हिवै वर्ष सत्ताइसै लाडणू जी, गणि प्रमुख सोलै संत।
सिरदारांजी आदि चौमास मे, पचास सत्यां मतिवंत ॥

२१. त्यां ज्ञान ध्यान तप जप तणो जी, उद्यम थयो विख्यात।
पनर 'पचरंगी'[2] पारणा, वाया मांहि थया इक साथ ॥

---

१. प्रतिपदा (एकम)।

२. पाच पाच व्यक्ति क्रमश पांच, चार, तीन, दो और एक दिन का उपवास करते हैं उसे पचरगी तप कहा जाता है।

२२ हिवै चौमासो ऊतर्या ज, विहार करी गण-इंद।
राती पनरै मुजाणगढ मे रही, आया बीदासर आनद।।
२३ सतिय सिरदारा शरीर मे, तिहा कारण ऊपनो ताय।
अन्न अरुचि थी तनु तणी जी, शक्ति घटी अधिकाय।।
२४ पोह सुध एकम दिन लगै जी, अल्प मात्र लियो अन्न।
पाछै अन्न लियो नही, सती कियो अधिक दृढ मन्न।।
२५ आछी विध आलोयणा जी, कराई जय गणि आप।
महाव्रत आरोपाविया, पच्चखाया अठारै पाप।।
२६ ठाम ठाम 'मिच्छामि दुक्कड', दिया स्वमुख सती सिरदार।
निशल्य थई गणि राज ना, सुणता वचनामृत श्रीकार।।
२७. पछै पोह सुध चौथ प्रहर आसरै, काई रात्रि गई तिहवार।
जल ओषध उपरंत करावियो, सत्या सागारी सथार।।
२८. दिन दिन शक्ति घट्या अष्टम दिने, सवा पोहर तणै उनमान।
दिवस रह्या पच्चक्खावियो, अणसण जावजीव सु विधान।।
२९. विविध वैराग्य सुणावता, वे मुहुर्त्त आसरै रात।
रह्या अणसण सीझियो, थयो मोच्छव नवमी प्रात।।

कलश

३०. 'पवत्तणी'[1] सम इह आर पचम, सार गुण अति साहिका।
अन्न पान वत्थ अरू पात्र, वहु विध वस्तु नी अति दायिका।
वृद्ध वाल ग्लान महान मुनिवर, अर्जिका नै फुन सती।
ओषध पत्थ रू साहज्य विध विध, देय लाभ लीयो अति।।
३१. वलि सीख विध विध वचन रचना, करी चिहु तीरथ भणी।
सुमति अमीरस पाय नै, कर प्रफुल्ल जन मुनि साहुणी।
गभीर धीर सु वीर प्रभु रे, चंदना जिम गणि तणै।
सिरदार सजम पाल 'कज'[1] निज, साझिया 'गह घट'[2] घणै।
३२ लारै काज सहु गणि राज साज, सिरदार नो जिम छो सही।
तिमहिज कुर्वे सहु रीत गणपति, गुन्नाव नो कीधो मही।
महाराज जय गुण ज्याङ्ग सम इह, आर पचम मे भला।
तसु शिष्य शिष्यणी सार गुणमणि, सोभता अति गुणनिला।।

---

१. प्रवर्त्तिनी।
१ कार्य।
२. ठाट-वाट।

३३ *हिव वीदासर थी जय गणि जी, विहार करी सुविचार।
'सुजाणगढ पधारिया, कियो लिखत सत्यां नो सार,'[1] ॥
३४ त्या चैत कृष्ण बारस दिने कांई, दीर्घ छोग हंसराज।
गण बाहिर विहु नीसर्‌या, करि ताण गमाई लाज ॥
३५ सात पोहर नै आसरै कांई, रहि नै विहुं गण बार।
तेरस दिन प्रभात रा, गणि चरण लागा सुविचार ॥
३६ निज अपराध खमाय नै कांई, दंड करी अंगीकार।
बड़े छोगजी निज हाथ सू कांई, लिखत लिख्यो तिण वार ॥

छोगजी लिख्या ते अक्षर

"आगा थी बोलां आथयी आचार्य सू खांच करवा रा जावजीव त्याग छै मघराजजी महाराज फुरमावै सो हियै वैमाय लेणी माथपणा ज्यूं ए त्याग छै सवत् १९२७ रा चेत विद १३ लिखतू ऋषि छोग लिख्यो सही छै"

३७. *ए लिखत लिखी दिन रा कह्यो कांई, छोरू कुछोरू होय।
पिण माईत कुमाइत हुवै नही, जग में 'ओखाणो'[2] कहै ए जोय ॥
३८. ओखाणो आप साचो कियो जी, गुण किया एम अनेक।
'अगंज'[3] गणाधिप एहवा, ज्यांरा अतिशय अधिक विसेख ॥
३९. ए तेपनमी ढाल मे जी कही, छाडसा नी वात।
वले चोमास सत्तावीस नो, कितो शेषेकाल अवदात ॥

ढाल ५४

दोहा

१. लाला भैरूलालजी, त्यां हुता सेवा मांय।
अर्ज अधिक जयपुर तणी, कर्‌यां मानी गणिराय ॥

---

१. सं० १९२७ फाल्गुन शुक्ला १४ सोमवार को सुजानगढ़ मे जयाचार्य ने सिघाडबंध साध्वियो के लिए एक लेखपत्र बनाया जिसमे २० अग्रगामिनी साध्वियो के हस्ताक्षर है।
२. कहावत।
*लय—जगत् गुरु त्रिशला नन्दन वीर...
३. अपराजित।

२. लाडणू दर्शण दे करी, सित पख नवमी चेत।
विहार कियो जयपुर दिशा, करी थली मे 'जैत'[1]।।
३. श्रमण अठार परिषद सघन, लाडणू ठाकुर लार।
पहुंचावण नै आविया, वाग ताइ सुविचार।।
४ डीडवाणे मे आवता, हाकम कर मडाण।
साहमो आयो स्वाम रे, उज्जम अधिक सु आण।।
५ दर्शण 'मोता'[2] नै दिया, तिहा रहि त्रिण रात।
दोलतपुर दर्शण दिया, इक रजनी गणनाथ।।
६. कुचामन नावे थई, जोवनेर गणि राय।
आया वे रजनी रह्या, ठाणे गुणसठ ताय।।

*धिन धिन श्री जय गणपति, धिन धिन मुनि गुणधारो जी काई।
सतीय गुलावा आदि जे, सझै सेव श्रीकारो जी काई।।ध्रुपद।।

७. आया वैशाख अमावसे, सिरदारमल्ल नै वागो जी काई।
त्यां सात मुनि दर्शण किया, हीरालाल आदि अनुरागो जी काई।।
८ हिव वैशाख सित एकम दिने, गणि आदि समण पणवीसो।
समणी गुलाव सु आदि दे, सतिया सखर छत्तीसो।।
धिन धिन श्री जय महामुनि।।ध्रुपद।।
६ जयपुर सैहर पधारिया, जिन मग जवर दीपायो।
वैशाख सित पख 'त्या रही, जेठ मास रह्या घाट माह्यो।।
१०. लूणीया सिरदारमल्ल ना, वाग माहि रही त्रिण रातो।
जयपुर सैहर पधारिया, चउमास करण सु विख्यातो।।
११. हीरालाल वर मुनि तणै, उपनो कारण अचित्यो आयो।
आषाढ सित तेरस चल्या, दियो सहाज्य सखर गणिरायो।।
१२. वर्ष अठाइसे गणपति, उगणीस मुनि सू चौमासो।
समणी गुलावा आदि दे, छत्तीस सत्या गुण-राशो।।
१३. वासी डेघाणा गाम ना, नदराम ओस्तवाल जातो।
पिता मातादिक छोड नै, दीक्षा लेवा गणि पे आतो।।
१४. विचै नानगजी रा टोला तणा, दीक्षा दीवी कर ठागो।
हीणाचारी तसु जाण नै, आयो जैपुर धर अनुरागो।।

---

१ जय-विजय।
२. साध्वी मोताजी (१३६)।
*लय—कुशल देश सुहांमणो...।

१५. धुर भाद्रव सुध तेरसी, नंदरामजी नै जाणी।
दादावाडी पासै दीक्षा, दीवी जन - वृद में गुणखांणी॥
१६. हिव वासी सिरदारगढ सैहर ना, जीउजी अति स्यांणी।
गोलेछा इंद्रचंद ना, सुत नी वहु सुखदाणी॥
१७. राजलदेशर सासरो, वैरागण वीरां वाई।
सिरदार सैहर पीहर विहुं, दीक्षा लेवा जैपुर आई॥
१८ द्वितीय भाद्र विद प्रतिपदा, वीरा 'पीजस'[1] जीउ 'सिविका'[2] माहि।
चमर ढुले मोच्छव वहु, दीक्षा लेवा मोहनवाडी आई॥
१९. देइ चरण वीरा जीउ भणी, सूपी गुलाव भणी गणिरायो।
गुलाव हाथ धुर विहुं अज्जा, थई अधिक सुखदायो॥
२०. वलि वासी जैपुर नीं हिवे, सामसुखा नी वेटी।
सतोप वैद सुत नो वहु, जडाव नाम गुण-पेटी॥
२१ द्वितीय भाद्र विद सप्तमी, सदासुख ढढा नै वागो।
वहु मोच्छव संजम दियो, श्री जय गणि महाभागो॥
२२ द्वितीय भाद्र सित छठ दिने, सुजाणगढ थी आई।
वहु मोच्छव संजम लियो, लिछमा ढढाजी रे वाग माहि॥
२३. दर्श करण देश देश ना, आया हजारां लोको।
दर्शण कर प्रसन्न हुवा, जिम रवि दर्शन कोको॥
२४. सेठ अणतराम दिवाण नो, वगतावर मल नंदो।
तसु वृद्ध सुत चल्यो जल मे पडी, तिण सू पडियो ते मोह फदो॥
२५ तिण अर्ज कराई स्वाम नै, मुझ दीजै दर्श सुणिदो।
गणपति तसु दर्शण दिया, जव पाम्यो परम आनंदो॥
२६. दर्शण पट् वेला दिया, विविध वैराग सुणायो।
सुण सुण नै ते सेठजी, प्रमोद हिये अति पायो॥
२७ वार वार विनती करै, इक मास इहा हिव कीजै।
गणि कहै चौमास हिवे ऊतरै, हिव इहा कहो किम रहीजै॥

---

१. एक प्रकार की सवारी जो वद पालकी की तरह होती थी।
२. पालकी।

कलश

२८. इक मास घाट मे थाट कर रहो वाग माहि माहरे।
इक मास लूणीया नी वगीची रहो आप पुर वाहिरे॥
माघ मास मड सुझड मुनिवर समणी ना अहो गण-धणी।
मुझ हवेली नोहरे करो हिव विनती म्हारी सुणी॥

२९ *इम विविध परे विनती करी, तव मुनिपति विनती मानी।
विहार करी मुनि वीस थी, आया घाट नै वाग सु ध्यानी॥
३० त्या सिरदार सैहर सू आयनै कार्ड, हीर कणी सम हीरा।
दूधोर नी वासी जोरजी, लेवै चरण तिरण भव तीरा॥
३१. मृगशिर विद पक्ष चौथ नै, ए विहु नै एक साथो।
गोलेछा ना वाग मे गणि, चरण दियो निज हाथो॥
३२ 'मास खमण-कारक'[1] मुनि, पन्नालाल पहिछाणी।
मृग विद चउदश नै चल्या, गणि चरण सरण गुणखाणी॥
३३. एक मास घाट माहे रही, आया सिरदारमल्ल नै वागो।
हिवे एक मास रह्या तिहा, अर्ज करवा सेठ हिव लागो॥
३४ माघ मास जागा माहरी, सत सत्या ना मेला।
कीजै पूज्य कृपा करी, गणि विहार कियो तिण वेला॥
३५ मुनि श्रावक श्राविका झंड सू, आवता मझ वाजारो।
पादडी साहिव स्हामो मिल्यो, वोल्यो हम आवेगे इक वारो॥

यतनी

३६ सेठजी नी हवेली माहि, केई दिवस रही गणिराय।
लालाजी री जागा स्वाम, मन कियो पुस्तक मेल्या ताय॥
३७. पडी सेठ नै खवर जिवार, करी विनती अधिक उदार।
एक मास ताई अवलोय, आप नै जावा देवू नही जोय॥
३८ स्वाम कहै दिशा जाणो दूर, वलि गोचरी दूर जरूर।
सेठ कहै दूर है एह, तो ही कृपा करो गुण-गेह॥

---

१. मासखमण तप करने वाले।

*लय—कुशल देश सुहांमणो...।

३९. जो जावो तो आडो सूइ रेस्यू, आप नै जावा नही देसू।
जे 'हरकती'[1] कर जावो जोई, तो आप सू जोर नही कोई ॥
४० वलि अर्ज विविध पर करतो, 'युव-नृप'[2] पाए पडतो।
सिर उघाड़े सेठ तिह ठाम, पग पकड्या छोड़ै नही ताम ॥
४१. करै वीनती वारंवार, नैणा नीर झरै तिहवार।
सुण नै अणुकपा अति आई, गणि गाथा ए फुरमाई ॥

'श्रावक घणाइ देखिया ए, आ हठ नै ओ झोड।
कठेइ दीठो नही ए, दीठो इणहिज ठोड कै ॥'
पूज पधारिया ए।

यतनी

४२ चिहु तीर्थ नो तिण ठाम, मन हुवो रहवा सू ताम।
करै अर्ज सेठ नै तारो, जव भरियो पूज हुकारो ॥
४३. रह्या नवी हवेली स्वाम, जूनी हवेली 'सत्यां'[3] सहु ताम।
सुण अन्नरज लोक अतिपायो, इण अनड़ नै आप नमायो ॥
४४. वारु वालटेंण जमु नाम, आयो पादरी साहिव ताम।
करी चरचा वात तिहां वारू, चिमत्कार लह्यो चित्त चारू ॥
४५. इसा जवर गणि जशधारी, ज्यारी महिमा जग में भारी।
अन्य मति स्वमति गुण गावै, छिव देख हर्ष अति पावै ॥

४६. *हिव मर्याद महोच्छव नै दिने ठाणा इक सो सत्तावीस भेला।
नवा काव्य छंद ढाला जोड नै गाया गुणिजन थया अति मेला ॥

४७ वासी मुहाल्या गाम नी, दोलाजी दीपती।
सुत छवील साथे ग्रही, आई चरण लेण कर 'खती'[4] ॥
४८. माघ शुक्ल दशम दिने, वहु मोच्छव मंडाणो।
वैठी मां पीजस सुत पालखी, आगे हय गय 'तुय'[5] निस्साणो।

---

१. जवरन।

२. युवाचार्य मघवा।

३ ६१ ठाणा।

४. लगन।

५. वाद्य।

*लय—कुशल देश सुहामणो।

४६. गोविन्दराम ना वाग मे, मा सुत नै इक साथो।
सामायिक संजम दियो गणि, वरण अमर पद 'आथो'[1]॥
५० हिव फागुण विद एकम दिने, विहार कियो गणिरायो।
पहुचावण सेठजी आवियो, साथे लवाजमो वहु ल्यायो॥

कलश

५१. सेठ भणी मुनि कह्यो धारियै सिर सिको हिव सतगुरु तणो।
तव-सुतन सुत वहु प्रमुख नै सिर धरावियो हिव कहे सुणो॥
मुज गुरु तणा गुरु आप है स्यू सिको धारू हू सही।
मुनि कहै चादी निमल पिण विण छाप रुपया मे नही॥
५२. तव कहै सेठ मुझ 'तंतु'[2] है वहु 'सूझतो'[3] मुनि जोग ही।
ल्यो विहु २ पछेवडी सर्व हीजे अज्जा नै मुनि लोग ही।
तो सिको धारूं एम सुण कह्यु इती चावन छै नही।
तव कहै इक इक लीजियै मुझ कीजियै किरपा सही॥
५३. तसु तारवा नै ततु कितनो, लियो जय किरपा करी।
पछै सेठजी गुरु धारणा कर, भवित विध विध आचरी।
अति हर्ष उमग हिये धार मुनि नी, सेव विध २ सू करि।
अन्यमति पिण तस देख रचना, लह्या विस्मय फिर फिरी॥

५४ *आसाघोटा वलमा छडी, लवाजमो ले थयो आगे।
जय कहै या रो काई काम है, सेठ कहै लवाजमो मुझ सागे॥
५५. विहार कियो अति झड सू, वहु श्रावक श्राविका लारे।
गणि प्रमुख मुनि सेतीस ही, आया गली थइ मझ वाजारे॥
५६ एक रात्रि रह्या वारै वाग मे, जैपुर 'सतोजी'[4] री सेव माहि।
नाथू प्रमुख मुनि चिहु राख नै आप विहार कियो सुखदाई॥
५७ हिव जोवनेर मे आविया, म्हामा आया ठाकुर नर नारी।
थली देश तणा जन आविया, च्यार रात्रि रह्या गणधारी॥

---

१. सपत्ति।
२. वस्त्र।
३. कल्पनीय
*लय—कुशल देश सुहामणो।
४. मुनि सतोजी।

५८ हिव नावै कुचामण थई करी, डीडवाणे गणि आया।
हाकम आदि लोक स्हामा आविया, तीन रात रह्या गणिराया ।।
५६ ए चौपनमी ढाल मे, कह्यु सतावीस नु उन्हालो।
वली सवध जैपुर सैहर नु कह्यु, अष्टवीस नु भालो ।।

ढाल ५५

दोहा

१. वार्कालिये हिव आवता, भडारी वहु भाव।
कृष्णमल्लजी आदि वहु, आया तिह प्रस्ताव ।।
२. लाडणु ठाकुर ना कुमर, पृथीसिघजी पेख।
लाडणु ना वलि लोक वहु, आया हर्प विसेख ।।

*गुणीजन ! पूज्य समो कुण होई, इण पंचम आरे जिन जिम तारै।
सुधारै भव दोई रे, सूरि जन ! स्वाम समो कुण होई ।।ध्रुपदं।।

३. हिव लाडणु सैहर माहि आवंता, लाडणू ठाकुर वहु थाटो।
वादरसिघजी साह्मा आया, लागो लोक नो अति गहगाटो रे ।।
४ इण अवसर जयपुर नो वासी, हुकमचन्द लाला नो पूतो।
लछमणदास लाला नो भतीजो, ओ तो माणक गुण अदभूतो।
५. आयो वहु मोच्छव चारित लेवा नै, चमर वीजी जै पालखी बेठो।
पीराजी पास कहै चरण दीजै, मिटै जन्म मरण दुख लेठो ।।
६. सित ग्यारस फागुण 'पुष्परिक्खे'[1], लियो जय कर संजम भारो।
नव वय भाई प्रमुख जे, छाडी वहु परिवारो ।।
७. माणकचंद भणी चरण देई आया, सैहर मे वहु मुनि साथो।
जन वृद ठाकुर प्रमुख सहित सू, ए तो नोहरे आया गण नाथो ।।
८. हिव लाडणु सैहर रहि नै आया, सुजाणगढे गण-इंदो।
त्या दर्शण दे नै पाछा आया, गणि लाडणू धर आनंदो ।।
९. त्या भीमजी ना लघु वंधु माडा ना, फोजमल तज फंदो।
वालक वय ज्येष्ठ कृष्ण वीज दिन, लियो चरण रयण सुखकंदो ।।

---

१. पुष्य नक्षत्र मे।
*लय—आधाकर्मी थानक में साधु रहै तो...।

१०. पछै विद सातम दिन कनइयालालजी, गर्ग गोती अग्रवालो।
हसी वासी चरण लियो हद, तज त्रिय बंधु विशालो॥
११ हिव सैहर वीदासर वर्ष गुणतीसे, चौमासो जय ठायो।
गणपति सहित उगणीस मुनि हद, कियो तप जप सखर सवायो॥
१२. गुलावकंवरजी आदि देइ नै, चालीस सत्या गुणमालो।
वडा जेताजी तप कियो वारू, मास खमण सुविशालो॥
१३ मालव देश ना सती चूनाजी, तप इकतीसो मासो।
उगणीस ऊमा, 'पख पख तप के'[1], सहु उदक आगार विमासो॥
१४ भीम मुनि तप पट् 'द्वादश भक्त'[2], वलि सात ना थोकडा दोय।
इक चोलो इक छ नो थोकडो, किया सहु चौविहार सुजोय॥
१५ अग्रवाला उदैरामजी, सिघल गोती वास भियाणी।
स्त्री मानकुवर नै दीक्षा दिरावा, आया वीदासर गुणखाणी॥
१६. कायक तो भाव पहिला ही था, गणि वचने वैराग वहु वाध्यो।
विहु सजोडे काती सुद दशम, सजम लेइ कारज निज साध्यो॥
१७. लूकड जाति सासरिया फलवधी, चिमनाजी मतिवती।
मृग विद वारस चरण लाडणु लियो, गणपति कर गुणवती॥
१८ अगरवाला वगतूजी दीक्षा, जैपुर सैहर ना वासी।
लाधी पोह सुध चौथ लाडणु, श्री जय कर सुविमासी॥
१९ वीकानेर वर सैहर नी वासी, गुलाजी गुणवती।
वीदासर मे चरण लियो वर, मुनिपति कर मतिमंती॥
२० जाति डागा सासरिया चौथाजी, सैहर रीणी ना वासी।
विद वैशाख ग्यारस दिन दीक्षा, ली वीदासर सुविमासी॥
२१ जाति सरावगी लाडणु वासी, वर छगना गुणधारी।
पीहर कुचामण चरण वीदासर, लियु आपाढ विद सुविचारी॥
२२. जेठ आषाढ मे गणपति तनु मे, रह्यो कारण ताव नु भारी।
अन्न अरुचि थी शक्ति घटी वहु, पिण हिये साहसिक श्रीकारी॥
२३ तिण कारण जोग सू विहार हुवो नही, तिण सू दूजो चौमासो।
सैहर वीदासर कियो गणाधिप, हिव सुणज्यो तेह समासो॥
२४. ए पचपनमी ढाल मे आख्यो, अठावीसा नो उन्हालो।
वर्ष गुणतीसा नो फुन वर्णन, सक्षेप थी सुविशालो॥

---

१. कई सतियो ने १४ व १६ दिन का तप किया।
२. पंचोला।

ढाल ५६

दोहा

१. तीसे वर्ष वीदासरे, द्वितीय कियां चौमास।
गणपति सहित सोलै मुनि थया, अति करता ज्ञान अभ्यास॥

२ सतीय गुलावा प्रमुख ही, समणी गुणचालीस।
ज्ञान ध्यान तप सेव नु, लियै लाभ निशि दीस॥

३ सात थोकडा तप कियो, भीम मुनि चौविहार।
च्यार पचोला 'दशम'[1] वे, एक सात सुविचार॥

४ छजमल मुनि फुन तप कियो, चोला वे चौविहार।
सप्त तणो इक थोकडो, चौविहार सुविचार॥

५ गुलाव दीर्घ इक मास लग, छठ छठ तप वर कीन।
पचोलो, नव, दशम इक, उदैचंद तप चीन॥

६ मास खमण मोता सती, जेताजी अद्ध मास।
दिन सतरै तेरै प्रमुख, कीधो तप सुविमास॥

७ अवर मुनि समण्या तणा, थोकडा तप अधिकार।
न कहु या कहितां वधै, ग्रंथ अधिक विस्तार॥

*जशधारी सुखकारी गणि महिमा निला स्वामी जी।
गुणक्यारी वर वारी सुमति सींचै भला स्वामी जी॥ध्रुपद॥

८. विहार कियो वीदासर सैहर थी, स्वामीजी,
पहुचावा चाल्या ठाकुर जनवृंद हो।
रही सुजाणगढ़ लाडणु वली स्वा०,
आया वीदासर सुखकंद हो॥

९ वारू वासी लाटोती गाम नो, नेमीचंदजी श्री श्रीमाल।
वले ऊमरा नो वासी तिहा, जोतीराम जाति अग्रवाल॥

१० दे विहु नै दीक्षा पुर वाहिरे, माह विद वीज पुष्प रवि दिन्न।
एकावन मुनि सगे सोभता, आया सैहर मे साथ वहु जन्न॥

११ हुवो माह सुध सप्तम नो तिहा, मर्याद महोच्छव श्रीकार।
डागा इश्वरदास नै तव कियो, चारू चरण लेवा नै त्यार॥

---

*लय—हू आवी छूं देवा ओलंभड़ा सासूजी।

१. चोला (चार दिन का उपवास)।

१२. 'ईसर' पुत्र डागा अग्रचंद नो, वीकानेर थेट में वास।
वीदासर मे नानाणा रा जोग सू, कियो वास धर्म लह्य खास॥
१३. वर्ष छाइसे त्रिया चंदा भणी, देवा चरण सुविचार।
पछै लघु वंधव परणाय नै, हिव चरण लेवा त्यार॥
१४. फागुण कृष्ण एकम वहु मोच्छव, इश्वरदास भणी सैहर वार।
वलि भीयाणी ना मुखाराम नै, विहुं नै चरण दे कियो विहार॥
१५. वारू गणपति मुकुट सुजय गणि, ए तो जिन मग मदिर स्थभ।
समय सज्झाय उद्यमी घणा, लियो ज्ञान ध्यान अति 'लभ'[1]॥
१६. वर उगणीसै तीसा वर्ष स्यू, चारू ग्यारस सित आसोज।
कहू सज्झाय-मान ते दिवस थी, ज्या तो करी समय रस मोज॥
१७ दशवैकालिक समय नी, वले उत्तराध्ययन अनूप।
सज्झाय मान विहुं समय नी, कहू आसरै चित्त धर चूप॥

कलश

१८. आसोज सित ग्यारस थकी, आसाडी पूनम लग सही।
दश मास साधिक माहि निर्मल, समय सज्झाय करी सही।
'चिहु लक्ष नै फुन सहस्त्र छय्‌यासठ, आसरै नवसय वली'[2]।
वर सखर समय रस लीन गणपति, करण आतम उज्जली॥

*हिव इकतीसे वर्ष गणपति, कियो सुजाणगढ चौमास।
जय सहित अठारै मुनिवरू, करै तप जप ज्ञान अभ्यास॥

२०. नेमीचद किया 'पच थोकडा'[3], दोय मास एकतर धार।
किया भीम ऋषि 'पट् थोकडा'[4], अठाई प्रमुख चौविहार॥
२१ सग सतीय गुलावा आदि दे, अष्टवीस अज्जाओपत।
तप विविध प्रकार वहु थोकडा, किया सतियां अति गुणवंत॥
२२. पछै विहार करी नै आविया, सैहर लाडणु अति श्रीकार।
त्या दीक्षा लेवा चूरू सैहर थी, आई कुनणा नै सिरदार॥

---

१ लाभ।
२. स० १६३० मे ४६६६०० का स्वाध्याय किया।
३ १२, ५, ६, ४, ४।
४. ८,७,६,५,५, ५।
*लय—हूं आवो छूं देवा ओलंभडा सासूजी ।

२३. त्रिहुं जाति पीहरिया वाठिया, वारूजी, कुनणा सामरिया हीरावत्त।
सिरदार सुराणा सामर्‍या, मृग सित दशम दीक्षा गणि हत्थ॥
२४. वले कुनणाजी 'ब्राह्मी' तणा, वारू पीहर वाधावास।
तसु पोस कृष्ण तेरस दिने, दियो चरण रयण गुण-राश॥
२५. दीक्षा तीजाजी खाटू तणा, सित चेत दशम सुविख्यात।
विद तीज वैशाख उदैकुवरजी, जोधपुर ना दीक्षा जय हाथ॥
२६. वीकानेर कोठार्‍या रै सासरो, तजी वेटो वहु वहु।
वाई सुदर शुक्ल आषाढ मे, दीक्षा मित छठ गणि कर लिद्ध हो॥

कलश

२७ रवि सम्य निधि महि वर्ष गणपति, समय गाह गुणी भली।
शत सहस्र साढा पंच नै फुन, अधिक जे कहियै वली।
षट् वीस सहस्रज सप्तशय, अठावन नै आसरे।
गाहा प्रमाण सज्झाय करवा, लीन जय निशि वासरे[1]॥

२८ *ए छप्पनमी ढाल मे, दाखी दोय वर्ष नी वात।
तीसा नै इकतीसा तणी, हिवै आगे सुणो अवदात॥

ढाल ५७

दोहा

१. वर्ष वत्तीसे लाडणू, चौमासो सुविचार।
श्री जय गणी सहित ही, उगणीस सहु अणगार॥
२ सती गुलावा सु आदि दे, समण्या षट् चालीस।
गणि सेवा तप जप सखर, करती धर सुजगीश॥
३. छजमल मुनि पनरै किया, तिण मे दश चौविहार।
अन्य मुनि समण्या थोकडा, तप कियो विविध प्रकार॥

जग जश धारी रे, उपगारी घणा भवि वोध व्रत दातारी रे।
वर मण वाडी रे गुण जल पाय नै प्रफुल्ल करी अति भारी रे॥

---

१ स० १९३१ मे ५७६७५८ गाथाओ का स्वाध्याय किया।
*लय—हूं आवी छूं देवा ओलंभडा सासूजी...।

४. हिव सैहर लाडनूं ना चौमास मे, वीजराज 'पश्चिम थली'[1] वासी।
वहिन कुसुभा रे कुवारी किन्यका, आयो साथ लेइ मुविमासी रे॥
५ कार्तिक कृष्ण अष्टमी, पुष्प मे तजी वीजराज सगाई।
वहिन कुसुभा रै द्वादश वर्ष नी, लियो साथ चरण वैन भाई॥
६. हिवे सैहर सुजाणगढ दर्शण दे करी, आया वीदासर गण-इंदो।
त्या श्रमण सत्या ना वहु मेला थया, आया गणि - वंदन जन-वृंदो॥
७ भंडारीजी सैहर जोधाण सू, आया दर्शण करण उमगो।
साथ 'कवीला'[2] रे श्रावक श्राविका, रथ हय ठाकुर वहु संगो॥
८. हिवे गणाधिप फागुण मास मे, आया सुजाणगढ माहि।
त्या नवेशहर थी रे गजमल मुणोत नी, वहु संजम लेवा आई॥
९. पीहर लसकर गाधी जाति नै, फागुण सित तीज उदारो।
लियो सुजाणगढ सजम स्वाम पै, तजी ऋद्धि सुत परिवारो॥

कलश

२ ३ ९ १
१० कर सज्झ्य निधि महि वर्ष गणी, आसरै समय तणी गुणी।
अठ लक्ख नै फुन कहूं ऊपर, सहस्र एकादश थुणी॥
फुन पवर पट् शत सखर समचित, गाह गुणी जय महामुणी[3]।
अति जवर मुनिवर पुर्वधर सम, सघन कीर्ति गणी तणी॥

११ हिव वर्ष तेतीसे रे वृद्ध वय जोग सू, कियो लाडणू द्वितीय चौमासो।
गणपति सहित मुनि उगणीस स्यू, थयो वहु धर्म उजासो॥
१२. मासखमण इकतीसो मनहरु, कियो 'शिव वगस' उदक आगारो।
अठ दिन तेह मे किया, लगोलग चौविहारो॥
१३. समणी गुलावकवरजी आदि दे, सहु एकावन सुविचारो।
पडियारा ना रे मोताजी कियो, मास खमण उदक आगारो।
१४. वली पाच थोकडा प्रगट मुनि किया, सती ज्ञाना दिवस वावीसो॥
वली चोला सू लेइ तेरा लग थोकड़ा, किया सतिया पवर पैतीसो॥
१५ त्या तिथ त्रयोदशी कार्त्तिक शुक्ल में, वर सुरगढ सैहर नो वासी।
हुकमचदजी. रे तात वधु तजी, लियो चरण रयण सुविमासी॥

---

१ पचपदरा ग्राम के।
२. कुटुम्ब।
३. सं० १९३२ मे ८११६०० गाथाओ का स्वाध्याय किया।

१६. पछै सुजाणगढ में दर्शण दे करी, कियो मोच्छव बीदासर मांह्यो।
पछै वृद्ध हस्तु रै कारण सुण तारवा, आया लाडणू थेट चलायो॥
१७. थाका आया तो ही दर्शण तिह समें, डोकरी हस्तु नैं दीधा।
सहाज्य दियो अति ते तिण रात रा, चल्या चोला में सुप्रसिद्धा॥
१८. पर उपगारी विडदधारी वड़ा, गणि उद्यमी अधिक उदारो।
वनां गुलावां साथे चरण दे, डोकरी नैं पार उतारो॥
१६ पछै सुजानगढ मे रे दर्शन देइकरी, आया लाडणू सेहर मझारो।
देवगढ वासी चंदाजी सती, तसु दियो सहाज्य श्रीकारो॥
२०. द्वितीय जेठ विद दिवस अमावसे, गणि विविध वैराग सुणायो।
सागारी संथारो तिविहार कराचियो, दोढ पोहर आसरै आयो॥

कलश

२१. उगणीस शय तेतीस वर्ष जय, सज्झायमान कहूं सही।
शत सहस्र तेरे वीस सहस्रज, अधिक जे कहियै वही।
आसरै चिहुं सै गाह ऊपर, उभय[1] 'निगम'[2] तणी कही।
इह भरत मे गणिराज तुम सम, अन्य को देख्या नही॥
४ ३ ६ १
२२. युग संज्ञच निधि शशि वर्ष गणि, समय सज्झाय घणी करी।
शत सहस्र चउदश अने ऊपर, सहस्र चौराणु खरी।
आसरै अढीसै गाह गुण, अति नेता तपसिरी[3]।
फुन पवर मुनिवर सुमति देवत, पद जु सेवत चित्त धरी॥

२३ ए सत्तावनमी ढाल मे आखियो, वे वर्ष तणो सुविचारो।
वत्तीस तेतीसा वर्ष तणो इहां, कह्यो अल्प अधिकारो॥

ढाल ५८

दोहा

१. वृद्ध अवस्था जोग सू, वलि तीजो चउमास।
सैहर लाडणू में कियो, सुणजो तेह समास॥
२. ज्ञान ध्यान उद्यम अति, अहो निशि करत उदार।
सुमति सुधारस पाय नैं, निस्तारैं नर नार॥

१. स० १६३३ मे १३२०४०२ गाथाओ का स्वाध्याय किया।
२. आगम।
३. स० १६३४ मे १४६४२५० गाथाओ का स्वाध्याय किया।

*सूरिजन ! सुणियै जय जशवाद, ज्यू होवै मन आह्लाद।
उत्कृष्ट रसायण जो चित्त आवै, तो पावै परम समाध ।।ध्रुपद।।

३ श्री जिन सादृश्य जय वर गणपति, जिन मग मडण जाण।
कुमति जु खडण अघ रिपु दडन, भर्म विहडन भाण ।।
४. उगणीसै चउतीस वर्ष वर, लाडणू सैहर मझार।
गणपति सहित द्वयवीस मुनिवर, करता अति उपगार ।।
५. शिववगस तपस्वी तप सखरो, इकवीस उदक आगारो।
दलीचंद ऋषि तप षट् थोकडा, किया अवर मुनि वलि च्यारो ।।
६ समणी गुलावा आदि देइ सहु, सत्या छप्पन श्रीकार।
'ककू चल्या बे चौमासे आया'[1], थया अठावन अवधार ।।
७. मोता वीस अनै और समण्या, करती तप सु किलोल।
छप्पन सत्या मे तेपन थोकडा, अठारै लग लगती ओल ।।
८ दोलतराम 'आसोज मे दीक्षा, जाति वावेल सु जाणी।
'अगना'[2] 'अगज'[3] छोड लाडणू, ली स्वाम हाथ सुखदाणी ।।
९ वगतावरजी लाडणू वासी, फागुण विद पञ्चम दिन्न।
वहु हगामे चरण लाडणू, लियो छोड़ मात परिजन्न ।।
१०. देवीचदजी अगरवालो, ऊमरा गाम नो वासी।
फागुण विद चउदश दिन लीधो, सजम अति सुविमासी ।।
११ पेमाजी जोजावर केरा, देवर सुतनै छोड ली दीक्षा।
पछै न पल्यो तिण सू गणथी, निकली छोड सजमवर शिक्षा ।।
१२ दादरी भीयाणी रा रामूजी, नालस गोती रामजश-वेटी।
विद आपाढ ग्यारस वीदासर, लियो चरण रयण गुण-पेटी ।।

गावो रे गुणि गणि गुण जाझा, ज्या रा वाजै सुजश जग वाजा।
करै ज्ञानादिक वर शिवपुर साजा, सोहै चिहु तीर्थ ना राजा ।।ध्रुपदं।।

१३ सवत् उगणीसै पैतीसे, वीदासर चौमास।
गणपति सहित वर पनरै मुनि, करै कर्म कटक दल नाश ।।

---

*लय—आवेरी माइ लवणांकुस...।

१. साध्वी श्री ककूजी तीन ठाणों से चादारुण मे स्थिरवास कर रही थी उनके दिवगत होने पर दो साध्वियां चातुर्मास मे लाडनू आ गई।

२ स्त्री।

३ पुत्र।

१४. गुलावकुंवरजी समणी प्रमुख, तयांलीस वर अज्जा।
गणि सेवा वर तप जप उद्यम, करनी सखर गनज्जा॥
१५ महकरण मुनि मास खमण कियो, इकतीसो उदक आगारै।
विविध प्रकारे अवर मुनि तप, शिववगसजी दिवस अठारै॥
१६ दिवस वावीस नो थोकड़ो ऋद्धु, थया थोकडा अवर गुणतीस।
अप्टादश लग लगती ओली, करी समण्यां सु जगीस॥
१७. चांदारुण ना रामचंदजी, जाति लूणिया जोई।
विद भाद्रव तेरस जोवन मे, लियो चरण रयण अवलोई॥
१८. सुभाजी देसणोक ना वासी, गोलेछा जाति सासरिया।
विद भाद्रव पंचम जय दीधो, चरण रयण गुण दरिया॥
१९. भीयाणी रा सरजांजी भल, अगरवाला उमंग।
पोह विद चौथ बीदासर माहे, लियो चरण रयण चित-चंग॥
२० पछै माह सित सप्तम मोच्छव नै दिन, बीदासर उत्कृष्ट मेला।
इकसठ मुनि अज्जा इकसो वावन, थया जय वरतारे भेला॥
२१ बीदासर वासी छोगाजी, सासरिया जाति सेखाणी।
कृष्ण ज्येष्ठ छठ सुजाणगढ झट, लियो चरण रयण गुणखाणी॥

कलश

२२. उगणीस सय पणतीस वर्ष, जय सम - रस गलतान ही।
शत सहस्र तेरे अने ऊपर, सहस्र इकसठ मान ही॥
वलि साढ पट् सै आसरै, गाह गुणी वर शुभ ध्यान[1] ही।
अति उद्यमी गण इद दीपत, जिनेन्द्र सम इह जान ही॥
२३. *ए अठावनमी ढाल रै मांहि, आख्या चौमासा दोय चारु।
चौतीसा पैतीसा वर्ष तणी ए, कही वतका गुण-कारु॥

ढाल ५९

दोहा

१. छतीसे बीदासरे, वाचयम सहु वीस।
आप सहित उद्यम अति, करता मुनि निश-दीस॥

---

*लय—आवेरी भाइ लवणांकुश

१. स० १९३५ मे १३६१६५० गाथाओं का स्वाध्याय किया।

२. सतिय गुलावा सहित ही, समण्या द्वय चालीस।
तप जप सेवा स्वाम नी, करती धर सुजगीश ।।

कलश

३. मोता सती पडियार ना, इक मास तप कीधो भलो।
सहु थोकडा समण्या मझे, चालीस पण तप उज्जलो[1]।
तेवीस लग वर ओल माहे, थोकडा चिहु ना भया।
वावीस वार अठार नै फुन, तेर विन सघला थया।।

*सुगण प्राणी लेवो रे शरण जयगणी तणो सुगण प्राणी,
लेवो रे शरण जय स्वाम नो ।।ध्रुपद।।

४ हिव सावण विद एकम दिने, गणि सैहर वीदासर माहि रे।
साडवै रा वासी छोटाजी भणी, दियो चरण रयण सुखदाय रे।।

५. विहार करी वीदासर थकी, लीवी सैहर लाडणू वाट।
मर्याद मोच्छव कियो लाडणू, थया समण सत्या ना थाट।।

६. तिहा सैहर जोधाणै थी आविया, भडारीजी धर भाव।
सइकडां जन साथे भला, किया दर्शण तिण प्रस्ताव।।

७. वलि दर्शण मोच्छव देखवा, आया अवर ही वहु जन वृद।
पछै सुजाणगढ मे पूजजी, दिया दर्शण धर आनद।।

---

१. स० १९३६ के बीदासर चातुर्मास मे जयाचार्य के साथ साध्वियो मे ४५ थोकडे हुए, उनमे से कुछेक नाम इस प्रकार है—

साध्वी मोताजी (३७९) 'पडिहारा' ने मासखमण किया।

,,	ऋद्धुजी	(४३९)	ने २३ दिन का तप किया।	
,,	ज्ञानाजी	(४२)	,, २१	,,
,,	चूनाजी	(२४०)	,, २०	,,
,,	नानूजी	(३९३)	,, १९	,,
,,	मोताजी	(२७६)	,, १९	,,
,,	लिछमाजी	(३०१)	,, १७	,,
,,	किस्तुराजी	(३९१)	,, १६	,,
,,	चादाजी	(३९४)	,, १५	,,
,,	गोरखाजी	(३५९)	,, १४	,,
,,	हरखूजी	( )	,, १४	,,
,,	लच्छूजी	( )	,, १४	,,

*लय—आठ कुआ नव वावड़ी हे दरजण...

८. भेरूलाल लाला नी वीनती, मानी कियो जैपुर नैं विहार।
डीडवाणे दोलतपुरे थई, आया कुचामण बाग मझार॥
९. बहु लोक दर्शण नैं आवता, गावता गणि गुणग्राम।
वचनामृत जय पावता, जन जाता सुप्रसन्न थई धाम॥
१० तीन रात्रि गणि रही तिहा, सुखे-सुखे करता विहार।
मीठडी नावै गुडे थई, आया जोवनेर जयकार॥
११ जोवनेर दर्शण दे करी, आया हे जैपुर सैहर।
पुर बार भेरूजी री जायगां, इक रात्रि रह्या कर मेहर॥
१२ मगदूजी जाति त्या महेसरी, देवरियै गाम थी आय।
सित चेत अष्टम दिने पुष्य मे, लियो चरण रयण सुखदाय॥
१३ चरण देइ पुर मे पधारिया, गज पलटण जन बहु साथ।
घणे हगामे लालाजी री जायगा, पगल्या किया गणनाथ॥

छंद

१४ उगणीस सय षट तीस वर्ष, जय स्वाम सज्झाय घणो करी।
शतसहस्र चउदश ऊपरै, वलि सहस्र सैंतो चित्त धरी॥
वलि साढे नव सै आसरै, गणि समय गाह गुणी भली।
इम सज्झाय ध्यान सुज्ञान तप करी, आतम कीधी उज्जली[1]॥

१५. *ढाल भली उणसाठमी, गणपति जय गुणकार।
वर्ष छतीसे पधारिया, स्वामो जयपुर सैहर मझार॥

ढाल ६०

दोहा

१. उगणीसै सैंतीस नु, जयपुर मे चौमास।
गणि सहित गुण आगरू, श्रमण वीस सुविमास॥
२. सतिय गुलाब सु आदि दे, समणी पट् चालीस।
गणी सेव तप जप करी, सफल करै निशि दीस॥

---

१. स० १९३६ मे १४३७९५० गाथाओ का स्वाध्याय किया।
*लय—आठ कुआ नव बावड़ी हे दरजण .।

३.　　सावण सित चउदश थकी, मयाचद गुण लीन।
　　एकतर कार्तिक लगे, वीच छठ चवदै कीन॥
४.　　भीम एकतर मास वे, वलि धनजी अणगार।
　　दिन चउदश तप थोकडो, अन्य मुनि विविध प्रकार॥

*धिन-धिन हो गण-इन्दा, गुण-वृदा, श्री जय महामुनि रे॥ध्रुपदं॥

५　हिव जैपुर संहर मझारो, सुखकारो, सहु मुनि महासती रे, म्हारा स्वाम।
करता गणपति सेव रे।
केइ ज्ञान ध्यान अति करता, अघ हरता वहु तपस्या करी रे।
मुनि अलग करी अहमेव।
६. वलि जन हजारां आवै, वहु भावै दर्शण करण नै।
वहे देश देश ना लोक।
गणि वयण सुणी हुलसावै, सुख पावै दर्शण देख नै।
गुण गावै मिल जन थोक॥
धिन धिन हो गणिराया सुखदाया, श्री जय महामुनि रे॥ध्रुपद॥
७. वलि सतिया वहु तप कीधो, जश लीधो गुणीजन लोक मे।
तप मोता दिन इकवीस।
वलि थोकड़ा सहु इकताली, सुविशाली ओल लगो लगी।
करी सोला लगे सुजगीश।
८. शिवकरणजी सुखकारी अति भारी, कष्ट सही करी।
लेई आज्ञा गणपति हाथ।
सित आसोज सप्तमी चारू अति वारू, चरण अगीकर्यो।
तजी आथ महेसरी जात।
९. वलि आमेट कुहाथल वासी, गुणरासी किस्तुरा कहू।
वारू धन तेरस नै दिन्न।
ले श्री जय गणि शिष्या, वर दीक्षा 'मुझ हाथे'[1] ग्रही।
वहु मोच्छव सती दृढ मन्न।
१०　वृद्ध वय हसराजो तज सहाजो, पुत्रादिक तणो।
अति जाझो धर वैराग।
सीसोदा गाम नो वासी सुविमासी, धाकड जाति जे।
आयो चरण लेण धर राग॥

---

१ युवाचार्य मघवा के हाथ से।
*लय—कसीया ने तंबुडा हो...

११. वलि जोजावर नो जाणी, सिरदारमलजी आवियो।
चरण लेवा मन आण।
ए विहु नै इक साथे निज हाथे, महा विद प्रतिपदा।
दियो चारित्र वहु मंडाण ॥
१२ पछै कागद थली ना आया वहुभाया, मिल विनती लिखी।
हिव पगल्या कीजै थली देश।
है उपगार नो इहा 'नाको,'[1] जे खाखो थो खंड्या तणो।
सो विखरतो दीसे विशेष।
१३ वलि सत कालू सुखकारी, विगत सारी खंड्या तणी।
कही थयो त्या रो अति ही उघाड।
वहु लोक सिको तुझ धार्‌यो, पधारो आप जो इह समै।
तो अति ही होवै उपगार ॥
१४ वलि वीदासर नो 'भायो'[2] आयो, जाति वेगाणी पिण जदा।
तिण पिण कह्या समाचार।
सुण स्वाम धरी हुसियारी, करी त्यारी थली जावा तणी।
इक्खू तीज नो करण विहार ॥
१५. विहार तणी सुण वाणी, सुखदाणी श्रावक सैहर ना।
वारू लालांजी प्रमुख विचार।
करी विविध पर अर्जी, कर मुरजी चौमास करो इहा।
करणो ग्रीष्मे कठिण विहार ॥
१६ वलि प्रभुदानजी व्यासो सुविमासो, अरज करी इसी।
हू गयो रावलजी रे पास।
त्या पिण सुण कहिवायो, इहां रहिवो 'इण खावै'[3] भलो।
जिण सू कीजै इहा ही चौमास ॥
१७. वलि विविध परे करी अरजी, वर मुरजी देखी नै तदा।
वलि अवर 'मुदो'[4] पिण हेर।
रह्या तिहा जय स्वामी, हित कामी जे भव्य जीव ना।
करी जैपुर सैहर पर म्हेर ॥

---

१. विशेष अवसर।
२ नगराजजी वैगाणी (नई पोल वाले)
३ इसी तरह।
४. उद्देश्य।

दोहा

१८ मास वैशाख माहि विमल, इक लख सात हजार।
वे सै पनरै आसरै, सज्झाय मान सुविचार॥

१६ ज्येष्ठ मासे जय गणि, सहस्र नेऊ गुणी गाह।
साढ छ सै फुन आसरै, लियो समय रस लाह॥

२० मास आसाढे गणपति, सहस्र पचितर सार।
सवा आठ सै आसरै, गुणी गाह गुणकार॥

कलश

२१. उगणीस सय सप्त तीस वर्षे, जय सज्झाय सुणो गुणी।
गाहा समय [1]उत्तराध्ययन नैं, वलि दशकालिक नी भणी।
गत सहस्र ग्यारै ऊपरे, इकवीस सहस्र नैं 'आसरे'।
वलि धर्म देशन आदि करी गणि, उद्यमी निशि वासरे॥

२२ *ए साठमी ढालो सु विशालो, वतका वर्णवी।
सैंतीसा वर्ष नी सोय।
जयपुर मे चौमासो, अधिक उजासो धर्म नो।
कियो मिथ्यातम मल धोय॥

ढाल ६१

दोहा

१. हिव अडतीसा वर्ष नो, सक्षेपे सुविचार।
श्रोता चित्त देई सुणो, ह्वै ज्यू मन चिमत्कार॥

२ ऊठी सेतीसे गाठ गल, फूटी मास आषाढ।
तिण जोग सज्झाय न थई वहु, पिण मन अधिक सुगाढ॥

३ [2]सोल सहस ने सात सै, श्रावद विद पख मांय[2]।
करी असझाई टाल नैं, समचित सखर सझाय॥

---

१. स० १६३७ मे ११२१००० गाथाओ का स्वाध्याय किया।

*लय—कसीया ने तंबुडा हो.

२. स० १६३८ सावन वदि १५ तक १६७०० गाथाओ का स्वाध्याय किया।

कलश

४. उगणीस सय तीसै तणा, आसोज सित ग्यारस थकी।
अडतीस ना श्रावण शुक्ल वर, प्रतिपदा दिन लग जिकी।
गाह लख छ्यासी अनै वर, सहस्र सतसठ मान ही।
वलि साढ चिहुं सै आसरै, जयाचार्य गुणी शुभ ध्यान[1] ही।

५. [*]एहवा गणपतिम हागुणधारी लाल स्वामजी,
ज्ञान सज्झाय ध्यान अति भारी जी।
जशधारी जय गण इंदा लाल स्वामजी।।
लहर्लीन समय रस माही, तनु वेदन नी गिणत न काई।
दृढताई अति गुण वृंदा लाल स्वामजी।।

६ वलि अडतीसे जैपुर सैहरो, चौमास कियो करी महरो।
गुण गेहरो श्री जय स्वामी।।
सेवा मे सतरै सु संतो, अठारमा आप महंतो।
सुभदतो गुण गण धामी।।

७. सेवा मे इक हू हुतो, वखाण प्रमुख नी सेव करंतो।
धरतो विनय सुचारू।।
मोतीलाल मुनि मतिवंतो, गणपति नी सेव करंतो।
लक्खासर वासी वारू।।

---

[*]लय—सुखपाल सिंघासन ल्याजो लाल बालहा...

१. स० १९३० आसोज शुक्ला ११ से १९३८ सावन शुक्ला १ तक कुल ८६६७४५० गाथाओ का स्वाध्याय किया। उसकी तालिका क्रमश. इस प्रकार है—

सं० १९३० (आसोज सुदि एकादशी से आषाढी पूर्णिमा तक) गाथा सख्या	४६६९००
स० १९३१	५७६७५८
स० १९३२	८११६००
स० १९३३	१३२०४००
स० १९३४	१४९४२५०
स० १९३५	१३६१५००
स० १९३६	१४३७९५०
स० १९३७	११२१०००
स० १९३८ (सावन सुदि एकम तक अर्थात् सोलह दिनो मे)	७६९४२—
	(१६७०० सूत्र की, अतिरिक्त ६०२४२)
कुल	८६६७४५०

यद्यपि जय-सुजश मे उक्त ६०२४२ गाथाओ की स्वाध्याय का उल्लेख नही है किन्तु समस्त टोटल के अनुसार ऐसा अनुमान किया जाता है कि सूत्र के अतिरिक्त इतनी गाथाओ का स्वाध्याय किया था।

८. वलि भीम मुनि अति भारी, सित आपाढ तेरस थी धारी।
तप छठ छठ निरंतर करतो॥
'विच एक चउत्थ, दश तेला, इक दशम सर्व समेला'[1]।
चउविहार करी अघ हरतो॥

९. वलि डालचंद बुद्धिवंतो, फुन जुहार पाटणी संतो।
सहु संतो करै गणि सेवा॥
मुनि मयाचंद सु विचारी, वर एकंतर तप धारी।
करी सेव लहै गुण मेवा॥

१०. वलि नंदराम मुनि नीको, वलि कनइयालाल अति तीखो।
मुनजीक भक्ति अति करतो॥
वलि ईश्वरदास उदारी, करी सेवा अधिक सु भारी।
व्यावच्चियो गुण जश वरतो॥

११. मुनि कुशाल व्यावच अति करतो, लघु जुहार आयो त्या फिरतो।
चौमासे टल गण आयो॥
वलि नवलमुनि गुणधारी, खूबचंद बंधव हितकारी।
तप धनजी दिन द्वादश ठायो॥

१२. वलि पृथीराजजी पेखो, शिवकरण मुनि फुन पेखो।
सुविशेष सेव गणि कारक॥
फोजमल्ल भीम नो भाई, ए सतरै मुनि सुखदाई।
गुणग्राही सेव गणि सारक॥

१३. सती गुलाव आदि गुणवंती, सतिया पणतीस सोहंती।
गणपति नी अति सेव करंती॥
सती गुलाव महा सुखकारी, करी भक्ति विविध पर भारी।
बहु विनय विवेक धरंती॥

१४. प्रथम चौमास विण पेखो, उगणीसै नवका थी लेखो।
थेट सीम करी गणि भक्ति॥
कियो लिखणो जोडणो जाणी, वले विविध वखाण स वाणी।
सुखदाणी जाण बहु युक्ति॥

१५. समणी वड जेठा सुखदाणी, करी सेव विविध पर जाणी।
ओषधि आदि जिके चीज चाहनी, आलस छोड तुरत ले आनी।
सुखदाणी सती सयाणी॥

---

१. एक उपवास, दस तेला और एक चोला किया।

१६. मोता पडियारा नी मतिवती, करी सेव तंतु सीवर्ती ।
करै नान्हुजी चादा वहु 'काजै'[1], पडिलेहण गोचरी नी सेव सांझै ।।

१७ सती ज्ञानाजी गुणवती, उदक आदि नु काम करंती ।
चनणाजी फुन चूना कुवारी, वलि सुरता चादू सुखकारी ।।

१८ हरकुवर जैपुर नी वासी, उदैकुवर कुवारी विमासी ।
राजा मखतूला दादी पोती गणि सेव करी अघ धोती ।।

१९ मोता वीकानेर ना वासी, वले वगतू ऋद्धू सुविमासी ।
श्रीजीदुवार तणा वलि मोता, नानूजी सेवा मे फुन होता ।।

२० पाता वूजकुवर फुन जाणी, कसूभा किस्तूरां गुणखाणी ।
वगतावर रामूजी राजै, चदा पानकुवर सेव साझै ।।

२१. जयकुवर नंदूजी जेह, वलि चंपा सोना गुण गेह ।
लघु जेठा जडावजी जाणी, करै सेव गणी सुखदाणी ।।

२२. इद्रु शिवकुवर मां वेटी, वलि गीगाजी गुणपेटी ।
समण्यां पेतीस सोभंती, गणि सेव करै गुणवंती ।।

२३ सहु समण सत्या गुणधारी, करै सेवा धर हुसियारी ।
मुख देख हर्ष अति धरता ।।
इकसठमी ढाल मझारो, कह्या मुनि समणी श्रीकारो ।
चौमास रही सेव करता ।।

ढाल ६२

दोहा

१. सावण विद मे स्वाम तन, उपनो कारण एह ।
दसत तणो वलि अवर जे, अन्न अरुचि अधिकेह ।।

२ विद तीज चोथ पचमी, थयो लघण ज्यू ताय ।
इक दिन तो जल दाल को, लियो छाण गणिराय ।।

३ थोडी सी पोदीना तणी, चटणी घाली माय ।
पछै दोय दिन प्रभात रा, 'धरण'[2] स्वाम मसलाय ।।

---

१. कार्य ।

२. नाभि के नीचे की वह नस जो अगुली से दवाने पर रह-रहकर उछलती हुई-सी मालूम पडती है ।

४. इक दिन मोई सूठ री, लीवी अल्प सी जाण।
वले घाट बाजरी तणी, ली 'पूण कल्प'[1] उनमान ।।

५. धरण मसलाय दूजे दिने, ली घाट 'टकै उनमान'[2]।
माहि अल्प सो पय लियो, करी अवमोदरी जाण ।।

६. पछै अल्प अल्प अन्न पिण, लेण लागा गण - ईश।
किणहिक दिन अन्न ना लियो, पिण धर्मोद्यम निशि दीस ।।

*जय स्वाम जवर गुणधारी हो, जयकारी श्री जिन सारिषा।
वर गुणमणि रयण भडार।
ज्या सुमति सखर भव्य आपी हो, गणि कापी कुमति मति वेलडी।
जे हुती दुख दातार ।।ध्रुपद।।

७. इम अन्न अरुचि थी जाणी हो, सुखदाणी आहार घटावियो।
वलि अवसर जाणी हो आप।
स्वाम सखर सुखदाणी हो, वर वाणी भाखै एहवी।
हिये धरिया कटै भवि पाप।

८. ज्या री सीख सखर सुखदाता, भवि साता लहै हिये धारिया।
इह भव परभव माय।
वचनामृत जल पाता, विख्याता 'कर्ण-पुटे'[3] करी।
सुण्यां हृदय शीतल अति थाय ।।

९. सुण कारण दर्शण करवा, काई श्रावक चूरू सैहर ना।
सागरमलजी कोठारी जात ।।
वृद्धिचदजी सुराणा, काई आया अति उचरंग सू।
दर्शण करि लह्यु हर्प विख्यात ।।

१०. वलि कारण सुण तिहवारी, भडारी वादरमल्लजी।
काई जोधाणे जसु वास।
झट डाक गाडी मे वेसी, सुविशेष ताकीद सू आविया।
श्रावण विद मे करी पर्युपास ।।

---

१. एक छटाक (लगभग ५८ ग्राम)

२. पौन छटाक (३० ग्राम लगभग)।

*लय—अंवरीओ हो तो गाजै हो भटियाणी...

३ कानो के द्वारा।

११. ज्या रैं प्रीत पूज सू भारी, इकतारी गणि वचना तणी।
वली आसता अधिक उदार।
दर्शण कर हुलसाया, थइ साता काइक स्वाम रे।
सुण लह्या हर्ष अपार॥

१२ त्या नै विविध प्रकार नो वातां, विख्याता आप कही भली।
काई सुण लह्या हर्ष सवाय।
पछै केइक दिन कर सेवा, जिन जेहवा श्री जय स्वाम नी।
पाछा गया सावण विद माय॥

१३. हिव श्रावण सित पख्र माहि, काई अवर तो साता ही हुंती।
पिण गले गाठ फूटी थी ताय।
तसु मुख चोडो करवा थी, रसी असझाइ ना जोग थी।
समय नी न थई सझाय॥

१४. पिण शुभ जोग ध्यान चित्त धरता, गणि करता उद्यम 'अह-निशे'[1]।
वलि देवा सुमति अनूप।
जे समण सती हिये धारै, त्या रै इह परभव सुख होवै हो।
एहवी सीख अमृत रस कूप॥

१५ पछै श्रावण सित चउदश दिन, कांई आसरै पाछिले पोहर में।
काई ताव चढचो जय तन्न।
पछै पूनम दिन प्रभाते, काई लाला भेरूलाल रे।
तनु कारण अधिक उपन्न॥

१६. सुण गोचरी वेला स्वामी, गुणधामी दर्शण देण नै।
पउधारचा गणधार।
विविध वैराग्य नी वाणी, हित आणी अवसर जाण नै।
संभलाई सुविचार॥

१७. वलि परिणाम अति ही चढाया, गणिराया दर्शण दे करी।
पाछा आया 'मोती महल'[2] माय।
पछै उणहिज दिन आथण रा, गणिराज वलि दर्शण दिया।
दिया शरण अति सुखदाय॥

१. दिन-रात।
२. लालाजी के मकान की ऊपरी मजिल का विशेष कमरा।

१८. पछै तिण रात तुरत लालाजी, कांई चलिया जाणी गणपति।
विद भादु एकम दिन ताय।
लूणीया सिरदार मल्ल नी, जायगा मे पूज पधारिया।
निज पगले पगले आय।।

१९ थी अन्न अरुचि 'तप'[१] योगे, तिण कारण तिण दिन पय लियो।
'त्रिण पइसा भर उनमान'[२]।
रह्यो जीव दोरो तिण जोगे, कांई चुर्ण प्रमुख औषधि लियो।
न कियो आहार आथण रा जान।।

२०. पछै वीज नै पय टका भर, इक मासो सूठज आसरै।
लियो ओषधि रूप ए आहार।
वलि तीज दिवस प्रभाते, पय मे सूठ लीवी सही।
न कियो आथण आहार विचार।।

२१. विद चोथ धरण मसलाई, काई लीधी मोई सूठ की।
लोका कह्यो वरफी ल्यो सार।
तव आसरै चिहुं पच मासा, ली वरफी धरण मिटायवा।
दसता लागती वहु तिहवार।।

२२. धरण मसलाय पंचम नै, ली घाट टका भर आसरै।
लीयो पय पइसै उनमान।
आथण रा अरज वहु कीधी, तव लीधी 'सीत'[३] इक मुख मझै।
आया थूकणी तज्यो अन्न जान।।

२३ कहुं पंचम दिन अधिकारो, सुखकारो श्री जय गणपति।
अन्न अरुचि दसत तनु जाण।
वृद्ध वय गाठ प्रमुख थी, काई शक्ति घटी जाणी गणी।
करै आलोयण गुणखाण।।

२४. ढाल वासठमी माहि, काई वतका सावण मास नी।
कही सक्षेप विचार।
विद भाद्रव पंचम ताई, कांई दाखू हिव संलेखणा।
आराधन अधिकार।।

---

१. बुखार।
२ डेढ छटाक (८७ ग्राम लगभग)।
३. भोजन का किंचित् भाग।

ढाल ६३

दोहा

१. पचमी दिन हिव पूज्य सू, अरज करी म्है एम।
जो इच्छा ह्वै आप री, तो सुणियै धर प्रेम॥

२. दश विध आराधन तणी, ढाला दसू उदार।
जे आप तणी जोडी जिके, संभलावू श्रीकार॥

३ आप फुरमायो एह हिव, सभलावो श्रीकार।
धुर आलोयण ढाल म्है, वाची तव तिहवार॥

४ ज्ञान दर्श चारित्र नां, तप वीर्य आचार।
विराधन ना आवै जिहा, ठाम ठाम सुविचार॥

५. 'मिच्छा-मिदुक्कड' जिके, ऊंचै शब्द उच्चार।
ठाम ठाम दीधा तिहा, कहुं संक्षेप विचार॥

*गणाधिप परम विमल ध्यानी रे, गणाधिप परम विमल ध्यानी।
कमल जेम 'निर्पक'[1], आतम निज करत जवर ज्ञानी॥ध्रुपदं॥

६. काल विनयादिक जे जानी रे २
ज्ञानाचार है अठ विध तेह मे, लागो दोष माणी।
'मिथ्या-दुष्कृत' तसु दाख्यो रे २
वलि दर्शण आचार आठ विध, निस्संकतादि भाख्यो।
तेह मे अतिचार थयो कोई रे २
तेहनो पिण 'मिथ्या-दुष्कृत' दे, निज आतम धोई।
इसा गणिराज जवर जानी रे
कमल जेम निर्पक, आतम निज करत जवर ज्ञानी॥

७. चरित्त आचार विषै जोई रे २
इर्य्या भाषादिक पंच सुमित मे, दोष लागो कोई।
वलि त्रिण गुप्ति माहि सोई रे २
दोष लागो ह्वै तेह तणो मुझ, 'मिथ्या - दुष्कृत' होई।
वलि 'पंच याम'[2] विषै जोयो रे २
रात्रि भोजन प्रमुख व्रत में, दोष लागो कोयो।
'मिथ्या-दुष्कृतं' तसु ठानी रे २
इम आलोयण कर गणि आतम करै विमल ध्यानी॥

---

*लय—सुगुरु की सीख हिये धरणा रे...

१. निर्मल

२. पच महाव्रत

८ हिवै द्वादश विद जे ताह्यो रे २
तपाचार जे नियमाभिग्रह, हुता ते माह्यो।
जे दोप लागो हुवै कोई रे २
तेहनो पिण 'मिच्छामि दुक्कड, दीधो अवलोई।
वलि शिव साधक व्रत मे जोयो रे २
वल वीर्य गोपवियो तेहनो. 'मिथ्या - दुष्कृत' होयो।
एम आलोयण गणि ठाणी रे २
पचाचार ना दोप आलोय वर वरण मुक्ति - रानी ॥

९ आलोयण नी ढाल मोटी माहि रे २
बे त्रिण आसरे म्है तव गाथा, वाची नही त्या ही।
तदा गणी आप एम दाख्यो दे २
रही काई कोई गाथा या, तव म्है इम भाख्यो।

१०. छोडिया बे वा तीन गाहो रे २
उपयोगवत अति जवर आप, इम लियो ज्ञान लाहो।
कही ए पचम दिन वातो रे २
हिव छठ दिवस वृतात आराधन, सुणो सखर ख्यातो।
स्वाम अति समय रीति जानी ॥

११ छठ दिन टका भर नै उनमानो रे २
वाजरी नी जय घाट, प्रभात समै लीधी जानो।
आथण रा पिण इमहिज जानी रे २
लियो पटो लियो टके भर आसरै, अर्ज मुनी मानी।
कियो दिन उद्यम अधिकेरो रे २
सात ढाल आराधन नी सुणी, कहू तास वेरो।
किया व्रतारोपण वारू रे २
खमत-खामणादिक यथा विध, किया अधिक चारू।
गणीश भव उभय सुखदानी ॥

१२ महाव्रत पाचू उच्चरिया रे २
हिसा झूठ अदत्त अब्रह्म परिग्रह, त्याग त्रिविध २ करिया।
ए द्वितीय द्वार कह्य् जाणी रे २
हिव तृतीय द्वार मे लख चौरासी, खमाविया प्राणी।
वलि समण समणी सू जोई रे २
कलुष भाव आया हुवै, वच कठिण कह्यो कोई।
खमाया इम प्रगटपणै जानी ॥

१३. वलि अन्यमति स्वमति नैं नामी रे ॥
थी जय त्यां नैं आप खमाया, जुजुआ लेई नामी।
टालोकर प्रमुख थकी ताह्यो रे ॥
खमत-खामणा किया तिण सू, कलुष भाव कोई आयो।
वलि चिहुं तीर्थ थी चारु रे ॥
खमत-खामणा किया गणाधिप, समय रीति सारु।
विमल गणिराज तणी वानी ॥
१४. कहूं हिव तुर्य द्वार धारो रे ॥
वोसिराया तव पाप अठारै, लेइ नाम न्यारो न्यारो।
पंचम हिव द्वार कहूं तामो रे ॥
अर्हन् सिद्ध मुनि धर्म तणा, सुण गुण-ग्राम अधिक स्वामो।
लिया ए शरण चिहुं धारी रे ॥
परम पूज्य गुण-गाहक गिरवा, भव-जलधि तिरण भारी।
गुण किम कही सकूं एक वानी ॥
१५. करी बहु दुष्कृत नी निंदा रे ॥
मिथ्या-परूपण संक कंखादि, कार्य जेह मंदा।
भव भमता जे जे कीधा रे ॥
वलि कराया अनुमोद्या तसुं, 'मिथ्या - दुष्कृत' दीधा।
कह्यो ए द्वार छठो धारी रे ॥
परम धर्म नै तारी स्वामी, वरवा शिव - नारी।
करी इम अघ निंदा सुखदानी ॥
१६. कहूं हिव सप्तम जे द्वारो रे ॥
बहु विध सुकृत कार्य किया स्है, ते अनुमोदूं सारो।
ज्ञानादि मुक्ति मार्ग च्यारुं रे ॥
आराध्या फुन पंच पदां नों, धर्यो ध्यान वारु।
महाव्रत समित गुप्ति भारी रे ॥
श्रमण धर्म प्रमुख सुध करणी, अनुमोदूं सारी।
थकी इम सुकृत जस वानी ॥
१७. भावन वर विमल मुनि भावै रे ॥
ए अष्टम द्वार नी ढाल सुणी अति, विमल भावन ल्यावै।
कारण सुख दुख ना पुण्य पापो रे ॥
बंध्या जिमा भोगवणा जांणी, समभाव रहै आपो।

सह्यो दुख नरके अति धारी रे २
तिण जोता ए अल्प कष्ट, पिण लहै लाभ भारी।
एम समभाव हिये ल्यावै रे २
समचित्त कष्ट माहि राखी जय, धर्म ध्यान ध्यावै।
चित्त विमल जेम गंग पानी रे २
इम आराधन कर गणी आतम करै विमल ध्यानी ॥

१८ ए सप्त आराधन नी धारो रे २
छठ दिन सात ढाल सुणी करी, इम आराधन सारो।
पछै आथण रा जोई रे २
लालाजी री जायगा माहे, आप आया सोई।
थो दसत कारण तिह ठामो रे २
वलि अन्न अरुचि प्रमुखे तनु नी, शक्ति घटी तामो।
पिण साहसिक स्वाम जानी ॥

सोरठा

१९. सप्तम दिन पय जोय रे, लियो टका भर आसरै।
ओपधि विण अवलोय रे, न लियो दीसै अवर अन्न ॥

२० *सप्तम दिन विषै आप स्वामी रे २
दोय ढाल आराधन केरी, सुणी सुमति धामी।
नवम द्विव द्वार अनशन केरो रे २
अनशन करै अथवा जे कीधा, अणसण गुण मेरो।
तास गुणग्राम करै तामो रे २
दशमे द्वार नमस्कार मंत्र वर, जपै जाप जामो।
ढाल ए तेसठमी चारू रे २
पचम छठ अरु सप्तम दिन नी, कही वात वारू।
सुणी दसू आराधन सुखदाणी ॥

*लय— सुगुरु की सीख हिये धरणा...

ढाल ६४

दोहा

१. वावू दुर्गाप्रसाद जी, नाड़ी देखण काज।
आया तव गणपति भणी, वतलाया मुनिराज ।।

२. तव गणपति वोल्या नही, जाण्यो मुनि जिवार।
आई दीसै 'मीट'[1] वा, नींद आई इह वार ।।

३. थोडी वार थया पछै, वोल्या श्री गणनाथ।
ध्यान हुतो म्हारै तिणे, न दियो उत्तर ख्यात ।।

४. सावधान स्वामी इसा, ज्ञान ध्यान गलतान।
वेदन मे समभाव अति, वाणी अमी समान ।।

५ ह्रिव भाद्रव विद अष्टमी, किंचित् घाट पय लीध।
वलि ओषधि विण न लियो क्यूही, हठ सू पिण सुप्रसीध ।।

६. नवमी मुनि अज्जा आहार नी, कीधी वहु मनुहार।
ओषधि जल उपरंत जय, न लियो किंचित् आहार ।।

७ दसमी दिन वे मुहूर्त्त लग, तज दीधा त्रिहुं आहार।
दिन वे मुहूर्त्त चढयां करी, मुनि समण्यां मनुहार ।।

*स्वामी को सुजश घणो, इण महि मडल सुविशाल ।।ध्रुपद।।

८. तव गणी मुनि समण्या तणो हो, मन राखण तिहवार।
वैठा थया तिह अवसरे हो, मानी समण तणी मनुहार।

९. पतली घाट वाजरी तणी, पय आदि धाम्या तिहवार।
पय समेत पइसा भर आसरै, लीवी घाट तदा गणधार ।।

१० दसतादि कारण योग सू, शक्ति घटी अति ताहि।
पिण समभाव सूरापणो घणो, सावचेत अधिक मनमांहि ।।

११. तन निवलाइ ना जोग सू, काई मीट तिणा दिना मांय।
रहती तो ही अवसर ऊपरे, सावचेत घणा गणिराय ।।

१२. पहिला ही आहार कियां पछै, करता पोहर महुर्त्तादि त्याग।
ह्रिव तो स्वामी ना चित्त में, वधियो अति वैंराग ।।

१३. पिण शक्ति घटी वोलण तणी, तिण सू ओरां नै खवर न काय।
जो त्याग किया हुवै मन मझे, ते जाणे श्री जिनराय ।।

---

१. निद्रावस्था

*लय—राम को सुजश घणो...

१४. हिव आथण रा दसमी दिने, वैठा किया गणि नै तिवार।
आप विराज्या तिण अवसरे, तव युवपद अवर अणगार॥

१५. अर्ज करी महाराज सू, आपरी इच्छा हुवै इहवार।
तो ओषधि जल उपरंत ही, उच्चरावा सागारी सथार॥

१६ तव गणपति हुंकारो भर्‌यो, दूजी वार पूछ्यो म्है फेर।
सागारी संथार करायद्या, जब हुंकारो भर्‌यो वीजी वेर॥

१७. ओषधि जल उपरत ही, तिहुं आहार ना त्याग उदार।
इसो कारण है ज्यां लगे, आप श्रद्धो तो त्याग श्रीकार॥

१८. अणसण सागारी उच्चरावियो, इह रीत तदा युवराज।
वार वार सरणा दिया, दियो 'गुलाव'[1] फुन सहाज॥

१९ हिव एकादशी तणै दिने युवराज प्रमुख अणगार।
चिहु सरणा नाम मुनिया तणा, सभलाय रह्या वारंवार॥

२०. गजसुकुमाल मुनि भणी, आप वेदन मे राखज्यो याद।
वलि खंधक मेतार्य याद राखिये, हुवै चित्त में परम समाध॥

२१ वलि भगवंत श्री महाराज जी, अनार्य लोका माहि जाय।
लियो लाभ कष्ट उदीर नैं, तो या सहजे निर्जरा थाय॥

२२. चक्री - सनतकुमारजी, वलि जिनकल्पी अणगार।
या कष्ट लिया अघ काटवा हो, तो या सहजे कटै अघ भार॥

२३. शालभद्र धनो मुनि, वलि खंधक मेघकुमार।
पादपोपगमन मास मास ना, किया अणसण दुक्करकार॥

२४. मास मास करता पच पडवा, नेमनाथ नो सुण निर्वाण।
पादोपगमन अणसण कियो, थयो अणसण वे मास प्रमाण॥

२५. त्या पुरुपा नै याद राखजो, वलि खधक शिष्य सुविमास।
फुन वाहुवल महामुनि, ध्यान माहि रह्या 'इक वास'[2]॥

२६. तीसक कुरुदत्त मुनिवरु, काकदी नो धन्नो अणगार।
इत्यादि मुनि अघ काटवा, तप कष्ट 'उदेर'[3] लियो धार॥

२७ तो सहजे वेदन आविया, त्या पुरुपां नै राखणा याद।
समभाव सह्या महा - निर्जरा, त्या रा ध्यान थी होय समाध॥

२८ ए चोसठमी ढाल मे, करायो सागारी सथार।
वले सरणा विविध सभलाविया, आख्यो ते अधिकार॥

---

१. महासती गुलावाजी।
२. एक वर्ष।
३. प्रयत्नपूर्वक

ढाल ६५

दोहा

१. वारस दिवस तणी हिवैं, कहुं किंचित् सी वात।
सावधान श्रोता सुणो, एक चित्त अवदात॥
२. सेवा मे मुनि महासती, रहता अधिक हजूर।
चिहु तीर्थ फुन अन्यमती, करता सेव सनूर॥
३. वार वार दसता तणो, पड़तो तिण दिन काम।
पिण सानी कर मुनि भणी, करै वैठा थई स्वाम॥
४. सैहर राजगढ नो तिहा, श्रावक सखर सुजोय।
भीमराज नामे भलो, 'अवसर-विदू'[1] अवलोय॥
५ सेवा कारण आवियो, पारख जाति पिछांण।
नाडी तणी ही 'परिख'[2] तसु, तनु चेष्टा पिण जांण॥
६. नाडी देख करी अर्ज तिण, अवसर एह उदार।
जावजीव करावियै, सथारो हिव सार॥
७ अवर श्रावक मुनि पिण तदा, वोल्या इमज तिवार।
म्है पिण जाण्यो छे सही, अवसर ए श्रीकार॥

८. *हिव वारस अवलोय, ग्यारै वज्या रे ऊपरे।
पणवीस मिंट गया जोय, तिण वेला आसरै तरे।
पचमी सुमति नो काज, करण भणी जिहा।
वैठा किया गणिराजनै, अर्ज तव करी तिहा।
तिहा अर्ज म्है एम कीधी, अवर मुनिवर पिण तदा।
समणी गुलावा प्रमुख सामल, ए अर्ज करवा मे यदा।
महाराज इच्छा आपरी हुवै तो, जावजीव लगै सदा।
तिविहार संथारो करावा, वे त्रिण वार कह्यो तदा॥
९ भरियो स्वामी हुकार, वोलण री शक्ति नही।
करायो तव तिविहार, संथारो म्है सही।
तिण दिन पैहली रात, दसता लागी घणी।
पिण सावचेत स्वामीनाथ, सानी कर मुनि भणी।

---

१. अवसरज्ञ।
२ परीक्षा।
*लय—कृतघ्न कहै जग माही ..

मुनि भणी तव सैन कर नै, ऊठ ऊठ नै तिह समै।
पंचमी समित काम करता, पिण तिणज ठामे नही गमै।
इम शक्ति घटी तो ही मन मे, सूरापणो गणी नै घणो।
गुणवंत संत अति सेव साजै, वहु सहाज्य मुनि सतिया तणो।

१०. वलि समय तणी वहु वात, सभलावी म्है तदा।
ए संग्राम 'शीर्ष'[1] साख्यात, मरणात वेदन यदा।
काल आया ऋपिराय, रहै समतापणै।
जिम प्रथम हर्ष थो ताय, तिमज अते घणै।
घणै हर्प मुनिराज रहै, जे सीलवता वहु - श्रुता।
न करै रोम ऊभा मरण भय थी, भेद देह नो वाछता।
क्षुधा पिपासा शीत उष्ण, प्रमुख परिस्सह जे सहै।
देह दुख महाफल इसो, इम जाण समभावे रहै।

११ इण खावै जे अनेक, पाठ अर्थ समय ना।
सभलाया सुविसेख सरण चिहु अति घना।
तुझ सरणो श्रीकार कै, होय जो मुज भणी।
आप ज्ञान चरण दातार, जे सार वस्तु अति घणी।
अति घणी जे सार वस्तु, वोधि क्रियादिक भव्य भणी।
देइ देइ घट तिमिर मेटचो, भरत मे जिम दिन - मणी।
इम वोधि चरण वहु लोक नै दे, लियो लाभ अति ही घणू।
वलि सजम सहाज्य पिण दियो वहु नै, कहा लू गुण कहू तुम तणू।।

१२ वलि पडित मरण नु सहाज, दियो वहु मुनि भणी।
वलि सतिया ना काज, समारचा गण - धणी।
फुन सुलभ वोधि वहु जीव, किया आप अति घणा।
लीधो लाभ अतीव, को न राखी 'मणा'[2]।
मणा कोई वात न राखी, श्राविका श्रावक वहु किया।
ज्ञान ध्यान अति उद्यम कर कर, लाभ आप वहुला लिया।
वलि वाल वृद्ध ग्लान मुनि नै, अति सहाज्य दियो सजम तणो।
इक दिने हजारा गाह गुण गुण, लाह लियो तुम्ह अति घणो।

---

१. वहुत वडा।
२ कमी।

१३. आप चरण पाल्यो श्रीकार, वहु वर्षे सही।
आगै असंख्य वर्ष अवधार, वेदन असाता नही।
ए अल्प काल नो कष्ट, दुर्गंध तनु छोड नैं।
पाम सो सुख अति शिष्ट, कर्म दल मोड नैं।
मोड़ नै अब आप भारी, जाता दीसो सुख मझे।
रत्ना तणो उद्योत झिगमग, अनेक सुर सेवा सझे।
इम अनेक विध गुण स्तवन करता, सतिय गुलावांजी सही।
स्वामी ना गुण स्तवन केरी, तिण वेला गाथा कही ।।

गुलाबांजी कृत

*भिक्षु शिष्य नीको, चारू च्यार तीर्थ सिर टीको ।।ध्रुपदं।।
आप जिन मग जवर दीपायो, जिन शासन कलश चढायो।
प्रवल तेज प्रताप सवायो, इण आरे अवतर आयो।

१४ †गजसुखमाल सु आदि, नाम मुनि ना जिके।
ते वार वार सवादि, संभलाया फुन तिके।
दशम ग्यारस दिन वली, वारस दिने।
आया दीसै हजारा जन, करण गणी दर्शनै।
गणी दर्श करवा आवता, अति लोक अन्यमती स्वमती।
दर्शण देख चित्त प्रसन्न होता, गाता मुख सू गुण अती।
केई कहै जिन मार्ग माहे, आप है सूरज जिसा।
केई कहै म्हारै मते फुन आपरै, पिण होना मुसकिल वलि इसा ।।
१५. केई कहै गणिराज कै, जोति - सरूप है।
केई कहै ए आज कै, ईश्वर रूप है।
केई कहै महाराज, अवतार सु आज है।
केई कहै तारण ज्याझ, वडा जोगीराज है।
जोगीराज है अति आज मोटा, साहज्य धर्म नो दायका।
अन्यमति नै स्वमति फुन, वोलता इम वायका।
दर्शण करी दसत कारण सुण कै, दिगंवरी जन इम कहै।
अत समय अटकाव नही ए, अतिसार तो मुनिवर चहै।

---

*लय—सुण चिरताली...
†लय—कृतघ्न कहै जग मांही

१६. हिव दोढ मुहुरत न मान, रह्यो जव दिन वही।
चौविहार सुविधान, संथारो ग्है सही।
पच्चखायो तिहवार, सरण चिहुं तिह समैं।
संभलाया वारूवार, वलि नवकार म्हैं।
म्है नवकार सार मत्र, संभलावियो तिहवार ही।
गजसुखमाल खधक प्रमुखमुनि, गुण राख हिये मझार ही।
वलि कह्यो आप जवर सूरा, वहु कटै समपणै अघ इह समैं।
आगै असख्य वर्पे दुख नही, फुन मुक्ति जाणो अनुक्रमें॥

१७. इम कहिता अल्प वार, माहे झट देखता।
ली हिचकी वे त्रिण वार, प्रगट ही पेखता।
व्यवहार मे झट जाण, नेत्र नैं द्वार ही।
प्रदेश खच्या पिछाण, आख उघाडी रही।
रही उघाडी दिव्य आख तव, जाण्यो मुनि जिवार ही।
पूज्य तो परभव सिधाया, धृग धृग ए ससार ही।
पडित मरण देख गणि नो, दोहरी लागी अति घणी।
काल सू जोर न चलै किणरो, इम जाण सम रहै महामुणी॥

१८. आप जिसा गणिराज, भरत माहे भला।
अतिशय गुण अग्राज, राज जिन सम 'इला'[1]।
धारणा समय नी सखर, उद्यमी अति घणा।
अतिशय घर अति जवर, वयण रलियामणा।
रलियामणा वच रहिस्य ऊंडी, जाण गेहरा दधि जिसा।
प्रवल प्रतापी आदेज वच धर, होणा दुक्कर गणी इसा।
पिण काल थी नही जोर कोई, दिन अस्त होवै तिण विरचां।
तनु वोसिराया गणि तणो मुनि, चिहु लोगस्स ना काउसग्ग करचा॥

१९ आप तणा गुण याद, आया थी माहरे।
चित्त माहि आह्लाद, हर्प होवै तरे।
अत समय नी वात, याद आवै तदा।
अहो-अहो काल नी घात, स्वाम गुण सपदा।
सपदा गुण वचन भारी, स्वाम विध विध वागरचा।
पद आराधक पाय तनु तज, पूज्य परभव पागरचा।
जगत मे ए काल जवरो, इक दिन सहु नैं आव है।
मृत्यु देख अति दोहरी लागै, पिण मुनि समता मन ल्याव है॥

१. पृथ्वी।

२०. तिण रात समै वरसात, थयो अति आकरो।
घोर घुमट थयो प्रात, आभो छायो खरो।
मांडी म्हेली आग, जोति झिगामिगे।
जाणक देवविमाण, कलश एकावन लगे।
लगे एकावन रुप्य कनक ना, कलश सूर्यमुखी वली।
तुर्रा धजा पताका युक्त सू, देख्या ऊपजै मनरली।
हिव गणी तनु स्नान करा नैं, मुखपति जडाऊ मुखधरी।
केसर चदन चरच अतर फुन, तिलक मोत्या नो करी॥

२१ तिण माढी मे वेसार, लेइ चाल्या जदा।
लोक हजारां लार, वरसै 'मही वुदा'[1] तदा।
उपनो जन नै विचार, विरखा नो मन मही।
इतलै हुवो उघाड, वुदा पिण वंद हुई।
वंध हुई वुदा तदा, उभय पास चामर वीजता।
विविध प्रकार वाजित्र वाजै, जन देख-देख नै रीझता।
आयो राज थी लवाजमो, इम वे गज नगी निस्साण है।
पलटण पोहरा अश्व कोतल, प्रमुख वहु मंडाण है॥

२२. वैठा काढण री रीत, नही जैपुर मही।
ते पिण हुकम वदीत, दीयो नरपति सही।
सिरे वाजार मे होय, त्रिपोलिये कनै थई।
सोना रूपा रा जोय, उछालत फूल ही।
फूल ही उछालता तव, रुपइया फुन रोकडा।
ले गया दरवजे अजमेरी थइ नैं, देखता मिल-मिल 'जन-थोकडा'[2]।
सिरदारमलजी लूणीया ना, वाग ना इक देश में।
चदन अगर किस्तुरी घृत सू, दियो दाग तनु नो तेह समै॥

२३ रुपइया हजारा लगाय, ओच्छाह कियो घणो।
नही धर्म पुन्य तिण माय, -ए काम लौकिक तणो।
प्रभु नो चरम कल्याण, सूत्र भाख्यो सही।
तिम दाख्यो एह मडाण, पिण धर्म इण मे नही।
नही धर्म नो इह माहि दावो, ए सावद्य कृत्य ससार ना।
हुई जिसी ए वात दाखी, राखै ज्ञानी मन शुद्ध धारणा।

---

१. सूक्ष्म-सूक्ष्म बूंदे।
२. जन-समूह।

पाच साठमी ए ढाल माही, अणसण मोच्छव आखियो।
भिक्खू भारीमाल ऋपिराय शशिफुन, जय प्रसाद म्है भाखियो ।।

सुखराजजी भडारी कृत

छंद पद्धरी

"भाद्रव विद द्वादशी जीत स्वाम, परलोक सिधारे सुरग धाम।
चरम मोच्छव महिमा कीध दास, वरणू जू एम कवियण विमास ।।
वणवाय जवर अत ही विमाण, अरु मडित करी साटण सु आण।
जिह ऊपर सुवर्ण कलश जाण, तिह सिरे जु तुररा वखाण ।।
सूरजमुखिया पुनि आण वेस, धर धजा पताका अति विशेप।
पिछवाय चंदवो वर वणाय, मुक्ता झालर लूवा वणाय ।।
जर किरण-किनारी विविध भात, जिह ठोर-ठोर शोभित ख्यात।
जिह मझ कनकासन धरचो आण, तकिया गादी मखमलिय जाण ।।
पुनि लाल दुशालो वर विछाय, मझ व्राजमान कीध जीतराय।
नग जडित कनक मुखपतिय जाण, ओढाय दुशालो श्वेत आण ।।
इह भाति निकासी होत जीत, दरवार हुते आय पुनीत।
वर छत्र चामर होवत सकाज, पुनि जान विविध वाना सु साज ।।
हय - करि पलटन प्यादा अनेक, वाजित्र वीण इत्यादि केक।
घुरै घोर नगारा पुनि निसाण, कर ज्वलित मशालां जले जाण ।।
पूरो लवाजमो विविध सोय, छिव अधिक रहे नर नार जोय।
गजराज एक पर होद मड, धर फूल हेम रूपे अखड ।।
पुनि भरै रुपैये अधिक आण, इह भात भई जू उछाल जाण।
इम होय सिरे वजार माय, आवत तठे नर नार आय ।।
लाखाइ मिल जोवत सकोय, पुनि कहत इसो महोछव सोय।
श्रवण न सुण्यो दीठो न कोय, पुनि विविध भाति लौकिक विलोय।
जोगेन्द्र जीत सा अवर कोय, दीठा न सुण्या इह समय जोय।
इण भात लोक जय जय करत, अणमति आदि दे तिकण तत ।।
वर किसनपोल दरवजे होय, राजादि जात नहीं अवर कोय।
जिह पोल हुत निकसे गनिद, पहुचे जु वाग मझ अतिहि मद ।।
वह वाग लूणिया जाति जोय, सिरदारमल को कहत लोय।
जिह वाग मझ सम्कार कीध, वर अगर चंदन वीच दाग दीध ।।

महा भाग्यवान अतिशय अपार, जति हुंते जीत अति ही उदार।
जेसो जु महोच्छव चर्म होय, महिमा जग प्रगटी विविध जोय ।।
ए सकल काम सावद सुजान, जिह मज्झ धर्म न पुन पिछान।
लौकिक शोभा हित करत लोय, जिह माझ प्रभु आग्या न कोय ।।
गणनाथ अनघ गुणधाम जीत, प्रगट्यो जग उज्वल जश पुनीत।
गुण सुजश पार पावत न कोय, जो कहत देव इन्द्रादि जोय ।।
'मुखराज' निहार्‌यो जिस्यो नैण, नहिं भाषा बोलण सकै वैण।
जयपुर जन मुख-मुख जीत-जीत, दिखला गये जीत अतीत - रीत ।।

ढाल ६६

दोहा

१. भविक जीव हित कारणे, जयगणी कृत जे जोड।
मैं कहूं नाम संवध थी, सुणो राख्न चित्त ठोड़ ।।

२. *गुणमाला मुनिवर ना गुण नी, जोडी प्रथम सु ढाल।
वलि भिक्षु कृत हुण्डी तणी, जोडी पट् ढाल रसाल ।।

३. वलि धुर अंग धुर श्रुत स्कंध नी, करी जोड़ सुविशाल।
विविध न्याय ओलखाविया, वारू करी नै अठ्यासी ढाल ।।

४. वलि सूत्र भगवती नी करी, पाठ टीका देखी जोड़।
वलि अवर समय अर्थ देखी करी, किया विविध परे न्याय निचोड़ ।।

५. पच सो इक ढाल अति भली, वारू कीधी अधिक उदार।
माहि वार्त्तिका यंत्र वहु विध करी, मेल्या विविध न्याय श्रीकार ।।

६. वलि द्वादश अध्ययन ज्ञाता तणा, जोड़्या श्री गण - इद।
धुर अध्ययन मेघ कुमार नो, जोड़ी ढाल सैताली प्रवध ।।

७ धना सार्थवाह ने मयूरी इडनो, कछप ने तूवी दृष्टंत।
उझियादि च्यारू वहु नो वलि, शशी नो दृष्टंत सु तंत ।।

८ दावद्रवा वृक्ष तणो वलि, जितशत्रु सुवुद्धिप्रधान।
अध्येन वलि नदी वृक्ष नो, जोडी च्यार ढाल सुविधान ।।

---

*लय—भूमिसर अलदेसरू...

९. काल द्वीप न 'केकाण'[1] नी, ओपम नी सप्त ढाल।
अध्येन सुममा चिलाती नों वलि, 'ए द्वादश अध्ययन विशाल'[2]॥
१०. जोडचा अध्येन उत्तराध्ययन ना, पहिला थी लेइ अष्टवीस।
गुणतीसमो वलि देश थीं, माहि खोल्या न्याय सुजगीश॥
११ जोडचा विपाक ना दोय अध्येन, उजीयो नैं अभ्यगसेन।
करी अनुयोगद्वार नी देश थी, जोडचो नशीथ सूत्र अर्थ गे हेन॥
१२. वलि टवो आचारग सूत्र नो, द्वितीय स्कध नो कीध।
झीणा अर्थ गहन न्याय अति घणा, खोल्या विविध परै सुप्रसीध॥
१३. देश्यां राग सहित विदित सु, जोडचा विविध वाख्यान।
वारू जय जश करण गणिद नो, ढाल इक सौ एकावन जाण॥
१४. जोड़ी ढाल पच्यासी जेहनी, दीप जश रसायण नाम।
व्याख्यान जोडचो धनजी तणो, अठतीस ढाल अभिराम॥
१५. महिपाल चरित्र महिमानिलो, ढाल सितंतर सार।
सुर सुदर दवदती नी वलि, करी ढाल वावीस विचार॥
१६. छोटा वखाण जोडचा वलि, पार्श्व चरित्र पिछान।
मंगल कलश मोहजीत नो, वलि सीतेन्द्र नो सुविधान॥
१७ शील मजरी ब्रह्मदत्त नो, जशोभद्र तणो फुन जाण।
भरत वाहुवल नो देश थी, व्याघ्र-क्षत्री नो वलि पहिछाण॥
१८. भगवती नी जोड थकी जुदा, भगोती ना तीन व्याख्यान।
जमाली नै महावल तणो, खधक सन्यासी गुणखाण॥
१९. स्वाम भिक्षु ना गण तणा, जोडचा समण सत्या ना व्याख्यान।
नाम कहूं हिव तेहना, सुणजो थई सावधान॥
२०. भिक्षु-जश-रसायण अति भलो, वारू तेसठ ढाल सुतत।
फुन पच ढाल भिक्षु जश लघु, जोडचो जीत गणी जशवत॥
२१ खेतसी - चरित्र खंत सू, ऋषिराय - सुजश फुन जोय।
मुनि शाति-विलास जोडचो वलि, तेर तेर ढाल अवलोय॥
२२ हेम अरू सरूप नो नवरसो, जोडचो भीम-विलास विचार।
वृद्ध मोती ने उदैराज नी, पच पंच ढाल गुणकार॥

---

१. अश्व

२. जयाचार्य ने ज्ञाता सूत्र के पहले, दूसरे, तीसरे, चौथे, छठे, सातवे, दसवे, ग्यारहवे, वारहवे, पन्द्रहवे, सतरहवे और अठारहवे अध्ययन की रचना की। शेप सात अध्ययनो की रचना आचार्य भिक्षु द्वारा की हुई थी, उन्हे साथ जोड दिया गया है।

२३ ऋपिराय ने सरूप ऋपि तणा, मुरगढ ना सिवजी अणगार।
वलि हरख - गणी ना गुण तणा, जोड़्या चोढालीया ए च्यार ।।

२४ महासती सिरदार नो वारू, सुजश अधिक श्रीकार।
जोडचो स्वाम अति युक्ति सू, चारू पनर ढाल सुविचार ।।

२५ भाद्रव तेरस ना मोच्छव तणी, जोड़ी ढाल सखर चोवीस।
वलि मर्याद मोच्छव नी अति भली, जोड़ी सतरै ढाल सुजगीश ।।

२६ खुली ढाला गणी ना गुण नी. वलि तपस्या ना गुणा री ढाल।
वलि मुनि सतिया ना गुणा तणी, जोडी सइकडा ढाल विशाल ।।

२७. करी श्रद्धा नी चोपी वलि, ढाला मोटी मोटी वत्तीस।
अकल्पती व्यावच, जिन आगन्या ओलखावण री चोपी जगीस ।।

२८ वलि सवत् अठारै नेउअे, नीकल्या जे गण थी वार।
तेहनी श्रद्धा ओलखायवा, करी चोपाइ मोटी इक त्यार ।।

२९. जोडी उपदेश नी चौपाइ वलि, माहे वैराग विविध प्रकार।
वलि सीखामण नी चोपी करी, दी तिण मे शिख्या श्रीकार ।।

३० वलि चरचा नी जोड नी चौपइ, इकवीस ढाल उदार।
उगणीस ढाला भिक्षु स्वाम ना, करी लिखत नी जोड श्रीकार ।।

३१ दीर्घ लघु चोवीसी करी, तिण री चोवीस चोवीस ढाल।
जोडचा जिन गुण ने वैराग्य नी, कथी वारू वात विशाल ।।

३२. मकसुदावाद ना प्रश्न ऊपरे, कियो प्रश्नोत्तर-तत्त्व वोध।
दिया जाव हेतु दुहा करी, वारू न्याय समय ना सोध ।।

३३. वलि जोड़ करी नय चक्र नी, पच सधि ना दुहा कीन।
वलि धातुरूपावली ना दुहा, जोड़्या जय स्वाम सुचीन ।।

३४. वलि टालोकर ने ऊपर करी, ढाला ने लघु रास।
फुन परपरा ना वोल ऊपरे, करी सप्त ढाल सुविमास ।।

३५ वले शुद्ध किया वहु चरित्र, माहि गाथा देश्या वहु घाल।
शाति - चरित्र दीर्घ ने लघु, वलि हरिवंश सुविशाल ।।

३६. महावल मलया - सुन्दरी, फुन पाडु - चरित्र पिछाण।
वलि चद-चरित्र माहि घणो, घाल्यो वैराग्य विविध विनाण ।।

३७. रत्नपाल - चरित्र वलि, धर्म - वुद्धि पाप - बुद्ध।
मुनिपति - चरित्र सु मोटको, श्रेणक-चरित्र कियो फुन शुद्ध ।।

३८. मृगावती ने लीलावती, हरिवल ने जयसेन।
उत्तम - कुमर तणो ए सहु, किया शुद्ध देखी जिन वैन ।।

३९. वलि समय न्याय गणी देखी, पेखी रहिस्य विसेख।
विविध हेतु युक्ति करि किया, संग्रह रूप ग्रथ अनेक॥
४० भर्मविद्धंसण अति भलो, काई गुण निप्पन जसु नाम।
कुमतिविहडन वलि कियो, कुमति जु खडन काम॥
४१ कियो संदेह-विपौषधि ने वलि, जिनआज्ञा - मुख - मड।
सार्द्धशतक - प्रश्नोत्तर कियो, कुमति करण खड खड॥
४२ करी चरचारत्नमाला वली, रह्यो ग्रथ अधूरो एक।
निर्गुण देव प्रतिमा ओलखायवा, तिण मे मेल्या न्याय अनेक॥
४३ ध्यान छोटो मोटो वली, झीणी चरचा नै थोकडा जाण।
च्यार तीर्थ ना हित भणी, किया स्वामी जय गुण खाण॥
४४ करी इत्यादिक वहु 'ग्रथना'[1], जिन पथ जमायो जाण।
तोडया कुयुक्ति कुहेतु कुमति ना, करि धरि समय कृपाण॥
४५. पूर्वधर सम युक्ति हेतु अति, बुद्धि उत्पात अत्यन्त।
गणि 'पद-जलज'[2] लोभे रह्या, वारू भव्य भ्रमर गुणवत॥
४६. ए छासठमी ढाल मे, जोडया किया ग्रथ गणिद।
तास संबंध सक्षेप थी, कह्यो 'पाटोधर'[3] सुखकद॥

ढाल ६७

दोहा

१. अडसठ वर्ष नै ऊपरे, सात मास पट् दिन।
चरण रयण आराध जय, तारचा वहु गुणि जन॥
२. जवर सघयण सु स्वाम नों, अरू तीखो उपयोग।
सुरत सखर मु स्वाम नी, देखि हर्ष लहै लोग॥
३. सितरे थी अडतीस लग, चर्म सहित चौमास।
सहू गुणतर स्वाम ना, साभलो भवि सुविमास॥
४. किण किण देशे विचरिया, क्या क्या कीध चौमास।
जूजूवा नाम क्षेत्रा तणा, किया जो किण किण वास॥

१. रचना
२. पद कमल
३ जय के पदाधिकारी श्री मघवागणी

*गुणीजन ! गुणियै जय चौमास ॥ध्रुपदं॥

५ सितरे वर्षे धुर चौमासो, देश हाड़ोती माय।
सेहर इद्रगढ हेम समीपे, कियो ज्ञान ध्यान अधिकाय ॥

६ किया पाली मे पट् प्रगट चौमासा, धुर एकोत्तरे अवधार।
पचितरे असिए रू चौराणुए, तेरे वावीसे तंत सार ॥

७ मरुधर देशे गांम कटालिये, वोहितरे सुविचार।
वर्ष तिमंतरे सेहर सिरीयारी, कियो चौमासो गुणकार ॥

८. देश मेवाड मे सैहर गोगूदे, कियो चिमतरे चौमास।
सुरगढ सैहरे वर्स छिहंतरे, थयो अधिको धर्म उजास ॥

९. कियो उदियापुर मे वर्ष सितंतरे, धुर सिघाडो वियासीये कीध।
सत्ताणुए पाचे फुन वारे, ए पच चौसास प्रसीध ॥

१०. अठतरा नो एक चौमासो, कियो आमेट मे देश मेवाड़।
गुण्यासीये वर्ष कियो चौमासो, मरुधर में सैहर पीपाड ॥

११. नव चौमास किया जयपुर मे, निज-दीक्षा नगर उदार।
एक एक्यासीये हेम सघाते, पछै पच्यासीये सुविचार ॥

१२. अठाणुए फुन एके चौके, कियो नवके पूज्य पद पाय।
अठवीसे सैतीसे ने दियो, अडतीसे अणसण ठाय ॥

१३. किया श्रीजीदुवारे तीन चौमासा, तयासीये धुर तंत।
उगणीसे तीये फुन दूजो, कियो दशके पूज्य महंत ॥

१४. पटलावद मे देश मालवे, चौरासीये सुविचार।
ऋषिराय संग कियो चौमासो, तप इक पख आछ आगार ॥

१५. जय तीन चौमासा नगर जोधाणे, प्रथम छयासीये वास।
वर्ष इकीसे उपगार कियो अति, वलि पणवीसे सुविमास ॥

१६. चूरू सैहर किया तीन चौमासा, सत्यास्ये अति उपगार।
छन्नूए ने कियो फुन वीसे, त्या दियो मुझ ने युवपद सार ॥

१७. वलि च्यार चौमासा सैहर वीकाणे, अठचासीये धुर धार।
फुन त्राणुए उगणीसै छके, साते सरूप सग सुविचार ॥

१८. नव्यासीये कियो दिली चोमासो, 'कुरुदेश'[1] वहु उपगार।
वहु जन समकित व्रत लिया अति, हुइ इक दीक्षा श्रीकार ॥

---

*लय—सीता आवै रे धर राग...

१. प्राचीन समय मे दिल्ली क्षेत्र को कुरुदेश मे माना जाता था।

१६ पछिम थली मे वर्प नेउवे, कियो वालोतरे चौमास।
फलवधी मे एकाणुए इक, कियो अति धर्म उजास ।।
२०. नव चौमासा किया लाडणू, वाणुएं धुर सुविचार।
पचाणुए वर्प ने वलि, पनरै अठारे अवधार ।।
२१. सत्तावीसे वर्ष कियो वलि, पछै लगता तीन चौमास।
वत्तीसे तेतीस चोर्तीसे किया, वृद्ध वय जोग विमास ।।
२२ दश चौमास किया वीदासर, धुर निनाणुए गणी सग।
उगर्णीसे, आठे, अरु चवदे वलि, सतरे वर्ष सुचंग ।।
२३ वलि तेवीसे फुन छाइसे, गुणतीसे गुणकार।
कारण जोग कियो फुन तीसे, पणतीस छत्तीसे सार ।।
२४. कृष्णगढ उगणीसे वीये, कियो चौमासो एक।
वर्ष इग्यारे रत्नपुरी मे, कियो उपगार विसेख ।।
२५. सुजाणगढ मे च्यार चौमासा, धुर सोले श्रीकार।
उणीसे वर्प फुन चोवीसे, इकतीसे अवधार ।।
२६. तेवीस सैहर मे किया चौमासा, गुणंतर गुणकार।
दश देश मे विचरचा स्वामी, कियो घणो उपकार ।।
२७. तेरे चौमासा हेम समीपे, ऋपिराय संग किया दोय।
सिघाडवंध चौवीस चौमासा, गणि पद मे तीस सुजोय ।।
२८ श्री जिन शासन शोभ चढाई, गुणग्राही गंभीर।
जिन आण दिढाई शिव सुखदाई, 'षट् त्राई'[1] गणि गुण-हीर ।।
२६. ज्ञान ध्यान उद्यम वहु कीधो, वर लीधो लाभ अपार।
चरण रयण दीधो वहु भवि ने, सीधो शिव वधु वरण श्रीकार ।।
३० वत्तीस समय वाच्या वहु वेला, वर केला समय रस कीध।
प्रकरण निर्युक्ति पइन्ना वृत्ति, वाच्या विविध प्रसीध ।।
३१ आवसग्ग नै दशवैकालिक, उत्तराध्ययन उदार।
आचारंग नो श्रुत स्कध दूजो, किया कठाग्र गुणकार ।।
३२ पद वलि दशमा लग पन्नवणा, कठाग्रे वर कीध।
खुला पाठ सूत्रा ना कठे, ग्रथ सहस्रगमे सुप्रसीध ।।
३३. पूर्वार्द्ध सारस्वत नो सखरो, फुन उत्तरार्ध अवलोय।
महि भट्टी नै चद्रिका नो कियो, कठ वहु जय जोय ।।

१. पृथ्वीकाय आदि छह प्रकार के जीवो के रक्षक।

३४. काव्य अनै वलि कोण कितायक, छंद अनै अलंकार।
सभा-प्रकाश प्रमुख के साहित्य, देख्या देश थकी अवधार॥
३५. जोग शास्त्र तणी के युक्ति, अति ऊंडी समय रेम।
व्याख्यान हेतु दृष्टांत युक्ति अति, ज्ञायक सखर गणेश॥
३६. लाखांगमे ग्रंथ कियो लिखणो, सुन्दर अति वर्ण श्रीकार।
सूत्र विना पिण लाखांगमे ग्रंथ, वाच्यो जय जश धार॥
३७. गुण-गणधारक भवदधि-तारक, कारक वर मर्याद।
सुमति सुधारक दोष निवारक, वर दायक मुक्ति आल्हाद॥
३८ समय सुज्ञाता ध्यान सुध्याता, अरु त्राता जीव छ काय।
बोधि सुदाता भव्य नै राख्या, कांई जातां दुर्गति माय।
३९. तिमिर हरण वर सहस्र किरण सम, करण हृदय उजियार।
पिण ते बाह्य तिमिर जन मेटै, तुम्ह दियो अंतर तिमिर निवार॥
४०. गणवाड़ी सींचण गणी घन सम, वर सुमति वेल सु वधार।
व्रत ज्ञान वर पुष्प फल करि, प्रफुल्ल करी श्रीकार॥
४१. 'जैवातृक'[1] सम सौम्य वदन जय, पिण शशी बाह्य तप वारै।
जय मुख चंद्र थी झरया सुधा वच, अंतर तप्त निवारै॥
४२. भविजन वंछित पूरण भरते, मुनिपति 'द्रुम मदार'[2]।
पिण ते एक भविक सुख पूरै, आप भव भव सुख दातार॥
४३. गण सिणगारी महिमा धारी, अति भारी उपगार।
कियो जशधारी मुद्रा प्यारी, जन देख लहै चिमत्कार॥
४४. करि गण विशुद्ध करण हाजरी, ते आज री वखत मझार।
मुनि अज्जा नै अति हित काज री, महाराज री वुद्धि उदार॥
४५. वलि लिखत मर्यादा अति ही ज्यादा, करी खलता मेटण काज।
अति शिक्षा आपी कुमति जु कापी, हिये थापी सुमति महाराज॥
४६. सारण वारण कुमति निवारण, करि गण कुन्नण कीध।
वर सीख अनूपी अमृत कूंपी, चिहुं तीर्थ नै अति दीध॥
४७. पूज्य परम गुरु महिमा मंदर, 'गुण-दधि'[3] गुण नां धाम।
भव्य काज सुधारण विघ्न विडारण, मंत्राक्षर सम नाम॥

---

१. चन्द्रमा।
२. कल्पवृक्ष।
३. गुण समुद्र।

४८. स्मरण आप तणो जे साधै, तसु वाधै सुमति सवाय।
आराधै वर चरण अमोलक, लाधै सुर शिव सुख अनपाय ।।

४६. तुझ सरण लियो म्है तिरण भवोदधि, करण जीव निस्तार।
चरण करण गुण अनघ धरचा फुन, वरण अमर पद नार ।।

५० सखर प्रबध वाध्या जय स्वामी, हित कामी गुण-हीर।
धीर वीर गभीर हृदय गणि, अघ - रिपु दलण सौडीर ।।

५१ श्री जय स्वाम वरतारे मुनि नी, थइ दीक्षा इक सौ पाच।
सहु छप्पन दीक्षा आसरै मुनि नी, दी श्री जय निज कर साच ।।

५२. समणी नी वे सय चोवीस आसरै, थइ स्वाम वरतारे दीक्षा।
इक सो आठ दीक्षा सहु निज कर दे, दीधी स्वाम वर शिक्षा ।।

५३ सहु समण एकोत्तर मेल गणाधिप, वलि वे सय पच श्रीकार।
समणी सपत्ति म्हेल नै पहुंता, गणि परलोक मझार ।।

५४ आप तणा गुण अनघ अनोपम, याद आया मन माय।
हृदय कमल हुलसावै पिण गणि, फिर पाछा किम आय ।।

५५ मुझ सू उपगार कियो अति मोटो, कहा तक वात कहाय।
सम्यग् चरण ज्ञान पद दीधो, वलि विध विध कुरव वधाय ।।

५६. नमो नमो श्री जीत गणाधिप, भवि वोधि ज्ञान दातार।
चारित्र तप वर शिव मग दे करी, कियो भविक निस्तार ।।

५७ अडसठ वर्ष नै सात महिना, पट् दिन फुन अधिकाय।
चरण पर्याय आराधी नै जय, दियो जिन मग अधिक जमाय ।।

५८ आप तणा गुण सघन विमल वर, इक रसना केम कहाय।
स्वयंभू रमण समुद्र तणो जल, भुज करि केम तिराय ।।

५९ हूस हुती मुझ दिवस घणा सू, आज फली मनोरथ-माल।
श्री जय सुजश रसायण नामे, रच्यो ग्रथ सुविशाल ।।

६०. ग्रथ रच्यो श्री 'गणपति गुण नो, किती वात लिखाई स्वाम।
कितीयक देखी केयक सुणी फुन, केई मति सू किया गुणग्राम ।।

६१. अधिक ओछो जे इण मे आयो, आयो हुवै विरुद्ध वच कोय।
तो अरिहत सिद्ध नी शाखे, 'मिच्छामिदुक्कड' मोय ।।

    ३ ४ ६ १
६२ हरनयन युग निधि शशि वर्षे, 'ऋषि-पूनम'[1] दिन सार।
शनिश्चर वारे जोड रची ए, उदियापुर सैहर मझार ।।

---

१ सावन शुक्ला पूर्णिमा।

६३ समण चोवीस सखर सोभता, मतियां त्या अठवीस।
दिन वावीस किया जेठांजी, चौविहार मुजगीस॥
६४. मास खमण ऋधु कियो पहिला, वलि सती ज्ञाना गुणकार।
दिन इकवीस नो कियो पारणो, तिण सावणी पूनम सार॥
६५. ढाल भली ए सात साठमी, भिक्षु भारीमाल गणधार।
ऋपिराय जय प्रसाद कियो जश, जय - पाटोधर जयकार॥

कलश

६६ कह्यु तुर्य खड घमंड स्यू, वर ढाल त्रयत्रिंशत करी।
जय स्वाम गणी पदपणै विचरचा, तेह वतका उच्चरी॥
वलि ज्ञान ध्यान सझाय नै, ग्रंथ जोड़ जिम उद्यम कियो।
व्रत चरण दे जिम भव्य नै, करि संलेखना कज सारियो॥
६७. गणी नाम जल अति विमल करण सुनिर्मल आतम निज तणी।
गणीराज गुण ओलख भजै अरु तजै जु खलता अति घणी॥
अरु सझै गुण गण सघन नै, व्रत मगन रहै नित महामुणी।
तसु दुरित तुरत जू दूर ह्वै, जसू हर्प ह्वै तुझ गुण मुणी॥

इति मघवागणिविरचते श्री जय सुयश रसायणे श्री जयगणिपदतया यथा-यथा वहुभव्य-सत्वोपकारकरणेन पुन यथा सम्यक्त्वचारित्रदानेन पुनः यथा-यथा जिनप्रवचनप्रकाशेन मिथ्या-तिमिरविध्वंसनेन यथा जयपुरगमनकरणेन सलेपणा पण्डितमृत्यूत्सवादिवर्णननाम चतुर्थ खड समाप्त ।

॥ इति श्री जयसुयश रसायण सम्पूर्णम् ॥

इस ग्रथ का मघवागणि द्वारा जोडते समय लिखी हुई मूल प्रति से आचार्यश्री तुलसीगणी के सान्निध्य मे मिलान किया गया है।

वि० स० २०३७ सावन कृष्णा ८ लाडनूं, जैन विश्व भारती।

'मुनि नवरत्न'

२

जय छोग सुजश विलास

ढाल १

दोहा

१. प्रणमू पंच परमेष्टि नै, भिक्खू भारी 'राय-
शशि',[1] जय गणि स्वाम नै, वादू सीस नमाय ॥

२. भिखू गणि समजावियो, जंवरी हरचंद जोय।
'समत् अठार सैताल मे'[2], जय नगरे अवलोय ॥

३. तसु सुत ताराचंद ना, 'जुग'[3] सुत जग जस लीध।
'हीरां'[4] भैरूंलालजी, भक्ती भारी कीध ॥

४. उगणीसै सप्तवीस मे, पोष कृष्ण पख पेख।
भैरूंलाल दर्सण किया, चतुरदसी दिन देख ॥

५. अर्ज करै जयपुर तणी, पउधारो गणिराय।
कवीला संग सेवा करू, पोहचाउ फिर आय ॥

६. चैत कृष्ण सप्तम दिने, हुकम दियो गणि देख।
सहु संता संग लाडणूं, पउधारचा हिव पेख ॥

७. चैत चांनणी छठ तदा, विचरंता अवलोय।
अर्ज करी ठाकुरां इसी, कामदार कहै जोय ॥

८ 'जुग दिन'[5] 'जेज'[6] करी जियै, म्हारै पिण दर्श होय।
पाछे पूज्य पधार जो, साम मानी अर्ज सोय ॥

---

१. तृतीयाचार्य श्री रायचदजी।

२. स० १८४८ फाल्गुन शुक्ला १५ गुरुवार को भारीमालजी स्वामी ने सवाई जयपुर मे 'साधु-अणाचारी' की एक ढाल (साध्वाचार की चउपई ढा० २३ तीन बोला करे जीव रे जी) की प्रतिलिपि की थी और वे स्वामीजी के साथ थे। इससे प्रमाणित होता है कि स्वामीजी स० १८४८ के माधोपुर चातुर्मास के पश्चात् फाल्गुन महीने मे जयपुर पधारे थे।

३. दो पुत्र।

४. हीरालालजी।

५ दो दिन।

६. विलम्ब।

९.　　हिवै सुक्ल नवमी दिने, विचरचा गणी विचार।
'हगाम'[1] हुवा ते हिव कहुं, सुणज्यो सहु नर-नार॥

*पूज्य पधारै रे, पूज्य पधारै रे।
हिव 'जय नगरी'[2] ना, जांज्यो जन बहु तारै रे॥ध्रुपदं॥

१०.　प्रात थया हिव पूज्य पधारै, संत अष्टादश सागे रे।
श्रावक श्रावका ना झंड सू स्वामी, आया गढ नें आगे रे॥

११　सैहर लाडणू केरो नायक, बादरसिंघजी वीरो।
पेखत पूज्य प्रणांमज कीधो, ततखिण आवी 'नीरो'[3]॥

१२.　अर्ज करै इहा वलि कद आसो, आपो वचन उदारो।
प्रगट वयण देइ पूज्य सिधावो, स्वांम कहे सुविचारो॥

१३　सता नै कल्पै नहीं कोई, वयण ते केम दिवायो।
भावे छै थानें दर्सण देवारा, 'वेग'[4] वली इहां आयो॥

१४　हर्पी ततखिण हुवो अगाड़ी, पोंहचावण नें 'पालो'[5]।
एक कोस आसरै आयो, 'वाट'[6] बतावत भालो॥

१५.　वादी बाग समीपे मुनिवर, हिये अति हरपानो।
जनवृंद सगे स्वामी आया, वाकलीये रह्या रातो॥

१६.　मिडासरी डिडवाणे साहमो, हाकम हगाम सू आयो।
वाजा अधिक वाजता पुर मे, लीधा गणि वधायो॥

१७.　जनवृद जोवा अधिका आवै, हिये हर्ष नहि मावै।
चरचा प्रश्न जन पूछंतां, पूज्य वचनामृत पावै॥

१८.　मोताजी हरखूजी आगे, दस ठाणा सू देखो।
स्वांम पधारचा सेवा साधी, वाध्या हर्ष विसेखो॥

१९　ठाणे 'चिहु सठ'[7] थाट थयो अति, डीडवाणे प्रथम पेखो।
तीन रात्रि रही तिहा थी आवै, दोलतपुरे गणि देखो॥

---

१. ठाट।
*लय—हीडे हालो रे...
२. जयपुर
३. नजदीक
४. शीघ्र
५. पैदल
६. मार्ग
७. चौंसठ

२०. हाकम सांह्मो हगाम सू आई, लीधा गणि लडाई।
एक रात्रि रही तिहा थी आया, 'चुगनी चूगी' पाई।।
२१ लाधडीये हिव जयनगरी सू, सिरदार उत्तमचद आयो।
चोथ गणेश नें वीज प्रतापज, प्रणम्या हर्षे पायो।।
२२ चादमल चैनसुख नै भैरू, हसराज सहु भेला।
मनजी कालो आदिज आया, रसाल माहे रगरेला।।
२३ कुचामण वलदेव कृष्णजी, छवीललालजी छाजै।
जीउ धनजी सुत सगे आयो, राम चिमन वेहू राजै।।
२४ डूगरसी तो सेवा करतो, सतिया नी तिहा आयो।
त्रीरावड ना वहु नर-नारी, प्रणम्या पूज ना पायो।।
२५. धनजी रै वाग पूज विराज्या, नर-नारी थइ भेला।
जनवृद जोवा आवै अधिका, जाणक मंडिया मेला।।
२६. 'मीठडी' मे मुनि मीठा लागा, सामी घणा सुहावो।
'झाक' तणो झड नर-नारचा रो, प्रणम्या पूज ना पायो।।
२७. 'नावे' छोगजी वाठियै वाद्या, 'गुडै' 'खंधेल' विचारो।
लिछमणदास ने मोतीलालजी, प्रणम्या हर्ष अपारो।।
२८. जोवनेर ना जनवृद आया, वधाया गणिनाथो।
दुनिया देखण अधिकी आवै, हियो अति हरषातो।।
२९. गुणसठ ठाणे जोवनेर गणि, दूजो थट इहां थायो।
दोय रात्रि रहि विहारज कीधो, उदैचंद आदि आयो।।
३०. पाच ठाणे रह्या हरखूजी तिहा, जोवनेर भोलावै।
चोपन ठाणा सू हिव 'चगा'[1], जय गणि जैपुर आवै।।
३१. जोवनेर सू खेडी जाता भैरू, 'नोपति' नो भणज्यो।
जवारमलजी जय गणि वाद्या, हिव खेडी मे सुणज्यो।।
३२ भोलानाथ ने विजैलाल विहू, 'कवीला'[2] संग ल्यायो।
हीरालाल रा वहू ने माजी, गणेशलाल गिणायो।।
३३. 'सुरजनीया-वास' थयो संता रै, 'वाम दुरजनीया' वाजै।
सिरदारमल नो सुत पुन्यवतो, फकीरचद सेव साजै।।
३४ विहार करी नै त्रिचरचा स्वामी, लारे ठाकुर आया।
'कालवासन' ना हय संगे अति, दर्स पूज्य ना पाया।।

---

१. पवित्र
२. कुटुम्व

३५. स्वांम तदा वचनामृत पायो, हिवडे अति हरखायो।
पुन्यवंता रे जंगल माहें, जग कहै मंगल थायो ॥
३६. 'हाथोद' में छाजुराम आदि, इम झोटवाड़े झंड भारी।
रथ 'सेझवाला'[1] लेइ आया, सइकडां नर-नारी ॥
३७. सिरदारमल रै बाग विराज्या, वैसाख अमावसी आई।
देशना सुणनै दुनियां हरपी, तिहां इक आई वधाई।
३८. हीरालालजी हीमत धारी, भारी भेटणो लायो।
गणेशजी बालक बुधवंतो, प्रणम्या पूज्य ना पायो ॥
३९. हीरालालजी आदिज हूंता, संत सात तिहां देखो।
अष्टादस गणि संगे आया, पचीस संत थया पेखो ॥
४०. गुलाव कुवर आदि दे समणी, संगे छतीस जाणो।
इगसठ ठाणा सू इहा स्वामी, मेलो खूब मंडाणो ॥
४१. प्रथम ढाल मे तीन थाट थया, थेट थली सू आयो।
सिरदारमल रै बाग विराज्या, लघु छोग गणिरायो ॥

ढाल २

दोहा

१. चोथो थट चंगो हिवै, सुणजो सहु नर-नार।
श्रावक श्राविका सामठा, आय मिल्या इणवार ॥
२. वैसाख सुदि एकम दिने, पचीस संत सुपेख।
पुर में गणि पधारता, हगाम हुवा अति देख ॥

३. *संत सहु सझ करिया, पुर मे परवरिया पूजजी रे, गुणिजन गिरवा।
साथे नर-नारचा रा वृंद ॥
वले जन बहु साहमा आवै, वधावै पूज्यनै प्रेम सू रे गुणिजन गिरवा।
सांमी सोभ रहचा जिम चंद।

---

१. पर्दानशीन स्त्रियो के वैठने की वह गाडी, रथ या वग्घी जिस पर विस्तर लगाकर लकडियो के सहारे चारो ओर ऊपर से पर्दे से वद कर दिया जाता है।
*लय—कसिया नै तंबूड़ा कांई सी...

४. 'सुदर'[1] सज सिणगारी ए भारी वेसे भलकती।
अति करती उद्योत।
जाणै खुली केसर नी क्यारी ए प्यारी परषद जयपुर तणी।
लागी झिगमिग जोत॥
५ रथ सेझवाला लेई केइ आवै श्रावक श्रावका,
सझ नै सिणगार।
वले जय गुरु ना गुण गाता हिलोला खाता हर्ष ना,
जनवृद मिलिया अपार॥
६. हय सिणगारचा सोहवै काई इको अगाडी चालतो,
स्वामी आया मध्य वाजार।
जन गोखां चढी जोवै केई हर्षत होवै पेखनै,
पूज्य रो सुजश वध्यो ससार॥
७. कइ अन्यमती स्वमती आवै सीस नमावै स्वाम नै,
कीर्त्त करै धर कोड।
वले सुस्वर कठे सहु गावै वधावै श्राविका स्वाम नै,
धिन-धिन कहै कर जोड॥
८. खलक लोक वहु खलक्या'[2] नर नारी भलक्या भाव सू,
देखण पूज्य दीदार।
आचार्य अधिकारी इहा अतिसै धारी आविया,
एहवो नहि को इण ससार॥
९. इम आडवर अति आया, हरचद दूवारे हगाम सू,
नित थाट वखाण मे होय।
सहु श्रावक विकसाया कहै कदेय न आया एहवा,
इम जन वहु कहिता जोय॥
१०. अन्यमति अति आता केइ चरचा लाता 'चूप'[3] सू, प्रश्न पूछेसा सार।
ते वाणी सुण विकसाता हरपाता हिवड़े घणा, अहो-अहो बुद्धि अपार॥
११. वले अस्पताल सू आतो ओ डाक्टर पूज्य पेखवा, दुर्गाप्रसादर्जा देख।
ओपधि विविध वतातो हरपातो हिवडे घणो, पूज्य नी मुद्रा पेख॥
१२ कारी तो कर्म सारी पिण कारी करवा तीखो घणो, पोताला थी जोय।
पथरी काढवताई ततखिणकारी तिण करी, निपुण इसो अवलोय॥

---

१. स्त्रिया।
२. झुड के झुड लोग प्रवाह रूप मे आने लगे।
३ उत्साह।

१३. ते ओपधि अति देतो जस लेतो जाझो जगत में, इणरे संतां सूं अति प्रीत।
केइ पंडित केई जोसी जती चुनीलाल जुगत सूं, वांदया स्वाम वदीत ॥
१४. दर्सण करवा नित आवे ओ ल्यावे 'नीकी'[1] वारता, गुणावै स्वांम नें गोय।
पूज वचनामृत पावै ओलखावै सरधा आछीतरे, जगावै ग्यांन जोत जोय ॥
१५. वाणी सुण जन हरख्या गुण परख्या निरख्या नैण सूं, विहार कियो लेइ वृंद।
ठाणा इगसठ गणि रायो काड पायो जश जयपुर मझे, जबरो थाट जोगिंद ॥
१६. श्रावक श्राविका आया पोहचाया गणि प्रेम सूं, सज-सज निज सिणगार।
'गोरचा'[2] सुजश गाया सुस्वर कंठे सुहामणा लोकवृंद बहु लार॥
१७. ढाल दूजी गणि गूज्या कांड धूज्या पाखंड धाक सूं, 'बूज्या'[3] बहु नर-नार।
अन्यमती था अलूझ्या ते सलूझ्या सूत्र सांभली, लघु छोग भण्या थट च्यार ॥

ढाल ३

दोहा

१. अब पंचमो मेलो अखू, ठाणा इगसठ ना थाट।
जय नगरी मे जय गणी, गैहरा किया गहघाट॥

२. *होजी म्हारे विहार कियो गणि जैपुर सैहर सुजोय जो,
घाट मझे थया थाट हिवै गुण जो कहूं रे लोय।
पचीस संता सूं आव्या गणि अवलोय जो,
छवतीस रे अज्जा इगसठ ठाणा सहू रे लोय॥

३. इहा धाट नामही घाट थाट नित देखज्यो,
वाग वगीचा विविध कुंड झरणा झरै।
विचै सडक वहै वेहु पासे नैहर पेखजो,
खलकै रे जल निर्मल जन 'कीला'[4] करै॥

---

१. अच्छी।
२. स्त्रिया
३. बोध को प्राप्त हुए
*लय—होजी म्हारे धर्म जिणंद सूं लागी...
४. क्रीडा।

४. जाइ जूइ ने जावत्री मंदार जो,
केतकी चदन चंपक चमेली तिहां।
अंवो अंवलि पिपलि पलास विचार जो,
निंव कदव न ककेली मरुओ जिहा॥

५. काइ अगर तगर ने इरणी एलची सार जो,
लवंग एरड वहु कुद मचकुद ने मोगरो।
निंवू जवू नारेल जभेरी धारजो,
खदरी वदरी खयरकयर फुरास फोगरो॥

६ दाडिम दाख ने खिजूर नारंगी निरख जो,
वेहडा महूडा अंवला इम केता कहूं।
घाट माहे इम वागा मे अति वृख जो,
विलायती केइ तरुवर तिहा दीसै वहू॥

७. गोष्ठ करेवा जन वहु आता जोय जो,
खान-पान वहु खाता मेला मंडता।
मैहलायत वहु सैहल करै जन सोयजो,
वेद भणै वहु 'विप्र'[1] जे वाजै पिडता॥

८. ऊठ अश्वनी गाडचा विविध प्रकार जो,
आती रे वहु जाती घाट विचे थई।
इका अश्वनी वग्घा पर नर-नार जो,
सीस नमाता जाता संतां नै सही॥

६ 'मरकट'[2] माता राता देता फाल जो,
आता जाता खाता भाता फिर फिरी।
कंठ लगाता चुवाता हिये वाल जो,
ताड़ंता दोडता देता दुरवरी॥

१०. गोरिया आती जाती गाती गीत जो,
सुस्वर कठे अति कोहकी जाणक मोरडी।
रसिक रिझाती पेखत करती प्रीत जो,
वाण कटाक्षे करती नर नें कोरडी॥

---

१. ब्राह्मण।
२. वदर।

११. एहवो घाट तिहां लालाजी रा मैहल जो,
राजपंथ जिहां जय ऋषिसर राजता।
संत सत्या वहु वाग में करता सैहल जो,
नर-नारी नैं ग्यान सुणाता गाजता॥

१२. जनवृंद जोवा आता अधिक अपार जो,
निरख-निरख नर-नारी हिवड़े हरखता।
कहै एहवा नहीं देख्या कदे अणगार जो,
कीर्त रे अति करता गुणि गुण परखता॥

१३. श्रावक श्राविका आता अति मंडाण जो,
सेवा रे अति करता रहिता सासता।
गोष्ठ धर्म री करता सुणता वांण जो,
सखरी रे सदगुरु री अधिकी आसता॥

१४. उदियापुर में उद्योत कियो अति देखजो,
गोगुंदा थी भेटणो भारी ल्याविया।
तेज - ऋषिसर पनालाल सुपेख जो,
घाट मझे घणै थाट पूज्य दर्स पाविया॥

१५. पैंमठ ठांणे गणि घाट मझे किया थाट जो,
जन हजारां आवी जय गणि जोवता।
हाजरी मे अति हूंता वहु गहघाट जो,
युव नृपति पे सहु संत हाजर होवता॥

१६. सवा लाख नो पटायत कहिवाय जो,
झूंझारसिंघजी चांपावत चावो सिरै।
कुमर भमर सो प्रणम्या पूजना पाय जो,
संतां सूं अति लुल-लुल नै लटका करै॥

१७. समुद्रकर्णजी कर्णोत कहिवाय जो,
'अष्ट कुसल' में आयो वुधवंत परखियो।
पूज तणां तिहां आवी प्रणम्या पाय जो,
स्वांम वचनामृत पीधां हिवड़े हरखियो॥

१८. संत-सत्यां नैं पेख्यां वाधी प्रीत जो,
सांइजी आवी नैं 'सट'[1] वंदणा करी।
ते वगसी जी रा वाजै गुरु वदीत जो,
पोहचावण संग आयो हर्ष हिवड़े धरी॥

---

१. झट।

१६. तेज ऋपि रे राजलदेसर तंत जो,
लघु भान नै गगापुर भोलावियो।
प्रथीराज तो हरिगढ पावत जो,
त्रिहु-त्रिहु ठाणे इक दिन विहार करावियो॥

२०. चिहु सतियां सग लालाजी तो जाय जो,
चोमासे माधोपुर सतिया संचरचा।
जल अति 'वूठो'[1] गेले मार्ग मांय जो,
नीर नदिया वहु निरखी पाछा ही फिरया॥

२१ इचरज इक तिहा लाले एहवो कीध जो,
सुणजो रे हिव श्रोता संक्षेपे कहू।
'कंचुक्या'[2] मोदक धर-धर घाट मे दीध जो,
वागवांन नै वेसवागा दीधा वहू॥

२२. स्वमुख सुणिया पेख्या इचरज पाय जो,
ए सावज ओछव जाणो संसारचा तणां।
एक मास रही विचरचा हिव गणि राय जो,
श्रावक श्रावका ना झड तो संगे अति घणा॥

२३. वीकानेर रो वासी धर्मचंद धार जो,
सदगुरु आता सांभलि साहमो आवतो।
'कड़ो लंगर'[3] तसु पग मे सुवर्ण सार जो,
'गोत्र गणि जय पेखी आनंद पावतो'[4]॥

२४. तीजी ढाल मे पचमो थट इहा थाय जो,
वाग सिरदारे रे स्वामी आय विराजिया।
लघु छोग कहै ठाणा वावन इण ठाय जो,
तीन रात्रि रहि चोमासे सत साजिया॥

---

१. वरसा।

२. कचुकी (काचली)।

३. पैरो मे धारण किये जाने वाला सोना या चादी का आभूषण विशेप।

४. जयाचार्य का गोत्र गोलेछा था, अत वे दर्शन कर अधिक आनदित होते।

ढाल ४

दोहा

१. संत वीस सुविचारज्यो, दोय तीस अज्जा देख।
मास असाढज आवियो, कृष्ण पचमी पेख॥

२. हीरालालजी स्वाम नै, उपनो कारण अपार।
'सट कोसा जी'[1] चल गया, अहो-अहो धिग संसार॥

३. मांडी वणाई श्रावका, झिगमग-झिगमिग जोत।
देव विमाण सी दीसती, करती अति उद्योत॥

४. कोतल चालै कूदता, वाजंत्र झिणकार।
गयवर आगे घूमतो, चाल्या लेइ तिवार॥

५. फूल रुपा सोना तणा, उछाल्या अति पेख।
जनवृद वेस जलूस मूं, दाग मझे गया देख॥

६. ए ओछव सहु संसार ना, तिण में नहीं अंस धर्म।
वीती वात वखांणतां, लागै नहीं पाप कर्म॥

७. अषाढ़ सुदि तेरस दिने, पंडित मरणज पाय।
जवर साहज जय गणि दियो, थट छठो इहां थाय॥

८. *हिवै जयनगरी मे जयगणि रे, पुनरपि फिर आवंतो।
श्रावक श्रावका सावठा रे, आवै हर्ष अतंतो।
श्रावक श्रावका सांहमा आया, आगा ज्यू अधिका थाट लगाया।
नर-नारी गणि लेइ वधाया, हरचद दुवारे हगाम सू आया।
जी ग्यांनी गुरुजी हो॥

९. नर नारचा ना वृंद में, वागरी अमृत वायो।
हलुकर्मी हरख्या घणां, भारी-कर्मा भिड़कायो।
भारी-कर्मा भिड़की भाजै, च्यार तीर्थ विच पूज्य विराजै।
गैहर गंभीर 'केसर'[2] जिम गाजै, आकासे जिम इन्द्र अवाजै।
जी ग्यांनी गुरुजी जी हो॥

---

१. अकस्मात्
*लय—चंद्रायण री...
२. केसरी, सिंह

सोरठा

१०. लालाजी अवलोय, चिहुँ ठाणे फिर आविया।
जयनगरी मे जोय, भेटचा जयगणि भगत सू।।

११. *प्रात सिधंत सुणावता, 'युव-नृपति'[1] जय पासो।
भगवती भगवंत रा रे, वारू वचन विलासो, वारू वचन विलास री वाता।
विविध प्रकार री रचना लाता, राते राम चरित रसपाता।
जय गणि पोतै झड जमाता।।

१२. छपन ठाणे गणि छाजता, जैपुर जवरा थाटो।
देस ढुढाड दीपावियो, लागा अति गहघाटो।।
गहघट जयनगरे अति लागा, नैडा न आवै पाखड 'छागा'[2]।
देखी अतिसै अलगा भागा, परदेसा केइ पडिया 'आघा'[3]।।

१३. संत वीस मुहामणा, युव - नृपति आदि जाणी।
अज्जा षटतीस ओपती, गुलाव आदि गुण खाणी।।
गुलावकुवर कहूं गुण करे रूडी, चतुर विचखण पडित पूरी।
'देसन'[4] देवा सखर सनूरी, स्वाम नी सेवा साधै हजूरी।।

१४. सुदर तन अति सोहती, पेखत पामै प्यारो।
जनवृद सुणवा आवता देसन सती नी सारो।
देसन दोपारे अति देती, सुस्वर कंठे वहु सतिया सेती।
'लाहो नाण लिछमी नो'[5] लेती, पत्र अपूठा वले वाचेती।।

दोहा

१५. हिव सत सतिया तणा, तप नो वहु इधकार।
पिण वड तप तो दाखू इहा, सुणज्यो सहु नर नार।।

---

*लय—चंद्रायण री...

१. युवाचार्य श्री मघवागणी

२. वकरा

३. दूर

४. व्याख्यान

५. ज्ञान रूप लक्ष्मी का लाभ

१६. *सात-सात ना त्रिहूं किया, पाच पांच रा पंच देखो।
'चोलो'[1] एकज आखीयो, दोय 'पट'[2] किया देखो देखो।।
ए सारी 'भीमड़े'[3] तपस्या कीधी भारी, हिव छजमल पण 'तप तेग'[4] धारी।
अठाई, पंच किया चोविहारी।।

१७ छठ-छठ तप दोय मास नो, पन्नालाल कियो पेखो।
हिव आखू अज्जा तणो, तप वर्णन सुविसेखो।
तप वर्णन सुणजो वड़ सारो, एक मास 'चूना' चित्त धारो।
मोता उमा अठार इग्यारो, जेता सोल पनरै सिणगारो।।

१८. नव केसर, रायकुमर ने, कसतूरा अष्ट अख्यातो।
पट, दस लछु किया खत सू, चनणा नानु छोगां किया सातो।
चनणा नानु छोगा त्रिहु सात भणियै, पंच पंच ना हिव थोकड़ा सुणियै।
कुनणा राजा छोटा थुणियै, जडाव पारवता गोरख गिणियै।।

१९. वखतावर छोटा चूंना मना, वरजू त्रिहु चदा विचारो।
रायकुवर वखतावर रिधू गोरखा, भूरा जेठा वड सारो,
वड सारो तप तत सारो।
चवदै सत्या ना चोला चितारो, धुर चिहु नै तो जुग-जुग धारो।
एक-एक चोला दसा रे उतारो।।

२०. बेला तेला वहु थया, उपवास तो अधिक अपारो।
तप वर्णन चोमास नो, कहिता किम लहूं पारो पारो रे प्राणी।
सत सती वहु गुण ना खांणी, समास संकोच्यो इहा छाणी।
ग्रंथ घणो वधंतो जाणी।।

२१. असणादिक अति ओवतो, पकवाना री पोटो।
'सहु संत सतियां तणो, एकण जायगा अन्न कोटो'[5]।
इक जायगा अन्न कोटज थावै, वरफी कडाकंद नही भावै।
मोदक तो कांई नही मंगावै, वोलै नही सत वहु वतलावै।।
ठंडो वासी हिव कहो कुण खावै।।

---

*लय—चंद्रायण री...

१. चार दिन का तप।
२. छह दिन का तप।
३. तपस्वी मुनि श्री भीमजी।
४. तप रूप तलवार।
५. एक जायगा अन्न कोटज धारो, भीमजी वांटतो सहु आहारो।
वजण दीप वाटै सुविचारो, सत सत्या ले जाता सारो।।

२२ मेला तिहुं टंक मंडता, अन्यमती वहु आयो।
प्रश्न पूछण प्रेम सू, चरचा री अति चाह्यो।
चरचा री चाहि सू चीणियो आतो, पनालालजी प्रश्न ज लातो।
उत्तर सुण नै अति हरषातो, 'खडचा'[1] नै ओ खूव उडातो ॥

२३ नथमलजी गोलछो, खजाची धर खतो।
लिछमणदास जेठमलजी, भादर भूधर वाजतो ।
भादर भूधर वाजत आया।
लारे लोकज वहुला ल्याया, चरचा पद पूछी हरषाया।
भिन्न-भिन्न सामी भेद वताया ॥

२४ वचुलाल 'वज'[2] वाजतो, श्रावगी सेठ कहिवायो।
श्रावगी सुत मनालालजी, ते पिण हर्ष सू आयो आयो धारो।
दीपचद जमुनालालजी लारो, अन्य वहु श्रावगी आया अपारो।
जन वहु कहितां किम लहू पारो ॥

२५ चन्द्रावत चावो तिहा, वलवतसिघजी आतो।
राजाजी रै जाणजो, मामा रो सुत भ्रातो भ्रातो भारी।
लोका नै अति लातो लारी, सीख्यो पचीस वोल चरचा प्यारी।
पोपध कियो सिर सिको धारी ॥

२६ ठाकुर 'झिलाय' रा झड सू, नाहरसिघजी नामो।
पटायत वड पेखजो, पूज नै करै प्रणामो।
प्रणमै पूज नै वारू वारो, 'नलवल' केरो नृपति धारो।
प्रतापसिघजी पुनवत प्यारो, वले 'कालवाड' रा आया सिरदारो ॥

२७ भतीज फतैसिघजी तणो, चिमनसिघजी आयो।
दर्शण देवा आवजो, 'तेडा'[3] फिरता ताह्यो।
तेडा ठकुराण्यां रा आता, दसर्ण देवा सतिया जाता।
सुस्वर कठे अति ज्ञान सुणाता, सुण सुण नै हिवडे हरषाता ॥

२८ पिडत 'विप्र पंडिया'[4], आता केइ अभिरामो।
जोगी जती ढूढिया, सवेगी सिवजीरामो।
सिवजीराम सवेगी मिलतो, फकीरचंद सिरेमल फिरतो।
गोचरी दिसा मे आय अडतो, पिण युवनृपति ना गुण अति करतो ॥

---

१. विपक्षी।

२. वजाज।

३. आमत्रण

४. ब्राह्मण जाति के पडित

२६. एक उपगार इधको थयो, सुणज्यो सहु नर - नारो।
लालो लिछमणदासजी, श्रावक वड श्रीकारो श्रीकारो श्रावक पक्को।
जयनगरी मे जेहनो डको, चरचावादचा मे अति वंको।
दिढ धर्मी सदा निसंको॥

३०. लघु बंधव लाला तणो, हुकमचंद थयो जांणो।
दोय सुत तसु देखजो, कसतूर नै लघु माणो कसतूर नै लघु माणक प्यारो।
वोल थोकडा तसु आवै अपारो, संसार तो तसु लागो खारो।
सीलव्रत आदरियो सारो॥

३१. विविध वैराग वधावता, जवरा जय गणिरायो।
माणक कहै मुणंद नैं, संजम लेसू सुखदायो।
सजम तो हूं लेसू सारो, दिख्या नी वतका करी वारो।
न्यातीला तसु लागा लारो, माणक अवसर देख तिवारो।
वतका तव सामटी सुविचारो॥

३२. नरसिघदासजी नृपति, वाजंतो सुविचारो।
इक मोहर ने पंच रूपिया तणी, ल्यायो भेटज लारो।
भेट ल्यावी कहै लीजै जोई, स्वांम कहै 'कल्पै नही'[1] कोई।
इमहीज गैंडामल मुनसी सोई, निजराण करै रूपिया ल्याई दोई॥

३३. नृप उसताद मित्री सुण्यो, भेट लायो दोय वारो।
इक्कावन इक्यासी रूपिया तणी, अर्ज करै वारूं वारो।
अर्ज करी कहै कामज कोई, भोलावो मुझ लायक सोई।
करडा सू करडो जो होई, अर्ध रयणि सुणिया करूं अवलोई॥

३४. वालटीण साहिव साभली, आयो तिहां चलाई।
टोपी ततखिण नाख ने रे, नीचो शीष नमाई, नीचो शीष नमाई सारो।
मार्ग मिलता हर्ष अपारो, पेखता अति लागतो प्यारो।
सेठ हवेली आयो दूजी वारो॥

३५. प्रश्न पूछ्या पूज नैं, जातो कहै इम जोयो।
आइज्यो मंदिर माहरै, संत मिल्या तिहां दोयो।
दोय संत तिहा मिलिया जाया, मोती छोग मिल्यां हरषाया।
विब्या साहिव वोहला आया, अधिका निरखण संत उमाया।
एक पोहर वचनामृत पाया॥

---

१. ग्रहण करने योग्य नही है।

३६. थट सप्तमों छोग कहै थयो, चोथी ढाले जोयो।
दर्सण करवा देस-देस ना, आवै हिव अवलोयो।
आवै जन अवलोयो रे वारू, विस्तरी मुलक मे अवाज उदारू।
तेरापथ ना पूज्य दिदारू, चालो रे देखा तीरथ च्यारू।।

ढाल ५

१. आखू थट हिवै अष्टमो, अष्टवीसे नर-नार।
दर्सण करवा देख जो, आवै अधिक अपार।।
२. सूरवाल ना सामठा, वाई-भाया जोय।
माढै रो आय वली, नथमलजी अवलोय।।

*सामीजी रो जयपुर मे जस छायो रे, अे तो जन वहु जात्री आयो रे।।
।।ध्रुपदं।।

३. फलोधी रो देवकर्ण आदि, गगापुर रा वहु भाया जी।
जीत कुनण आदि 'आरजीया'[1] रा, ए सावण मे आया रे।।
४. चुरू सू विरधीचंद सुराणो, गुलावचद वले तांमो।
लाडणू सू संतोषा आई, कलकत्ता सू रामो।।
५. डेगाणे रो वासी देखो, नंदराम निहाली।
'वावीस टोला सू तोडी आयो, ततक्षिण जैपुर चाली'[2]।।
६. अर्ज करे दिख्या गणि दीजै, स्वाम कहै सुविचारो।
अटकै नही दिख्या द्या तो पिण, पूछा तुझ परिवारो।।
७ आग्या मात पिता री आया, आप्यो सजम सारी।
प्रथम भादवा सुदि तेरस नो, भिक्खू चर्म दिन भारी।।
८. दादावाडी तिहा दिख्या देई, पुर मे आया पेखो।
भेटा दोय अचिती आई, संहर सिरदार सू देखो।।

---

*लय—जय-जय नंदा जय-जय भद्दा ..

१. 'आरज्या' नामक ग्राम, जो भीलवाडे के पास है।

२ नदरामजी जयाचार्य के पास दीक्षित होने के लिए जयपुर आ रहे थे। रास्ते मे स्थानकवासी नानकजी के टोले के साधु मिले। उन्होने नदरामजी को छलपूर्वक दीक्षा दे दी। कुछ ही समय पश्चात् उनमे आचार-विचार सवधी शिथिलता देखकर नदरामजी जयाचार्य के पास दीक्षित होने के लिए जयपुर आये।

९ 'सजीवनी'[1] ने वीरां वाई, अर्ज करै वारू वारो।
दिख्या दीजै जेज न कीजै, इम करती मनुहारो॥
१०. दोया रै हिव मेला मंडिया, चिहुं तीरथ ना भारी।
जनवृद जोवा इधका आया, चरणमहोछव चित धारी॥
११ अन्यमती स्वमती अधिका आया, सझ-सझ नै सिणगारी।
चिहूं तीर्थ मिल-मिल गुण गावै, हरख्या अति नर-नारी॥
१२ जयगणि जवरा झड जमाया, दोय थाट थया देखो।
अष्टमो नवमो इक दिन माहे, प्रात. दोपारा पेखो॥
१३ दसमो थट दाखू हिवै सुण जो, संक्षेपे सुविचारो।
विस्तारचा वतकाछै वोहली, कहिता किम लहू पारो॥

सोरठा

१४. हिव वैरागण ना देख, सुणज्यो पीहर सासरचा।
पीहर वीरा नो पेख, सिरदारगढ डागा तणै॥
१५. भैरूदानजी जाण, पिता, सासरो हिव सुणो।
राजलदेसर छाण, वैद अमरचंद सुत-वहू॥
१६ संजीवनी नो जोय, सिरदारगढ पीहर सासरो।
अर्जुनदास अवलोय, पिता वोथरा पेख जो॥
१७ इन्द्रचन्दजी जाण, तसु सुत नी ए सुदरी।
तरुण वेस प्रधान, गोत्र गोलेछा निर्मलो॥

१८ *वैरागणी हिव करै वीनती, दिख्या वेगी दीजै।
जिका घड़ी जावै ते पाछी, आवै नही इम सुणीजै।
जयपुर में जश छायो रे, दसमो थट हिवै थायो रे॥ध्रुपद॥

१९ सजीवनी री संपद सखरी, दाम हजारा देखो।
ततखिण सहु छिटकाए आई, लखपतिया जिम लेखो॥
२० तरुण वेस मे दिख्या लेवा, ततखिण हुय गई त्यारी।
सुदर तन मुकमाल सोभतो, पेखत लागै प्यारी॥
२१. द्वितीय भादवी धुर एकम दिन, मडचो अधिक मंडाणो।
हय गय रथ सझिया अति सुदर, पलटण सग पिछांणो

१. जीवूजी
*लय—जय-जय नंदा जय-जय भद्दा...

२२ सज सिणगार सुदरचां आवै, गावै मगलाचारो।
कोतल घोडा कूदत चालै, वाजित्र ना झिणकारो॥
२३. वीरा पिजस माहि विराजै, सजी सेवका भारी।
सजीवनी बैठी अति सोभै, लटके लूवा लारी॥
२४. सजम लेवा हिव संचरिया, चामर वीजंता चालै।
मझ वाजारे आया आगे, घूमता गय हालै॥
२५. उछव नो अधिकारी लालो, मोहछव अति मंडाया।
भूपण वेसज पैहरचा भारी, सोभै कचन काया॥
२६. दुनिया देखण अधिकी दोडी, वाजंत्र वहु वाजै।
जोवा जन हजारा आया, अवर अकासे गाजै॥
२७ आगूच आंग विराज्या सामी, सग लेइ चेली चेला।
मोहनवाडी माहि अधिका, मडिया मोछव मेला॥
२८. इम आडवर करनै अधिको, नगरी वाहिर आया।
च्यार तीर्थ ना वृद मे स्वामी, पातक सहु पचखाया॥
२९ मणा वंध-मोदक तिहा वाटचा, दुनिया ले गई देखो।
ए सावज 'कृतव'[1] संसार ना, तिण मे नही धर्म नो लेखो॥
३० 'झुझ'[2] 'परणेत'[3] सिणगार सहू ए, वरणविया जिन जोई।
वीती वतका सहु वरणवता, कर्म न लागै कोई॥
३१. सजम सखरो देई सूपी, गुलाव नै गणिनाथो।
सजीवनी प्रथम ए शिषणी, हुई गुलाव नै हाथो॥
३२. ओछव अधिका करनै सामी, पुर मे पाछा आया।
नर-नारी सग गुण वहु गाता, जवरा झड जमाया॥
३३ दसमे थट थइ दोय दिख्या, ढाल पचमी प्यारी।
'सेरा सती सुत छोग'[4] कहै, हिव जैपुर नी भेट भारी॥

१ कार्य।
२ युद्ध।
३. विवाह।
४. छोगजी की माता का नाम सेराजी था।

ढाल ६

सोरठा

१. जय नगरी ना जोय, नर नारी मिल वीनवै।
भेट म्हारी अवलोय, लीजै हिव कृपा करी॥
२. नाम जडावजी धार, जय नगरे पीहर मासरो।
'श्रावण मुखा'[1] श्रीकार, पिता नगराजजी पेखजो॥
३. संतोपचंदजी पेख, वेद तणा मुत नी वहू।
दिख्या इम हीज देख, थई सदा सुख वाग में॥
४. ओछव अति विस्तार, संकोच्यो सुणज्यो सहू।
द्वितिय भाद्रव धार, कृष्ण सप्तम दिख्या थई॥
५. ठाणा गुणसठ थाट, एकादसमो इहां थयो।
दुवादसमो गहघाट, श्रोता हिव सुंणजो सहू॥

६. *हिवै लाडणु सैहर स्यू जोय, जीउ आदी जिहां, ललना।
माधोपुर सुरवाल, जोवनेर ना तिहा, ललना॥
७. वखतगढ 'विदासर'[2] संग, पीपलवाड़ो पेखजो।
चाडवास 'विदाण'[3] नी चंग, डीडवाणो देखजो॥
८. माधोपुर मूरवाल, भगुंतगढ़ ना भणो।
गंगापुर नवोनगर, रतनगढ़ नी सुणो॥
९. आसां आदि विचार, हिवै लाडणूं तणी।
आई वाया अपार, सौ आसरै सुणी॥
१०. हांसी रिणी नो हगाम, सुजानगढ़ नो सिरै।
रतनचंद हणुतराम, असी जन आसरै॥
११. ल्याया लिक्षमी लार, सुदर सिरै परख नै।
करता अति मनुहार, लीजै भेट निरख नै॥
१२. दीजै दिख्या दयाल, कृपा कीजै गणी।
सारडी पिहर डूगरवाल, सुता तेजमल तणी॥
१३. वांठीया आईदांन, के मुत नी सुदरी।
सासरो गढ़ मुजाण, कुलवती ए खरी॥

---

१. मामसुखा।
२. वीदामर के वुधमलजी दुगड।
३. वीदासर की वहुत वहिनें।
*लय—इण सरवरिया री पाल...

१४. हिवै ओछव मडिया अपार, दिख्या दिने अति घणा।
कहिता किम लहू पार, आगे ज्यू इण तणा ।।
१५. द्वितिय भाद्रवे धार, शुकल छठ तिथि कहूं।
थट थया इहा वार, साठ ठाणां सहू ।।
१६. फलोधी पादू चाणोद, मेवडो माणजो।
विदासर सू नगराज, विरधीचंद जाणजो ।।
१७ सूर्यमल सेठियो जोय, गुमाना वाई कहूं।
गुलावचंद नी अवलोय, ताराचंद नी वहू ।।
१८ ईसर आदि दे जाण, वाई - भाया अति घणा।
नर - नारी संग जोय, साठ आसरै मुण्या ।।
१९. राजनगर नो जोय, कवीला संग सहूं।
जोरावरमल अवलोय, काकडोली कहूं ।।
२०. गोगुदा ना वहोत, वाया भाया कहूं।
मेघ धूलजी चपलोत, वीकानेर ना वहूं ।।
२१. हिवे पुर वाहिर गणिंद, झंड सू जावता।
सडकडा जनवृंद, संग सेव मे आवता ।।
२२. नित नित थट इम थाय, खंडी हिये किम खटै।
देखी भणै इम वाय, छडी इक हिव घटै ।।
२३. ततखिण दूजै दिवस, वीदासर ना तिहां।
वेगाणी प्रथीराज, जोरावरमल जिहा ।।
२४ वीदासर रा सेठ, वेंगाणी वाजता।
विकाण नृप विचार, छडी देइ छाजता ।।
२५. कवीला सू धर कोड, दर्सण आवी क्ररचा।
नित हुंता हाजर कर जोड, सेव मे सचरचा ।।
२६. हिव पुर वाहिर खडी परख, छोग भणै ए छड़ी।
नैणा लीज्यो निरख, चादी मू ए जडी ।।
२७. जवर अतिसै जयराज, गणिस्वर गूजता।
जाणै गया पाखंडी भाज, अलगा अति धूजना ।।
२८. हासी भियाणी नो झड, गोगुदा ना वहू।
चुरु मुम्वड नो मड, गुलावचंदजी कहूं ।।
२९. नगीनादास निहाल, वली लाडणू तणा।
हुकमचंद छोगमल, वायां-भाया अति घणा ।।

३० द्वितिय भाद्रवे धार, इत्यादिक आया वहू।
हिव आसोज में नर-नार, आवै ते सुणजो सहू ॥

३१. लाडणू नी वाया वहोत, राजलदेसर ना रली।
वालचंद ने लछीराम, कहूं लाडणू वली ॥

३२. आसकर्णजी वैद, कवीला संग करै।
हर्ष गुलावचद संग, चालीस जन आसरै ॥

३३ 'करमेतो'[1] कर्मचंद, वीदासर नो कहूं।
आव्यो अति आनंद, वाया संगे वहू ॥

३४. जोवनेर भगुतगढ जोय, लाडणू ना घणां।
विरधीचंद नंद अवलोय, माधोपुर तणां ॥

३५. कालूराम कवीला सु जोय, गंगापुर नो गिणो।
केलवो 'कुष्टांनपुर'[2] लोय, नवल धूलजी भणो ॥

३६. श्रीजीदुवार सु कवीला संग, हंस आयो चली।
वायां-भाया संग वहोत, गंगापुर ना वली ॥

३७ दुलीचंद मगन सहंसमल, रतनचंद इम वहू।
आया अति नर-नार, नाम केता कहूं ॥

३८. हिवै उदियापुर नो झंड, आयो अति हीसतो[3]।
जन दोय सै उनमान, संघ सो दीसतो ॥

३९. कलकत्ता सू मोतीचद, प्रेमसुख धारज्यो।
भगुतगढ ना जनवृंद, चितोड़ चितारजो ॥

४०. कृष्णगढ़ सू जाण, कवीला संग ल्याविया।
वखतावर किल्याण, धाडीवाल आविया ॥

४०. लाडणू थी तिलोकचंद, सोनारी जुनीया तणा।
डेघाणो सुधरी पीपलवाड, सुजानगढ ना घणा ॥

४२. दूधोड सू आयो चलाय, करडी करी जोरसी।
कुटंव सहु छिटकाय, दिख्या री दिल मे वसी ॥

४३. पुर सू दुरग जडाव, आदि इम जांणजो।
श्रीजीदुवार सू लालचंद, भाया-वाई छाणजो ॥

४४. इम आसोज मे लोग, इहां आया वहू।
छठी ढाल भणी छोग, नाम केता कहूं ॥

---

१. कर्मठ।

२. कोठारिया।

३. प्रफुल्लित होता हुआ।

ढाल ७

दोहा

१. काती मास माहे हिवै, जनवृद अधिक अपार।
दर्सण करवा देखजो, आवै वहु नर-नार॥

*म्हारा गणेदजी हो जयपुर मे, जश हद लियो।
महा मुणद जी हो, तेरापंथ प्रकट कियो॥ध्रुपदं॥

२. रिणी हासी ने जोवनेर जन देख राज जी हो राज।
वोरावड राजगढ ना वहु जाणियै।
रतनगढ सु मेघराज बैद पेख राज जी हो राज।
राजलदेसर पुरणीयै रा पिछाणियै॥

३. नागपुर नें वली कामठी रो कहू धार,
जेठमलजी कवीला सग पेख जो।
चित्तौड सू वली आया वहु नर-नार,
दिल्ली सू ओ हरखचद दिल देखजो॥

४. पाली सु लेई कवीला सग लार,
सूर्य चांद तो जग माहे चावा घणा।
मगनीरामजी दुलीचद कहू धार,
दूगड रे दीपता ए लाडणू तणा॥

५. भियाणी का भाया-वाया भाल,
सुरवाल वली लाडणू री वाया देखियै।
कसुवी सू आया के जन चाल,
हिव मालव नो सग आयो ते पेखियै॥

६. मया १ गुलाव ने २ वृधि ३ रतीचद ४,
माणक ५ मोती ६ निहाल ७ पूनम ८ जाणियै।
प्रेम ९ देव ने १० हरचद ११ ए जनवृद,
एकादस ए चद कह्या सहु छाडियै॥

७. लूणकर्ण इन्द्र खेमराज धन धार,
ऋषभदास रिध गंभीर घनरूप धारियै।
इत्यादिक कहू केता वहु नर-नार,
रतलाम ना जनवृद ए सुविचारियै॥

---

*लय—म्हारा सोडा रांणा मेलो...

८. पटलावद न झखणावद रा झंड,
वखतगढ ने जावद ना वले जांण जो।
मालव देस नो मेलो अधिको मंड,
नर - नारी कहूं लिहूं सै उनमाण छाण जो ॥

९. हिव जोधाण सू आयो जवरो झंड,
रथ साढिया हय संगे अति हीसता।
नगर विचे थइ आया घणे घमंड,
केइ जन कहता ऐ राजकुमार आवै दीसतां ॥

१० सुवर्ण चादी री छडिया जड़िया पेख,
जवर जलूसी आडंवर संग अति घणो।
दरसण कीधा दीपमाल दिन देख,
मंगलीक रे ए मोटो दिन जिनजी तणो ॥

११. कृष्ण १ लिछमण २ जसवंत ३ सुख ४ कान ५,
चनण ७ गोरू ८ सावत मल ९ सुविचारियै।
हजारीमल १० सुत कनकमल ११ सग जाण,
पीपाड ना ए चोधरी चंगा धारियै ॥

१२. कवीला संग लेइ आयो भार,
खतरी रे मगनीरामजी खरो मतो करी।
पेखत पूज्य ने वंदै वांरूवार,
सो नारया संग सोभती सा सुंदरी ॥

१३. कलकत्ता सू कुभकर्ण आदि ताम,
दोलतपुरा सू सूर्यमल सु विचारियै।
सुजानगढ नो सेठियो हणुतराम,
वोरावड सुरवाल नो सूर्य धारियै ॥

१४. विदासर नो सिंगी भोमजी संग,
खूवचंद ओ दूगड़ दीपंतो वहू।
सुवर्ण पग मे सोभै अति सुचग,
काती मासे आया इम केता कहू ॥

१५ 'मिझमान्या'[1] अति प्रीते पोखी दीध,
खान - पान सू सतोष्या सहू पेख जो।
'आगति - सागति'[2] इधकी लाले कीध,
त्यारी कुण - कुण चीजां कीधी देख जो ॥

---

१. आतिथ्य सत्कार मे दिया जाने वाला भोज।

२. आगत-स्वागत (खातिरदारी)।

१६. साल दाल घृत विधि - विधि पकवान पेख,
वरफी कलाकंद मिश्री मावो धारियै।
मोदक जलेवी मोहै मोहन थाल देख,
पूडी पकोडचा वडा कचोली विचारियै॥

१७. चन्द्रकला तो देख्या लागै 'चाख'[1],
साक केता कहू विविध आचार आवता।
सिखरणी दही माहे मीठी दाख,
खीरखड घृत फीणी भुजिया भावता॥

१८. 'चारो'[2] 'रातव'[3] पाणी 'इधण'[4] पेख,
ठाम - ठाम तेल देतो दीपक नै सही।
भाड़ै लागा रूपिया सइकडा लेख,
दरवान अति राजी देखता वही॥

१९. जन हजारा नै मिझमान्या अति कीध,
भैरूं सिरदार छोग त्रिहु ए धारियै।
चारो भाडो जल रातव लाले दीध,
संसार ना सहु कार्य ए सुविचारियै॥

२०. सेठ हवेली जाता जय महाभाग,
दर्सण देता जनवृद सगे झड सू।
अर्ज करै सेठ रहिजै इहा मुझ वाग,
पट वेला इम दर्सण दिया घमंड सू॥

२१. मानी वीनती एक मास नी तास,
हरख्यो रे ओ सेठजी हिवडे अति घणो।
हिवे उतरचो कहूं सुणजो सहू चोमास,
हिवै मृगसर रे एकम ने जय विचरै सुणो॥

२२. वीस संत सग आया मझ वाजार,
जनवृद जोता गोखा चढ चढ गोरड़ी।
श्रावक - श्रावका आया सज सिणगार,
मधुर स्वरे अति गावै ज्यू 'लर्वा'[5] मोरडी॥

---

१. खाने का चसका।
२. घास।
३. घोडे आदि को खिलाया जाने वाला पौष्टिक खाद्य-पदार्थ जो चारे से अतिरिक्त होता है।
४. जलाने की लकडी।
५. बोली।

२३. दोडी दुनियां देखण जय दीदार,
देस देस ना वायां - भाया भलकता।
रथ सेझवाला ल्याया वहु नर - नार,
कोतल रे कूदता चालै चलकता॥
२४. अति आडवरे आया वाग सिरदार,
इंदोर सु हिव पांचीलालजी पेख जो।
आयो लेइ कवीला संग लार,
खूवचंद नी सुदर संगे देख जो॥
२५. सिसाय वकाणी रा आया वहु नर - नार,
ढाल सप्तमी त्रियोदसमो थट दाखियो।
साठ ठाणा सू सोभै सांमी सार,
लघु छोग इहा कवित कला रस चाखियो॥

ढाल ८

दोहा

१. एक रात्रि रही पूजजी, आवै घाट मझार।
थाट निहा अधिका यथा, सुणज्यो सहु नर - नार॥

२. *वीस संत संग कीधो स्वाम विहार रे, सुरग्यानी रे सुगणा,
घाट मे अति थाट आगे ज्यु हुवो घणो रे लोय।
वाग सेठ रे विराज्या सुविचार रे, सुरग्यानी रे सुगणा,
ततखिण रे तिहां, भेट आई श्रवणे सुणो रे लोय॥

३. सिरदार सैहर सु आई वाई 'हीर'[1]
दुगड रे आईदान रा सुत नी सुंदरी।
घासीराम सिरोया सरसै पीहरो
अरज करै कर जोड आपो 'सजम-सिरी'[2]॥

---

*लय—जोधाणे री वाड्यां...

१. हीराजी।

२. संयम रूप लक्ष्मी।

४. वनिता सुत सहु छाडी आयो देख,
जोरजी ओ सेवा मे वहु दिन न जिहा।
आज्ञा आई इण री पिण हिव पेख,
अर्ज करै गणि नाथ चरण आपो इहा।।

५ मृगसर मास नी चोथ कृष्ण तिथ तंत,
माणक रै वाग दिख्या महोछव साझियो।
हयवर गयवर आया अति ही सत,
लोकवृद वहु वाजे अवर गाजियो।।

६. आवी सुदर सझ-सझ नै सिणगार,
मधुर स्वरे अति मीठा सुजस गाविया।
सखरो आप्यो बेहु नै सजम भार,
जोरजी हीरा चउदसमै थट थाविया।।

७. पाच ठाणा सू जोवनेर जस लेह,
हरखूजी सहु पैहला आय हाजर हुई।
प्रथीराज त्रिहु ठाणा सू आयो तेह,
पनालाल नो पिडत मरण सुणज्यो सही।।

८. उपनो कारण पन्नालाल नै आय,
मृगसर कृष्ण चवदस चटकै चल गयो।
दीधो जयगणि जवरो सहाज सवाय,
पनरमो इहा थाट घाट सुजश थयो।।

९ पाच ठाणा सू आई जड़ावजी जोय,
त्रिहुं ठाणे लघू भानजी आव्यो ध्यावियो।
चोमासो कर गंगापुर अवलोय,
हिव घाट माही रही जयगणि विहार करावियो।।

१०. आमेट विदासर कलकतै ना भाल,
वोरावड जोवनेर हासी रा हरखिया।
श्रीजीदुवार सू रूपचंद पोरवाल,
कवीला संग नीका जयगणि निरखिया।।

११. ठाणा सितंतर घाट सू करी विहार,
वाग सिरदार रे स्वामी आय विराजिया।
पोस कृष्ण तिथ वीज लीजो चित्त धार,
चिहूं तीर्थ ना वृंद मे गणपति-गाजिया।।

१२. बीजराज वड गयो गुजरात मंझारो,
भेटणो इक ल्यायो 'प्रभवो'[1] देखियै।
पंच संता सू आव्यो कर उपगार,
वड नवला त्रिहुं खेमा पनां चिहुं पेखियै॥

१३. माणक मुनी संग दुलीचंद देख,
लघु नवलाजी सत ठांणे सू ल्याविया।
भेटणो इक पाली सैहर सू पेख,
हिव उदियापुर सु वड कसतूरा आविया॥

१४. भेटणा भारी कुंवारी किन्या दोय,
'गैयद फुल कुमर'[2] आ फूलसी 'फूटरी'[3]।
वालक वय मे वुधवंती अति जोय,
भतीजी नव वर्सा री लाडली गुणभरी॥

१५. तिहूं ठाणा सू रंगूजी कर त्यार,
सुत जननी नै संगे ल्याई पेखजो।
दोलांजी ल्याई छवीलचंद सुत लार,
भेटणा दोय दिख्या आगे देखजो॥

१६. सिणगारांजी चिहूं ठाणे मुखमांय,
इक सो सोलै ठाणा हिव श्रावक धारियै।
गगापुर सू कालूराम कहिवाय,
सागरमलजी चूरू नो सुविचारियै॥

१७. सुजाणगढ सू छोगमल तिहां आय,
कुचामण मुमासर ना केता कहू।
अष्टमी ढाले थट सोलमो इहा थाय,
लघू छोग भणै इकसो सोलै ठाणा सहू॥

ढाल ९

दोहा

१. सुणज्यो थट हिवै सतरमो, एक मास रह्या देख।
माघ कृष्ण एकम दिने, हिवै पुर में आवै पेख॥

---

१. मुनि प्रभवोजी।
२. साध्वी गैंदकवरजी और फूलकंवरजी।
३. आकृति से सुंदर।

*मुणिद मोय गणपति रे, थाने खणी खमां रे लोय ॥ध्रुपदं॥

२. तैतीस सतां सू पुर मे पूज्य पधारता रे, थानै नित नमू रे हा रे सयाणा।
जनवृद मेला मिलिया अधिक अपार रे ॥
'पाय उवराणे'[1] सेठजी साहमो आवियो रे था०।
श्रावक - श्रावका सज-सज नै सिणगार रे ॥

३ सुस्वर कंठे अति गावै सुदर गोरडी, वधावै गणि करता अधिकी केल।
सैहर विचे थई सेठ हवेली आविया, जनवृद जोवै चगी वांधी चेल ॥

४. चोथ निसा हिव जयगणि एहवो आखियो, हरचंद दूवारे जाई करा हगाम।
प्रात थया हिव सेठ आवि नै हम कहै, हिव जाओ तो आया कहो किण-काम ॥

५ एक मास इहा रहिनै दर्सण दीजियै, मास रह्या विण जावा न्हीद्यू कोय।
अर्ज करै अति नेणां नीरज नाखतो, जो जावो तो मारी जावो मोय ॥

६. मानी वीनती सेठ रै स्वाम विराजिया, हिव 'तंतू'[2] नी करतो हठ अतंत।
सखर सुझतो तंतू म्हारै सावठो, कल्पतो तंतू लीजै सगला संत ॥

७ स्वांम भणै हिव तंतू इतनो किमलियै, तो इक इक चगी चादर लीजै आज।
ततखिण तंतू जाची सेठ नै तारीयो, सत-सत्या नै आप्यो जय महाराज ॥

८ हिवै सात ठाणा सग आइ मोटी महासती, 'रतनपुरी'[3] थी नदू वड निहाल।
त्रिहु ठांणे भीयाणी सू नाथू भलकतो, चतुर मेला पर आयो आगे चाल ॥

९ कलकता सू विरधीचद वैद आवियो, उदियापुर सू चपो गुलावचद।
ताल लसाणी माधोपुर सूरवाल ना, आया अधिका नर-नारचा रा वृद ॥

१० माघ मासे इम जवरा मेला मडता, ततक्षिण सुक्ल सप्तमी आई सार।
मोहछव मड्यो संत सती भेला थया, जनवृद जोवा आवै अधिक अपार ॥

११. श्रावक-श्रावका आया सझसिणगार नै, मानन्या आवै गावै मेलै मड।
अन्यमति स्वमति दुनिया देखण उलटी, चालो रे जोवा जवरा जयगणि झड ॥

१२ पिडत विप्र सेवग जन सतोपिया, दाम दुसाला कंकड़ जोड्या दीध।
ठाणा इक सौ सतावीस ना मेला थया, थट सतरमो कीर्त वहु जन कीध ॥

१३ पिहर चिरपटीये जात नवलखा निर्मली, पिता मोटजी दोला नो कहू देख।
उमेदमल कटारिया नी सुदर कहै, मोसाल्या नी वासीवान विसेख ॥

***लय—ऊँचा तो रांणाजी थारां...**

१. पैरो मे जूते पहने विना।

२ वस्त्र।

३. रतलाम।

१४ छवील सुत ल्याई चढायो स्वाम नें, नव वर्षां में नीको कीको जोय।
कर जोड़ी कहै दिख्या वेहूं नै दीजियै, अर्ज म्हारी ए, अवधारो अवलोय ॥

१५. हिव माघ सुक्ल दसमी दिन मेलो मंडियो, हयवर गयवर आया जन बहु वृंद।
पिंजस माहे माता बैठी मालती, सुत गवका मे सोहै छवीलचंद ॥

१६ वाजंत्र विविध बाजै अंबर गाजतो, श्रावक - श्रावका आया सज सिणगार।
मधुर स्वरे अति मीठा सुजश गाविया, सखरो आप्यो वेहूं नै संजम भार ॥

१७. गोविंददास नै बागे दिख्या दीपती, आगे ज्यू यथा ओछव अति गहघाट।
ग्रंथ वधतो जांणी समास संकोचियो, अष्टादसमो सुत माता नो थाट ॥

१८. हिव त्रिहु ठाणे सुं सिरेमल जोधाण थी, आयो ल्यायो भेटणो भारी संग।
ठाणा इहां इक सय वतीस सहु थया, वासी चाणोद रो मूलचदजी चंग ॥

१९ सतोजी नै अगे कारण ऊपज्यो, चिहूं ठांणे 'नाथू' राख्यो चाकरी माय।
पूज्य पधारचा लारे चटकै चल गयो, दस दिना मे पिंडत मरणज पाय ॥

२०. नंदू नवला रंगू पना सिरदार नै, लालां जड़ाव नै दिया चोमास भोलाय।
सैतीस सत नै सतावन अज्जा ना संग सू, जयनगरी सूं हिव विचरै जयराय ॥

२१. हिव धुर एकम आई तिहा 'रित'[1]फाग री, नर-नारी वृंद आवी मिल्याअनेक।
सेठजी लवाजमो लीधो संगे अति घणो, घोटा आसा छडियां विलमा देख ॥

२२. हय सिणगारचो कोतल आगे कूदतो, रथ सेझ वाला इको आवै नार।
सुस्वर कंठे अति सुदर गावै गोरडी, श्रावक - श्रावका आया सज सिणगार ॥

२३ अति आडंवर सैहर मझे थई स्वामजी, जनवृंद संगे आवै जय महाराय।
सैतीस संता सग बाग सिरदार रै विराजिया,
एक रात्रि इहां थट उगणीसमो थाय ॥

२४. त्रिहु वैरागी सेवा संगे साझता, माणक कनीलाल तीजो फोजू तंत।
जनवृंद संगे पूज्य थली मे पधारता, कवीला संग लालो सेव करंत ॥

२५. दूजे दिन हिव स्वांम तिहां थी संचरचा, झोटवाड़े तिहां जयगणि कीधा झंड।
सेठ सेवामे श्रीचंद सुत नै मेलियो, नर-नारचा रा मेला अधिका मंड ॥

२६. हाथोद सुरज नियावास खेडी हिव आवता, लालचंद ने जीवराज जस लीध।
सुजाणगढ सू गिडियो हणूतजी आवियो, सहु अगाडी आवी सेवा कीध ॥

२७ जोवनेर हिव ठाकुर थाट सू आवियो, नर-नारी मिल लीधा गणि वधाय।
सुजाणगढ सूं रतन साहमो आजियो, च्यार रात्रि रह्या थट वीसमो इहाथाय ॥

२८. तीन-तीन ठाणे ततखिण विहार करावियो, गोगुदो वड दीप नै दीयो भोलाय।
चोमासो कर नवा सेहर रो निर्मलो, दूलीचंद हिव जा तू वेगो ध्याय ॥

---

१. ऋतु।

२९ त्रिहुं ठाणे वड वीजराज विदा कियो, उदियापुर तू जाई कर उपगार।
जोवनेर मे जयगणि फुरमावियो, ततखिण चाल्यो चोमासो चित धार ॥
३०. खधेल रहचा गुडे मघजी साहमो आवियो, हिव नावा मे नीको कारज होय।
त्याग किया तिहा माणक महा मुणद पे, दिख्या आया विण जैपुर न जाऊ कोय ॥
३१ लिछमण लालो हाजर सेवा मे हुतो, आज्ञा आपी सजम आपो स्वाम।
स्वाम कहै कसतूर री आंणा आविया, कहै लिछमण इहा किसतूर रो काइ काम ॥
३२. मात तात वेहु वालक वय मे चल गया, पाली पोसी म्है हीज मोटो कीध।
सहू कार्य नो कर्ता हू संसार मे, आण दिख्या री म्हे पिण लिखनै दीध ॥
३३. आप आछी तरै दिख्या दीजै एहनै, कुचामण मे कीजै हिव हगाम।
हूं पिण मोहछव मेलो सेवा साजस्यू, अर्ज करै अति वारूवार अभिराम ॥
३४. स्वाम भणै थे मालक सहु घर तणा, हू पिण इमहिज जाणू छु अवलोय।
तो पिण वड-वंधु नी आणा आविया, भाव अछै इम जयगणि भाखै जोय ॥
३५. मीठडी मे हिव झाक तणो झंड आवियो, गभीर हर्ष वेहु पिपाड रा तिहा पेख।
भेटणो इक ल्यायो पुर थी जुवार नै, दोय ठाणे तिहा आयो छोटू देख ॥
३६. डीडवाणे सू श्रावक साहमा आविया, कुचामण मे सेवा आवी कीध।
चतुरभुज सुत आयो वंदणा चाव सू, जय गुरु वादी जीतमल जश लीध ॥
३७. वोरावड रा जनवृद इधका आविया, कुचामण केइ रसाल आया लार।
ठाकुरा अर्ज कराई आप सू अति घणी, विनती ल्यायो आयो संग असवार ॥
३८ लाधडीये रही चुगनी स्वाम पधारिया, दोलतपुरा नो इधकारी अवधार।
साहमो आई सेवा साझी साम री, विदासर ना आया वहु नर-नार ॥
३९. दोलतपुरो हिव दृष्टी साहमो आवियो, आडवर कर वाजंत्र विस्तार।
दोलतपुरे इक वीसमो मेलो मडियो, दूजे दिन वली राख्या अति मनुहार ॥
४०. दोय रात्रि रही डिडवाणे गणि आविया, हाकम हगाम सू आवी लीया वधाय।
श्रावक श्राविका आया सझ सिणगार नै, जोधाणा सू सावतमल वंदै आय ॥
४१. हिव जयनगरी सू आई तिहा वधावणी, वधव दिख्या लीजे मोटे मड।
डिडवाणे रा नर-नारी मिल वीनवै, दीजै दिख्या जोवा जयगणि झड ॥
४२ त्रिण रात्रि रह्या वावीसमो थट इहा थयो, थलवट केरा जनवृद अधिका आय।
नगराज हिव विदासर सू आवियो, पाटण पासे वंद्या पूज्य ना पाय ॥
४३. मिडासरी हिव जनवृद सगे जयगणि, विकाणै थी शशि कुमरी[1] सग।
भेटणो इक पच ठाणा सु ल्याविया, जुहार जिसी जुहाराजी अजा चंग ॥

---

१. साध्वी चादकवरजी (२७४)।

४४. हिव वाकलिये भंडारी सुत भलकिया, कृष्णमल्ल आदि आया वहु कुमार।
प्रथीसिंगजी कुंमर लाडणूं सू आविया, जनवृंद इधका कहितां किम लहूं पार ॥
४५. हिव सैहर लाडणु आतां साह्मा आविया, ठाकर वादरसिंघजी सव ले थाट।
वंदणा कर कहै नीचो सीस नमाय नैं, पूज पधारी कीजे हिव गहघाट ॥
४६. हिव वाकलीये सूं आगे वनडो आवियो, वीद वण्यो ए वरवा सुन्दर सार।
विविध वेस आभरण अंगे ओपता, हिव सुणज्यो कहुं ओछव नो इधकार ॥
४७. सझी सेवका माहैं वनो विराजतो, चामर वींजंता विहुं पासे जन चंग।
वाजा नोपत वाजे अंवर गाजियो, निसाण छड़ियां जड़िया चालै संग ॥
४८. कोतल हयवर आगे चालै कूदता, वाजंत्र वहु वाजंता झिणकार।
जनवृंद जोवा दुनियां अधिकी उलटी, सुंदरचा आई सज-सज नै सिणगार ॥
४९. मधुर स्वरे अति गावै मीठा माननी, सैहर विचे थइ आया मझ वाजार।
अति आडंवरे पुर वाहिर इम आविया, सहस्रगमें जन जोवा आया लार ॥
५०. सुक्ल इग्यारस फागण मासे फावतो, पुष्य नक्षत्र सारां में सिरीकार।
पीराजी कने पातक सहु पचखाविया, थट तेवीसमो ओछव थया अपार ॥
५१. त्रिहुं ठाणा सू तेज ऋपिस्वर आविया, राजलदेसर चोमासो कर चंग।
पीरांजी कनें आवी पगे लागिया, मांणक मोहछव में आव्या धरी उमंग ॥
५२. हिव सहू संतां संग पुर मे पुज्य पधारता, ठाकुर संगे वाजित्र झिणकार।
सुस्वर कंठे अति गावै आवै सुंदरचां, जनवृंद मेला मंडचा अधिक अपार ॥
५३. सिरै वाजार होय नै स्वांम पधारिया,गुणतीस संतां संग उतरचा नोहरे आय।
ठाकुर आई सीस नमाई स्वाम नै, कीर्त करतो पाछो गयो पोहंचाय ॥
५४. एहवो उपगार आप विना कहो कुण करै, जग उधारण जयनगरी गया थेट।
एक वर्ष में संत-संत्यांरी आपरै, देस-देस थी आई उगणीस भेट ॥
५५. संत नव ने अज्जा दस आई देख जो, जयनगरी मे नव दिख्या थई जाण।
तीन संत कहूं अजा पट थइ आपरै, दोय संत तो परभव गया पिछाण ॥
५६. भिक्खू भारी रायरिपी पट राजता, चतुर्थे जय मुझ दिख्या दातार।
युव नृपति सू अर्ज अछै इक मांहरी, मनवंछत हिव आपो पार उतार ॥
५७. युव नृपति नी भगनी गुलाव गुण भरी, आसापूरण कामधेनु कहिवाय।
चिहुं तीर्थ ना वृंद में स्वाम विराजता, सैहर लाडणूं थट चोवीस नो थाय ॥
५८. सुमति समापो खलता खोडज मेटियै, गया गुन्हा सहु गार्दा नीचे राल।
सुवास सदा मुनिजर चाऊं स्वांम री, निज सींचत नी कर पूरण प्रतिपाल ॥
५९. उगणीसै अठवीसे चैत्र चांनणी, सैहर लाडणू एकम नें शशिवार।
नवमी ढाले विरुध कोई वदियो हुवै, छोग लघु कहै मिछामि दुकडं सार ॥

इति जय छोग सुजश समाप्त : लिखतं ऋपि छोग ॥

३

लघु जय छोग सुजश विलास

ढाल १

दोहा

१. प्रणमू पच परमेष्ट नै, गुरु भिक्खू भारी राय-
शशि जयगणि स्वाम नै, वदू सीस नमाय ॥

२. संताले समझावियो, भिखू हरचंदलाल ।
तसु पोता प्रगट थया, हीरा भैरूलाल ॥

३. सतवीसै वर्ष पोस मे, भैरूलाल कवीला संग ।
सेव करै जयपुर तणी, अर्ज करै उचरंग ॥

४. चैत्र चानणी छठ तदा, विचरता करी पेख ।
अर्ज ठाकुरा गणि रह्या, दोय दिवस वली देख ॥

५. हिव शुक्ल नवमी दिने, विचरचा गणी विचार ।
हगाम थया ते हिव कहू, सुणजो सहू नरनार ॥

*पुज्य पधारैजी रे ॥ध्रुपदं॥

६. सैहर लाडणू सू विचरचा स्वामी, सत सती वहू सागे जी रे ।
श्रावक श्रावका झड सू स्वामी, आया गढ नै आगे रे ।

७. सैहर लाडणू केरो मालक, पेखत करे प्रणामो ।
अर्ज करै वली इहा कव आसो, आपो वयण 'अमामो'[1] ॥

८ संता नै कल्पै नही कोई, वयण ते केम देवायो ।
भाव छै थानै दर्स देवण रा, पाछा इहा वली आयो ॥

९. हर्षी ततखिण हुवो अगाडी, पोहचावण सग आयो ।
एक कोस आसरै पालो, वाद्या सीस नमायो ॥

१० जनवृद सगे स्वामी आया, वाकलिये गणिरायो ।
मिडासरी डिडवाणै साहमो, हाकम हगांम सू आयो ॥

---

१. श्रेष्ठ

*लय—सैणा भइयै जी रे...।

११. सांम्हा श्रावक श्रावका आवे, हिये हर्ष नही मावै।
तीन रात्रि रही विहारज कीधो, दोलतपुरे हिव आवै ॥
१२. हाकम हगाम सू साहमो आयो, लीधा गणि वधायो।
एक रात्रि रही चुगनी आया, लाधडिये ऋषिरायो॥
१३. जयनगरी सू जनवृद साहमा, आया अधिक उदारी।
रसाल कुचामण वोरावड रा, आया वहु नरनारी॥
१४ मीठडी माहै झाक तणो झंड, नावै गुडे गिणायो।
खधेल जोवनेर तीन रात्रि रही, जयगणि झंड जमायो॥
१५. खेडी सुरजनिया वास सू विचरचा, लारे ठाकुर आयो।
कालवास ना दर्सण कीधा, पूज्य वचनामृत पायो॥
१६ हाथोद झोटवाडे झड भारी, आव्या वहु नरनारी।
वाग सिरदार रे आय विराज्या, 'हीर'[1] ल्यायो भेट भारी॥
१७ गणेसजी वालक गुणवतो, सत सप्त तिहा मेला।
सत पचीस ने छत्तीस अज्जा, ठाणा इगसठ थया भेला॥
१८ वैसाख सुदि एकम नै दिवसै, पुर में पूज्य पधारचा।
सोलै रात्रि रह्या तिहा स्वामी, जन वहु जयगणि तारचा॥
१९ विहार करी नै विचरचा स्वामी, घाट मझे थट थायो।
गोगुदा थी तेज ऋषि तिहां, भेट पनालाल ल्यायो॥
२०. एक मास तिहां थाट कीया गणि, विचरचा लेइ सहु संतो।
वाग सिरदार रे आय विराज्या, तीन रात्रि रह्या तंतो॥
२१. प्रथम ढाल में पूज्य किया इहा, वाग सिरदार रे थाटो।
लघु छोग कहै जयनगरी नो, सुणज्यो हिव गहघाटो॥

दोहा

२२. पुनरपि पूज्य पधारता, जयनगरी मे जोय।
श्रावक श्राविका साहमा, आव्या अति अवलोय॥
२३ मास असाढज आवियो, कृष्ण पंचमी पेख।
हरचंद दूवारे हगाम सू, आवी उतरचा देख॥

---

१. मुनि हीरालालजी।

२४ प्रात सिधंत सुणावता, 'युवनृपती[1]' 'जोगेस[2]'।
दूपारै रा हाजरी, हूती तिहा हमेस ॥

२५. 'राम रस[3]' गणि रात रा, पाता परखद पेख।
अन्यमति स्वमति अति घणा, गुणता वाण विसेख ॥

२६. सत वीस सुणज्यो सहु, आज्जा छतीस छाण।
तप वर्णन विस्तार ते, जय छोग मुजश मे जाण ॥

२७. ठाकुर वलवतसिघजी, राजाजी रो भ्रात।
समझी नै श्रावक थयो, 'पोसह[4]' करचो विख्यात ॥

२८. अन्य ठाकुर पिण अति घणा, दर्सण करवा जाण।
अन्यमती साहिव आदि दे, आता अधिक मंडाण ॥

२९. इहा कह्यो सक्षेप थी, वर्णन घणो विचार।
ग्रंथ वधतो जाण नै, संकोच्यो सुविचार ॥

३० डाकदर दुर्गाप्रसाद फुन, जती चुनीलाल जाण।
लुका गछ नो समझियो, वारू सुणै वखाण ॥

३१ चद्रावत वलवंतसिघजी वालटीण साहिव साभली—
आयो तिहा चलाय।
झिलाय ठाकुर नारसिघजी, नलवल रो प्रताप सिघराय ॥

३२ नरसिघदासजी नृपति, वाजंतो मुविचार।
एक मोहर पाच रुपिया तणी, ल्यायो भेटज लार ॥

३३ नृप उसताद मित्री सुण्यो, भेट ल्यायो दोय वार।
इकावन इकासी रुपिया तणो, वले कालवास ना सिरदार ॥

३४. भतीज फतेसिघजी तणो, चिमनसिघजी पेख।
गेडामल मुनसी आवियो, भेट करचा दोय रुप्या देख ॥

३५ दर्सण नै देस देस ना, आया वहु नर नार।
सेखै काल चोमासा मे, कहिता किम लहू पार ॥

अन्तर ढाल

३६. *लाडणू सैहर ना लोक, सडकडा आविया।
ओसवाल श्रावग्या ना थोक, हर्ष सुख पाविया ॥

---

१. युवाचार्य श्री मघवा।
२. योगीराज।
३. रामचरित्र का रस।
४. पौपध।
*लय—खवर करी ततखेव...

३७. सुजांणगढ़ ना नर नार, आवी नैं वंदता।
देखी जय दीदार, पाप निकंदना॥
३८. ल्याया 'लिछमी' लार, सुंदर सिरै परख नैं।
करता अति मनुहार, लीजै भेंट निरख नैं॥
३९. दीजै दिख्या दयाल, कृपा कीजै गणी।
सासरो पीहर डूंगरवाल, सुता नेजमल तणी॥
४०. वांठिया आईदांन, सुत नीं सुंदरी।
सासरो गढ - सुजांण, कुलवंती ग ' खरी॥
४१. हिवै ओछव मंडिया अपार, दिख्या दिनै अति घणां।
कहितां किम लहूं पार, आगे ज्यूं इण तणां॥
४२. द्वितीय भाद्रव धार, सुक्ल छठ तिथ कहूं।
थट थया इहां वार, साठ ठांणा सहू॥
४३. चिमतकारी श्रावक चंग, चूरु ना चिलकता।
श्रावका सखर सुरंग, भूषण वेस झलकता॥
४४. विकाणैं रा वृंद, नरनारी वहू।
आया अति आनंद, नांम केता कहूं॥
४५. रतनपुरी ना पेख, रंग सूं आवता।
राजलदेसर ना देख, हिये हर्षावता॥
४६. राजगढ़ रिणी नो संग, बायां भाया बहू।
चाड़वास कसुंबी ना चंग, मुंसासर ना कहूं॥
४७. हिवै पुर बाहिर गंणिद, झंड सूं जावता।
संग सङकड़ां जनवृंद, सेव में आवता॥
४८. निन निन थट इम थाय, खंडी हिये किम खटै।
देखी भणैं इम वाय, छड़ी इक हिव घटै॥
४९. ततखिण दूजै दिवस अमंद, वीदासर ना तिहां।
श्रावक श्रावका नां वृंद, अधिक आया जिहां॥
५०. विदासर ना सेठ उदार, वैंगाणी वाजता।
विकांण नृप विचार, छड़ी दई छाजता॥
५१. सझ सझ निज सिणगार, झूलरा झंड सूं।
आवै गावै सुजश उचार, घणां घमंड सूं॥
५२. निरखता वहु नर नार, आता जन्न जोरियां।
इचरज हुंता अपार, गोखां चढ़ि गोरियां॥

५३ कवीला सू धर कोड, दर्स आवी करचा।
नित हाजर हुता कर जोड, सेव मे संचरचा ॥
५४. पुर वाहिर खडी नै परख, छोग कहै ए छडी।
नैणा लीज्यो निरख, चादी री ए जडी ॥
५५. जवर अतिसै जयराज, गणिस्वर गूजता।
भय करी गया अलग भाज, पाखडी धूजता ॥
५६ इम थलवट ना झड, थया केता कहूं।
हिवै मेवाड नो मड, श्रोता सुणज्यो सहू ॥

हिवै मेवाड़ देस नो वर्णन

५७. हिवै उदियापुर नो झंड जान, आयो अति 'हींसतो'[१]।
जन दोय सै उनमान, सघ सो दीसतो ॥
५८. आवै गावै सुजस अपार, श्रावक श्रावका सिरै।
सुजश ना झिणकार, लग्या लटका करै ॥
५९ विनती विविध प्रकार, कहै कृपा कीजियै।
हिव मेवाड मांहि पधार, दर्सण दीजियै ॥
६०. वहु 'दिवसा'[२] लग सेव, भगत- भलभात सू।
पुज्य वचनामृत मेव, खाता धर 'खात'[३] सू ॥
६१. श्रीजीदुवार ना देख, कवीला संग सुणो।
गगापुर ना वहु पेख, वाया भाया भणो ॥
६२ राजनगर ना श्रावक धार, सुगुणा थेट रा।
ल्याया कवीला लार, आया आमेट रा ॥
६३. आरजिया रा सुखकार, गोगुदा ना घणा।
आया वहु नरनार, रेलमगरा तणा ॥
६४ पुर रा श्रावक परख, हर्ष हिवड़े घणो।
केलवै ना वहु निरख, श्रावक श्रावका सुणो ॥
६५ चित्तौड ना जन चग, कवीला सग सहू।
आया अति उमंग, काकडोली कहू ॥
६६. जुनीया रा जसवत, कुष्टानपुर ना सिरै।
ताल लसाणी रा तन, सेव सखरी करै ॥

१ उत्साहित होता हुआ।
२. वावीस।
३ उमग।

६७. वावलास इत्यादि अनेक, मेला मेवाड़ ना।
हिवै आवै दर्स नं देख, देस ढूंढाड़ ना ॥

हिवै ढूंढाड़ देश वर्णन

६८. माधोपुर सुरवाल, झंड वहु आवता।
भगुतगढ ना भाल, हिये हरखावता ॥

६९. जोवनेर ना वहू लोय, दर्शन करै देख जो।
महु सोनारी ना जोय, पीपलवाडो पेख जो ॥

७०. कुंडेरो करमोदो जांण, अंडोडीना आविया।
डेकवो वरवाडो वखाण, भाव रो भाविया ॥

७१. गभीरो सिगोर गिणाय, सांवलीयो सार जो।
आवी वंदै जन पाय, चूरू चितार जो ॥

७२. आलण मैदनै साम, कुसालीपुर चिहूं।
इम ढूढाड़ मे अति ग्राम, हरियांणे हिव कहूं ॥

हिवै हरियाणा देश वर्णन

७३ हासी हंसार नो हंगाम, जन वहु आविया।
करता अति प्रणाम, हिये हरपाविया ॥

७४. भियांणी ना जोय, भाया वाया भलकता।
ऊमरै ना अवलोय, पाली ना पलकता ॥

७५ सिसाय रा सुखकार, कोथ कापडो कहूं।
तुसाम नगुरो निहार, लोहारी ना वहू ॥

७६. इम हरियाणा ना जोय, हगाम हूवा घणा।
हिव आवै वहू लोय, कहूं मुरधर तणां ॥

हिवै मुरधर देश वर्णन

७७. पाली फलोधी नो झंड, पादू ना पिण वहू।
डीडवाणे डेघांणे मंड, कवीला मग सहू ॥

७८. हरिगढ ना हगाम, आय हाजर थया।
पेखत करै प्रणाम, कवीला सग लियां ॥

७९. अर्ज करै कर जोड, दर्सण दीजियै।
कृष्णगढ धर कोड, कृपा गणि कीजियै ॥

८०. नवैनगर ना निरख, माढो खाटू खरी।
मेवड़ै ना अति हरख, सेव सखरी करी॥

८१ मुधरी नो सुखकद, वदै अति भाव सू।
चाणोद नो मूलचद, आयो अति चाव सू॥

८२. विविध वैराग वधाय, त्यारी कीधो कही।
हिव दिख्या आइ मुझ दाय, आवी लेसू सही॥

८३. वोरावड ना वहू लोय, कुचामण ना कहू।
इत्यादिक अवलोय, जन आव्या वहू॥

८४. राजरूप सुतन भणै छोग, ढाल छठी थई।
पिण मरुधर ना जन नो पार, अज्यु आयो नही॥

ढाल २

*म्हारा गणिद जी हो, जयपुर मे चोमासो कियो।
म्हारा मुणद जी हो, जग माहे जश हद लियो॥ध्रुपद॥

१. हिवै जोधाण सू आयो जवरो झंड राज जी हो राज।
रथ साढिया हय संगे अति हीसता।
सैहर विचे थइ आया घणे घमड राज।
केइ जन कैहता ए, राजकुवर आवै दीसता।

२ सखर सुवर्ण री छड़ियां, जडिया पेख।
जवर जलूसी आडवर सग अति घणो।
दर्सण कीधा दीप माल दिन देख।
मगलीक रे ए मोटो दिन वीरजी तणो॥

३. कृष्ण लिछमण जसवंत, सुख कान मान।
चनण गोरू सावत जुग सुविचारियै।
हजारी सुत कनकमल संग जाण।
पीपाड़ा ना ए चंगा चोधरी धारियै॥

४ सुगाल विजैलाल समर्थ सिवदांन।
दोलतपुरा सू सूर्यमल ए धारियै।
हीरालाल जुग वखतावरमल जाण।
इत्यादिक कहू केता श्रावक सुविचारियै॥

---

*लय—म्हांरा सोढा राणां मेलो रे मांझल रात रो...

५. अर्ज करे अति नीचो सीस नमाय।
पधारो हिव जोधांणे जय मुनि वृंद सू।
सेवक रै दर्संण री चित्त चाय।
मेघ मोर जिम चकोर चाहै चद सू॥

६ कवीला सग ले आयो लार।
खतरी रे मगनीरामजी. खरो मती करी।
पेखी पूज्य नै वंदै वारूं वार।
सौ नारया सग सोभती सा सुदरी॥

७ इत्यादिक अति आया वहु नर नार।
मरुदेस नी दुनिया आई देखजो।
तेह तणो हू कहिता किम लहूं पार।
हिव मालव नो सग आयो रे पेख जो॥

८. मया गुलाव ने वृधी रतीचंद।
माणक मोती निहाल पूनम जांणियै।
पेम देव नें हरचद ए जनवृंद।
एकादस ए चंद कहया सहू छाणियै॥

९ लूणकरण इंद्र खेमराज धन धार।
ऋषभदास रिध गंभीर धनरूप धारियै।
इत्यादिक कहूं केता वहू नर नार।
रतलाम ना जनवृंद ए सुविचारियै॥

१०. माणक नेमी हुकम जोतीचंद।
पटलावद ना वाई भाई पेखियै।
पनालाल कर्म मोती आदि जनवृंद।
झखणावद रा झड वाई भाया देखियै॥

११. पेम जवारचद आदि वहु अवलोय।
वखतगढ ना जनवृंद अधिक विचारियै।
जड़ाव वाघ वाल कृष्ण गभीर जोय।
जावद ना ए नर नारी वहू धारियै॥

१२. रतनपुरी पटलावद नै झखणावद रा झंड।
वखतगढ नै जावद ना वले जाणजो।
मालव देस नो मेलो अधिक मंड।
नरनारी कहै तिहूं शय उनमांन छाण जो॥

१३. कलकता सू आया जन अभिराम।
सेवा रे वहु दिवसा लग सखरी सरी।
जेठमल आदि कहू केता रा नाम।
दिली सु ओ हर्पचद हरखे करी॥

१४. ममोई सू नगीनादास आदि निरख।
आवी रे वादता अधिक उमाविया।
सेव करंता हिवड़े तो अति हरख।
पेखी रे चिहू तीर्थ आणद पाविया॥

१५ हिव कांमठी री छावणी सू आयो धार।
जेठमल आदि कवीला संग पेखजो।
पेखी पूज्य नै वदै वारूवार।
सेवा रे वहु दिवसा लग करी देखजो॥

१६. दान दया हद सावज निरवद केम।
देसन रे जय देखी हिवडे हर्रपिया।
चरचा पद ओ पूछतो अति पेम।
साचा रे सद्गुरु ए पका परखिया॥

१७ विकाणै रो वासी आयो धार।
रामचंद्र ओ नागपुर सू निरखियै।
वहु दिवसा लग सेव करी तिहा सार।
पुरणीयै सू ताराचद परखियै॥

१८. खानदेस सू छगनजी धर खंत।
जलग्राम नो वासी ए सुविचारियै।
आवी वंदै हिवड़ै हर्प अत्यंत।
सेव करी वहु दिवसा लग तिहा धारियै॥

१९ वकाणी रा आया हर्ष अपार।
इदोर सू हिव पाचीलालजी पेखजो।
लेइ आयो कवीला सग लार।
खूवचंद नी सुदर सगे देखजो॥

२०. देस देस नी दुनिया अधिक उदार।
जन हजारा आया आडवर वहू।
तेह तणो तो वर्णन अति विस्तार।
ग्रंथ वधंतो जाणी सकोच्यो सहू॥

ढाल ३

*स्वामीजी रो जयपुर में जश छायो रे।
हू तो निरख निरख हरपायो रे, स्वाम, जग मांहि जश छायो रे ।।ध्रुपदं।।

१. डेगाणै रो वासी देखो, नंदराम निहाली।
वावीस टोला सू तोड़ी ततखिण, आयो जैपुर चाली।

२ अर्ज करै दिख्या गणि दीजै, स्वांम भणै सुविचारो।
अटकै नही दिख्या दा तो पिण, पूछा तुझ परिवारो।।

३. आग्या मात पिता री आयां, आप्यो सजम सारी।
प्रथम भादवा सुदि तेरस नो, भिखू चरम दिन भारी।।

४. दादा वाडी तिहा दिख्या देई, पुर में आया पेखो।
भेटा दोय अचिंती आई, सिरदारसैहर सू देखो।।

५. सजीवनी नै वीरां वाई, अर्ज करै वारूंवारो।
दिख्या दीजै जेज न कीजै, इम करती मनुहारो।।

६ संजीवनी री सपद सखरी, दांम हजारा देखो।
ततखिण, सहु छिटकाई आई, लखपतिया जिम लेखो।।

७. द्वितिय भाद्रवी धुर एकम दिन, ओछव अति विस्तारो।
जय दीर्घ सुजश जोयज्यो, इहां संखेपे धारो।।

८. वीरा सजीवनी नी थइ दिख्या, तिण अवसर थइ त्यारी।
जडावजी आ जयनगरी नी, दिख्या नी दिलधारी।।

९. द्वितीय भाद्रवी कृष्ण सप्तमी, दिख्या थइ इम देखो।
ठाणा गुणसठ थाट थया अति, ओछव इमहीज पेखो[१]।।

१०. लिछमी सुजाणगढ सू आई, लेवा संजम सारी।
दिख्या इम हिज द्वितीय भाद्रवी, शुक्ल छठ श्रीकारी[१]।।

११. ठाणा साठ थया हिव सुणजो, जोर करी 'जोर' आयो।
दुदोर नो वासी दिख्या नै, तिण अवसर तिण ठायो[१]।।

१२. हीरां हर्ष धरी नै आई, सिरदारसैहर स्यु स्याणी।
मृगसर कृष्ण चोथ दोय दिख्या, 'जोर' 'हीरा' नी जांणी[२]।।

१३. दोलांजी सुत सगे ल्याई, छवीलचंद सुखकारी।
माह सुदि दसम नै थइ दिख्या, मा वेटा नी भारी।।

---

*लय—जय-जय नंदा जय-जय भद्दा...

हिवै भेंट आई ते

१४. हिवै चोमासो उतरियां चंगी, प्रदेसां थी पेखो।
भेट भारी आई पूज्य रै, देस देस थी देखो ॥

१५ गुजरात जाय चोमासो गोगुदै कर, वीजराज वड आयो।
आगोलाई रो वासी 'प्रभवो', ल्याई पगे लगायो ॥

१६. पनांजी नै दिख्या देई, लघु नवलाजी ल्याई।
पाली सू ए भेटणो पूज्य रै, ततक्षिण दियो चढाई ॥

१७. वड कसतूरा भेट दोय ले, उदियापुर सू आई।
'गैयंद' 'फुलकुमर' माढ़ै सू, भतीजी मन भाई ॥

१८. सिरैमल जोधाण थी आयो, ल्यायो भेटणो भारी।
मून्नजी साधु मतिवंतो, चाणोद नो चित धारी ॥

१९. जुगते कर दिख्या ली देखो, पुर मे 'जवारजी'[1] आयो।
छोटू ऋषि रसाल मै स्हामो, ल्याई पगा लगायो ॥

२०. चादकुवर विकाण सू चंगी, ल्याई 'जवार'[2] नै परखी।
वावीस टोला सू सट समझाई, भेट निजरा निरखी ॥

२१. इत्यादिक भेटा अति आई, देस देस थी ल्याया।
हीरालाल नै पनालाल वेहूं पिंडत मरणज पाया ॥

ढाल ४

दोहा

२२. जयनगरी नो जोयज्यो, दिवाण अणतराम देख।
तसु सुत वखतावर तिको, सेठ नी पदवी पेख।

२३. मुहतोजी इम वाजतो, जयनगरी मे जाण।
सिरदार रै वाग आवियो, साह्मो कर मंडाण ॥

२४. अर्ज करे गणिनाथ हिव, पुर मे वेग पधार।
कृपा करी विराजियै, हवेली मुझ त्यार ॥

२५. माघ कृष्ण एकम दिने, स्वाम करी सुविचार।
पुर मे हिवे पधारता, सुंणज्यो सहु नर नार ॥

---

१. मुनि जुहारजी।
२. साध्वी जुहाराजी (४०८)।

*गुण सुखकारी, स्वामी तारचा बहु नर नारी ॥ध्रुपदं॥

१. तैतीस संत छै लारै, वली पुनरपि पूज्य पधारै।
जनवृंद मिल मिल आवै, सुस्वर कंठे सुंदर जश गावै॥
२. 'पाय उवराणै सांह्मो आयो, ओ तो सेठ घणो हरपायो।
नरनारी मिल मिल आवै, आगा ज्यू अधिक वधावै॥
३. सैहर विचै थइ सारो, स्वामी आवै मझ बाजारो।
अति आडंबरे आयो, साहिब साह्मो मिल्यो हरपायो॥
४. कहै इहा आए तुम पेखो, एक दफे आयेंगे हम देखो।
हिव उतरचा सेठ रे निरखी, गुंण देसन दुनिया हरखी॥
५. चोथ निशा ए कह्यो स्वामो, हरचंद दूवारे करा हगामो।
पुस्तक मेल्या मुण वायो, ओ तो ततखिण मेठजी आयो॥
६. अर्ज करै अवधारो, स्वामी मुझ नै पार उतारो।
मुझ नै 'बेठी'[1] निभावो, एक मास तांई मति जावो॥
७. स्वांम बोल्या इम वायो, दिसा चादपोल दूर ताह्यो।
वले गोचरी अलगी जाणो, तिण कारण जावां गुजांणो॥
८. कहै सेठ आया क्यू जोयो, हिव जावो तो मारी जावो मोयो।
आडो पड़सू आई तामो, पग देई पधारो स्वामो॥
९. जै 'हरकती'[2] कर जोई, आप जावो तो जोर न कोई।
हू हिवड़ा पोहचू न्ही पेखो, थांमू लेसू आगे हूं लेखो॥
१०. वली अर्ज आवी अति करंतो, 'युवनृपति' पाए पड़तो।
सिर उघाडो कर सोई, पग पकड़चा छोड़ै न्हीं कोई॥
११. ओ तो विनवै वारूं-वारो, आप इहां सू मति पधारो।
कार्य कहो हर कोई, करूं जेज म जाणो सोई॥
१२. सहु हवेली ना जन सारो, कहो तो सिको धारूं इण वारो।
आप कहो जठा ताइ धारी, पोहचाय सेवा करूं सारी॥
१३. दोय मास रहचा पुर वारो, तो एक मास इहा मुझ तारो।
बैठो रहिसू तुझ पासो, पिण जावा न्ही द्यू इक मासो॥
१४. ओ तो अर्ज अति घणी करंतो, वलै नैणां नीर झरंतो।
वीनणी पिण विलखी होई, जल नाखै नैणा सूं जोई॥

---

*लय—सुण चिरताली...
१. विराजकर।
२. जवरन।

१५. अचरोल रा ठाकुर नो धारो, ओ तो आयो -उकील तिवारो।
सेठ अर्ज करंतो निरख्यो, हठ देखी उकील ते हरख्यो ॥
१६. जाई ठाकुर नै जणायो, ठाकुरा पिण एम कहायो।
अर्ज ए म्हारी कहिज्यो, सेठजी नै राजी कर रहिज्यो ॥
१७. संत सत्या रो मन हुवो ताहचो, श्रावक श्रावका पिण कहिवायो।
अर्ज करै वारूंवारो, स्वामी भरियो ताम हुंकारो ॥
१८ दोय हवेली नोहरो ए म्हारो, सत- सत्या नै सूप्या सारो।
हू तो 'अलायदो'[1] एकंतो, पडियो रहसू खूणे धर खंतो ॥
१९. निज रहिवा नी हवेली दी तामो, एकाणू अज्जा तिण ठांमो।
दूजी हवेली मे धारो, सहूं संत रहै सुविचारो ॥
२०. सैहर माहि लोका सुण लीधी, एहवो अनड नमाय कर्‍यो सीधो।
'देव मत्र योग्य'[2] इहा देखो, करामाती पका दीसै पेखो ॥
२१ हिवै सत भणै सुविचारो, गुरु धारणा सेठजी धारो।
थारी अर्ज मानी महारायो, हिव थे पिण मानो ए वायो ॥
२२ - हिव सेठ भणी इम वाणी, सुत वहुवादिक नै जाणी।
गुरु करावो हिव जोई, पिण हूं तो करू न्हीं कोई ॥
२३. गुरा तणा गुरु सारो, हूं तो आप नै जाणू उदारो।
अंतर न जाणू असमातो, हिव माहरै तो आप नाथो ॥
२४. संत कहै सुविचारो, घणी चादी चगी तंत सारो।
सिको दीया विण जोई, नाणा मे चालै न्हीं कोई ॥
२५ तिण सू सिको हिव धारीजै, इंण वात री जेज न कीजै।
हिव सेठ कहै तिण वारो, एक अर्ज अछै अवधारो ॥
२६. म्हारै ततू सूझतो लीजै, सहु संत सत्या नै दीजै।
तिहूं तिहू चादर म्हारी, तो सिको धारू इण वारी ॥
२७. स्वाम भणी इम वायो, एती चादर तो न्हीं चाहचो।
हठ घणी करी कहचो जोई, इक इक तो लीजै अवलोई ॥
२८. हिव स्वाम तदा सुविचारचो, ततूं जाची सेठ नै तारचो।
सेठ रै हर्ष अपारो, चोकी देतो सेव करै सारो ॥
२९ पछै अनुक्रमै सिको धारचो, स्वामी सेठ रो कार्य सारचो।
चौथी ढाले निर्णय कीधो, लघु छोग कहै जस लीधो ॥

---

१. अलग।
२. दैविक शक्ति और मत्र वल।

४

विविध लघु जय-सुजश

श्री मघवागणिकृत

ढाल १

*सुगणा ! जिनवर जगदाधार ।।ध्रुपदं।।

१. श्री वर्धमान नमू जग नायक, भविक वोधि दातार।
द्वादश गुण युत देव जिनेन्द्रवर, जगत सोध कर्तार ।।

२. तसु तीर्थ इह पंचम अरके, भिक्षू गुण भंडार।
सम्यक्त वोधि पमायक, दायक सुख स्वर्ग मोक्ष श्रीकार ।।

३. भिक्षु पट भारीमाल गणाधिप, तृतीय पाट ऋपिराय।
तस पाटोधर जीत गणी जश, श्रवण करो सुखदाय ।।

४. मरुधर देश रोयट वर ग्रामे, जाति गोलेछा जोय।
'आईदान' साह 'कलु' वनिता, तसु उदरे अवलोय ।।

५. उत्तम पुरुप वर आप भरत मे, आय लियो अवतार।
सवत अष्टादश सय साठे, मास आसोज मझार ।।

६ वरस गुणंतरे महाविद सप्तमि, लियो जयपुर संजम भार।
घाट दरवाजे वड़ तरुवर तल, साधण सिव सुखसार ।।

७. लघु वय मे पिण अति ही उद्यम, ज्ञान ध्यान गलतान।
वुद्धि उत्पात सू अधिक अनोपम, अति वारू विनय विधान ।।

८ सवत अठार शय वर्ष इक्यास्ये, राय ऋपि गणधार।
वारू विनय वर ज्ञान विलोकी, कियो सिघाडो सुखकार ।।

९. वर्प त्राणुवे अति कृपा कर, पद युवराज सुदीध।
च्यार तीर्थ मे तोल वधायो, वर पडित प्रवर प्रसीध ।।

१० उगणीसै आठे महाविद चउदश, ऋपि रायगणि परलोग।
माहसित पूनम जय पद वैठा, गुरु पुष्य नक्षत्र नै जोग ।।

---

*लय—सीता आवै रे धर राग. .

११. अष्ट सम्पदा युक्त आचार्य, अतिशय धर अधिकाय।
'आदेज'[1] वयण वर विविध मर्यादा, बांधी गण सुखदाय॥

१२. मरुधर देश मेवाड़ मालवे, ढूंढाड़ थली रै माय।
पाट विराज नैं विचरया स्वामी, उद्योत कियो अधिकाय॥

१३. संवत उगणीसै वरस वीसे, चूरू सेहर चौमास।
आसोज विद तेरस सुत्र दीधो, पद युवराज हुलास॥

१४. बहु उपगार करंता स्वामी, उगणीसै संतीस।
जयपुर नगर कियो चौमासो, वर धर्मोद्यम निश दीस॥

१५. द्वितीय चोमास वलि अड़तीसे, श्रावण विद तीज रूं ताय।
गले गांठ नें दस्त वमन पुन, अन्न अरुचि अधिकाय॥

१६. सातम आठम सूं अल्प अल्प अन्न, किणहीक दिन नवी लीध।
श्रावण सुदि चवदश ताव चढ्यो तनु, पिण वेदन में सम सुप्रसीध॥

१७. पूनम दिनें गोचरी वेला, 'भैरूलाल'[2] भणी ताय।
दर्शण देई विविध प्रकारे, उपदेश दियो गणिराय॥

१८. आथण रा पुन दर्शण दीधा, एकम दिन गणिराय।
सिरदारमलजी री जागा में, निज पगले पगले आय॥

१९ अन्न अरुचि थी अल्प अल्प पय, बे त्रिण दिन लग लीध।
दस्त तणो कारण तनु प्रगटयो, वलि अन्न अरुचि प्रसीध॥

२०. पंचम दिन वर पूज्य परम गुरु, दशविध आराधन ढाल।
स्वकृत धुर आलोवण सुण दियै, 'मिच्छामिदुक्कडं' न्हाल॥

२१. छठ दिवस वलि सप्त ढाल सुण, स्वमुख थी गणिनाथ।
महाव्रत आरोपण चिहु सरणा, उच्चरै प्रगट विख्यात॥

२२. चौरासी लाख जीवां जोनि खमावी, वलि अन्यमति स्वमति ताय।
जूजूवा नाम लेई स्वमुख थी, प्रगटपणै सुखपाय॥

२३. छठ आथण दिन लालाजी री, जायगा माहे आय।
सप्तम दिन दोय ढाल सुणी गणी, साहसीक अधिकाय॥

२४. नवमि दिन ओषध जल उपरंत, असनादिक नवि लीध।
दशमी दिन दोय मुहुर्त दिवस लग, त्रिहुं आहार तज दीध॥

२५. दोय मुहुर्त दिन आसरै, आया लियो अल्प सो आहार।
समण सत्या तणो मन राखण, छेहलो आहार विचार॥

---

१. प्रियकारी।
२. लाला भैरूलालजी।

२६ पाछिल पोहर आया करी अरजी, पद युवराज विचार।
ओपध जल उपरंत उचरावा, सागारी सथार।।
२७. तव गणपति भरियो हूंकारो, इसो कारण ज्या लग ताम।
ओषध जल उपरत उचरायो, अणसण सागारी आम।।
२८ वारस दिन दोपहरां पहिली, आखै पद युवराज सुआदि।
आप श्रद्धो तो तिविहारी अणसण, उचरावा सुसमाधि।।
२९ एह अरज किया जय गणपति, भरियो तव हूंकार।
तीन आहार ना त्याग कराया, जावजीव सुविचार।।
३०. पद युवराज आदि वहु मुनिवर, सरणा दियै उदार।
अरिहत सिद्ध साधु धर्म नु, तुझ सरणो मुझ वारवार।।
३१ आप वोधि चारित्र वहु जन नै दीधो, सजम साहज्य श्रीकार।
पंडित मरण साहज्य दे वहु नै, लीधो लाभ अपार।।
३२. ज्ञान ध्यान उद्यम वहु कीधो, किया ग्रथ अनेक उदार।
इक दिन मे 'समय गाह'[1] हजारा, सज्झाय करी सुविचार।।
३३. घणा वर्ष चारित्र आराध्यो, लीधो लाभ अपार।
असंख्यात वर्षा लग आगै, असाता नही लिगार।।
३४ इम विविध प्रकारे गुण स्तवना करता, सतिय गुलावां सार।
पूज गुणा री गाथा जोडी, संभलावी तिहवार।।

अन्तर् ढाल

*भिक्षु शिष्य नीको, वारू च्यार तीर्थ जश टीको।।ध्रुपदं।।

३५. आप जिनमग जवर दीपायो, जिन शासन कलश चढायो।
प्रवल तेज प्रताप सवायो, इण आरे अवतर आयो।।

३६. +दशम ग्यारस वारस दिन माहे, लोक हजारा जोय।
अन्यमति आवी दर्शण करि, हुलसित चित अति होय।।
३७. कोई कहै जिनमग मे रवि जिम, ईश्वर रूपज एह।
केइ कहै ए ज्योति सरूपी, इम वहु वयण वदेह।।
३८. दोढ मुहुरत दिन रह्या, आसरै चोविहार संथार।
पद युवराज मुनि संभलाया, चिहु सरणा नवकार।।

१ सूत्र की गाथा।
*लय—सुण चिरताली...
+लय—सीता आवै रे

३९ अल्पकाल में देखत देखत, हिचकी वे त्रिण लीध।
ववहार माहि जांणै नेत्र द्वार झट, प्रदेश खंच्या सुप्रसीध ॥

४०. पडित मरण देख गणपति नो, दोहरी लागी अत्यंत।
(पिण) काल सू जोर नही कोई चालै, इम जाणी सम रहै संत ॥

४१. आप जिसा गणपति इह आगे, भरत क्षेत्र रे माय।
उपजणा है अति ही दुक्कर, जिन सादृश गणिराय ॥

४२. भाद्रव विद वारस पश्चिम मुहूर्त्त, काल कियो गणिराय।
दिन आथमते तनु वोसिरावी, चिहुं लोगस्स काउसग्ग ठाय ॥

४३. म्हा सू उपगार कियो अति मोटो, कह्यो कठा लग जाय।
सम्यक्त चरणं ज्ञान पद देई, दिन दिन कुर्व वधाय ॥

४४ आप तणा गुण याद आयां थी, हृदय कमल हुलसाय।
अंत्य समय देखी चित्त मांहे, उदास भाव अति आय ॥

४५. देव विमाण समी वर मंडी, थइ तेसठ कलसी तांम।
जन हजारा देखी तेहनें, करै अधिक गुण ग्राम ॥

सोरठा

४६. कलश इकावन जोय, द्वादश सूर्यमुखी सखर।
गंगा जमनी दोय, सर्व गिण्यां त्रेसठ थया ॥

४७. *तेरस दिन प्रभात नी वेला, गणि तनु स्नान कराय।
केसर चंदन चरच अतर फुन, करि तिलक मोत्यां नो ताय ॥

४८. पवर विमाण नै माहि बेसाणी, लोक हजारां लार।
उभय पास चामर वीजंता, वाजंत्र विविध प्रकार ॥

४९. राज थकी पिण आयो लवाजमो, वे गज नगी निसाण।
पलटन पौहरा कौतल घोडा, मंडिया वहु मंडाण ॥

५०. सिरै वाजार थई नें चाल्या, त्रिपोलिया कनै होय।
सोना रूपा रा फूल उछालत, फुन रोकड़ रूपइया जोय ॥

५१. अजमेरी दरवाजे थई नैं, 'वाग'[1] तणै इक देश।
चंदन अगर किस्तूरी घृत, दाग दियो सुविशेष ॥

५२. रूपइया हजारां खरची लोका, कीधो अधिक उछाह।
हुइ जिमी ए वात वताई, नही धर्म पुन्य तिण मांह ॥

---

*लय—सीता आवै रे

१. सरदारमलजी लूनियां के वाग मे।

५३. धन्य-धन्य कहै अन्य मति स्वमति, इसा आचार्य इण आर।
ज्ञान ध्यान वर प्रवल प्रतापी, होणा दुक्करकार ।।

५४. सवत उगणीसै अडतीसे, सुदि भाद्रव तीज उदार।
संक्षेप थकी विस्तार कह्यो ए, जैपुर सैहर मझार ।।
[सुगणा[1] जीत गणी जयकार]

ढाल २

*प्रात समय वर जीत गणीश्वर, समरण महा सुखकारी।
सुरमणि सुरतरु थी पिण अति ही, वछित फल दातारी ।।ध्रुपद।।

१. श्री जय गणपति शिवपद दायक, नायक जन नेतारी।
वोध पमायक मधुर मुवायक, सरस अमी जलधारी ।।

२. अष्टादस साठे जय जन्म्या, गुणंतरे व्रत धारी।
इक्यासीये सिंघाडो, त्राणुवे पद युवराज प्रकारी ।।

३. उगणीसै आठे महा महीने, पूनम पूष्य गुरुवारी।
'प्रात समय वर पाट महोच्छव, गुण छतीस मुभारी'[1] ।।

४. सुमति गुप्ति गुण सघन विमल वर, सित जिम 'कीर'[2] उदारी।
ज्ञान-ध्यान गलतान गणीश्वर, अरिहत ज्यू इह आरी ।।

५. समय वतीस वाच्या वहु वेला, वलि वहु वर्ष विचारी।
इक दिन मे 'समय गाह' हजारा, सज्झाय करी सुखकारी ।।

६ मरुधर मेवाड मालवे विचरचा, कच्छ गुजरात मझारी।
हरियाणो दिली हाडोती, ढूढार थली सुखकारी ।।

७. समकित पमाय हजारा जन नै, किया द्वादश व्रतधारी।
'सहस्रगमै'[3] फुन सुलभ वोधि करी, तारचा वहु नर-नारी ।।

८. समय न्याय अति गहन वहु विधे, समण सत्या हितकारी।
विविध जोड अरु ग्रथ करी गणि, सुगम किया सुविचारी ।।

९ विचरत-विचरत वर्ष सैतीसे, जयपुर सैहर मझारी।
पूज्य परम गुरु कियो चौमासो, धर्मोद्यम थयो भारी ।।

---

*लय—प्रभाती...

१ क्वचित्—चिहु तीरथ वर पाट महोच्छव पेखत छवि अति भारी .

२ तोता।

३. हजारो।

१०. द्वितीय चोमास वलि अड़तीसे, श्रावण मास मझारी।
अन्न अरुचि गले गांठ फुन, दस्त कारण किह्वारी॥

११. भाद्रव विद मे दस्त अरुचि अन्न, जाणी गण सिणगारी।
पंचम छठ दिन स्वमुग्ब गणपति, करै आलोयण गुणकारी॥

१२ लख चौरासी जीवा जोनि खमावी, चिहुं सरणा चितधारी।
व्रत आरोपण दुक्कृत निंदा करै, ऊँचै शव्द उच्चारी॥

१३. समचित वेदन में अति सूरा, वलि दशम दिन सुविचारी।
आथण रा ओपध जल उपरंत अणसण सखर सागारी॥

१४. वारस दिन दोपहरा पहिली, जावजीव तिविहारी।
पूज हूकारे सखरो अणसण, उच्चरायो 'पट्टधारी'[1]॥

१५. अंत समय चौविहारी अणसण, उचरायो सुविचारी।
वारस आथण अणसण सीज्यो, स्वाम परम सुखकारी॥

१६. अरिहंत देव जिसा इण आरे, मिथ्या तिमर विडारी।
उपजणा है अति ही दुक्कर, आप जिसा अवतारी॥

१७. संवत उगणीसे अड़तीसे, कार्तिक पूनम भारी।
परम पूज ना गुण पाटोधर, गावत महा गुणकारी॥

---

१. युवाचार्य मघवा।

श्री मघवागणि विरचिता: श्लोका:

अनुष्टुप् छंदांसि

१. श्री देवार्य जिन नत्वा, गौतमादि मुनीस्तथा।
सद्गुरूणां गुणं वक्ष्ये, संक्षेपेणाऽघनाशनम् ॥

२. अभूत् भिक्षुर्महाभागो, वर्धमानस्य शासने।
दु.षमे दुःखनाशाय, मुक्तिमार्गस्य दीप्तये ॥

३. समीपे द्रव्यलिंगाना, यौवने स्वीकृतं व्रत।
ज्ञात्वा ज्ञानक्रियाहीनास्तत. शास्त्रविनिश्चयात् ॥

४. विहाय वेषिण· संगमग्रहीन्मार्गमुत्तमम्।
भव्यानामुपकाराय, द्योतित च जिनोदितम् ॥

५. भारमल्लं पदे न्यस्य, कृता येन त्वनेकधा।
मर्यादा मुनि मार्गस्य, दृढप्रवृत्तये चिरम् ॥

६. यौवराजपद यस्मै, ददाति स्वेच्छया गणी।
'तस्याज्ञाया तथा सर्वैं, वर्तितव्य विचक्षणै.'[1] ॥

७. शिष्या एकगुरो नाम्ना, कर्त्तव्या आर्यिकास्तथा।
प्रत्याख्यानं स्वनाम्नोऽस्ति, सर्वेपा व्रतधारिणाम् ॥

८ अशुभै. कर्मणा योगै., कृत्वा भेद गणे यदि।
एकद्वित्र्यादयो मंदा, निर्गच्छति गणाद् वहि· ॥

९. भवेयुवकचेष्टास्ते, कुर्व्वतो धूर्त्तता वहु।
वदितव्या न विद्वद्भिस्तीर्थे मान्या न जातुचित् ॥

१०. मुमुक्षूणामसाधुत्वं, ज्ञापनाय जडाश्चये।
पुनरादत्तसाधुत्वाद ज्ञातव्या. मुनयो न ते ॥

---

१. यथापूर्वगणी-आज्ञाया प्रवृत्तास्तथा तस्याज्ञाया आगामिकाले सर्वै विचक्षणै वर्त्तितव्य-मितिभाव.।

९. तुम थी केइ पाखंड 'नाठा'[1], 'गरुल'[2] पेख अहि ज्यू 'नाठा'[3]।
'चंड वाय'[4] 'घटा दल'[5] फाटा ॥

१०. रिप गण 'कमलागर'[6] चारु, तास 'जगाडण हारु'[7]।
प्रगटे ग्यांन-रवि वारू ॥

११. भव सायर नी थइ जिहाजो, सारै भवि जन ना काजो।
देवै मुक्ति नगर नो साजो ॥

१२. चद चकोरे जैसी, हम प्रीत लगी तुम ऐसी।
पंकज रवि तन तेसी ॥

१३. अंतरघट तुम नित्य ध्याऊं, तुम चरण सेवा चित चाहूं।
अंतराय तूटां जोग पाऊं ॥

कलश

१४. गुण माल हियड़े धार भवि जन, गुण गावो धर चित्त रे।
'पाप पंक पखाल के'[8] निज, आतम करो सुपवित्त रे।
संवत् अष्टदस नी के, चोरासिए चित चाइया।
पोस पंचम कृष्ण पख नी, तिण दिन ए गुण गाइया ॥

ढाल २

१. *जग उपगारी जीत नी, दरसण वलिहारी।
सम दम सील सरोवरू, जग वच्छलकारी ॥

२. संजम भार धुरंधरु, दोप विध टालै।
चरण-करण विध साचवै, आतम उजवालै ॥

---

१. भयभीत हो गये।
२. गरुड़ (पक्षियों का राजा माना जाने वाला एक पक्षी)
३. भग गये।
४. तेज हवा।
५. मेघमाला।
६. कमलों का समूह।
७. विकसित करने के लिए।
८. पाप रूपी कीचड़ को धोकर।
*लय—राग विलावल...

३. धर्ममूर्त्ति धरणी विषै, मूरत सुखकारी।
दीसत छिव दया तनी, जोग मुद्रा प्यारी ॥
४ 'संवेगी'[1] सुध संजमी, आगम अरथ प्रवीन।
धीरजता धर्म ध्याय नें जिन वचने लय लीन ॥
५. सीतलता शशी नी परै, नयना नदकारी।
दिनकर नी पर दीपतो, मिथ्या तिमर निवारी ॥
६. भाग पखे भक्ति कहो, किम सजै तुम्हारी।
घट भितर भूलू नही, कीधो उपगारी ॥
७. सरणागत सुख जांण नै, आयो 'ओट'[2] तुम्हारी।
सुनिजर सुख चाऊ सदा, ए छै अरज हमारी ॥

ढाल ३

*जीत ऋषेस्वर पूज परम गुरु, आयो सरण तिहारी।
आयो सरण तिहारी मै वारी जाऊ, नयन कमल वलिहारी जी ॥ध्रुपदं॥

१. माघ शुकल पूनम तिथि सुभ दिन, च्यार तीर्थ वहु थाट।
सैहर वीदासर पुष्प नक्षत्र मे, ऋष जीत विराज्या पाट ॥
२. आठ संपदा सहित आचार्य, छती गुणा समृद्ध।
पट दस ओपम छाजै तुमनै, जग जस कीर्ति प्रसिद्ध ॥
३. धरा मर्यादा धरी रह्यो मेरु, खंभ ज्यू 'देवल'[3] भारी।
शासण भार मर्याद धारी ते, चार तीर्थ आधारी ॥
४. जिन मत भार निभावा समरथ पूज रायचंद जाणी।
वहु वरसा आगूच दियो तुज, पद जुगराज पिछाणी ॥
५. पंच-आचारी उग्र-विहारी, सुमति गुपति गुण हीर।
प्रवल वुद्धि आगम गुण-आगर, सूरवीर महाधीर ॥
६. मन इन्द्री शत्रु जीपता, समण-धर्म प्रतिपाली।
रवि ज्यू मिथ्या तिमर विणासी, जिन सासण उजवाली ॥

---

१. वैरागी
२. शरण।
३. देहरा।
*लय—पारसदेव तुम्हारा दर्शन भाग भला...

७. ग्यांन दर्शन चारित्र गण वृद्धि, होय तुझ सफल जगीस।
तेज प्रताप दिनंद ज्यू दीपो, ए होयज्यो आसीस ।।
८. चिंतामणि पारस सम स्वामी, गुण समरण सुखधाम।
सेवा विवध आराध्या लहियै, सकल मनोरथ कांम ।।
९. संवत उगणीसै नै वर्स आठे, फागुण मास गुणमाल।
सुदि सातम दिन डाभ सुगामे, गाया हरप विसाल ।।

ढाल ४

*उजागर पूज जीत सुखकारी, जाऊं वदन कमल वलिहारी।
उजागर पूज जीत सुखकारी ।।ध्रुपदं।।

१. वीर सासण मे वहु गुणवत, पाटोधर अधिकारी।
सुधर्म आदि दे देवगणि लगे, धर्म प्रभावक भारी ।।
२. धर्म उद्योत समय जव भिक्खू, आचार्य अवतारी।
सार धर्म महावीर परूप्यो, प्रगट कियो हितकारी ।।
३. दान दया सुध सावज्ज निरवद, विरत अविरत विचारी।
तत्त्व सरूप जथा तथ्य सिव मग, सिख्या-दान उपगारी ।।
४. भिक्खू पाट भारीमाल ऋषेश्वर, हुवा सासण शृंगारी।
तीजे पाट ऋषराय विराज्या, महियल महिमा भारी ।।
५. संवत् अठारै वर्स त्राणूअे रिपराय सुविचारी।
पद जुगराज जीत भणी दीयो, जाण विनयवंत भारी ।।
६. संवत् उगणीसे आठे वीदासर, महा सुदि पूनम भारी।
पुष्प नक्षत्र जीत पाट विराज्या, च्यार तीर्थ अधिकारी ।।
७. पाट वैसतां दृढ मरजादा, पूज वांधी सुविचारी।
गण त्रिशोधन चारित्र पालण, वोल वहु परिहारी ।।
८. गहर गभीर अकल गुण आगर, संत वच्छल सुखकारी।
वडो वंधव सरूपचंदजी नो, हित वंछक जयकारी ।।
९. किन्या गुलावा माता सहित सू, वालपणे मनधारी।
फागुण विद छठ पूज 'तीनां'[1] ने, दियो संजम श्रीकारी ।।

---

*लय—आवत मेरी गलियन मैं...

१. साध्वी वन्नांजी (२७०), गुलावाजी (२७१), हस्तूजी (२७२)।

१० जीत ऋपेस्वर पूज परम गुरु, वहु संतन परिवारी।
विहार करी आया सैहर लाडणू, हरष्या वहु नर नारी ॥
११. दूर देशातर ना सत समणी, पूज दर्शण मन धारी।
जैपुर आदि दे वहु सैहर ना, श्रावक श्रावका भारी ॥
१२ सैहर लाडणू आय पूज नी, सूरत नयन निहारी।
रवि उदै ज्यू पकज विकसावै, पाम्या प्रेम अपारी ॥
१३ सत दत गुण सागर गिरवा, 'नीति-विज्ञ'[1] 'सीमकारी'[2]।
गुण वच्छल नो प्रताप देख नै, अचरज लह्यो अपारी ॥
१४. सत चालीस चमालीस समणी, समोसरण तिणवारी।
चौरासी ठाणा सू पूज पधारचा, आनद नो अधिकारी ॥
१५. पैंतीस साधु सग विहार करी, आया सुजानगढ मझारी।
ठाणा गुणतर साध - साधवी, भेला हुवा तिणवारी ॥
१६. पुनरपि पूज विदासर आया, हुवो वहु उपगारी।
च्यार वाया आई वीकानेर थी, दिख्या नै होय त्यारी ॥
१७. एक माता दोय पुत्री बैन, परणी वर लधु कुमारी।
आठम सील वडी वैन धारचो, दिख्या री दिलधारी ॥
१८ नवमी दिने पिउ मरण परदेसा, तीज सुण्यो तिणवारी।
लोक कहै सती नै आगूच सूज्यो, अचरज हुवा नर नारी ॥
१९ वहु मोहछव हगाम थाट सू, हियै वैराग विस्तारी।
'च्यारू'[3] नै समकाले सजम दियो, पूज भवोदधितारी ॥
२०. सत चौतीस गुणागर चारु, सोभै गुलाव ज्यू क्यारी।
ए गुण पचास समणीवर सतिया, ग्यानादिक गुण भडारी ॥
२१. तयासी ठाणा सू पूज विराजै, सहर वीदासर मझारी।
प्रवल पुन्य वर अतिशय धारी, मुक्ति मारग ने तारी ॥
२२. सवत् उगणीसै नै आठे, वैसाख मास मझारी।
सुदि सातम दिन पुष्प नक्षत्र मे जोड करी हितकारी।
उजागर पूज जीत सुखकारी ॥

---

१. नीतिज्ञ
२. मर्यादा का निर्माण करने वाले।
३. साध्वीश्री वरजूजी (२७३), चादकवरजी (२७४), हरखूजी, मोताजी (२७५)।

ढाल ५

*ऐसा गुरु सेवियै सुखदाय, पूज जीत महाभाग नै रे।
पेख्यां 'पातक'[1] जाय ।।ध्रुपदं।।

१. प्रसन्न वदन कमल वारू, धर्ममूर्त्ति ऋषिराज।
पूज परम दयाल जी रे, सोभत ज्यू जिनराज।।

२. 'मधु मकरंद'[2] तणी परै, सेवत तीरथ च्यार।
चंद चकोर ज्यू पूज नो, देखत वदन दीदार।।

३. धर्म देशना देत सोभै, जेम उगंतो सूर।
प्रवल विद्या पुन्य पोरसो, ग्यान गुणा भरपूर।।

४. 'जाचा मोत्यां'[3] ज्यू सोभता, पूज सुधारस वैंठा।
सुणी सुणी भव जीवडा, पांमत चित मे चैन।।

५ चितामणि सुरतरु समो, वछित पूरण सार।
भवसागर विच जिहाज सो, पार उतारण हार।।

६. गण नायक 'गयंद'[4] गिरवो, सुरगिर जेम सधीर।
समण संघ आधार स्वामी, तू जाणत पर पीर।।

७. गण विशोधन हाजरी, नित्य सुणावै जीत।
सारण वारण गुणनिलो, वसुधा जस वदीत।।

८. जिन मत भार निभायवा, धोरी समान 'अखोभ'[5]।
नवी वहु मरजाद वांधी, गण नै चाढी सोभ।।

९. जय जश चरचा वाद चावो, उत्पतिया वुध जोर।
मृगपति ज्यू आतप देखी, भाजत पाखंड 'भोर'[6]।।

१०. विद्या रयण दातार स्वामी, मोटी कीधी महर।
मुज उपगारी पूजजी, सुख सायर नी लहर।।

११. वडां विड़द निहाल स्वामी, सरण आयां नी लाज।
तूहिज समरथ राखवा, दीजै संजम साज।।

---

*लय—कपि रे प्रिया संदेशो...

१. पाप।
२. मधुर पराग।
३. असली मोती।
४. गजेन्द्र।
५. अभय।
६. भयभ्रान्त।

१२. जेष्ठ बंधव पूज नो, पडिता सिरमोड।
सरूपचद ऋषि जीत दीपै, ज्यू चद सूर्य नी जोड॥

१३. प्रसिद्ध नगर उजेण नीको, संत रह्या चोमास।
उगणीसै एकादस वरसे, कीधी जोड़ हुलास॥

ढाल ६

१. हाजी म्हारै पूज परम सोभै सासण माह।
जीतमल ऋषिराज ए, सूर्य सारिखा रे लोय।
हांजी काइ समण सघ नी गुण भक्ति ना जाण।
गुरु तारै गुण वृद्धि करै करि पारिखा रे लोय॥

२. हांजी तुम सेवा कीधा चित्त समाधि अति होय।
वछित रे सुख पूरण स्वाम सुरतरु।
हांजी काई सत सुधारण सिख्या दान दातार।
गुण खेती रे निपजावण साचो 'जलहरू'[1]॥

३. हाजी काइ स्वमत परमत ज्ञाता गण ऋषिपाल।
जुगप्रधान पद दीपै महिमा भांण ज्यू।
हांजी दृढ मरजादा वाधी वहु विध जाण।
संत मणि सोभाया रत्न 'खुरसाण'[2] ज्यू॥

४. हाजी काइ संप्रति काले गछ-नायक जयवंत।
जसधारी विराजै केसी स्वाम ज्यू।
हाजी तुम दरसण दीठा समरण कीधा नाम।
जन वच्छल सुखकारी परम आराम ज्यू॥

५. हाजी काइ पद्म सरोवर जल ज्यू पाल आधार।
सासण रे निभावण स्वामे सुहामणो।
हाजी काइ सरूपचंद ऋषि जेष्ठ बंधव महाभाग।
समण संघ नै साहजकारी रलियामणो॥

---

१ जलधर (मेघ)।
२. शस्त्र पैना करने का औजार।

६. हाजी काइ तुम चरण कमल नो 'कानो'[१] लह्यो आधार।
शरणागत नी वीनतडी अवधार जो।
हाजी काइ अपणो सींच्यो दरखत जाण दयाल।
करुणा रे दृष्टि मुझ पार उतार ज्यो॥

७. हाजी काइ सवत उगणीसे द्वादस वरस चोमास।
जयपुर मे गुण गाया पूज प्रसाद थी।
हाजी काइ हिव अभिलासा दरसण नी चित्त जोर ज्यो।
कीधा रे सुख पाऊं मन अह्लाद थी॥

ढाल ७

*सासण पुर सोभ रह्यो, जिहां पूज जीत महाराज॥ध्रुपदं॥

१. सासण जयनगरी तणै, खिम्या कोट रह्यो सोभ।
च्यार तीर्थ वसै 'रेत'[१] ज्यू, कदेय न पामै 'क्षोभ'[२]॥

२. च्यार वुधि निरमल भली, च्यारू पोल उदार।
ग्यानादिक मारग चिहूं, सोभत चौपड वाजार॥

३. गुण सहस्र वहु भवन सू, व्याप रह्यो समृद्धि।
साधु 'वड व्यवहारिया'[३], लहै सकल कार्य नी सिद्धि॥

४. दान शील तप भावना, चिहुं दिसि च्यार उद्यान।
आनद जल सीच्या थका, अति रति सुख नो निदान॥

५ उपसम वर परसाद मे, नीति सिघासण सोय।
पूज नृपति ज्यू सोभता, आज्ञा छत्र सिर दोय॥

६. स्वमत परमत जस थुणै, चामर दो वे पास।
सजम राज-लक्ष्मी तणो, करता अधिक प्रकाश॥

७ वैराग सभा मंडप विपै, समण संघ 'उमराव'[४]।
पूज 'निजामक'[५] जांणज्यो, सासण तरणी नाव॥

---

१. किनारा।
*लय—दलाली लालन की ..
२. प्रजा।
३ फिक्र।
४. वडे व्यापारी।
५. सरदार।
६. कर्णधार।

८. सासण श्री वर्धमान नो, पूज वधारचो मान।
वड बधव वली जाणज्यो, सरूपचद प्रधान।।

९. 'अनघ'[1] अथग गुण पूज ना, कहिता किम लहु पार।
भुजा करि किम पामियै, 'चरमोदधि'[2] निस्तार।।

१० 'इन्द्रध्वज रजू नी परै'[3], 'थंभा देवल भार'[4]।
मुझ संजम नै जाणजो, पूज कृपा नो आधार।।

११. दीन दयाल श्री पूज नो, सरणो लीधो 'हेर'[5]।
इज्जत पार उतारजो, तुझ गुण-सिधु 'समेर'[6]।।

१२ धरा विभूपण सोभतो, जयपुर जग जस होत।
पूज तणा प्रताप थी, जिन धर्म अधिक उद्योत।।

१३. उगणीसा नै द्वादशे, काती पूनम जोय।
जिन सासण जयवंत नो, नगर ओपम जस दोय।
सासण पुर सोभ रह्यो।।

---

१. पवित्र।
२. स्वयम्भू रमण।
३ आकाश-धनुष की रज्जू की तरह विशाल।
४. मदिर के भार को झेलने के लिए खम्भे की तरह आधार।
५ तलाश करके।
६ सुमेरु (मेरु पर्वत)।

जयत्थुई

१ विसुद्धपन्ना-संजुत्तो मज्झाणझायओ सया ।
णाणाइरयणागारो जयउ जयदेवया ॥

२. सुत्तत्थ-निच्छय-कारी पहाणतवसंजमो ।
ससयछेयगो अज्ज पच्चक्खं जिणसारिसो ॥

३. वीरमग्गं पगासेइ कुवाइमाणमद्दणो ।
भवकातारे मूढाणं सिद्धिपह तु दंसइ ॥

४ दुप्पहाओ निवारेइ सुमग्गे नायति च ण ।
कम्मसत्तूपमद्दत्थं दढविक्कमकारिणो ॥

५ गामधम्मकसायग्गि सिचइ समवारिणा ।
वंभचेरे सुवसितो धिइमंतो जिइंदिओ ॥

६. सज्जणवच्छलकारी निउणो देसणागुणे ।
नरसमूहपूइओ जयवंतो महिं चरे ॥

७ उच्छाहसहिओ निच्चं मह तत्तगवेसओ ।
आणाए धम्ममक्खाई भव्वाणं परिबोहणे ॥

८. वज्झमाणाण जीवाणं दुखोह-भवसायरे ।
दीवोव तारगो ताण एगंतसुहदायगो ॥

९. भम्मविद्धसणणाम सदेहविसओसही ।
कुमइविहडणंय जिणाणामुहमडणं ॥

१० इच्चाइ गंथरयगो चउहा बुद्धि सन्निहि ।
कुवाइणं कुहेऊणं समत्थो उ विणासणे ॥

(जुग्गं)

११ परिमहवाऊ पुट्ठो मेरुव्व अप्पकंपओ ।
सुह वा जइ वा दुक्खं सहइ समचेयसा ॥

१२ सूरोव दित्ततेएण ससीव सीयलो विऊ ।
महोदहीव गंभीरो कुत्तियावण सारिसो ॥

मुनि गुलहजारी कृत

ढाल

*भजन कर जतन सू पूज श्री जीत नो ।।ध्रुपदं।।

१. सुख संपत रिद्ध घर मे घणी, 'वच्छ'[1] परणायवा हूंस भारी।
मन अरु तन वले लाड नै कोड सु, वच्छ वहु देखवा पेम प्यारी ।।

२. पुत्र परणायवा पेम पूग्यो नहीं, काल की 'झाल'[2] मे तात आयो।
गाव मार नै म्लेच्छ मरदन कियो, पुत्र लेड मात 'जैनगर'[3] धायो ।।

३. चातुरी च्यार जीवा तणी आकरी, संसार का काम में अधिक तीखा।
हरचद जंवरी आदज दीपता, त्यारो जोग मिल्यो पुनवंत नीका ।।

४. जयनगरी जिन मत दीपावता, पावता सोभ भारीमाल भारी।
साध संत खेतसी हेम आद देड, वले ओपतो रायरिपी ब्रह्मचारी।

५. करणी 'करूर'[4] करी पूरव 'आकरी'[5], माहासत्यां तणां पांव भेटचा।
सरावगा संग समाई करता, दिन-दिन आतम भरम मेटचा ।।

६. इमरत वैण वेराग रस सू भरचा, ग्यांन प्याला पी पेम जाग्यो।
'चारितावरणी-कर्म'[6] खीणो पडचो, ससार का सुखा सू मन भांग्यो ।।

७ मात पुत्र मिल घर 'मिसलत'[7] करी, छोड संसार मंजम धारो।
सगाई गृहवास सगपंण सहु जगत ना, ताण ले जीव नै 'वमनहारो'[8] ।।

---

*लय—कडखा नो देसी...

१. पुत्र

२. ज्वाला

३ जयपुर

४. कठोर

५. अत्यधिक

६. चारित्र मोहनीय

७. सलाह

८. छोडने योग्य

८ इम विचार चारित्र लियो चूप सू, पूज मन हरख हिये सवायो।
च्यार तीर्थ चित चैन पाम्या घणां, लघुवय देख पूज हरख पायो॥
९ आप श्री पूजजी स्वमेव हाथ सू, दीख्या दे हेम नै सौप दीधा।
जीत नै चरण 'ब्रह्मचारी'[१] समापियो, आचारज थिर पणै त्याह कीधा॥
१०. विनो - विवेक आचार- विचार मे, हेम रिषी खपकर किया तीखा।
दिन-दिन तीरथ च्यार मे जस पामिया, मात जाण्यो मुज पुत्र नीका॥
११ इण विध सजम पालता हरष सू, -कलुजी महासती मन विचारयो।
तिहु पुत्र देखता आतम सुध करू, ते भणी आकरो तप धारयो॥
१२ तप कर करम-वन बालियो बेग सू, सुजस नो तिलक माता चढायो।
पुत्र हरष पामिया प्रेम 'उलटयो'[२] घणो, अराधक पद मुज मात पायो॥
१३ जीत रिषी इण जगत मे जस लह्यो, पाखंड मरद नै 'पैमाल'[३] कीधो।
उपगार आप कियो विध-विध तणो, रायचन्द रिषी नै 'रिझाय लीधो'[४]॥
१४ दूसरो जोग वड़बंधव सरूप नो, सासण भार सिर पर ठहरायो।
जुगराज पद हद दीपतो जगत मे, परगट हुवो इण 'मंड' माहयो[५]॥
१५. आतम रोक गुर छदै ही चालता, दिन - दिन मेल कियो सवायो।
वचन लोप्यो नहीं कठण-करड़ी वण्या, रायरिषी चित्त मे चैन पायो॥
१६. जीत रा साज सू पूज रायचंदजी, संजम भार घणा रो निभायो।
समत उगणीसै वरस आठे हिवे, माह विद चोदस दिन आयो॥
१७. पडिकंमणो देवसी वेला पूज रायचदजी, सुखे समाधे परलोक सिधायो।
वीदासर सहर मे जीतमलजी रिषी, सुण समाचार मन दुख पायो॥
१८. मन समझाय नै गच्छ निभायवा, विदासर सैहर मे वैठ्या पाटो।
माघ सुकल पूनम पुष्प आवियो, तीरथ च्यार मे अधिक थाटो॥
१९ पाट विराज सुजस लह्यो आकरो, वोल छिटकात्रिया अणगमता।
किसतूरी ज्यू कीरत विसतरी चिहु दिसा, आतम वस करी धरी समता॥
२० जिन मत जंत्र वाधियो जुगत सू, आगन्या-डोरो हद खाच लीधो।
सुवरण जेहवो सासण जाण नै, सोधन कुनण जेम कीधो॥
२१. बुध प्रवल वले पुन्य तीखा घणा, ऊगता सुर ज्यू तेज वधतो।
वीज रा ससी ज्यू सोम दृप्टि, भलो ओसर देखी नै काम करतो॥

---

१. मुनि रायचदजी।
२. उमडा
३ पराजित
४. प्रसन्न कर लिये
५ महि मडल।

२२. समण-गण विचं श्री पूजजी सोभता, ग्रह-गण माह जाणै चन्द सोहै।
पूज नैं देख नैं वहु नर-नारी हरखता, ज्यू देव-देवी जिन-रूप मोहै॥
२३. पाखंड कोई आय प्रश्न पूछता, ग्यांन रा वाण तीखा चलावै।
उत्तर 'पालवा'[1] कोइ समरथ नहीं, लाज पांमी पाखंड कप्ट थावै॥
२४. सामण भाग तुम स्वाम भल परगटचा, प्रथम पाट की रीत धारी।
दिन-दिन दीपज्यो आतम जीपज्यो, इसडी आसीस फलज्यो हमारी॥
२५. समत उगणीसै नैं वरस आठ ही, फागण सुदी तेरस दिन नीको।
किरत गुण गाविया लाडणु सैहर में, श्रवण सुणी जन-मन अधिक हरखो॥

1. निराकरण करने के लिए।

मुनि जीवोजी कृत

ढाल 1

*ज्ञानी गुरुजी रो जग जश छायो।
महिमागरजी मेरे मन भायो।
मैं तो निरख-निरख हरपायो।
गुणा रो पार न पायो।
सतगुरुजी मेरे मन भायो।।ध्रुपदं।।

१. गणनायक पदलायक गिरवो, महिमागर मुनिरायो।
अहो लाला महिमागर मुनिरायो।
अतिशय धारी आप ओजागर, सागर जेम सुहायो।
गुणा रो पार न पायो।।

२. पांच आचारी ने उग्र विहारी, अजराधारी अथायो।
अहो लाला अजराधारी अथायो।
चार तीर्थ गुण गावै गेहरा, मोद नही मन मायो।
अहो वडो इजरज आयो।।

३. नव देशा माहि नाम तुम्हारो, पाखंड सुण कपायो।
अहो लाला पाखड सुण कपायो।
माडलियादिक मरजादा वाधी, अवसर देख ओछायो।
अविनै रुप्पो तपत मिटायो।।

४. सुमत गुपत में सचेत किया घणां-वोला री सेण लगायो।
अहो लाला वोलां री सेण लगायो।
स्वमती सुण मन आनंद पामै, रोम-रोम विकसायो।
आंख आद्रक हुवै ताह्यो।।

*लय—होली की...।

५. गण विशोधन करण हाजरी, भीखू ना वैण वतायो।
अहो लाला भीखू ना वैण वतायो।
लिखत खजीनो चौडे वतायो, चिमत्कार जन पायो।
तिण में ये तत्त्व वतायो॥

६ ओगण उतरती नही करणी, सासण सबंधी ताह्यो।
अहो लाला सासण सबंधी ताह्यो।
आपण वस कर अवर साध कू, जिलो न वांधणो जायो।
भीखू विपवाद मिटायो॥

७ घणा दिन पछै दोप वतावै, यो तो मोटो अन्यायो।
अहो लाला ओ तो मोटो अन्यायो।
दोपण देखणो जो तुरंत दाखाणो, टालो न करणो ताह्यो।
परम गुरु यू फरमायो॥

८. परिषद मे उपदेश आवाजै, वाणी अमी वरसायो।
अहो लाला वाणी अमी वरसायो।
हलुकर्मी सुण आणद पामै, चित्त री लेहर मिटायो।
रोग पर औपध आयो॥

९ वड़ बंधव सू जीव रिपी कर जोड़ी नै सीसं नमायो।
अहो लाला जोड़ी नै सीस नमायो।
मुज उपगारी मोटा मही पर, चरण दियो मुनिरायो।
जीत ऋपि जयजश छायो॥

ढाल २

१. धन धन भिक्षु स्वाम, दीपाई दान दया।
सावद्य निर्वद्य छाट कृपानिधि कीधी मया।
कीधी मयाजी, वहु जीव तिरचा।
त्यांरी साची श्रद्धा धार, भविक वहु उद्धरचा।

२. ज्यारै वीजे पट भारीमाल, भद्रिक गुण वहुत भरचा।
क्षमा दया निरलोभ, प्रमुख गुण अति आदरचा।
अति आदरचा जी, धर्म ध्यान धरचा।
घणा संत सत्यां नै सुमत दई गम खाय रह्या॥

३ ज्यारै तीजे पट ऋषिराय, हुलास हगाम किया।
एतो विचरचा देश विदेश, भविक नै दर्श दिया।
दर्श दिया जी, अति सकट सह्या।
घणा सत सत्यां नै प्रकृत वेठी गम खाय रह्या।

४ एतो जयगणी चौथे पाट, सुधारचा सत सती।
ज्यारी भीतर खोड मिटाय, चढाई आव अति।
आव अतिजी, कहू कीर्ति किती।
एतो विचरचा जेम जिणन्द, सम्पत दिन-दिन वधती ।।

५ यारे पाटलायक श्री पूज्य, किया मघराज ऋखी।
यानै युवराज पदवी दीध, मर्यादा लिखत लिखी।
लिखत लिखीजी, किया महन्त मुखी।
ज्यारी सोम्य प्रकृति सुकुमाल रहवै तप तेज अखी ।।

६ सरूपचदजी स्वाम, तारै वहु आप तिरै।
मुझ दीक्षा ना दातार, शरणागत ठाम सिरै।
ठाम सिरै जी ज्यारो शरण सिरै।
एतो खडता खोड मिटाय, खेवट हुशियार करै ।।

७. सती सिरदाराजी शूर, सतिया मे चढती कला।
च्यार तीर्थ आधार, विनय गुण अति उजला।
अति उजलाजी, करै सत सला।
करै पूछ पूछ नै वात, पूछ्या सू होत भला ।।

८ वड चेतन कर जोड, अर्ज करू एणी परे।
मुझ संजम नो साझ, शरणागत ठाम सिरै।
ठाम सिरै जी ज्यारो शरणो सिरै।
मै पाया जयगणी पूज्य, प्रत्यक्ष मुझ पाप झरै ।।

९. सम्वत् उगणीसै वर्ष, वीसा के माह महिने।
मर्यादा उत्सव श्री पूज, लाडणू ठट लहि नै।
ठट लहि नै जी आनंद ग्रहि नै।
वन्दे जीव ऋषि कर जोड हजूर हाजर रहिने ।।

परिशिष्ट

मघवा-सुजश

ढाल १

दोहा

१. अरिहत सिद्ध आचार्य ते, उपाध्याय अणगार।
पंच परमेष्टि जपता, हुवै आनंद-हरष अपार॥

२. वर्धमान जिन जग - गुरु, तारण - तिरण जिहाज।
तसु तीरथ तारक गणी, थया वडा-वडा ऋषिराज॥

३ भिक्षू भानू भरत मे, भारिमाल ऋषिराय।
पाट चतुर्थे जयगणी, वदू मन वच काय॥

४ तास प्रसाद करी रचू मघवा - सुजश विख्यात।
सरस - कथा संकोच नै, वर्णवू किंचित् वात॥

५ किहा जन्म्या किम प्रतिबोधिया, किम कियो धर्म - उद्योत।
श्रोता चित्त दे साभलो, ज्यू मिटै कर्म री 'छोत'[1]॥

६. *मघवा गुण अपरपारो, ज्यारो सुजश सुणो नर नारी हो॥
गणाधिप जशधारी॥ध्रुपदं॥

७. जंवू द्वीप दक्षिण भरत जाणो, जिहा मरुथल देस वीकाणो।
गणपति जश भारी॥

८. रतनसिघ राय तिहा वीको, जिहा वीदासर अति तीखो।
मुनिपति मणिधारी॥

९. रामसिघ ठाकुर तिहा राजै, रूडी रीते 'रैत निवाजै'[2]।
जिहा वसै महाजन सुखकारो, विचरै संयत हुवै उपगारो॥

---

*लय—समझू नर बिरला...

१. विकृति (दोष)

२. प्रजा पर कृपा करने वाले।

१०. पूर्णमल वेगवाणी ओसवंसो, वनां दे 'अंगना'[1] प्रसंसो।
जायो पुत्र अधिक महासूरो, 'मघवा सम'[2] मघवा सनूरो ॥
पूर्ण-सुत हद प्यारो, जन प्यारो गुण नो क्यारो।
हद 'सोम-मुद्रा'[3] 'दीदारो'[4] ॥ध्रुपदं॥

११ अठारै सताणुवे ताह्यो, चेत सुकल एकादशी आयो।
गणपति जश धारी ॥

१२. मघा नक्षत्र रविवारो, जनम्या हुवो हरष अपारो।
वनां नंद हद प्यारो ॥

गीतक-छंद

१३. तनु भवन सूर्य अनें मंगल, पुत्र भवन केतु रू चंद ही।
सप्तम गुरु अष्टम सनीसर, इग्यार मे राहू कही।
द्वादशम शुक्र अने बुधज, अवर भवने ग्रह नही।
गणीराज मघवा ग्रह उत्तम, पुन्ये सुभ ही आवही ॥

१४. *अनुक्रमे मोटा हुवै ताह्यो, कला कुशल निपुण वय मांह्यो।
ज्यारा थिर-जोग सघन गुण-धीरा, कुल उद्योत-कारक हीरा ॥

१५. उगणीसै एके गुणवंती, सती गुलावकुवर पुन्यवंती।
गणीराज सहोदरी साची, आतो सील श्रृंगारे राची ॥

१६. काल कितोक वीतां ताह्यो, पिता पूरण परभव मांह्यो।
लारै मात सुता सुत नै पालती, वारू विविध जतन करंती।
मघवा मन भायो ॥

१७. वालक वय चतुर सुजाणो, कला वधत शशी जिम मानो।
मघवा नाम मघव गुण जीपंतो, असुभ कर्म दमण 'दुरदतो'[5] ॥

१८. वना सती अधिक सनूरी, तप धर्म ध्यांन मे सूरी।
कर्मचूर वेला तेला धारी, करै काटण अघ रिपु भारी ॥

---

१. पत्नी
२. इद्र के समान
३. शात मुद्रा (मुखाकृति आदि)।
४. दर्शनीय
५. सूरवीर
***लय—समझूं नर विरला**

१९. सती सिरदार विचारत ताह्यो, वीदासर मैंहर करायो।
मघ जागां मे उतरचा आयो, सती सेव करै सुखदायो ॥
२०. हेतु दृष्टांत विविध परै भारी, तिण सू वैराग चढै तिहवारी।
जांणपणो सीख्यो चित्त जोडो, थयो संजम लेवा सू कोडो ॥
२१ वहिन भाई अति सोहता, सती गुलाव घणा पुन्यवता।
त्यारै भाग्य थी जोग थयो भारी, सत-संगति अति सुखकारी ॥
२२. ढाल प्रथम गणी जश दाख्यो, पायो जैन धर्म जिन आख्यो।
आगे वात सुणो वलि चारू, सुण लहै श्रोता सुख वारू ॥

ढाल २

दोहा

१. इण अवसर ऋपिराय गणि, विचरै धरा मझार।
जिन-मग-मंडन जिहाज वर, तारै भवि नर-नार ॥
२. तसु पाटोधर श्रेष्ठ वर, जवर जीत जयकार।
थली देस सर कर-वहू, भवि मेटचो मिथ्या अधार ॥
३. जय गणपति सहोदरु, सरूप-शशी हितकार।
विहु वंधव तिहा विचरता, आया वीदासर सुखकार ॥

*जोयजो रे पुन्य प्रवल मघवा ना, भाग्य थी जोग मिल्यो भारी।
गण सिणगारी भवि ने तारी, त्यारो सुजश सुणो तुम नर-नारी ॥॥ध्रुपद॥

४ उगणीसे आठे चउमासो, वीदासर थयो श्रीकारी।
जय युवराजा जेष्ठ सहोदर, द्वादश मुनि थी सुखकारी ॥
५. जयगणपति नी वाण मनोहर, वर्षत जिम भाद्रव वारी।
हेतु युक्ति दिष्टात कथा सुण, प्रफुल्लत ह्वै परपद सारी ॥
६. मघवा मात अरु वहिन गुलावा, सुण-सुण वच हिय मे धारी।
वध्यो वैराग सुधा अति वारू, तिरण शीघ्र भव-दधि वारी ॥
७ वोल-थोकडा सीख्या चरचा, चोमासा मे हितकारी।
साथे सजम लिऊं जण लेस्या, इसी वात दिल मे धारी ॥

*लय—चेत चतुर नर कहै तोनै सतगुरु किस...

८ वरसा मांहे गुलाव सती रे, कल्प घटंतो तिह वारी ॥
तिण नू याने अवारूं नही देवा, कल्प आयां देस्या धारी।

९. मघवा अरज करी युवराजा नै, तुरत चरण देवो त्यारी।
भेला रमता वालक वोलै, तमासा में तिहवारी ॥

१०. मघजी स्वामी करा वंदणा, आप ही कहिता—'जी' जांणी।
तुज पात्रा में 'घी'—इम वालक वोलै—'बैठो बैठो पी ठंडो पाणी' ॥

११. इम सुण चितै जय युवराजा, वालक वाक्य है श्रीकारी।
मघव संत मतिवत सनूरो, हुंतो दीसै हद भारी ॥

१२. वखाण वाणी तप-जप इधको, दिन-दिन थाट लगै भारी।
चउमास ऊनरचा महूर्त्त दिख्या नो, देवा पधारचा जयकारी ॥

१२ मृगसर विद पंचम नो मोछव, मेला मडिया हद भारी।
भेला बैठ जीम्या काका संग, फुन टीको कढायो जशधारी ॥

१४. तन सिणगारी अश्व-जाति पर, चढिया वरवा शिवनारी।
लोकिक कहण सू काको उठाई, रावले ले गयो तिह वारी ॥

१५ उण दिन तो नही हुइ वर दिख्या, जय 'दडीबै' होय लाडणु आई।
रावले पडउतर कर जणाय काका नै, त्रिहू आया लाडणु सुखदाई ॥

१६. दर्शन करी नै अरजी कीधो, चरण-रयण दीजै धारी।
गाम वाहिर पीराजी स्थाने, चरण सामायक दियो सारी ॥

१७ जन-वृद झंड प्रचड मोछव मे, धिन-धिन कहै तुम वलिहारी।
सोम भद्र हद मघवा मुनिवर, 'वपु'[1] यो 'रति-पति मनोहारी'[2] ॥

१८. वालक वय मे अति बुधवतो, दिन-दिन अतिसय वृध ज्यारी।
अति उद्यमियो पढण गुणण रो, हीमत कीमत अति त्यारी ॥

१९. शशि जिम 'नूरो'[3] सिघ जिम सूरो, पून्य नो पूरो अति भारी।
भलो लाभ लीधो वन्नाजी, ढाल दूजी मे दीक्षा प्यारी ॥

२०. जोय जो जवर पुन्याई जय नी, दिन दिन संपति वृद्ध धारी।
धर्म-मूर्त्ति धरणो पर पुन्ये, शिष्य मघवा मिल्या भारी ॥

---

१. शरीर
२. कामदेव की तरह मन को मोहित करने वाला।
३. तेज

ढाल ३

दोहा

१ दीक्षा दे नै विहार करि, आया बींदासर सैहर मझार।
माघ मास मेवाड थी, आया इम समाचार ॥
२ माघ कृष्ण चउदस तिथि, ऋषिराय गणी स्वर्ग पहुत।
साभल चिहु तीर्थ भणी, दोहरी लागी अत्यंत ॥
३ पिण काल सू जोर को नही, तिण दिन किया उपवास।
जय पटोछव दीक्षा तणी, श्रोता सुणो हुलास ॥

*सुगणा[1] साभलो हो भविजन, जय पट-उछव सार ॥ध्रुपदं॥

४. उगणीसै आठे माघ मास मे हो गुणीजन, पूनम पुख श्रीकार।
जयगणी पाट विराजिया हो गुणीजन, वरत्या जय जयकार ॥
५. वड़ बधव हृद सोभता, स्वरूपचदजी स्वाम।
श्रमणी सिरदारा सही, फुन वहु संत सती गुणधाम।
६ च्यार तीर्थं रा वृंद मे, जयगणि बैठा पाट।
त्याग-वैराग बधियो वहु, हुवा घणा गहघाट ॥
७. जय-जय नदा इत्यादिक शब्द, है बहुलो अधिकार।
संक्षेप संवध कह्यो इहा, वघत ग्रंथ विस्तार ॥
८. पाट बैसत तत्क्षिण थई, तीन दिक्षा ततसार।
गणी-मात वहिन हस्तू सती, वृध वय दीधी तार ॥
९. इसा गणी पुन्य पोरसा, ज्यारा मघवा शिष्य सुवनीत।
आसेवन ग्रहणा सिख्या, सीखै सुगुर संग धर प्रीत।
१० धिन-धिन मघवा मुनिवरु, धिन करणी वलिहार ॥
आप तिरै पर तारता भविजन, ज्यारो सुजश सुणो नर-नार ॥
११. ग्यान-ध्यान सीखै गुणी, मघवा विनय-विवेक विचार।
चातुरता धीरज घणी, ज्यारा अक्षर घणा श्रीकार ॥
गुणीजन साभलो वारू, मघवा सुजश रसाल।
तन-मन सुणिया थी मिटै, कर्म भर्म मोह जाल ॥ध्रुपद॥
१२ इर्य्या धुन अति सोधता, मनहर 'मधरी'[1] चाल।
भापा एपण आदान मे, सावधान अति न्हाल ॥

---

*लय—सुगणा साधूजी हो मुनिवर मन वलियों तू...

१. धीमी

१३. प्रीत घणी सतगुरु थकी, आराधै रूडी रीत।
वैराग-भाव अति ही घणो, सतगुरु तणा वनीत ॥
१४. चिहु जणी बीकानेर थी, आई संजम लेण तिवार।
वरजू मा, चांद कुवर हरखु सुता, वलि 'तूर्य'[1] मोता हुंसीयार ॥
भविजन साभलो, मघवा सुजश रसाल ॥ध्रुपदं॥

१५ बीदासर के दिन रही, गणपति थली स्यू कियो विहार।
लाडणू डीडवाणै थइ, आया बोरावड़ मझार ॥
१६ जयगणी सिरदारा सती, मघवा मात वहिन फुन लार।
पढै-भणै देसन दिये, मघवा साथे करै विहार ॥
१७. मर्यादा बांधी बहू, आया कृष्णगढ जोवनेर।
तीजी ढाल हगाम नी सती सिरदार भणी करै मेहर ॥

ढाल ४

दोहा

१ जोवनेर चोमास गणी, सिरदारां भणी भलाव।
जयपुर पूज्य पधारिया, तारण भव-दधि नाव ॥
२ 'वाचंयम'[2] तिहा चतुर्दश, मघवा शिष्य सुवनीत।
सारै सेव सुगुरु तणी, आराधै धर प्रीत ॥

३ *उगणीसै नव के चोमास, 'जय नगरे'[3] जयगणी।
महिमा धर्म नी अत्यंत, हुई तिहा अति घणी ॥
४. मघवा संत मतिवंत, सीखै पढै गुणी।
क्रिया-आचार विवेक, निर्मलता अति घणी ॥
५. चौमासो उतरचा झूठवाड, गणी तिहां आविया।
सिरदार गुलाब करि दर्श, घणा सुख पाविया ॥

---

१. चौथा
२. साधु।
*लय—नदी यमुना के तीर उडं दोय पखिया, तथा
नारी कहै नटराज आव्या तुम किहां थकी...
३. जयपुर

६ मधु वाई वीकानेर थी आई सजम लेण ही।
वलि जयपुर पधारचा स्वाम, संजम यो देण ही॥
७. मोहनवाडी दिख्या देय, विहार कराविया।
जोवनेर रही दिन कोय, हरिगढ आविया॥
८. अरज करी वहु लोय, मेवाड पधारियै।
करी कृपा सुभ दृष्ट, भविक नै तारियै॥
९. भीलाडै पुर होय, नाथजीदुवार ही।
ग्राम-ग्राम ना लोक, मेला मडिया सही॥
१० ग्रामा-नगरां विचर, चोमासो श्रीजी द्वार ही।
द्वादस श्रमण सती पनर, सेव गणी सार ही॥
११. उतरचा दसकै चोमास, 'वडेग्रांम'[1] आविया।
वडी छोटी रावलियां दर्श, गणेश्वर दिवराविया॥
१२ सेले-नलै मे होय, उदयपुर उद्यम करी।
हिवै मालव पधारण पूज्य, तारण मनसा करी॥
१३. कानोड सादडी होय, मंदसोर त्रिण दिन रही।
आया गणी रतलाम, श्रमण-संघ सारही॥
१४ मघवा गुणी गुरु साथ, ग्यान लेवा भजै।
सती सिरदार गुलाव, सेव गणपति सझै॥
१५. लघु वय मे उलटा पत्र, गुलाव सती वाचता।
सुणवा देखण जन वृद, 'झूलरा'[2] आवता॥
१६. चरचा-प्रश्न पूछंत, गुणी गुण गावता।
पैसठ ठाणा थया तत, भविक मन भावता॥
१७. सप्तवीस दिन विराज, विहार करचो मुणी।
गुलाव नै माता निकलत, सिरदार सती राख्या गुणी॥
१८. वखतगढ गणी विचर, आया रतलाम ही।
दियो चोमासो ठाय, हरख्या जन ऊमही॥
१९. सत सती भर पूर, सूरतप मे 'वुहा'[3]।
वखाण वाणी हगाम, हुलास ए नवनवा॥

---

१ गोगुदा।
२. समूह
३. उद्यत।

२०. वृद्धा हरखगसा टोय, आई माधोपुर थकी।
न्यातीला नी लेई आण, काम करने 'नकी'[1] ॥
२१. रतलाम गणी पे आय, अर्ज विध-विध करै।
दिख्या द्यो गणी नाथ, तिण मुं भव-दधि तिरै ॥
२२. नाथोजी मयाचंद, पृथ्वी गुलाब श्रावक घणा।
सारै सेव अतीव, मोछव पिण किया दिक्षा तणा ॥
२३. गाम-गाम ना लोक, थोक बहु आविया।
तिलेसरा फोजमल, संग श्रावक बहु ल्याविया ॥
२४. पटवा विभूतसिंघ, सेवा सू मन घणो।
अन्यमती आ रिवाज देख, संप यो गण तणो ॥
२५. संत पनरै 'गुणमेर'[2], गणी सेव सारता।
सिरदारा आदि पैंतीस, श्रमणी गुण धारता ॥
२६. इग्यारा रो चोमास, चौथो ढाल कह्यो।
मुनिया छत्र गणेश, जाझो जग-जश लह्यो ॥

ढाल ५

दोहा

१. हिव चोमासो उतरचा, वखतगढ गणी आय।
तपसी 'रामा'[3] नै दियो, पंडित-मरण सहाय ॥
२ पोस मास अखणावदे, तपसी अनोप नै ताम।
आछ आगारे षट मास नो, पारण करायो स्वांम ॥
३. पटलावद ने थादले झाबवे, राणापुर थइ 'इंदोरे'[4] सैहर।
गणी संघ मघवा आविया, करी भविक पर मैहर ॥
४. मघवा स्वांम रै नीकल्यो, 'मोतीजरो'[5] तिण ठांम।
कृपा पूज्य तणी इसी, विहार कर फिर पधारचा स्वांम ॥

---

१. निपटा कर।
२ गुणो मे मेरु के समान बड़े।
३. मुनि श्री रामजी।
४. इन्दौर मे खूबचदजी छाजेड़ अति भक्तिमान् व ऋद्धिमान श्रावक थे।
५. एक प्रकार का ज्वर।

५. साता हुवां विहार करि, उजीण वड़नगर वखतगढ होय।
'रतनपुर'[1] खाचरोद विचर, मेवाड आवण मन अवलोय ॥
६ 'खाचरोद मे मघवा भणी, सिरपंच दिया ठहराय।
भितर कृपा थी घणी, पिण वाह्य कुरव वधाय[2]' ॥
७. मदसोर जावद 'चित्रकूट'[3], पुर गगापुर माय।
राजनगर काकडोली मे, दीधा झंड जमाय ॥
८. श्रीजीदुवारे होय कर, उदैपुर आवत।
विचला गाम के ना कथ्या, वधतो जाणी ग्रंथ ॥

*गुणीजन, जवर जीत जयकार।
तसु शिष्य मघवा महा निर्मला रे, ज्यारो उज्जल नाण उदार ॥ध्रुपदं॥

९ उगणीसै द्वादस चोमासो, उदियापुर सुखवास।
मघवा आदि संत तेर सू रे, श्रमण्या वतीस हुलास ॥
१० गुरु - चरणे मघवा लीनता, करै ज्ञान अभ्यास।
दसवैकालिक व्याकरण छद फुन, सीखै चरण रयण गुरु पास ॥
धन्य गणी जीत थारा सीस।
ईश ! थारी आण मानै, न करै तिलभर रीस ॥ध्रुपदं॥

---

*लय—कपि रे ! प्रिया संदेसो कहै...

१. रतलाम।

२. जयाचार्य ने एक वार साधुओ की साधारण स्खलना के प्रायश्चित्त के लिए पॉच पचो (मुनि छोगजी (१३८), हरखचदजी (१४४) आदि) की प्रायोगिक रूप से नियुक्ति की। किसी भी त्रुटि करने वाले व्यक्ति को कितना दड मिलना चाहिए, इसका निर्णय वे पाच पच सम्मिलित होकर किया करते थे।

स० १९११ मे जयाचार्य खाचरोद (मालवा) मे विराज रहे थे। एक दिन की वात है कि वालमुनि कालूजी (१६३) रेलमगरा से कोई गलती हो गई। पचो ने उनको कितने मडलियो (प्रायश्चित्त का मानदड) का दड दिया पर मुनि कालूजी ने वह स्वीकार नही किया। तव पचो ने जयाचार्य से उनकी शिकायत की। जयाचार्य ने मव वात की जॉच कर वालमुनि कालूजी से प्रायश्चित्त स्वीकार न करने का कारण पूछा तो उन्होने कहा—दड ज्यादा है। जयाचार्य ने उनसे पूछा—तुझे किस पर विश्वास है ? क्या तू मघजी के निर्णय को मान लेगा ? उन्होने तत्काल कहा—हॉ, वे जो कुछ प्रायश्चित्त देगे वह मुझे सहर्ष मान्य है। जयाचार्य ने मुनि मघवा को वुलाया और पूर्व स्थापित पच पॉचो पर 'सर-पच' वना दिया। उस समय मुनि मघवा की अवस्था लगभग चौदह वर्ष की थी।

(श्रुतानुसार)

३. चित्तौड।

११. प्रश्न राणाजी पूछिया, खीवेंसरा मोखजी संग।
जाव मुणी आनंद लह्यु, थयो सुलभवोधीपणु अंग।।

१२. विहार काल होसी कह्यो तव, दे छडीदार नै साथ।
कहीजै डंडोत मांहरी, पाछा वेग पधारजो गणीनाथ।।

१३. कृपा म्हां पर राखज्यो, आपरी कृपा सू भलो जांण।
मोखजी ए शब्द मालूम किया, इसो गुणी 'हिंदूपति रांण'[1]।।

१४. उपगार उदेपुर करी घणो, विचरत पहुने आय।
पारण पट मास 'आछ'[2] नो, रंभा नै करायो गणीराय।।

१५. पुर में पारणो करायो पूजजी, तिहां पटमासी थइ तीन।
'जेता'[3] 'ज्ञानां' आछ आगार सू, हस्तू पट ऊपरे तेरे 'लीन'[4]।।
धिन थारी सतियां तप में सूर।
अध दल कटक हणवा भणी, करणी करै करूर।।ध्रुपदं।।

१६ मोडजी मुनि नै पटमास नो, पूज पारणो मोखणूंदे आय।
खूम मुनि पट् 'तेरे'[5] आरे, करायो जय मघवा मन भाय।।
धिन गणी थांरा, संत तप महासूर।
'नूर'[6] नवले कर्म काटै, ए दिया मिथ्यातम चूर।।ध्रुपदं।।

१७. श्रीजीदुवारे पधारिया, तिहा तपसी 'काकड़ाभूत'[7]।
अनोपचंदजी वे सौ अठारा आछना, पारणो करायो अद्‌भूत।
धिन गणी जीत थांरा सीस।
वले सीस थारी आंण धारै, न करै तिल-भर रीस।।ध्रुपदं।।

१८. गोगुदै सैले-नले थई, उतरचा राणपुरजी री नाल।
जय मघवा सिरदार गुलाव वारु, ए कही पंचमी ढाल विसाल।।

---

१. हिन्दुओं के राजा महाराणा प्रताप एवं उनकी परम्परा मे होने वाले महाराणा।
२. गर्म छाछ का निथरा हुआ पानी।
३. जेतांजी ने १५२ दिन का तप किया था। देखें समीक्षा जय-सुजश ढा० ४३ गा० २२ की टिप्पणी मे।
४. ज्ञानाजी ने छहमासी और हस्तूजी ने छहमासी के ऊपर १३ दिन अर्थात् १९३ दिन का तप किया।
५. १९३ दिन।
६. शौर्य।
७. तप मे जिनका शरीर अस्थिपंजर-हड्डियों का ढांचा मात्र रह गया हो। वे काकड़ाभूत कहलाते हैं।

ढाल ६

दोहा

१. विचरत गणी पधारिया, पाली सैहरे ताम।
भडारी वादरमलजी, किया दर्शण घणे हगाम ।।

२. सोनारी त्या श्रावका, तपसण तुलछी नाम।
पैतीस दिना मे पचखावियो, सथारो जय स्वाम ।।

३. दृढता देखी तेहनी, लोक करै गुण ग्राम।
खेरवे पूज पधारिया, सीझ्यो सथारो ताम ।।

४ नैत्र रक्षा नै जयगणी, कचागुल दिराय।
मघवा नै कह्यो हाजरी, सुणावो सता नै जाय ।।

५. काठे कानी विचर गणी, घाली 'घणघट'[1] जोत।
पाली पूज पधारिया, करवा धर्म उद्योत ।।

*गणी गुण पूरा रे।
तसु शिष्य मघवा वड, विनयवत हद सूरा रे।
त्यांरो सुजश सुण्या थी, अघ दल हुवै चक चूरा रे ।।ध्रुपद।।

६. उगणीसै तेरे चोमासो, कियो पाली सुखकारो रे।
मघवा आदि संत त्रयोदस, श्रमणी चउतीस उदारो रे ।।

७. सती सिरदार गुलावा गणी नी, सारै सेव सवायो।
मात 'भांमा'[2] सुत मोती सगे, लियो चरण रयण सुखदायो ।।

८. किण पूछ्यो अज्जा सत किता है ?, छतीस साध्विया चवद अणगारो[3]।
भलो जोग ए वीर थका जिम, एक सहस पर एक विचारो ।।

९. चौमासो उतर्‍या खैरवे आया, थयो सिरदार सती रे कारण तामी।
गणपति काठे विचर गाम भिक्षु रे, मोछव कियो तिण ठामी ।।

१०. सुधरी जैतारण, पीपाड थई कालू, आया गणी तिवारो।
तिहा मघवा नै माता नीकली, रह्या सप्तवीस दिन सारो ।।

---

१. अनेक व्यक्तियो के हृदय मे।

२. माता भामांजी की दीक्षा चातुर्मास के बाद हुई।

३. वहां मोतीजी की दीक्षा होने से १४ साधु हो गये। साध्वी चून्नांजी व जडावाजी 'फलौदी' की दीक्षा होने से साध्विया ३६ हो गई।

*लय—हीडै हालो रे हालो रे...

११. मैहर करी नैं गणी विराज्या, तिहां ठाणा थया वहु भेला।
वारै गांम नी हुंती गोचरी, त्या थी विहार करयो शुभ वेला।
१२. पादू डड़वे वाजोली थइ, आया लाडणू धर उचरंगो॥
सुजाणगढ़ रा तार गुणीजन, चोमास विदासर चंगो।
१३. उगणीसैं चवदे वर्ष कीनो, संयत चउदस ताह्यो।
सती सिरदार गुलाव सेवा में, वन्दे मघवा महा मुनिरायो॥
१४ ग्राम मांडा थी छजमलजी भंडारी, त्रिया संगे व्रत धारो।
सुता केसर अरु वहनी कुनणां, इक साथ चरण दिल सारो॥
१५. पनरैं वर्ष तणो लाडणू, चोमासो सुखकारो।
मघवा आदि तंत संत सतरैं, श्रमणी पैंतालीस उदारो॥
१६. 'इक मुनि अज्जा तिहुं संगे'[1], लीधो संजम भागे।
सोलैं सुजाणगढ़ चोमासो, मघवा आदि सोलैं अणगारो॥
१७. सतरैं वर्ष चोमास वीदासर, पनर संत श्रीकारो।
सिरदार गुलाव आदि समणी वावन, जांणे खुल्यो केसर नो क्यारो॥
१८ मृगसर विद चोथ दिक्षा थइ मोता री, आया लाडणू सैहर मझारो।
हीरालाल भेरूंलाल अर्ज करी, जयपुर पूज पधारो॥
१९. मघवा स्वांम गणी गुरु संगे, सिरदार गुलाव उदारो।
अनुक्रमे आया जयनगरे, थयो पट ओछव सुखकारो॥
२०. गुलहजारी तपसी हरियाणां थी, दर्शण करी सुख पाया।
रामनाथ नैं चरण गणी दीधो, पाछा गणी वीदासर आया॥
२१. वृद्धिचंद दयिता संग जोड़े, लियो चरण गणी पे धारो।
छठी ढाल पंचम चोमासा, दाख्यो संक्षेप विस्तारो॥

ढाल ७

दोहा

१. अठारे चोमासो लाडणूं, मुनि वीस श्रमणी पैंतालीस।
मघवा स्वांम सेवा मझे, ह्वै तप जप इधक जगीस॥
२. उत्तमचंदजी चरण लियो, फुन मा वेटी तिणवार।
लियो नौंदा पारवती चरण, तिरवा भवोदधि पार॥

---

१. एक साधु तथा तीन साध्वियों की दीक्षा हुई उनमें दो सावन में, एक भाद्रव में और एक मृगसर वदि ५ को हुई। देखें जय सु० ढा० ४६ दो० ४ से ७।

३. माघ मास मे चैन-सुख, फुन गुलाव चूरू थी आय।
चरण लियो जयवर कने, संपति वधत सवाय ॥

४. उगणीसे सुजाणगढ, जय आदि सोलै अणगार।
सिरदार गुलाव आदि दे, च्यार चालीस सुखकार ॥

५. रगरली चोमास करि, लाडणू वीदासर होय।
राजलदेसर स्वाम जी, पउधारचा अवलोय ॥

६. रतलाम नो ओ आवियो, मयाचद संघ लेय।
गुलाव भाई संग सैकडा, वदै हरख घणेय ॥

७. वड-बंधव पिण था कने, जय गणपति अवलोय।
कांम वोज सर्व छोड नै, मघवा कुरव वधारचो जोय ॥

८ रत्नगढ वहु थाट कर, चुरू सैहर पधार।
वारू अमृत देसना, वरसावै जगतार ॥

९. वड जेठा शेषेकाल मे, मजम लियां सुविसाल।
तपसी व्यावच मे निपुण, करण हद सार सभाल ॥

*धिन-धिन तुम जयगणी भलाजी, काइ, धिन थारा शिष्य सुवनीत।
मघवा नाम महिमानिला जी, काइ पूर्ण सुगुरु सू प्रीत जी काई धिन ॥ध्रुपद॥

१०. उगणीसै वीसे कियो जी, काइ चुरू गणि चौमास।
मघवा आदि सोले मुनि जी काइ, श्रमणी छतीस हुलास जी काई ॥

११. छोटाजी चुरू तणा, चरण लियो चित चंग।
युवराज पद मघवा भणी, आपै गणपति चित उचरंग ॥

१२. भिक्षु लिखत मे नाम भारीमाल रो, तिण ठाम करायो स्वाम।
नवो लिखत करी विस्तारियो, मघवा रो दिरायो नाम ॥

१३. आसोज विद तेरस दिने, लोक सैकडा वृंद।
सिरदार गुलाव वना सती, चिहु तीरथ थट सुखकद ॥

१४. परम मैहर कृपा करी, मघवा गुण अपरंपार।
कृतज्ञ गणी गुण जाण ने दियो, पद युवराज श्रीकार ॥
धिन-धिन मघवा स्वाम नैं, धिन थारो अवतार ॥ध्रुपदं॥

---

*लय—म्हारी सासु जी रै पांच पुत्र कांई दोय
देवर दोय जेठ...

१५. गुण धीर वीर गंभीर गिरवो, जांण युवपद आपियो।
गछभार धारण वृषभ सो गणि चिहु तीर्थ रै शिर थापियो॥
लख विनय नेक विवेक जय जशकरण दिल हुलसावियो।
सौभाग स्यूं वडभाग स्यूं युवराज गहवो पावियो॥

१६. *निज तनु नी पिछेवडी, मघवा भणी दीध ओढाय।
चिहुं तीर्थ आनद लह्यो, थइ सासण नींव सवाय॥

१७. सती गुलाब वनां हरखत थई, जाणी 'महिर'[१] जिवार।
जय गणपति पिण इम जाणियो, फल्या बालक वाक्य श्रीकार॥

१८. समदम खम गुण जांणिया, जांण्यां चरण-करण परधान।
विनय भक्त रक्त गुण आण मे, इसा जाण्या गणी पुन्यवांन॥

१९. जयपुर सूं आय मुनिपति, लघुवय लियो संजम भार।
आमेट सूं आय जड़ावजी, वले चूनीलाल व्रत धार॥

२०. रिणी सूं आय मुलताना लियो, चरण रयण सुखकार।
हिव चोमासो ऊतरयो, विहार करी तिणवार॥

२१. रतनगढ़ होय आविया, सुजांणगढ अवलोय।
उपाध्याय-पद सम सही, वंधव मेलो होय॥

२२. 'गणी'[२] ने 'वंधव'[३] 'युव'[४] तणो, देखी तेज अपार।
लाडणूं आया 'तिण टांण'[५] ही, चतुरभुज नें आदि नीकल्या गणवार॥

वा०—कपूरजी १, जीवोजी २, चतुरभुजजी ३, सतोजी ४, किस्तूरजी ५, छोटो छोगजी ६, ए छव जणां जिलावंधी करी छांनै नीकल्या तिण में पांच जणा तो नवी, दीक्षा लेइ पाछा गण में आया। अनें चतुरभुजजी छ महिनां पहिलां दंड आयो, फेर नीकल्यो अनें किस्तुरचंदजी फेर नीकल्यो। तिण रो विस्तार लघु रास थी जाणवो।

२३. भंडारी वादरमल वीणती, सुत दर्श करै करी तिणवार।
'मुदत'[६] करी मुनिपति वात पर, गणी करी जोधाणां री त्यार॥

---

*लय—म्हारै सासूजी रै पांच पुत्र कांई, दोय देवर दोय जेठ

१. कृपा।
२. जयाचार्य।
३. मुनि स्वरूपचन्दजी।
४. युवाचार्य मघवा।
५. उस समय।
६. मदद।

वा०—मुनिपत जी मा री आज्ञा सू दिख्या लीधी, अने मुनिपतजी रो वाप खोले नाम-मात्र ठेहर्‌यो छो तिण सू सघ पाछी तूट गइ नै केइ वर्ष हुय गया, पछै वाप चल गयो, लारे वारै वर्ष आसरै मुनिपत जी री नें मारी तिथ पूछी नही अने दिख्या लीया पछै कोइ रा वैहकावा सू तिण अन्याय मे झगड़ो दादो कीयो ते भडारी जी वादरमल जी उपाय कर नै मिटायो, उण नै पिण समजाय दीयो

२४. *मुनिपत नी माता भली, हरकुवर हुसीयार।
वैसाख सित छठ लियो, तिरवा भवदधिवार।।
२५. इकवीसे गणपति कियो, चोमास जोधाण मझार।
श्रमणी पैंतीस द्वादस मुनि, थयो उद्योत अपार।।
२६ महकरणजी ईडवा तणा, तजी मात त्रिय सग।
पटलावद ना दुलीचद, सजम लियो सुरग।।
२७. सतमी ढाल मघवा स्वाम नो, युवपद नो इधकार।
दोय चोमासा दाखिया, चिहुं तीर्थ हरख अपार।
कांइ वारू भविजन साभलो, मघवा - सुजश विस्तार।।

ढाल ८

दोहा

१. जोधपुर थी विहार करि, पछिम थली पिछाण।
मघवा सग समण्यां वहु, भवि-वोधक ऊगो भाण।।
२ वाव तणा त्या वाणिया, गुलाव वाण सुण सुख पाय।
जय पे आय अरजी करै, ए देव्या म्हेलो मुज पुर माय।।
३. पंचभदरे वालोतरे, महामोछव सप्तम दिन।
टालोकरा नै ओलखाविया, जय गणपति भिन्न-भिन्न।।
४. सिवाणची[1] उपगार कर, पाछा 'सुभटपुर'[2] आय।
मास महिनै विहार करि, आया रोयट गणीराय।।

*लय—म्हारै सासूजी रै पांच पुत्र कांई, दोय देवर दोय जेठ

१ वालोतरा पचपदरा आदि सिवाणची परगने मे है उसके आगे के क्षेत्र—जसोल, टापरा वायतू कवास, वाडमेर आदि मालानी परगने मे है।

२. जोधपुर।

*धिन धिन जय तुम गणी शिष्य मघवा, गुरु सेवा नो कोड जी।
छटा देख भवी मन मोहै, जाणै वीर गोयम री जोड जी ।।ध्रुपदं।।

५. वावीस को चोमासो गणपति, कीधो पाली सैहर जी।
मघवा युवपद संग सिरोमण, सती सिरदार गुलाव्र पर मैहर जी ।।
६. विवध विनय कर सुगुरु रिझावै, ज्या रो वाधै जग मे तोल।
इहभव आनंद जश कीर्ति लहै, वले परभव सुख अमोल ।।
७. तिहा दिख्या आठ थई सतिया, उदैकुवर गोरख जेठां कुवारी जांण।
गोरा चूनां हस्तु तीजा व्रजुजी सतिया, गुरु आज्ञा मे अगवांण ।।
८. चोमासो उतरचा विचरत विचरत, आया लाडणू सैहर मझार।
सरूप-शशी गणी स्हामा आया, थयो जवर मेलो तिणवार ।।
९. वड बंधव नी वय वृध जाणी, तिण सू नजीक रह्या विसेख।
त्या थी वीदासर सैहर पधारचा, लघु छोग आयो गुण देख ।।
१०. तिण नै नवी दिख्या दे माहिने लीनो, वाकी रह्या टालोकर वार।
आर्य्या नै वंदणा कराय नै दिक्षा देणी, इसा त्याग कराया गणी सुविचार ।।
११. जेठ विद मे हुकमचंद ने ऋधू नै, दिख्या दीधी तिणवार।
तिण टांणे उदयचंद तपसी वर पचख्यो, जावजीव संथार ।।
१२. दर्शण देण गणी लाडणू पधारचा, चढ़ाया परिणाम तिणवार।
मघवा सग सिरदार गुलावा श्रमणी, सीझ्यो पैसठ दिन मे संथार ।।
१३ सतरै मुनि सूं चोमासो वीदासर, उगणीसै तेवीस।
मघवा उद्यम ग्यान-ध्यान नो करता, सिरदार गुलांवा आदि पैतालीस ।।
१४. तिहा तप-जप उद्यम हुवो अधिको, सत्या कीधो आण हुलास।
पछै चोखलै विचर वरस चौवीसे, सुजाणगढ चोमास ।।
१५ मैहताव ने सिरदारां श्रमणी, चूरू थी विहु आय।
उज्जल मन सू चरित्र लीधो, तारी श्री गणिराय ।।
१६. चउमासो उतरिया विहार हगामे, लाडणू वड - वंधव पे आय।
चित समाधि उपजाई वहुली, विवध समय-रस पाय ।।
१७. शेषेकाल माहे पिण वहुली, दिख्या थई आंण हुलास।
लाडणू रा झूमा 'उभय सिणगारां, टमकोर आडसर ना तास'[1] ।।
१८. अतिहठ सू या वालक वय मे, पवर श्रावगी जात।
भूरा कुवारी कन्या लाडणू रा, सगाइ छोड सजम लियां विख्यात ।।

***लय—सुगर पिछाणो इण आचारे**

१. एक टमकोर वासिनी सिणगाराजी और दूसरी आडसर वासिनी सिणगांराजी।

१९. मागोतरै तव झगड़ो कीधो, भंडारी 'मुदत'[1] करी सवाय।
चोमासा री अरज करी तव, ग्रीष्म ऋतु पधारचा गणिराय।।
२० उगणीसै पचवीसे चोमासो, जोधाणा नगर मझार।
मघवा आदि संत द्वादश वर, श्रमणी गुणचालीस उदार।।
२१ श्रावण विद अठम जय दीधो, जुहार भोप भणी संजम भार।
वहु मोछव सू घणे हुगामे, थयो उद्योत अपार।।
२२ तप जप उद्यम पिण थयो अधिको, हिव उतरचा चोमास।
पाछा लाडणू सैहर पधारचा, आठमी ढाले सुखवास।।

ढाल ९

दोहा

१. हिवै चोखलै विचर कर, द्वितिय वैसाख गणिराज।
कारण सुण वनाजी तणै, आया सुधारण काज।।
२. विवध उपदेश सुणावियो, सरूप शशी पिण संग।
मघवा स्वाम पिण मात नैं, देवा साज सुरंग।।
३ सती सिरदार गुलाव पिण, देती साहाज्य उदार।
सती गुण नी गाथा जोड नै, सभलावी तिणवार।।
४. आलोयण निदण करी, कियो तेरस सागारी सथार।
विद चवदस पाछली रात रा, सीझ्यो अणसण पौहर इग्यार।।
५. जाझो साढी सतरै वर्ष नो, सती पाल्यो सजम भार।
तप जप लाभ लेई करी, कीधो खेवो पार।।
६ जेष्ठ सहोदर गणी तणा, सरूप-शशी नै तिणवार।
आयो जेठ कृष्ण तिथ चोथ नै, सागारी च्यार याम संथार।।
७. उपाध्याय सम अति जबर, गणी सहोदर सुखदाय।
लघु बंधव साहाज्य दियो घणो, धर्म महोछव लाडणू माय।।

८. *छवीस को चोमास, वीदासर गणी कियो हो लाल। वीदासर.।
मघवा आदि सत सोल, सती सिरदार गुलावा जश लियो हो लाल ।।ध्रुपद।।
गुलावा ।।

---

१. मदद ।

*लय—इण सरवर री पाल आंवा दोयरावला हो राम...

९. प्रभात शास्त्र व्याख्यान, युवपद दिरावता।
हेतु दृष्टांत अनेक, सुण भविक हुलसावता ॥
१०. हिवै मालव थी आया मयाचंद, त्रिय सग व्रत लियो।
लाडणू री दादी पोती दोय, राजा मकतुला नै चरण दियो ॥
११. भरतार भणी या छोड, सदांजी संजम लियो।
चादांजी तज भरतार, संजम ले सुख कियो ॥
१२. विदामा ऊमां जैतांजी जाण, राजलदेसर ना सही।
हृद जयगणी रे हाथ, चरण चित ऊमही ॥
१३. चौमासो उतरचा शेषेकाल, रांमसुख नै दिख्या देइ करी।
जाति श्रावगी वाकलीवाल, 'सूरता'[1] चित धरी ॥
१४. नानू वरजू आ जाण, वलि किस्तुरा सती।
चरण दियो जय स्वाम, ताम अधिकीरती ॥
१५. गाम गांम मे हगाम, स्वांम कर नै फिरी।
सप्तवीस को चोमास, लाडणू कृपा करी ॥
१६. युवपद आदि संत सोल, श्रमणी पचास सेवा सझै।
सती सिरदार गुलाव प्रमुख, भक्त भज दु कृत तजै ॥
१७. तिण चोमासा माहि, तप वहुला थया।
पनर पंचरंगी सहु साथ, वायां मे थोकड़ा वहु भया ॥
१८. उतरचा हिवै चोमास, सुजाणगढ आविया।
तिहा थी आयां वीदासर सैहर, श्रमण श्रमणी संग ल्याविया ॥
१९. सिरदार सती तनु माहि, कारण ऊपनो सही।
शक्ति घटी अधिकाय, अन्न नी रुचि नही ॥
२०. पोह विद एकम तांइ, अल्प सो अन्न लियो।
पछै अन्न न लीधो कोय, सती दृढ़ मन कियो ॥
२१. आलोयण विध विध स्वांम, कही ते सरदियै।
सावचेत थइ स्वमुख, 'मिथ्या दु.कृत' दियै ॥
२२. सुध चोथ सागारी संथार, रात्रि सत्या पचखावियो।
आठम सीज्यो संथार, विस्तार संक्षेप जणावियो ॥

१. दृढता।

गीतक-छंद

२३. 'पवत्तणी'[1] सम आर पंचम, प्रगट सिरदारा सती।
जय आण साधी अधिक आराधी, सूरवीर चढती रती।।
अन्नपान नै अरु वस्त्र पात्र, रोगी वाल वृध सुखदायिका।
वीर रे जिम 'वालचंदन'[2], तिम पूज मुख आगे 'साहिका'[3]।।

२४ सिरदार नो जिम कुर्व हुतो, गुलाव नै गणी आपियो।
सार संभाल करण सत्या री, मैहर कर गणी थापियो।
इसा गुण जय जाण 'गिरवा'[4], 'अगमदृष्टि'[5] सु अति भला।
तसु शिष्य शिपणी आण पालै, ग्यांन गुण सोभै निला।।

२५. *जाणी गहिर गंभीर, सिरदार नो काम भलावियो।
विनयवत आज्ञा पर दृष्ट, कुर्व वधावियो।।

२६. सुगरु रीझ्या तोल कै, अधिको वाधसी।
इहभव परम आनंद, पछै मुक्ति पद साधसी।।

२७. वीदासर सू करि विहार, सुजाणगढ आविया।
दीर्घ छोग अनें हसराज, निकल दु.ख पाविया।।

२८. गण वारे निकल्या कर ताण, सप्त पोहर आसरै वाहिर रही।
पछै पगा पडिया खमाय, आया दड 'आरे'[6] कर सही।।

वा०—आगा थी वोलां आश्री आचार्य सूं खाच करवा रा जावजीव त्याग छै। मघराजजी महाराज फुरमावै सो हिय वैसाय लेणी। साधपणा ज्यू ए त्याग छै स० १९२७ रा चेत विद १३ लिखतू ऋषि छोग लिख्यो ते सही छै।

२९. ए लिखत लिखी तिणवार, मुख सू वली इम कही।
छोरू कुछोरू होय, मायत कुमायत नही।।

३०. ए 'ओखाणो'[7] आप, साचो कीयो सही।
दाख्या दोय चोमास, नवमी ढाल कही।।

---

१. प्रवर्तिनी।
२. चंदनवाला।
३ सहायिका।
४. गभीर।
५ अगम्य दृष्टि (दूरदर्शी)
६. स्वीकार।
७. कहावत
*लय— इण सरवरी री पाल ..

ढाल १०

दोहा

१. लाला भैरूलालजी, अर्ज करी बहु आय।
जयपुर पूज्य पधारियै, देवो दर्श सोच्छाह ।।
२ मानी विनती गणी तदा, जयपुर पधारै तांम।
डीडवाणे जोवनैर थइ करी, संग परवरिया मघवा स्वाम ।।
३ झूठवाडे थइ आया बाग मे, दर्श किया हीरालाल।
साथ भेटणो ल्याविया, 'बालक गणेस'[1] माल ।।

*सखर सिरोमणी तेज दिनमणी, सोभता मुनिद मोरा।
जय शिष्य जवर जयकार हो ।।ध्रुपदं।।

४ उगणींसै अठवीस मे गुणीजन, युवपद आदि श्रमण पणवीस।
चोमासो जयनगरे थयो, श्रमण्या गुलाब आदि छतीस ।।
५. ग्यान ध्यान उद्यम घणो गणिन्द मोरा, विहुं टक देत व्याख्यान।
हाजरी वाचण विचार मे मुणिन्द मोरा, सुगुरु सेव घणां सावधान ।।
गुणीजन प्यारो ओतो मुजश नो क्यारो, मोरा स्वामजी गणिन्द वारूं।
जय शिष्य सुजश रसाल ।।ध्रुपदं।।
६. तिण चोमास हुवो घणो, धर्म तणो उपगार।
नन्दरामजी डेगाणा तणा, लियो जय कर संजम भार ।।
७ जीउ वीरा थली देस सू आय नै, जय पे लीधो संजम भार।
मोहनवाडी दिख्या थई, मोछव मंड्या अपार ।।
पुन्य नो पूरो, ओतो सत नो सूरो, मोरा स्वामजी।
सुर गिर जिम सिर मोड ।।ध्रुपद।।।
८. वासी जयपुर सैहर नी, जडावजी संजम लियो आम।
वलि लिछमाजी सुजाणगढ नी, संजम दे सूपी गुलाब नै ताम ।।
९ जोरजी वासी 'दुदोर' नो, वलि हीरा सिरदारगढ सू आय।
मृगसर माणकचन्दजी बाग मे, इक दिन संजम दिराय ।।
१०. -सेठ वगतावरमल सुत अछै, अनतराम दिवाण नो ताय।
तसु पुत्र चल्या मोह फद मे पड्यो, गणी दरस दिया सुख थाय ।।

---

१. बालक गणेशीलालजी को दीक्षित करके लाये।
*लय—सिहल नृप कहै चंद नै सनद गोरा सुत लाडकडा...

११ एक मास सिरदारमल वाग मे, एक मास घाट श्रीकार।
एक माम सेठ हवेली मझे, जय सुजश से वहु विस्तार॥

१२. महा सुदि दसम नैं दिने, छवील मात-दोलां सग।
वहु मोछव गोविन्दराम वाग मे, दिख्या थई वहु उचरंग।
प्रवल प्रतापी ओ तो जग जश व्यापी, मोरा स्वामजी
सम्यक्त चरण दातार॥ध्रुपद॥

१३. विहार करी जयपुर थकी, जोवनेर थइ कुचामण आय।
मुज 'ताउ'[1] लाला लिछमणदासजी, हुता गणी सेवा रे मांय।
मिथ्या मत चूरो ओ तो भान ज्यू सूरा, मोरा स्वामजी
कल्पतरु शिव देन॥ध्रुपदं॥

१४ लिछमणदास लाला भणी, वारू जय वच एम वदत।
दिख्या दिये माणकलाल नैं लालाजी, तो सत हुवै मतिवंत॥

१५. तव लाला जय स्वाम सू, अरज करी तिणवार।
वोज भार तणो हद काम छै, तव जय कहै वच श्रीकार॥

१६. रजोहरण खाधे करी लालाजी, चालणी आवै जगीस।
लारे चाहीजै मघवा तणै लालाजी, भार लायक हो शीस।
रूप मै रूडो, ए तो पुन्य मे पूरो ए तो सम दम सूरो नदन थाहरो लालाजी।
अनुमति दीजै जरूर॥ध्रुपदं॥

१७. लछमणदास लाला भणै, जो एहना हुवै परिणाम।
तो आज्ञा हू देऊं सही, आगम-दृष्ट घणा जय स्वाम॥

१८. 'नावा' मे आज्ञा देइ करी, लाला पाछा गया तिवार।
डीडवाणे थइ आविया वाकल्ये, विदोरी निकली जिवार॥

१९. लाडणू सू दिख्या मोछव करी, पालखी मे वैसी नगी निसाण।
पीराजी कनै जयगणी पचखावियो, मघवा युवपद वहु मडाण।
मिथ्या-मत चूरो, ए यो भान ज्यू सूरो मोरा स्वामजी
मुनिया छत्र गणेश॥ध्रुपद॥

२० ठाकुर साहमा आविया, दिख्या दे आया लाडणू माहि।
पछै फोजमलजी चारित्र लियो, कनैयाल्लाल त्रिया तज ताहि॥

२१. दसमी ढाल विपे कह्यो, अठाइसा नो अधिकार।
गुरु सगे मघवा विचरता, तारण भवि नर नार॥

---

१. वावा।

ढाल ११

दोहा

१. गुणतीसे बीदासर कियो, गणी युवपद मन उगणीस।
गुलाब कुंवर सती आदि दे, सारै सेव चालीस।।

२. उदैरामजी भीयाणी तणो, त्रिया संग व्रत लीध।
वृध वय अति विचार नै, जयगणी वचनामृत पीध।।

३. शेषेकाल चिमनां वगतू लियो, गुलां चोथा रीणी रा जाण।
लाडणू री छगना भली, संजम लियो सुजाण।।

४. जेठ आसाढ बीदासरे, रह्यो कारण गणी रे विसवावीस।
तीसे चोमासो बलि थयो, संत सोल सतियां गुणचालीस।।

५. शेषेकाल नेमीचंद जोतगाम नै, दिख्या दी बीदाण मझार।
इमरदासजी सुखा भणी, दिख्या दे गणी कियो विहार।।

*धिन धिन जय शिष्य मघवा स्वामी, त्यांरो सुजश सुणो भवियण सुखकामी।।
ध्रुपदं।।

६. इकतीसे सुजाणगढ चउमासो, अठारै संत युवपद गणी पास।
गुलाबकुवर श्रमणी अठवीस, तप जप सेव सारै जगीस।।

७. आचारांग उत्तराध्येन कंठ धरंता, दसवैकालिक आवश्यक गुणंता।
व्याकरण छंद षट भाषा ना जाण, इसा पंडित मघवा महिराण।।

८. युवपद बहिन सहोदरी सूरी, सती गुलाब ज्ञानादिक पूरी।
सुख आगल वाचण लिखण हुसीयारी, सार संभाल चिहुं तीर्थ हितकारी।।

९. शेषेकाल में चूरू नी कुनणां सिरदारा, 'श्राही' नी कुनणां खाटु नी तीजां गुणकारा।
जोधाणा ना उदेकुवर सु आय, बीकाणे रा सुंदर नै चरण दियो ताय।।

१०. लाडणू चोमासो कियो बत्तीस, सेवा सारै संत उगणीस।
मघवा विनयवंत सुगुरु हृद सीस, गुलाब प्रमुख श्रमणी चालीस।।

११. पंचभद्रे नी कसुवा बाई भाई बीजराज, सगाई तज आयो व्रत लेवा काज।
जय कर लीधो संजम भारो, लियो नवैसैहर नी किस्तुरा धारो।।

१२. वृध वय जोग कियो गणी गुण जाणी, चोमासो तेतीस को तिणहीज ठांणी।
मघवा आदि सेव मे संत उगणीस, गुलाब प्रमुख सती इकावन जगीस।।

१३ 'सुरगढ'[1] नो हुकमचंद व्रत लियो तास, बीदासर आया गणी उतरचा चोमास।
लाडणू हस्तु कारण तनु माहि, दर्श दियां काल कियो ताई।।

---

*लय—सोई सयाणा अवसर साधै...।

१. देवगढ।

१४. कारण जोग सू लाडणू चोमास चोतीस, गणी युवपद आदि संत बावीस।
गुलाब प्रमुख श्रमण्या छपन्न, ग्यान क्रिया तप करती जतन्न॥
१५ दोलतराम त्रिय पुत्र तज व्रत लीधो, शेषेकाल बगतावर चरण रस पीधो।
अगरवालो देवीचंद,'पेमा जाण—भियाणी रा रामू'[1] गणी पे चरण लियो आण।
१६. पेंतीसे चोमासो बीदासर गणइंदा, पनरै मुनि युवपद गुण-वृंदा।
सतिया तयालीस गुलाब सुख कंदा, सारै सेव लेण मुक्ति आनंदा॥
१७. चांदारूण थी रामचंदजी आयो, सगाई छोड लियो व्रत उमायो।
देसणोक रा 'सुमा' व्रत लियो जास, भीयाणी रा 'सरजा' लियो चरण हुलास॥
१८. बीदासर रा छोगाजी व्रत लियो गणी पास, तज सुत बहु ने आण हुलास।
जय कुवर सुरवाल री जाणी, जय पे चरण लियो मति स्याणी॥
१९ जयगणी चढतो तेज पंडूर, वलि युवपद मघवा नवले नूर।
ग्यारमी ढाल चौमास कह्या सात, ग्रंथ वधंतो अल्प रची वात॥

ढाल १२

दोहा

१. वृध वय जोग बीदासरे, छत्तीसे मुनि वीस।
सती गुलाब सेवा सझै, सतिया 'द्वय - चालीस'॥
२. श्रावण मे लीधो चरण, छोटाजी सुविचार।
विहार कर बीदासर थकी, गणी चोखले विचर तिवार॥
३. जयपुर केरी वीनती, करी लाला भेरुंलाल।
कृपा कर पूज्य पधारिया, ले संत सती गुणमाल॥
४. मगदू देवरिया तणी, जाति मेसरी जाण।
बहु मोछव दिख्या दे करी, आया जयनगरे जवर मडाण॥

*धिन धिन गणपति जय जगवता, तुम शिष्य मघवा नीका रे।
ग्यान ध्यान लहलीन रहै नित्य, दिनमणी तेज ज्यू तीखा रे॥
॥ध्रुपदं॥

१. जोजावर की पेमाजी और भिवानी की रामूजी।
*लय—लाल हजारी को जामो विराजै चटवा...

५. उगणीसै सैतीसे गणपति, कियो जयनगरे चोमासो।
युवपद आदि वीस श्रमण सेवा में, सती गुलाव प्रमुख छयाल हुलासो ॥
६. व्याख्यान वाण हेतु दृष्टात करी, मघवा 'मृगपति'[1] सम गूजै।
भवि 'चात्नक'[2] वाण सुणी प्रतिवूजै, पाखंड 'अजा'[3] सुण धूजै ॥
७. गणी दरसण नै जन हजारा, देस देस ना वृदो।
सिवकरण त्यारी जाति मेसरी, दियो चरण रयण गण-इंदो ॥
८. आमेट कुहाथल नी किस्तुरा, चरण लियो युवपद हाथो।
हसराज सिरदार भणी गणी, दियो चरण विहुं भणी साथो ॥
९. शेषेकाल मे युवपद मघवा, 'वाहिर भूम'[4] पधारता ताह्यो।
तिण अवसर 'ऋधसागर' संवेगी, चरचा करण नै ते आयो ॥
१०. सम्यक्त ना आचार केतला, तिण पूछ्यो इम वायो।
युवपद कह्यो आठ आचार है, निशंकतादिक फुरमायो ॥
११. वलि कह्यो अर्थ कहो एहनो, जद जुदो-जुदो अर्थ वतायो।
वच्छल नो अर्थ कह्यो तव वोल्यो, साहमी-वच्छल सू पुष्ट सम्यक्त थायो ॥
१२ वच्छल नाम साहमी-वच्छल नो नही छै, युवपद इम फुरमायो।
वच्छल नो जो ए अर्थ करो तो, छठे गुणठांणे वच्छल ए किम थायो ॥
१३ पंचमा गुण थी तो छठा री, सम्यक्त पुष्ट घणी थायो।
साहमी-वच्छल तो ते नही करता, त्यारै सम्यक्त दृढ किम थायो।
१४. वलि कह्यो टीका माहि दिखावो, साहमी-'वच्छल'[5] अर्थ न कियो ताह्यो।
जीत फतै हुइ मघवा नी, संवेगी 'कष्ट'[6] घणो थायो ॥
१५. छोगजी हरखूजी निकल थली मे आया, भाई सू मिल फिर संजम पचखायो।
जय जाव सुणी नै न्यारा हुवा तव, खंड्या रो खाखो खिडायो ॥
१६. इसा जवरा हा जीत जयवंता, त्यारा अदीठ चक्र चलायो।
इहा पधारयां उपगार होसी, वीनती थली नी इम आयो ॥
१७. जव थली जावा री त्यारी कीधी, वैसाख सुध मे गणी रायो।
भेरूलालजी आदि श्रावकां अर्ज कीधी, ए रितु अति कठिन कहायो ॥

---

१. सिंह
२ चातक—पपैया
३. बकरा
४. शौचार्थ
५ वच्छल—वत्सलाहिता इत्यर्थ ।
६. खिन्न

१८. मांनी वात तव श्रावका केरी, द्वितीय चौमास वलि ठायो।
वखाण वाणी हेतु दृष्टात करि, युवपद वाण अमृत वरसायो ।।
१९. श्रावण सुध पूनम लालाजी नै, ऊचा चढ़ दर्शण दियो गणीरायो।
विवध उपदेश दियो जव गणपति, त्याग वैराग वहु करायो ।।
२०. काल कियो लालाजी रात रा, प्रात हुवा निज पगले ताह्यो।
सिरदारमल लूणिया री जायगा मे, पधार गया गणीरायो ।।
२१. अन्न अरुचि दस्त रो कारण, तो पिण सूरवीर अधिकायो।
पच ढाल आराधन सुण दियै'मिथ्या दुकृते',छठ पाछा आया हवेली माह्यो ।।
२२ दसम दिन बैठा करी गणी नै, युवपद अर्ज करी तिणवारो।
मुरजी हुवै तो 'संथारो'[1] करावा, तव गणी भरियो हुकारो ।।
२३ संथारो सुण दर्शण करवा, जन हजारा आया।
केइ कहै सूर्य ए जिन मग मे, साक्षात् ईश्वर कहाया ।।
२४ 'सरणा गाह'[2] सुणावत सुणावत, झट प्रदेस खंच्या तिणवारो।
वारस आथण 'अणसण सीझ्यो'[3], दोहरी लागी तीर्थ च्यारो ।।
२५. चर्म महोछव लोकिक खाते रूपइया हजारा लगाया।
हय गय पलटण नगी निसाण, रूपियां री उछाल वजार माह्यो ।।
२६ दूजै दिन उपवासज कीधा, संत सती वहु ताह्यो।
वारमी ढाल संक्षेपे वर्णन, जय सुजश सु इधक जणायो ।।
२७. इसा सुगुरु का युवपद भक्ता, थेट ताई पार पहुंचायो।
तीस वर्ष लग लगती सेवा मे, विनय भक्त सू अधिक पद पाया ।।

गीतक-छंद

२८. जिन मग पाज सुज्याज जयगणी, तारिया भवि गुणनिला।
सारण वारण कुमति निवारण, प्रवध वाध्या अति भला।
लिखन वाचन फुन करन देसन, जोडन गणी उद्यमी घणा।
पट थाप मघवा आप सहु सुख, गणिराज स्वर्ग सिधावणा ।।

---

१. सागारी अनशन।
२ चार शरण तथा अध्यात्म पद्य आदि।
३. ११ वजकर २५ मिनिट पर सथारा कराया गया।

ढाल १३

दोहा

१. हिव भाद्रव सुद वीज नैं, मघवा गणी महिरांण।
सुभ महुरत तखत विराजिया, जाणै उदियाचल पर भांण॥

२. मघवा गुण अपरंपर, अकथ कथा कहिवाय।
गुणवंत गणी गुण गावता, कर्मा री कोड खपाय॥

*महाराजा थारी, पट ओछव छिव भारी।
त्रिहु तीर्थ हद थाट मुख आगल, जाणै सोभै केसर री क्यारी॥
॥ध्रुपदं॥

३ उगणीसै अड़तीसे भाद्रवे, सुकल वीज सुखकारी।
सुभ महुर्त्त सुभ लग्न घड़ी वर, जयनगरे जशधारी॥

४. जय-जय नंदा जय-जय भद्दा, जय विजय तुम होज्यो।
कर्म शत्रु नैं जीत मित्र वर्ग नी, 'रिख्या'[1] रूडी कीजो॥

५. इत्यादिक मंगल शब्द स्तवना, गणी गुणां री ढालां।
गुलाब सती संत फुन गृहस्थ, नवि रची गावत गुणमाला॥
महाराजा थारा, दिन दिन अतिसय वधज्यो।
ए वड साखा जिम विस्तरज्यो।
महाराजा थे तो, वहु तार अने आप तिरज्यो
आप अविचल सुख चित धरज्यो।
महाराजा थे तो, सिव वधू वेग सुवरज्यो॥ध्रुपदं॥

६. तिणहिज दिन गणी गोचरी पधारया, 'असन'[2] 'वसन'[3] ल्यावंतो।
घर आगण गणिराज देख नैं, भवि चित्त अति हुलसंतो॥

७. गणपति भगनी सहोदरी सूरी, गुलावकुवर पुन्यवंती।
पवत्तणी जिम पूज्य मुख आगल, ग्यान ध्यांन दीपंती॥

८. अतिसय धारी गण सिणगारी, ज्यारी भाग्य दिशा अति भारी।
पटोच्छव दिन श्रमण दिख्या थई, आई अणचिती भेंट तिवारी॥

---

*लय—महाराजा थांरी निरखण दो असवारी...

१. रक्षा

२. आहार

३. वस्त्र

९. आचार्य की आठ संपदा ओपै, वहुश्रुत ओपम सारी।
वाणी अमृत घन सम गूजै, मुद्रा पेखत हर्ष अपारी।।
१० लोक जाणता जयगणी जेहवा, होणा दुःक्करकारी।
देख छटा मघवा जन वोलै, आ माया अपरपारी।
महाराजा थारो, सफल थयो अवतारी।
हे गुण दरियो भरियो वर ज्ञाने, वले योग मुद्रा मनोहारी।
महाराजा थारी, भाग्य दिशा अति भारी।।ध्रुपदं।।
११. तज सर्व दूपण विद्या नो भूषण, सरस्वती कठे त्यारी।
'आदेज'[1] वयण सरस 'पीयूष'[2] रस, जाणै 'जश-परमल'[3] 'धरा'[4]सारी।।
१२ जोधाणा थी भंडारी वादरमलजी, दरस करी सुख पावै।
वले 'अनेक गामा ना देख कहै जन'[5], स्वामी आप तुले कुण आवै।।
१३ 'झलाय' ठाकुर नाहरसिघजी, वाण सुणी सुख पायो।
'राजमार्गीया'[6] नै कहै इसा संत, इण इला पर नायो।।
१४. सत सत्या नी सपद् सनूरी, सत इकोतर उदारी।
बे सय पच समणी वर नीकी, गणी आणा मे हुसयारी।।
१५. सुजाणगढ नी जाति वेगवाणी, लिछमा जोधा जाणी।
मां बेटी विहुं संजम लीधो, प्रथम शिष्यणी थइ स्याणी।।
१६ चादमलजी जयपुर वासी, जाति पोरवाल जाणी।
काती मासे गणपति पासे, लियो चरण हरख मन आणी।।
१७. ढाल भली ए तीन नै दसमी, पट उच्छव विस्तारी।
पाट विराज उपगार करचो ते, हिवे सुणो भविक नर-नारी।।

ढाल १४

दोहा

१. हिव चोमासो ऊतरचा, विहार करी गणीराय।
सिरदारमलजी रा वाग मे, तिहा कारण जोग रह्या ताय।।

---

१. अतिप्रिय।
२. सुधा।
३. सौरभ।
४. दुनिया
५ उदैपुर सू आवावजी मुरड्या आदि तथा अनेक गावो के लोगो ने दर्शन किये।
६. राजवर्गीय जन।

२. दरसण करवा संत सती, आया धरी आणंद।
छटा देख निरखी रह्या, जेम 'चकोर'[1] चंद॥
३. सती गुलाब पिण तिहां रह्या, वड़ी सत्यां रै 'साथ'[2]।
तीजा वकांणी तणा तिहां, आय चरण लियो विख्यात॥
४. पाछा जयपुर पधारिया, विकस्या तीरथ च्यार।
उपचार किया कारण मिट्यो, साता सर्व प्रकार॥
५. पंजाव नो इक सेठ ते, आवी पूछै एम।
भीखनजी किसा बोध में, बुध-बोधी कह्या हुवो 'हेम'[3]॥
६. वलि पूछ्या ना जाव सुण, रूंम-रूंम विगसाय।
अरज करै सता भणी, मेलो पजाव रै मांय॥
७. सूरत थी वलि आवियो, नगीनादासजी सेठ।
दरसन कर विगसत कहै, वीजा मत इण हेठ॥
८. दुकानदारचा सर्व ही, माड राखी सोय।
आप जिसो इण भरत में, आज न दीसै कोय॥
९. जाझा झंड जमाय नै, चेत मास करी विहार।
झूठवाडे जोवनेर थइ, आया वोरावड़ सैहर मझार॥
१०. वोरावड कै दिन रही, आया डीडवाणे अवलोय।
कृपा करी थली देस पर, आया तारण भवियण लोय॥

*सुगणां गुणी गुण रयण भंडार, गणी गुण रयण भडार।
ज्यांरो नांम लिया निस्तार, ज्यांरो सुजश सुणो नर-नार।
सुगुणा मघवा जश गुण सुणियै ॥ध्रुपदं॥

११ उगणीसै गुणचालीसे चोमासो, वीदासर सुखकार।
सोल संत संती गुलाव सेवा मे, अज्जा छतीस उदार॥
१२. चोमास उतरिया विहार सुखे-सुखे, आप कियो गणीराय।
देस-परदेसी संत सत्यां वहु, दरसण कर सुखपाय॥

---

१. एक प्रकार का वडा तीतर जो पहाड़ी स्थानों मे पाया जाता है। यह चद्रमा का अत्यधिक प्रेमी होता है।
२. दीक्षा पर्याय मे वृद्ध सतियो के कल्प से।
३. शीतला
*लय—नीकी सीखड़ी रे लहियै ..

१३ राजलदेसर रतनगढ थई, आया सिरदार सैहर[1]।
श्रमण सत्या ना वृद हगामे, दिया दरसण गणी कर 'मैहर' ॥
१४. खड्या री वात देखी नै जन, त्या सू उतर गयो मन ताहि।
पूज आया कर दरसण प्रश्न पूछी, करण गुरधारण हुंती मन माहि ॥
१५. भरत वाहुवली महाकाव्य ते, व्याख्याने स्वमुख आप।
जन 'श्रवण-कटोरा'[2] भर-भर हरखै, जिम 'पुतली'[3] चुपचाप ॥
१६. 'पंच व्यवहार'[4] ने विविध 'समय'[5] ना, न्याय निर्णय अवलोय।
कहै इण भव माहे वस्तु अपूर्व, दीठी सुणी नही कोय ॥
१७ प्राक्रम अतिसय सप देखी नै, साभल नै वलि वाण।
प्रश्न पूछ्या रा जाव तुरत ही, सुण हरखै 'असमान'[6] ॥
१८ गुलाव सती नी पिण देसन सुण, वलि देखी आचार गोचार।
नीत निपुण गुण पूर्ण गणपति, देखी नै हरख्या अपार ॥
१९ मघवा गणपति देखी नै जन, हुलसत हिवडे होय।
के अतिसय देखी कै प्रश्न पूछी, करी गुरधारणा वहु लोय ॥
२०. श्री श्रीमाल जाति पाचोडी ना, कामेती मूलचद।
त्रिय पनाजी ने सिवराज सुत, किन्या सिरै कुवर गुण-वृद ॥
सुगणा ! गणपति गुण-भडार, गणपति गुण-भडार।
ए तो ज्ञान चरण दातार, ज्यानै आराध्या शिव त्यार ॥ध्रुपद॥
२१. ए च्यारा नै गणपति दिख्या, दीधी एकण साथ।
वहु मोछव मोटे मडाणे, सूपी गुलाव भणी गण-नाथ ॥
२२ माघ मास मे चूरू करवायो, मर्याद-मोछव सुखकार।
वखतगढ रा 'नाथू' नै गणपति, दियो चरण तरण भव वार ॥
२३. रीणी राजगढ थई पधार्‌या, गुलाव सती पिण संग।
'खंड्या'[7] रा श्रावक केई समज्या, गुरुधारण करी उमग ॥
२४. हरियाणा रा लोक सैकडा, आया धरी उमंग।
गणपति नी मुरजी थी पूरण, जाणो न हुवो किण ही प्रसग ॥

---

१ सरदारशहर मे आचार्यो का सर्वप्रथम पदार्पण था।
२. कान रूप प्याले।
३. प्रतिमा।
४. आगम, सूत्र, आज्ञा, धारणा, जीत।
५. आगम।
६. अत्यधिक।
७ गण से वहिर्भूत साधु (टालोकर)।

२५. पाछा चूरू रामगढ फतेपुर, थइ रतनगढ राजलदेस।
बीदासर के दिन विराजी, जावा रो मन सरधर देस विशेष।।
२६. ग्रीष्म ऋतु कर जाणो न हुवो, लाडणू दरस दे नाग।
रतनगढ में बहुजन अरजी करता, फुरमायो चूरू चोमास।।
२७. चालीसे चूरू चोमासो, सेव में सन उगणीस।
गुलाब प्रमुख श्रमणी इकचाली, करती तप जप अधिक जगीस।।
२८. मास खमणादिक तप बहु हुवो, घणो थयो धर्म उद्योत।
तिहा जंवड मोतीजी दिख्या लीधी, तिरण भव 'जल पोत'[1]।।
२६ सती गुलाब तणे थयो कारण, देह थी थयो तनु क्षीण!
विहार करी रामगढ़ आया, पिण ग्यान ध्यान तल्लीन।।
३०. बीकानेर ना देश विषै तदा, थो असराव राजा रै विरोध।
तिण कारण गणी रामगढ विराज्या, बावीस रात्रि प्रबोध।।
३१. विहार करी रतनगढ आया, चवदसी हाल मझार।
आप तो सिरदार सैहर पधार्या, करायो गुलाब नै लाडणूं विहार।।

ढाल १५

दोहा

१. उपगार मुदो अति जाण नै, विहार कर्‌यो गणीराज।
सिरदारसैहर पधारिया, सुधारण भविजन काज।।
२. हिव उपगार हुवो तिको, साभलजो नर-नार।
केइ भविजन समझिया, के लीधो संजम भार।।

*हो म्हारा श्रमण सिरोमण, तेज दिनमणि।
आपरा वचनामृत म्हांनै, वाहला लागै हो स्वांम।
विमल निमल ए भ्रम मिटावण, सुण ,संवेग जागै हो स्वांम।।ध्रुपदं।।

३. समोसरण जिनराज तणी पर, च्यार तीर्थ रा वृंद।
मघवा सघन झड देवै देसनां, सुण जन लहै आनंद।।

---

१. जहाज।
*लय—दीपचंद जी देही नै तप सूं ताइ रे गिरवा गुरु नै...

४. विवध समय रस पावता जन नै, झीणी झीणी रहिसा जोय।
मिथ्या मत खंडन विवध वचन सू, समजाया वहु लोय ॥
५ हेतु दृष्टात ने काव्य कोस ना, अलंकार केइ प्रकार।
'च्यार वुध'[1] कर सघन फरमाया, सुण 'गरक'[2] हुवा नर-नार ॥
६ शेषेकाल सिरदारसैहर मे, हुवो घणो उपगार।
नर-नारी गुरु धारणा कीधी, ए तो तिरण भवोदधि वार ॥
पुनवता हो गणपति, आपरा अतिसय म्हानै आछा लागै।
शरद-शशाक सो मुख मनोहर, देख्या सू आनद जागै ॥ध्रुपद॥
७ चूनीलाल नाहटे व्रत लीधो, तजी मात भ्रात ने तात।
डूगरगढ रा आनंदरामजी, आया सगाइ तज मात नै भ्रात ॥
पुन्यवंता हो गणपति, आपरी छटा छिव जिन जिम दरसै।
'रिजवार'[3] कलरुतरु जेम, रह्या सू मुक्ती वगसै ॥ध्रुपद॥
८ पोस शुक्ल पख वीज नै दिने, वहु मोछव मडाण।
गणीराज संजम पच्चखायो, आणदराम चूनीलाल नै जाण ॥
९. दिन इकवीस रह्या तिहा गणपति, आया 'गुलाव'[4] तणा समाचार।
कृपा करी वेग दर्शण दीजै, दरस दिया थयो हरख अपार ॥
१०. मेवाड देस थी आय नै काइ, मात पुत्र विहु साथ।
हरखचद ज्यारी मात नोजांजी, सजम दियो पूज निज हाथ ॥
११ मर्याद मोछव लाडणू हुवो, ठाणा थया दोय सै ने दस।
घणा गामा रा लोक दरसण नै आया, छटा देख करै वहु गणी रो जश।
१२. गुलाव तनु-कारण सू गणी नो, न हुवो मरुधर ने विहार।
निज नगरे गणी आविया, तिहा वरत्या जय-जयकार ॥
१३. सैहर पाली नो आयो लुकड, रावतमल सुजाण।
अति उमंगे सजम लीधो, ए मघवागणी महिराण ॥
१४. इण विध स्वामी वहु हितकामी, अनुक्रम करता विहार।
सुजाणगढ रत्नगढ थइ आया, सिरदारसैहर मझार ॥
१५. इकताली वरष सिरदारगढ मे, चोमासे मुनिवर वीस।
गुलाव सती गणी सेवा साधै, समणी सहु चालीस ॥

---

१. औत्पत्तिकी, वैनयिकी, कार्मिकी, पारिणामिकी।
२. हर्षविभोर।
३. रीझनेवाला।
४. गुलाबसती।

१६. सती गुलाब रे कारण मिटियो, पूर्वे हूंतो नेह।
मासखमणादि तप बहु हुवो, मघवा अतिसय वर अधिकेह॥
१७. चोमासा मे पच दिख्या थई, डूगरगढ की तीन॥
सिणगारा, पेमा, अणचां ए त्रिऊ, मघा सिरदारसैहर रा लीन॥
१८. जूहारांजी फलोधी नां लीधो, कातो में चरण धर प्रेम।
छठी दिख्या तिण हीज सैहर नी, सुजा मृग विद लियो कर नेम॥
१९. मोमासर गणी दरसण देई, आया राजलदेसर माय।
रतनगढ़ पडियारे छापर थइ, बीदासर पूज आय॥
२०. सुजांणगढ़ लाडणूं मोछव करी, जावा मरुधर देस मझार।
लघु भवान नैं संजम देइ कियो, माघ शुक्ल बारस नैं विहार॥
२१. पनरमी ढाले थली देस में, करी घणो उपगार।
मघवा 'देस साजण' नैं चालै, नारक विन्द विचार॥

ढाल १६

दोहा

१. हिव लाडणूं थी विहार करि, संग संत सती मंडाण।
अनुक्रमे धुड़ी ले खाटु थई, चांदारुण मेलो मडियो जांण॥
२ ठाकुर साह्मा आवीया, थया वहु गांमा ना लोक।
वाजोली डेगांणे डड्वे, गणी दरस देख खुसी ह्वै जिम 'कोक'[1]॥
३. पादू थइ आनंदपुर कियो, होली चोमास सुखकार।
ग्राम-ग्रांम मे गणपति, करता अति उपगार॥
४. बलुदे लोटोती पीपाड थई, आया महामिदर गणीराय।
भंडारी जी दर्शण किया, पछै पधारया जोधपुर मांय॥

*पीवे भव प्रांणी रे जांणी, श्रध्यां सू सिव सुख दाणी।
तिरैं भव सायर रे नाणी, मघवा नी अमृत वाणी।ध्रुपदं॥

५. जोधांणा में गणपति, कांइ करता अति उपगार।
व्याख्यान हेतु युक्ति करी, कांइ वाणी बरपत घन जल धार॥

---

१. चकवा।
*लय—कोरो काजलियो जल भरियो कांइ धरती सोस्यां जाय...

६. जयपुर रा हीरालाल जी, जुहरी जाति श्रीमाल।
सुतन चादमल तेहनी वहू, चंपाजी सुकुमाल॥
गणी गुणवता रे प्राणी, त्यारो सुजश सुणो चित आणी।
ज्यारा संत ने सतिया रे गुण खांणी, जे आराधै गुरु वाणी॥ध्रुपद
७. अठाइसे दिख्या तणा, भाव हुंता मन माहि।
पिण पीहरिया करडा घणा, ले गया जूजणू ताहि॥
८. कष्ट सही वारै वरस लगै, तो ही राख्या दृढ परिणाम।
हीमत कर चूरू आय नै, गणी दर्शण कर अभिराम॥
९. गणपति सग सेवा करत, आया जोधाणे मांहि।
भडारी पति वोलाय नै, आज्ञा लिखाई ताहि॥
सती गुणवती जी सूरी, रही कीरत जग मे पूरी।
१०. वेसाख सुध वारस दिने, सजम लियो मोटे मंडाण।
भेरूं वाग गणपति दियो, सूपी गुलाव भणी गण-भांण॥
११ जोधाणा थी विहार करी, पछिम थली अवलोय।
पंचभदरे वीस रात्रि रही, जिन मग दीपायो जोय॥
१२. वालोतरे इग्यारे दिन रही, जसोल वालोतरे होय।
वीठोडे कोरणे थई, आया समदडी अवलोय॥
१३. वयालीस को सत पणवीस सू, ठायो जोधाण चोमास।
गुलाव सती पैंतालीस सू, सारै सेव हुलास॥
१४. भडारी उदैचद भलो, सुखजी अति सुखदाय।
सजम स्वाम समापियो, मोछव थया सवाय॥
सुणो गुणवता रे वारू, मघवा सुजश उदारू।
१५. नागौर नी रुकमा कही, सुता मूलचद होय।
मकतुला रत्नगढ नां, कोचर जाति सु जोय॥
१६ चतुर दिख्या ए सोभती, हुई अधिक सुजाण।
अति भक्ता वहु काम मे, भडारी अगवाण॥
१७ सम्यक्त दृढ व्रत दृढ-श्रावक घणो, धर्म साहाज्य देण अगवाण।
वादरमल भंडारी वहु गणी, राज्यमान्य अति जाण॥
१८. वहु हठ कर चोमासो करावियो, छो कारण तसु तन माय।
भाद्रव मे कारण वध्यो, दिया दर्शण वहु गणीराय॥
१९. वैराग्य रूप वाणी सुणावता, सती गुलाव पिण दर्शण दीध।
अवर मुनि पण ज्ञान सुणावता, मिलियो जोग्य सखर सुप्रसीध॥

२०. तव केइ जन कहै भंडारीजी तणे, वलि लालाजी जांण।
या दोयां रे छैहलै अवसरे, मिल्यो जोग जिमा भक्तिवांन ।।
२१. ज्यांरे लारे पिण भक्ति मे तीखा, कृष्णमलजी आद।
सेव विवध गणी गुलाव नी, करता धर अहलाद ।।
२२ गुलाव सती रे गाठ रो, थली मे हुतो कारण ताय।
हीमत कर आया जांधाण मे, पछे कारण जादा थाय ।।
२३. वेदन में सेठी रही, पिण न वंछ्यो सावज उपचार।
गोरा डाकदर आदि घणां कह्यो, मेद काट साता करा इणवार ।।
२४. सारण वारण प्रतिपालना, करण घणी सावधान।
पूज्य भक्त आराधवा, डाही घणी गुणवान ।।
प्रवल पुन्यवंती रे श्रमणी, नमण गुणे कर खमणी।
ज्ञान ध्यान में रे रमणी, आ वचन रतन सजमणी।
दुक्कर अति करती रे करणी, जाणै संत सत्या रै 'जरणी'[1] ।।
तारक वहु नी रे तू वले तरणी, आ तो मुगत मुखा नै भरणी। ध्रुपद।।
२५. वखाण वाणी वाचण में गणि नै, साहाज्य हु तो श्रीकार।
कंठकला वा रूप पंडिताई, जन कहै अधिक गुण च्यार ।।
२६. दृढता राखी कायर नही, करती उणोदरी तपसार।
कदे इकासणो कदे उपवास ही, कदे लेती 'दाल नो वार'[2] ।।
२७. दस विध आराधन ढाल ते, आराधन करी सार।
आलोवण व्रत आरोपणां, करी नै ऊंचे सब्द उचार ।।
२८. गणपति दरसण दिरावता, हिव उतरचा चोमास।
महामिंदर विराजिया, आय तिहा सुणावत ज्ञान हुलास ।।
२९. पोस विध नवमी पचखियो, 'सागारी सथार'[3]।
सवा पोहर जाजेरो आवियो, सीज्यो संथारो चौविहार ।।
सती गुणवंती रे सूरी, गुलावकुवर गुण - पूरी।
गणपति भगनी रे दीपती, चिहुं तीर्थ मे पुन्यवती ।। ध्रुपद।।
३०. चिहुं लोगस काउसग करी, प्रभात किया सहु उपवास।
मांडी उछव वहु किया, ए लोकिक रीत विमास ।।

---

१. जननी।
२. दाल का पानी।
३. पौने छह प्रहर का सागारी अनशन आया।

३१. सोलमी ढाले आखियो, बयालीसा रो अवदात।
मघवा कृत गुलाव सुजश मे, विस्तार सहित वहु वात।।

ढाल १७

दोहा

१. जोधाणा थी विहार करि, 'रातेनाडे' रह्या रात।
झालामंड रोयट रही, आवै पाली सैहर विख्यात।।
२. तेरै रात विराजिया, पाली में तिहा पूज।
अन्यमती स्वमती आवता, करता ज्ञान चरचा री 'वूज'[1]।।
३ नवलाजी पाली तणा, सैणी घणी धीरजवान।
आचार्य सू प्रीत अति, जाणी अति वुधवान।।
४. कृपा सुभ दृष्ट गणपति करी, सहु सतिया री जाण।
सार सभार करो तुम्हे, नवला करचो हुकम प्रमाण।।
५. त्रिण रात रही खेरवे, हिंगोले करारी धामली आय।
विठोडे दूधोड माडे थइ, सेखावास सू आया भिक्षुनगर रै मांय।।
६. सिरियारी नीवली राणावास होय, गाधाणे चिरपटिये चेलावास।
ए तीन गाम एकण दिन फरसिया, आगदु आउवे आया हुलास।।
७. रामसिघजी रै गुढे, जोजावर महामोछव होय।
कालाजी जीताजी दिख्या लीवी, दादी पोती दोय।।
८ पूर्वोक्त ग्रामा मझे, होवै, वखाण वाणी हगाम।
साथे सैकडा जातरी, ससारी भक्त करत अभिराम।।
९ घाटे चढ आया पीपली, सग संत सती सुजाण।
गणपति गुण महिमानिला, मेवाड मे करै मडाण।।

*गणी गुण - वृदा जी, सुरत सुख - कंदा जी।
हो जी ए तो मघवा सम मघराज, जैन के इंदा जी।।
मेटत दुख फंदा जी।ध्रुपदं।।

१० देवगढ में आवता, जन साहमा आया ताय।
रावजी मुसद्दी मेलिया, पोते कारण जोग सू न आय।।

---

१. पृच्छा।
*लय—पायलवाली पदमणी...

वा०—रावजी साहिब रो, कुमर अल्प दिनां पैहली नम गया छा तिण सूं गाजा बाजा गावणो रंग उच्छरग बध हो, पिण रावजी कहवायो—भलांई गावो बजावो जीमावो, म्हारे तो हुणी सो होय गई। ए तो सत महता री गीत न्यारी है, इणो गाव।

११. *दरस देवा रावजी भणी, पधारता था गणीराय।
स्हामां मिंदर में मिल्या, वांण सुणी घणां हरपाय॥
१२. परधान कामेती बहु जणां, वले भाई - बंध अवलोय।
वांण सुणी हुलसाविया, कहै इसा न देख्या कोय॥
१३. विहार कर कोसीथल आविया, आमेट पधारया गणीराय।
साहमां हजांरा जन आविया, बाजार में मेला मंडाय॥
१४. आगरिये पधार दर्शण दिया, ठाकुर खुसी हूवा सुण वांण।
केलवे पधारत स्हामां आविया, ठाकुर कर मंडाण॥
गणी विचरंता जी, भविक तारंता जी।
हो जी ए तो दिसावन पुन्यवान।
धर्म ज्याज सेवंता जी, ग्यांन देवंताजी।ध्रुपद॥
१५. तिहा दोय दिख्या थई, पचभद्रे रा पूनमचंद।
पेपाजी केलवा तणां, मोछव में मेला मड्या जन वृंद॥
१६ तिहा थी लाहवे आविया, ठाकुर भाई साहमां आय।
रावले हाजरी सुणाविया, सुण हरप लह्या मन मांय॥
१७. मोखणदे देवरिये थई, आया गंगापुर गणीराय।
दूधडो घणा दिन रो उपदेस थी, गणी दियो राग-धेप मिटाय॥
१८ अति उपगार कर गणी, पोटलां रेलमगरे होय।
गाम गाम ना जातरी, हजांरा भेला होय॥
१९. कुरज कवारयै होय नै, काकडोली राजनगर आय।
नव चोक्या राज समुद ऊपरे, 'देवकुवर'[1] नै दिख्या दिराय॥
२० धोइदे नमाणै कोठारियै, पउधारया गणीनाथ।
गण - भूपण सिर सेहरा, समण सत्यां बहु साथ॥
२१. नाथ दूवारे पधारिया, दरसण करवा आया जन ताम।
थामले पन्नाणे चदेरे थई, आया उदियापुर अभिरांम॥

---

१ साध्वी देवकवर जी।

*लय—पायलवाली पदमणी...

२२. कवीराजजी री वाडी मझे, रह्या, शेपे काल छव रात।
परधान कुवर पनालाल जी, आया अवर मुसद्दी विख्यात।।
२३ कविराज सावलदांन जी, राज्य तणो वहुमान।
सासण धर्म सू प्रीत घणी, उन्नति चावै घणो बुधवांन।।
२४ कविराज मोलवीजी सग सू, सैहर मे पधारचा मोटे मंडाण।
केइ दरसन केइ प्रश्न पूछवा, उपगार हुवो अति जाण।।
२५ विहार करी 'वेदले' पधारिया, रावजी साहमा आया ताम।
उठे सू गोगूदे पधारिया, कुवरजी साहमा आया अभिरांम।।
२६. गणपति देसन सामली, आयो घणा जणा नै वैराग।
पनालाल मगन गोपालजी धना, हीरा आदि लागवा मुक्ति रै माग।।
२७. त्यां थी वडी छोटी रावल्या, पधारिया गणीराय।
तिहा थी पाछा आविया, रह्या पचीस रात्रि गणीराय।।
२८ पनजी त्याग कीया परणवा तणा, तव 'राज'[1] कहै इम वाय।
आप घर उठाय दिया घणा, गणी कह्यो जवरी सू म्है न कराय।।
२९. दिख्या वाला नै पका खराविया, कहै कठिण दिख्या रो काम।
काम आहार भार पाती तणो, ए सतरमी ढाल अभिराम।।

ढाल १८

दोहा

१. गोगूदा थी विहार करि, आया ग्राम रै वार।
तिहा गणीराज राज नै सुणावियो, घणा हरख्या तिणवार।।
२. 'तिपौहर्ये'[2] मदार आयड थई, आवै सैहर मझार।
हिवै हगाम हुवै तिको, आगे सुणो अधिकार।।

*सुण सुण रे गुणीजन वाचो, मघवा सुजश मही पर आछो।
मघवा सुजस वचनामृत आगे, पट रस पिण फीका लागै।।ध्रुपद।।

१ गोगुदा के राव राजा कहलाते थे।
२. तीन प्रहर तक सूर्य दिखाई देने मे 'तिपोहरिया' कहलाता है। उसका दूसरा नाम वांदर-वाडा है।
*लय—सुण सुण रे सीख सयांणा कांय हुवै से अधिक...

३. तयालीसे उदेपुर चोमासो, गणी संग चोवीस संत हुलासो।
श्रमणी अठवीस संग सुखवासो, थयो तप जप धर्म उजासो।
४. हिंदु मुसलमान गुण गावंता, गणी मुद्रा वांण मुणी हरपंता।
राज मुसद्दी घणां आवंता, गणी दरस देख देख हुलसंता॥
५. हुकमचंद रा टोला रो चोथमल्लो, ओ तो निपट हठाग्रही नही भलो।
वार वार कहै चरचा करायो, गणी कह्यो देस्या संत मेहलायो।
सुण सुण रे भविजन वारू, गणी मघवा अधिक दीदारू।
ज्यांरी वुध अकल अति जागै, नही पौहच सके गणी आगै॥
॥ध्रुपदं॥
६. कविराज आदि इम कहिवायो, इम चरचा किया कदाग्रह थायो।
थारै चरचा करण री कै ह्वै मन माह्यो, राज थी पंडित लेवां बोलायो॥
७. विचे पंडित राज आदमी वैठायो, तिण सू कदाग्रह नही थायो।
ए वात सुणी गणी फुरमायो, इम तो त्यार छां म्हारे अटके नाह्यो।
धिन धिन हो मघवा स्वांमी, ए तो अवसर नां जाण धांमी।
ज्यारा अतिसय सरस रस वाचा, जाणे रत्न चिंतामणि जाचा॥
॥ध्रुपद॥
८. चोथमल जी नै पूछ्या कहैवायो, यूं तो चरचा करूं हू नायो।
लोका जांण लियो विख्यातो, यारे एक कदाग्रह नी वातो॥
९. डालचंद मुनि नै सोय, खडी मिलियो मार्ग में जोय।
प्रश्न पूछ्या रो जाव न आयो, घणो कष्ट थयो मन मांह्यो॥
१०. लोक सुण वोल्या इम वायो, चेला पूछ्यां रो जाव न आयो।
तो गणी तक केम पहुंचायो, थोथी आस हुंती मन मायो।
सुण सुण रे भविगुण क्यारा, ए तो मघवा मुनिपति म्हारा।
ए तो सादृश जिन जिम राजै, ज्यांरा सुजस डंका मही वाजै॥
॥ध्रुपदं॥
११. 'राज मार्ग ताड'[1] हुई वाता, मघवा प्रवंध तणी हुई ख्याता।
थया दिग् जय मे जयवंता, ज्यारा अदीठ चक्र चलंता॥
१२. वावीस चौविहार करता, जेठाजी अघ मयल हरता।
कविराज जी साहिव नै सुणायो, मन देख इचरज घणो पायो॥
१३ देसणोक रा रूपाजी आयो, दिख्या लेवा चोमासा रे माह्यो।
विदोरी उछव वहु करंता, संसारी मेला अतही मंडता॥

१. राजवर्गीय व्यक्तियो तक।

१४. चोमासो हुवो घणे घणे हगांम, मृगविद एकम विहार कर ताम।
कविराजजी री वाडी मे आया, देसन विवध दीधी गणीराय॥
१५. वीज दिन दिख्या थइ मोटे मंडाण, गाजा वाजा नालेर वाटचा जाण।
पादरी डाकदर विहु आया, मोछव देख खुसी घणा थाया॥
१६ कविराज राणाजी रे पायो, गणपति री प्रसंस करायो।
आपणा मत मे सिन्यास मत कहायो, आ रीत देखिया सता माह्यो॥
१७ म्हारै पिण संत संगत यारो, आप तिण तिहा वेग पधारो।
राणाजी कहै जावा रो अटकै नाही, पनालाल प्रोहितजी कहै न अटकै क्याही॥
१८. आगे 'इण खावै'[1] जावा रो काम पडचो ताह्यो, जव दफतर वाला नै वोलायो।
दफतर देख नै अरज जव कीधी, खरतरगछ ना श्रीपूज आया प्रसिद्धी॥
१९. जग मिदर जग-निवास रै माह्यो, राणा संभूसिघ जी मिल्या ताह्यो।
संत कठे विराजै सुखदायो, और जागा तो दाय न आयो॥
२०. च्यार वज्या नै संता पे जायो, कविराज जी नै कहिवायो।
अेजंट कने वाग मे आयो, तिण वखत आणे नही पायो॥
२१. महिला पधार पोसाग खुलाणो, याद आयां कहै सता कनै जाणो।
आगाडी हलकारो दीधो भेजो, पोतै पण आया न करी जेजो॥

गीतक-छंद

२२. कविराज वाडी माहि राणा, फतेसिघ तिहा आविया।
वंदणा करी नै बेस गणी नी, वांण सुण सुख पाविया।
सघ पनालाल कविराज मनोरसिघ, दरस कर हुलसाविया।
आसरै रही वावीस मिंटज, वदणा कर महिल सिधाविया॥

२३ *सैहर मे आश्चर्य अधिक कहाणो, गणी अतिसय अधिक जणाणो।
ज़िन धर्म उद्योत थयो अति तीखो, यो खडी तो पड गयो फीको॥
२४ कविराज सावलदान ताह्यो, गणीराज सू अरज करायो।
आपरै महाराज सवायो, लारे लायक रो नाम फुरमायो॥
२५ मघवा भाखै निगै है म्हारी, अवसर आया कहवा भाव सारी।
थारी विचारणा अति भारी, हद सासण वृद्धि विचारी॥
२६ हिवडा तो वडेगाम जावा, दिख्या देइ पाछा जव आवा।
थारी अरज हिया माहि धारी, जव हरख्या है कवि अपारी॥

---

१ इस तरह।

***लय—सुण सुण रे सीख सयाणा !**

२७. इसा अवसर ना जांण स्वामी, जाणै प्रगटया है अंतरजामी।
ज्यांरा गुण मघन जो कहियै, तो ही सुर-गुर पार न लहियै॥
२८. कविराज आदि मुसद्दी वोहला, देखी अतिसय झाक झबोला।
ज्यांरो हिरदय होय गयो सोरो, इसड़ो मार्ग आज न ओगे॥
२९. धिन धिन मघवा गणी गुणधांमी, जश कीर्त हद जग पामी।
भिक्षु मग नै कनस चढायो, कह्या अठारमी ढाल रै मांह्यो॥

ढाल १९

दोहा

१. वाडी थकी विहार कर, आया गोगूदे गणीराय।
तिहा पनालाल सगाइ छोड़ने, वले धनाजी 'मगन'[1] री माय॥
२. चढती वय संजम लियो, छाड वहु परिवार।
'आघण'[2] सुध चवदस दिनें, गणी कनें तिरण संसार॥
३. पचीस रात रही विहार करि, वेदले आया स्वाम।
कानोड परवारो पधारणो, कविराज वेदलें आया ताम॥
४. उदैपुर पधारो गणी, अरज करी घणी सवाय।
वीणती मान गणपति तदा, आया कविराजजी वाड़ी माय॥
५. साज समै तिहां आविया, करवा दर्शण ताय।
मुहता पनालाल कविराजजी, प्रोहित मोलवीजी आदि घणा आय॥
६. गणपति वांण सुणावता, एक पंडित वोलण लागो वाय।
मोलवजी कह्यो विच वोलो मती, महाराज रा वचना री है चाय॥
७ ओर चरचा वात हुई घणी, तिहा थी विहार करचो गणीराय।
पहुचावण पनालालजी, कतीयक दूरे आय॥
८. त्या प्रश्न इम पूछियो, कोइ हिंसक जीव नैं दे मार।
तो मारण वाला नै स्यु हुवो, उत्तर देवो विचार॥
९. गणपति इम फुरमावियो, सिंघ जीव मारतो ताय।
पाप किण नै कहो लागतो, मुहताजी कहै लागै सिंघ नै आय॥
१०. सिंघ नै मारचो ते किण नै लागियो, कहै उण नैं लागो पाप।
उत्तर सुण हरप्या घणा, समज गया आपोआप॥

---

[1] मगनजी तथा मगनजी की माता धन्नाजी दोनों माता-पुत्र ने साथ में दीक्षा ली।
[2] अगहन—मृगसर महीना।

*कविराजा इम वीनवै, गत हुकम फुरमावो सोय ।।ध्रुपद।।

११. विहार करण त्यारी थया गणीराया रे, जन वृंद संघ बहु जोय।
स्वाम सुखदाया रे।

१२ मघवागणी विगसत थई, बहु गुण सुख नो सीर।
म्हारी निगै मे माणीयै कविराया, ज्ञनि गुणे गभीर।
अति सुखदाया रे ।।ध्रुपदं।।

१३ अवार इतरा साधा मझे, माणक सत महृत।
इम सुण नै कविराजियो, सिघ्र वच तहृत कहृत ।।

१४. भाया नै कवि इम कहै, देस दिसावर माय।
लिख जो वेग सताव सू, जिम खवर पहुचै जाय ।।

१५ अति अति स्तवना करी, प्रणमै गणपति पाय।
कहै धरा विभूपत आप थी, आया जिण दिश जाय ।।

१६. ए नृप ठाकुर वहु रीझिया, हांकम मुसद्दी बहु लोक।
रैत नै षट दर्शणी वली, गणी सुजश करै मिल थोक ।।

१७ उदैपुर उपगार करी घणो, कानोड दिशि करी विहार।
उटाले दो रात्रि रही करीं, करणपुर भीडर पधार ।।

१८. कानोड सात रात रही करी, रावजी रा दरसण परिणाम।
हुता पिण हुवा नही, उदैपुर रात्रि चढ गया ताम ।।

१९. त्या थी आकोले आविया, रेलमगरे दरस दिया ताम।
रगुजी कने सुदर सती, करायो सवा खटमासी पारणो ।।
सखर सुखदाया रे ।।

२० चोथमल चाल तिहा आवियो, साहमो उत्तरियो ताम।
मघवागणी दिसा पधारता, चरचा करणी है 'लवे वेफाम'[1] ।।

२१. चरचा चालता हुवै नही, करणी हुवै तो ठिकाणे कराय।
इतरा भाया साथे राखणा, किसा सूत्र मे कहिवाय ।।

२२ गणी तो दिसा पधारिया, लारे भगवानदास स्वामी चरचा कराय।
चरचा पूछी तेहनै आई नही, तब खंडी रीस मे आय ।।

२३ इतले टोला तणो श्रावक हुतो, दी भगवानदास रे थाप।
ओ पण लठ ले आवियो, जब लोका पकड्यो झट आप ।।

---

*लय—वाडी फुली अति भली मन भमरा रे...

१. अनर्गल बोलने लगे।

२४. लोकां मिल कदाग्रह मिटावियो, नही तो वधतो विरोध अपार।
लोकां मन में जाणियो, ओ खंडी करतो फिरे गाड ॥
२५. वात राज ताई विस्तरी, ते हुकम एम कहाय।
तेरपंथ्या रा पूज ह्वै तिहां, यांनै मूल म जांणो नांय ॥
२६. सिरसतादार लिखतां चतुराइ करी, दीसै लिखी इम वाय।
तेरेपथ्या रा पूज हुवै तठे, यांनै माहोमा जाणो नांय ॥
२७. पिण राजमार्गी जाणियो, ए कदाग्रही मूल।
लाज सर्म दीसै नहीं, नही सजम सू अनुकूल ॥
२८. रेलमगरे टोला री श्रद्धा रो हाकम हुंतो, तिण नै ओलंभो पूगो आय।
भगवानदास कुरज वाला कनै, हाकम करी घणी नरमाय।
२९. तिहा थी कुरज पधारिया, दियो दूधटो द्वेप मिटाय।
पोटला चरचा वात वहु भई, आया गंगापुर गणीराय ॥
३०. गंगापुर धर्मोद्यम करी, आमली वोरचापुर आय।
'वावला"[1] स्वांम पधारतां, ठाकुर सहमा आय हरखाय ॥
३१. वागोर वेमाली आविया, रावजी वाण सुणी हरपाय।
तिलोली थइ दोलतगढे, नवाजमो ले ठाकुर माहमो आय ॥
३२. साढा पटमासी रंभा करी, मधु संग दोलतगढ माय।
तिहां श्री पूज पधार नै, स्वहस्त पारणो कराय ॥
३३. रावले दरस दिरावता, लोका मिल अर्ज कराय।
मर्यादा मोछव इहा करो, मोछव करचो वीनती मनाय ॥
३४. घणा ग्राम ना जन भेला थया, तिहां थी आसींद पधारचा स्वांम।
रावजी तो तिहा हुंता नहीं, साहमा आया मुसद्दी कामदार ॥
३५. हाथी नगारा निसाण ल्याया सही, गणी कहै माहरे प्रयोजन नाहि।
तीन रात्रि रही दोलतगढ आविया, लाछुड़े पीथ्यास थइ पुर आय ॥
३६. तेरे रात्रि पुर सैहर में, रह्या धर्म ध्यांन रा थाट।
उगणीसमी ढाल मेवाड मे, रह्या घणा गहगाट ॥

ढाल २०

दोहा

१. भीलाडा नी वीणती, अति आया सू स्वांम।
विहार करी ने आविया, हरख्या लोक तमाम ॥

---

१. वावलास।

२. भीलाड़ा मे मेंसरी, आदि लोक घणा हरपाय।
जैंपुर कृष्णगढ तणा, दर्शण जात्री घणा कराय ।।
३. पुर लोका चोमासा तणी, वीनती घणी कराय।
गणपति तो मानी नही, आरजा ठाकुर साहमा आय ।।
४. त्या थी वड़े मूहे आविया, भारीमाल रे गाम।
त्या थी वनेड़े आविया, राजाजी दर्श किया अभिराम ।।
५. चरचा वारता पिण हुई, आपरा धर्म रा छा जाण।
संभूगढ रामपुरे थई नवे सैहर मे,' पधारचा जिम भाण ।।

*गणी गुण सागरू, प्रश्न जाव देवै श्रीकार ।।ध्रुपदं।।

६ मेवाड उपगार करी घणो, गणी आवता थली मझार।
अजमेर तिण राते रही, लाखण कोटरी मे जन आया अपार ।।
७. एक अन्यमती प्रश्न पूछिया, तिण नै जाव दियो गणीराज।
ते कहै जग में मत च्यार छै, त्यामे एक एक कहै छै आज ।।
८. केइ कहै जाणे इसामसी, खुदा, केइ कहै इश्वर भगवान ।
जैन पूछचा कहै केवली, इम न्यारी न्यारी कहै जान ।।
९. गणी कहै हिवड़ा नही केवली, तसु वचनां री परतीत।
रूडी आसता राखियै, ए सम्यक्त नी रीत ।।
१०. आप आपणी जाति नै, वखाणै सहु कोय।
पिण आर्य कुल धर्म नै, पाम्या दुर्गति खोय ।।
११. इम अनेक अनेक कही, जाव दिया गण इद।
अतिसय संपत्ति देख नै, द्वेषी थया अति मंद ।।
१२ गाम गाम ना जन वहु, वले सैहर तणा वहु थोक।
दर्शण करै वांणी सुणी, चित हरख लहै वहु लोक ।।
१३. तिहा टोला तणी केइ आर्य्या, कहै दिख्या देवो मुझ स्वाम।
गणी मीठो उत्तर दियो तदा, मुज मर्याद कठिन है ताम ।।
१४ तिहा थी कृष्णगढ आविया, दिवानजी आदि लोक साहमा वहु आय।
घणा जात्री दर्शण नै आविया, दिख्या लीधी हीरा गोगूदा थी आय ।।
१५ झलाय ठाकुर दीपतो, नाहरसिघ दर्श किया आय।
जैपुर सेहर पधारियै, गणी कहै अवसर हिव नाय ।।

प्रवल पुन्य पोरसा, मघवागणी नांमी रे।
ज्यारा ज्ञान चरण विहु निर्मला, पंचम गति कामी रे।।ध्रुपद।।

*लय—अभड भड रावणां इंदा सूं अडियो रे...

१६. हरनामे रूपनगर थई जी, वोरावड़ के दिन विराज।
वालिया गाम में दरसनां लागनां, डीडवाणे आया गणिराज॥
१७. त्यां थी लाडणूं विराजिया, पिण दस्त कारण मिटियो नाय।
वीस रात्रि रही सुजाणगढ आविया, ओषध किया पिण कारण न मिटाय॥
१८. आसाढ सुध में एक भायो तदा, सिरकारी ओषध ले तो जाण।
ते ओषद ल्याय दीधी स्वाम नें, दस्तां झट बंध हुई पिछाण॥
१६. सुजाणगढ लोका अरजी घणी करी, पिण मुरजी बीदासर कारण री ताय।
विहार असाढ़ सुध नवमी कियो, सुध पूनम विराज्या जाय॥
२०. चमालीसे चोमासो बीदासरे, संत बीस गणी सेवा माय।
नवलाजी आदि श्रमण्यां इकचालीस सूं, आराधै तप जप आण सवाय॥
२१. कालुजी कोठारी जाति छापर तणा, मात छोगाजी पिछांण।
बाल वय चरण गणी करे लियो, तीजा कानकंवर सगाई तज जांण॥
२२. आसोज सुध तीज नैं दिने, दीख्या दीधी है मोटे मंडाण।
तप जप धर्म उद्यम हुवो, विवध देता गणी व्याख्यान॥
२३. विहार कर्यो चोमासो उतर्या, चाड़वास छापर गढ़ सुजाण।
बीकानेर री बीनती आई घणी, इक वार लाडणूं पधार्या गणी गुणखांण॥
२४. पाछा सुजाणगढ पधारिया, पूनमचंद आदि री बीनती थाय।
मुरजी हुवां विहार करावियो, सांडवे गणी दरस दिराय॥
२५. त्यां थी विचरत देसणोक आविया, कितायक दिन तिहां विराज।
उदराम भीनासर होय नें, मडाण सूं सैहर पधारे महाराज॥
२६. हाथी नगारा निसाण साहमा ल्याविया, 'भेरूदानजी कविराजजी' पिण आय।
घणे हगाम परषद् थाट सूं, ए ढाल बीसमी पधार्या सैहर मांय।
गणी गुण सागरू, थांरी महिमा अधिक सवाय॥

ढाल २१

दोहा

१ 'नक्षत्र मास'[1] विराजिया, कियो घणो उपगार।
अन्यमती स्वमती प्रश्न पूछवा, मेला मंड्या अपार॥

---

१. लघु मास जो २७ दिनो का होता है।

२ मदजी राखेचा राज्यमान्य वहू, वड तपसी तप आताप।
पट पोसा निरतर मास मे, पडती तेह थी छाप ।।
३ तसु - नेडा भाई-बंध मे, राखेचा मंगलचंद।
गणपति पे दरसण किया, अवारूं मुक्ति जायकै न इम पूछंद ।।
४ गणी फुरमायो जावै नही, अवारू जन्म्यो इण खेत।
वलि कह्यो क्यू नही जाव ही, वलि कह्यो वल प्राक्रम हीणा एथ ।।
५. अवर प्रश्न केइ पूछिया, उत्तर सुणी हरषाय।
ओर पिण चरचा वहु हुई, ते सुणो भविक चित ल्याय ।।

*मघवा बुध सागरू गणपतिजी ।।ध्रुपदं।।

६. सुराणा पूनमचद तेहनी सुगणाजी, जायगा मे विराज्या गणीराय हो,
जसवंता।
वखाण उपाश्रय मे होवतो सुगणाजी, छटा देख भविक हुलसाय हो,
पुन्यवता ।।
७. सुगनजी सवेगी घणो वोलतो, हूं चरचा कर सू जाय,
धेष भरियो।
आयो उपाश्रय चलाय नै, वेसमज उलापतो वाय,
धेप भरचो, अघ वस वोलतो, बुधहण ।।
८. किण ही कह्यो वखाण मे वोलै घणो, सुण आया गणी ततकाल।
अतिसय देख ठडो पडचो. पूछचो मदर रे कांटा दिराल ।।
९. श्री जी फुरमायो इम कह्या नही, इसडो उपदेस पिण माहरो नाय।
इम सुण राजी हुवो घणो, फेर आऊगो तुम पाय ।।
१०. सवेगी जती पनरै आसरै, और लोक भेला घणा होय।
चरचा करण नै आविया, पूछचो आगम किता मानो जोय ।।
११ आगम तीन माना अछा, ते कहै तेहना किसा नाम।
सुत्तागम अत्थागम तदुभयागमे, वलि पूछचो सूत्र किता मानो ताम ।।
१२. गणपति कह्यो मिलता सूत्र माना सवे, ते कहै वतीस कै पैतालीस।
वतीस माना यासू मिलता अवर ही, और क्यू न मानो जगीस ।।
१३. आगला मन सू जोड घालिया, ते मानण में किम आय।
पाछला आगला वचन किसा अछै, ते कहै इम कठे कहाय ।।

*लय—आई छूं देवा ओलंभड़ो सासुजी ..

१४. गणी फुरमायो कह्यो महानसीत में, केइ पानां 'लिये'[1] खाध।
केइ पाना सू गाना चिपी सड्या, इम खंड विखंड तिण मे लाध ॥
१५. नेमीचदजी आदि आठ मतो करी, नवा पाठ घाल्या इण माय।
कठे पानो दो पांनां ओली अक्षर कठे, सुधार नै त्यार कराय ॥
१६ वले ते कह्यो दोष को आयो हुवै, तो मम दूपण मत देह।
महानसीत पाठ मे इम कह्यो, तो दूजो खांच आप में कुण लेह ॥
१७. जाव सुणी गणपति तणा, हरख्या घणा मन माय।
राजी होय ने ते गया, गणी अतिसय जाण्या अधिकाय ॥
१८. वावीस टोला री केइ आर्य्या, मिलता मार्ग मांय।
लुल लुल नै वंदणा करै, वले हरख हिया में भराय ॥
१९. श्रीपूज कवले गच्छ तणा, कहै उपाश्रय पगल्या कराय।
गणी पधारचा समय चरचा हुई, पंडिताइ देख हरख्यो मन माय ॥
२० वलि अतिसय धीरज देख नै, वलि सत सत्या नो हेज।
वले सामान पुस्तक तणो, वले देख्यो गण नो तेज ॥
२१. अन्यमती इम वहु वोलिया, एहवा मेला कदै इण सैहर।
मै तो नयणा नही देखिया, ए मघवा किया कर मैहर ॥
२२. भीमसिघ राजा नै स्वाम जी, दर्श किया हरपाय।
वाण सुणी नैं इम वदै, जीतमलजी जिसाइज थाय ॥
२३. हीरसीगजी ठाकुर साडवा तणा, लुल २ नै नमै गणीराज।
आज दिवस भलो दर्श पाविया, हूं ने सैहर पावन हुवो आज ॥
२४. मर्याद मोछव तिहा थयो, दर्श किया घणां गामा रा लोक।
जिनधर्म उद्योत हुवो घणो, वले देखण आवै लोका रा थोक ॥
२५. ठावा ठावा जन पुर तणां, वहुल पणा रे माय।
दर्श किया वहु गणी तणा, इसा धर्म - मूर्त्ति मुनिराय ॥
२६. गवाड सताइसू तणा, वले राजमार्गी माण।
जती संवेगी ढूढिया, आया मोछव देखण गणी भांण ॥
२७. मा संगे मुखांजी आविया, मोछव उपर जान।
गहणा आभूषण पहिरण ओढवा, वाला कुंवर बुधवांन ॥
२८. अरज करै सिरदारसैहर पधारियै, मुज दिख्या दीजै गणीराय।
इचरज सुण देखण नै आवता वहु, पूछ्यां उत्तर देता खुलासा ताय ॥

१ उदई

२९. ढाल इकवीसमी मे सही, करी घणो उपगार।
मघवा गणी जिनराज सा, विचरै धरा मझार।
वुधवता गणी चरण भेटियै सुखकार।।

ढाल २२

दोहा

१. वीकाणा थी विहार करी, अनुक्रम सीथल आय।
'महता'[1] भगत वहु करी, वले ज्ञान चरचा कर हरपाय।
२. डूगरगढ आडसर मुमासरे थई, आया सिरदारसैहर।
मुखाजी आदि ओर पे करी गणाधिप मैहर।।

*मघवागणी महिमानिला, तारै हो भवियण नर-नार कै।
तीन वाई दीख्या नै त्यारी थई, गणपति हाथे हो तिरवा भव-पार कै।।
।।ध्रुपदं।।

३ वखांण वाणी हुवै घणा, आवै हो सुणवा जन-वृंद कै।
वाणी सुणै दीदार वले देख नै, पांमै हो मन मे आनद कै।।
४. मुखाजी छोगाजी सेरा वली, मुखाजी कुवारी कन्या प्रमाण।
बेटी जुहारमलजी डागा तणी, मात परतावा श्रावका वहु जाण।।
५ छती रिध छिटकाय नै, दिख्या लीधी वहु हठ सू जाण।
प्रथम चैत सुध नवमी दिने, गणी हाथे वहु ओछव मडाण।।
६ गणी मुरजी पिण हुती घणी, अवारू पिण करती वहु सेव।
विनयवंत जे गणी तणो, इहभव परभव पामै सुख मेव।।
७. तिहा थी राजलदेसर आविया, गोराजी पति छोड़ व्रत लीध।
कच्छ भुज ना लोकां दरसण किया, प्रश्न पूछ्या रा उत्तर गणी दीध।।
८. वीदासर लाडणू सुजाणगढ विचर, छापर पडिहारे रत्नगढ आय।
लोका अरज चोमासा री करी घणी, सिरदारसैहर मे दियो फरमाय।।
९ पैतालीसे चोमासो सिरदारगढ, छवीस संता सू कीधो गणभाण।
नवलाजी आदि सती सेवा सझै, धर्म उद्यम हुवो अधिक सुजांण।।

---

*लय—संभव साहिव समरिये ध्याया हे जिन...

१. महता.—महत चेतनदासजी, रामपरतावजी चेला मातवर खेडापा वालां रे पिण वडे पग।

१०. चोमासो उतरियां चुरू पधारिया, केलवा थी जयचंदजी तसु नार।
केसरजी उदैपुर तणा, गणी दीधो त्रिऊं नें संजम भार॥
११. मर्याद महोछव रत्नगढ़ थयो, राजलदेसर वीदासर विचर गणीराय।
'मुज नै दिख्या देवा राजलदेसर भेजियो"[1], छयालीसे चोमासो लाडणू थाय॥
१२. तेवीस संता सू गणी कियो, नवलांजी आदि श्रमणी सुखदाय।
वखांण तप जप सीखण हुवो घणो, तिण सू खेत्र सुरंगो थाय॥
१३. सुजाणगढ़ वीदासर राजाणे थई, रतनगढ सिरदारगढ रही मास।
तिहां धर्म उद्योत हुवो घणो, कीधो मिथ्या मत नास॥
१४. विहार करी वहु झंड सू, साजनसर मे हुवो हुलास।
दुलरासर ग्राम मे 'अग्नचालो"[2] हुवां, आया हे मागासर तास॥
१५. परिश्रम अति गणी रे थयो, संत सतिया 'खेचल"[3] वहु पाय।
दूजे दिन विहार करी सहु, कोस आसरै ख्रिन्नेर्यु आय॥
१६. खेद मिटी गिरमी तणी, पिण 'नंदरामजी"[4] काल कियो तास।
पहिलां रत्नगढ चोमासे मन हुंतो, कोइ जोग सू फिर गयो मन विमास॥
१७. तिहां थी रत्नगढ आविया, चोमासा री कीधी घणी हठ।
वीदासर चोमासे रा भाव है, सवाई कसर काढवा रा भाव झठ॥
१८. सैतालीसे चोमासो वीदासरे, सत सेवा मे हो छावीस मन ल्याय।
श्रमणी गुणसठ हद सेवा सझै, मुज कारण जोग रहिणो हुवो गणी पाय॥
१९. गणी सुभ दृष्ट मुज सेवा हुई, पढावणो धरावणो कियो उपगार।
चोथमल जी गणी कर संजम लियो, श्रावण में हो पुत्र पोतादि तज धन सार॥
२०. चिरंजीलाल भियाणी तणो, भर्म-विध्वंसण वाच श्रद्धा आई ताम।
भाद्रवे गणी कर संजम लियो, जडावजी चाडवास रा पुत्र तजी लियो आम॥
२१. इम उपगार हुवो घणो, गणपति हो मघवा गणी भाण।
वावीसमी ढाले तीन चोमासा कह्या, सीतलता हो शशि तुल्य पिछांण॥

---

१. मघवागणी ने माणकगणी को तीजाजी (५६०) को दीक्षित करने के लिए राजलदेसर भेजा।
२. अग्नि का उत्पात।
३. खिन्नता।
४. मुनि नदरामजी (२२८)।

ढाल २३

दोहा

१. हिवे चोमासो उतरचां, सुजाणगढ लाडणू होय।
जयपुर पूज पधारवा, 'आगण'[1] पूनम विहार कियो जोय ॥
२. अनुक्रमे गणी विचरता, डीडवांणे कुचामण आय।
वाग मे श्रावगी लोक सैकडा, प्रश्न पूछण दरसण नै केताय ॥
३ चरचा वात हुई घणी, जाव सुणी घणा हरषाय।
कह्यो तकलीफ हुवै आपनै, पिण इसा जाव देणे वालो ओर न देखाय ॥
४. गोचरी मे भक्त करता घणी, ठाकुर केसरीसिंघजी ताय।
कुमर भमर नै वाग में भेजिया, अर्ज करी सैहर मे पधारो महाराय ॥
५ गणी कहै जागा किसी, रुघनाथ सेठ रो नोहरो तिहा आय।
ठाकुर आया 'ताम जाम' बैठ कै, ग्यान संभलायो वहु गणीराय ॥
६. वाण सुणे राजी हुवा, उठे पधार दर्श दिराय।
अर्ज करी परलोक सुधरै माहरो, एहवो वतावो उपाय ॥
७ गणी फरमायो परिणाम सुध राखवा, सझै सो त्याग वैराग।
चवदस नीलोती मदिरा सीकार तणा, त्याग कह्या धर राग ॥
८. कपडो धाम्यो पिण लीधो नही, सत्या गया रावला माय।
सुणायां अति राजी हुवा, वात वहु पिण इहा अल्प कहाय ॥
९. नावै जोवनेर थई, आया जयनगरे गणीराय।
ओषद कारण दस मास आसरै, रह्या घाट वाग सैहर रे माय ॥

*धिन धिन मघवा रे गणपति गुणनिला, ओ मेट्यो मिथ्या-अधारो जी।
ज्ञान दिवाकर जाहर जगत मे, आप तिरै पर तारो जी ॥ध्रुपदं॥

१०. अडचासे जयपुर छवीस सत सू, कियो मघवा एणी चोमासो जी।
नवलाजी आदि श्रमणी वावन थकी, सारै सेव हुलासोजी ॥
११. वखाण वाणी रे नित्य प्रति होवता, गणी वाणी अमृत धारो।
सुण सुण भविजन चात्रक हुलसता, गणी अतिसय तेज अपारो।
धिन धिन मघवा रे गणपति गुणनिला, तारचा भविजन वृंदो।
पंचम पाटे रे थाट किया घणा, विचरचा जेम जिनदो॥ध्रुपद॥

---

१. अगहन—मिगसर।
*लय—भिन्न भिन्न जांणै रे श्रावक जीव नै...

१२. दिख्या तीन थई सतियां तणी, आसांजी राजाणां ग ताह्यो।
नाथाजी सिरदारमैहर नां, पेपांजी बनेड़ै गूं लियो आयो ॥
१३. विहार करी नै रे बाग विराजिया, रेल घरे झूठवाड़े थइ जोवनेगे।
गुढै नावै थइ कुचामण आविया, मेन्ना मंडचा तिण सैहरो ॥
१४. आगला ठाकुर तो परभव गया, पछै सेरसिंघजी पाट बैठा ताह्यो।
कुमर भमर सहित आया बाग में, विवध वांण सुणी हरपायो ॥
१५. गंगाजी चांदकुवर जी रत्नगढ ना, गणी संगे कुचामण आयो।
गैहणा कपडा बाल्यवय देखनै जन, सैकडा देखी इचरज थायो ॥
१६. पहुंचावी ठाकुर तव पाछा वल्या, गणी आगे कीध विहारो।
दोलतपुरे डीडवांणे थई, लाडणू मास रही श्रीकारो ॥
१७. मर्याद महोछव सुजाणगढ़ करी, रही बीदासर राजलदेसो।
रत्नगढ़ सिणगारां भीम बेटा भणी, दी दिख्या मघवागणी सो ॥
१८. सूरजमल वैद बेटी तस वहू, 'गंगा चांदकुंवारी किन्या जाणो'[1]।
वहु परिवार सगाई तज लियो, गणपति कनै कर मंडाणो ॥
१९. विहार करी राजाणे रही, फिर चोमासो रत्नगढ थायो।
संत तीस श्रमण्यां गुणचालीस सूं, गणी काढी कसर सवायो ॥
२०. पहिलां वखांण हूं देतो सही, ऊपर आप भगोती वचायो।
राते रामचरित्र मे पधारता, उपगार चोमासा में वहु थायो ॥
२१. दो पंचरंगी संत सत्या में थई, अन्यमती स्वमती आई दरस करायो।
ढाल भली कही तेवीसमी, गणी महिमा देख हरपायो ॥

ढाल २४

दोहा

१. श्रावण विद छठ दिन सू, सरदी लाग खांसी गई होय।
अल्प तप तनु लखावता, जद त्रिफला लीधा जोय ॥
२. धासी कारण लोहसार लियो, फुन उलटी कारण होय।
सक्ति घटी पण मन वल घणो, चोमास उतरयां विहार कियो गणी जोय ॥

---

१. गगाजी माता और उनकी पुत्री चांदकुमारी।

*गणी गुण-सागरु हो ॥
महिमागर जग जोय, हृदय निमल अति होय।
ज्ञान विमल तन धोय, गणी गुण-सागरु हो ॥ध्रुपद॥

३ मृगसर विद एकम विहार गणी कर, रह्या वाहिर धर्मसाला माय।
प्रदेसी नो व्याख्यान फरमायो, वाण सुण भविक हुलसाय॥
४. पायली भोपालसर थई रे, आया राजलदेसर माय।
अर्ज करी वीदासर नजीक है, तिण सू आप पधारो गणीराय॥
५ चूरू सिरदारसैहर दरसण देणा, हिवडा सीयाला माहि।
पछै उठीनै जावणो, ते उनाला मे होवै नाहि॥
६ वमन कारण सक्ति घटी पिण, रत्नगढ थई चूरू आय।
वमन तप नो इधक कारण, गणी साहसीक वेदन माय॥
७ तिरखाराम हरियाणा तणो, दिख्या लेवा आयो गणी हाथ।
लोका अर्ज करी कम सक्ति तनु दुर्वल, कृपा करी विराजो गणीनाथ॥
८. दरस करवा आया संत सतिया, करता गणी गुण-ग्राम।
इसा आचार्य पचम आरा मे, पामणा दोहरा अभिराम॥
भवदधि तारण पोत, करता अति-उद्योत।
घालत भवि घट जोत, अधिक ओजागरु।
गणी गुण-सागरु हो।ध्रुपद॥

९. सात दिन इधक रह्या दिख्या वास्ते, दिख्या देई कियो विहार।
गाजसर में रह्या गणपति, सत सती वहु लार॥
१० इसे कारण मे पगले पगले, आया सिरदारगढ माय।
लोक हजारा साहमा जाया, साहासीक पणो वहु ताय॥
११ मर्याद मोछव नी ढाल जोडी, वखाण मे पिण आवणो ताय।
सत सत्या नी हगीगत सुणणी, हाजरी आलोवण आप ही दिराय॥
१२ सूरा तप जप स्वामीजी रे, वीरा कर्म विदार।
धीरा सुरगिर सारखा रे, हीरा हिरदे धार॥
१३ मुनिजन मेला मड रह्या 'रे, गणी छटा रही छिव छाय।
परम दयाल गोवाल स्वामी, महा - हीमत महाराय॥
गणी गुण सागरू हो॥
मणधारी मुनि जोय, धर्म-मूर्ति जग जोय।
इसो अवर नही कोय, दायक तरु सो मोय।
अधिक उजागरु॥ध्रुपद॥

---

*लय—वड वडा राय आय मिलिया सुभट सगला ..

१४. सातम मोच्छव वणी वार विराज्या, अर्थ फुरमावत गणी-राय।
ऊपर वखाण मे पधारता फुन, पूनम पटोछव ढाल वणाय॥
१५. पूनम पूठे सक्ति कम थई, सूरवीरता अधिक सवाय।
सीख सुमत गणी आपता वहु, धारयां सिव सुखपाय॥
१६ युवराज पदवी देण मन मे, कागद लिख्यो तिण माय।
मुरजी प्रमाण लिख नवलाजी नै, आप्यो ते आगे वार्ता मे कही सुणाय॥

वार्त्तिका—अरहन् सिद्ध साधूभ्यो नम । भिक्षु भारीमाल ऋपराय जयजश मघवा रे लारे ऋष माणकलालजी नै सर्व कांम गण रो भार भलायो। विनयवत आज्ञा अखंड आराधसी तो मुरजी वधसी, कुर्व वधसी, सर्व कार्य सिद्ध होसी। सवत् १९४९ रा फागुण सुध ४, ए कागद लिख नवलाजी नै दीधो।

१७. *गत दिवस सुणावणी तो पहलाई भलाई, आलोवण हाजरी पिण दीधी भलाय।
लोका मे वात प्रसिद्ध हुई, सुध तेरस नै विनां पाती आहार रो फुरमाय॥
१८ आराधन री ढाल सुणी नै, दे मिथ्या-दुकृत सार।
न्हाय धोय निसल थइ गणी, खमण-खांमण करै वारंवार॥
१९. केइ संता नै गाथा वगसीस कीधी, एक वरस ताइ सीवाई रंगाई वगसी ताय।
ओर पिण सीख सुमत अति देता, कारण मे दृढता सवाय॥
२०. चेत विद वीज चिऊं तीर्थ वृदे, मुज युवराज पदवी दीधी गणीराय।
आप अग नो चोलपटो पछेवडी, निज कर सू दीधी ओढाय॥
२१. भिक्षु भारीमाल मघवा आदि लिखत मे, निज कर सू मुज नाम लिखाय।
पछै लिखत मे संता कनें कराया, थाप्या दृढ मर्याद कराय॥
२२. चैत विद चोथ कै आया सतिया, 'पटडचा'[1] आदि ल्याया ते करी भेट।
निज कर सू देख हगीगत सुण नै, इसो सावचेत पणो रह्यो थेटा थेट॥
२३ गण का कार्य आछा करी गणाधिप, आगूच प्रवंध कराय।
मघवा गणपति वुद्धि निर्मल, ए चउवीसमीं ढाल कहाय॥

---

१. पन्नों की सुरक्षा के लिए नीचे रखने वाली, जो कपड़े व कागज की बनी हुई गत्ते की तरह होती है।

*लय—चड वड़ा राय आय

ढाल २५

दोहा

१. पंचम दिन दोफार मे, साता पूछी 'वाहली वाई ताम'।[1]
गणी फुरमायो भाव साता अछै, इसा दृढ घणा परिणाम ॥
२ रात वात विगत हुई घणी, लोका नैं फुरमावता ताहि।
खासी घणी इम फुरमावियो, इग्यारे वज्या आसरै माहि ॥
३ थोडी वार हुइ वोल्या नही, वार-वार हेला पाड्या स्वाम।
सरणां दिरावा लागा जद कह्यो, यू क्यू मुज खासी गइ ताम ॥
४ फुरमायो जगावो माणकलालजी भणी, सता जगावियो मुज ताय।
संता कह्यो ओर संता ने जगाय ल्यो, श्री जी फुरमायो सूता नै क्यू जगाय ॥
५. शब्द सुणी सत आविया, इता क्यू वेठा आय।
जाय सूवो इम फुरमावियो, संता अरज करी सेव महाराय ॥

*धिन-धिन मघवा स्वामी हो हित कामी सीख सुहामणी ॥ध्रुपदं॥

६. गणी स्वर्ग हुवा जिण राते हो हित वाते शिख्या कही घणी,
घणा हुंता संत भाया तिणवार।
गणपति गुण कर ताजा हो अति जाझा फुरमायो माणकलालजी,
संत सत्या नी लाज थांनै है लार ॥
७. किण री प्रकृत 'करडी'[2] 'वेडी'[3] 'भोली'[4] केहनी,
सगला नैं लीजो निभाय।
किण वगत नरम हो जाणो पलाणो सुध साधूपणो,
आप पालणो निरमल सवाय ॥
८. सता नैं फुरमायो गणिरायो आज्ञा माणकलाल री,
गुण नीपजसी आराध्या ताय।
सता अरज करी इम वलि आप जिसा माणकलाल जी,
आराधस्यां इधक सवाय ॥

---

१. वाहली वाई नाम की श्राविका।
२ तेज।
३. टेढी।
४. सरल।
*लय—अंबरीयो तो गाजै हो भटियाणी राणी वड चूवै...

९. धीर वीरपणो अति भारी सुखकारी वचन मिठाम नो,
माणकलाल जी राखज्यो सार।
सीखण अरु चितारण उद्यम इधको राखज्यो,
ज्यूं रहै निर्मल नाण उदार।।

१०. मूल में सुमति गुप्त महाव्रत में सावचेत घणा रहिजो सही,
फुरमायो भाया कुण-कुण बैठा है ताय।
संतां अरजी कीधी 'प्रसिद्धी श्रीचंद'[1] 'संपतरायजी'[2],
भेरूंदानजी नाहटा गिणाय।।

११. वाघजी मथेरण मालू ब्राह्मण रूपो जाट वलि ते सही,
भाया रे प्रीत भारी देखाय।
'सेठजी'[3] सुजाणगढ सू रामपुरचा चूनीलाल बैद केवलचंदजी,
रतनगढ रा 'चूनीलाल'[4] 'जशकरण'[5] वनणा कराय।।

१२. न्यारा-न्यारा 'जीकारा'[6] फुरमाया गणिराय उपयोग निरमलो,
सेठजी नै सेवा करता घणा दिन थाय।
सेवा चोखी साजी या रे प्रीत घणी सतगुरु थकी,
केइ चूरू रा भाया आया चलाय।।

१३. गुलावचंद रायचंद सुराणा कोठारी मंगुरामजी,
वंदणा कियां जिकारा दिराय।
ओर अनेक जन आया सुख पाया गणी दरस देख नै,
उण वखत री भक्त सज्झाय।।

१४. वलि गणी इम फुरमायो भिखु भारीमाल आदि आचार्य ना,
प्रवंध वाध्या घणां श्रीकार।
प्रवर्त्या इण रीते सुभ चिते कठेइ अटके नही,
सांधी सडका वाधी छै इकधार।।

---

१ श्रीचदजी गधैया।

२. सपतरामजी दुगड।

३. हणूतरामजी सेठिया।

४. चुनीलाल कोचर।

५ जशकरणजी बैद।

६ वदना स्वीकृति मे कहा जाने वाला जी (जे) शव्द।

१५. लकारादिक नी मर्यादा विगयादिक ओपध जे करै,
संत सत्या रा पानां लिखै ते कर लेणा वचाय।
सेषेकाल चोमासो विचरचा पूछा कर समाधान करणो सही,
हिव उपदेस सुणो गणी नो मुखनी वाय ।।

१६. कष्ट पड्या सेंठाई दृढताई इधकी राखणी,
वले सूत्र नी गाथा फुरमाता गणीराय।
'खुहं पिवास दु.स्सिज्जं' 'सगाम-सीसे इव नागराया' तणी,
पछे आप ही अर्थ फुरमाय ।।

१७ फेर गणी फुरमायो जिनकल्पी कष्ट उदेरी नै लिये,
सहिजे कष्ट आयां रहिणो सम परिणाम।
महावीर भगवंता जसवंता उदेर कष्ट लीधा कर्म काटवा,
घणो सेंठो रहिणो वेदन मे ताम ।।

१८ महावीर जिनराया सुखदाया मुक्ति पधार्‌या तिण रात मे,
वीस पौहर देसन दिवराय।
जिम मघवागणी पुन्यवता बुधवंता सीख सुमति उपदेस देई भलो,
जाणै थोडी वार मे स्वर्ग सिधावणो ताय ।।

१९. सता अरजी सीधी काइ कीधी खेचल हुइ घणी आपनै,
सुख फुरमावो गणीराय।
जद फुरमायो सुवावो जद पोढाया गणी तदा,
वलि अरज कीधी सीख कोइ फुरमाय ।।

२०. जद गणी फुरमायो ग्यान ध्यान उद्यम राखणो घणो,
देखा देख गुण वधावणा ताय।
इतले भेरूंदानजी दूगड वनणा कीधी सता अरज करी तदा,
'जी' भेरूदानजी स्वमुख कहाय ।।

२१. फुरमायो वेठा करो तव 'सता'[1] गणी नै वैठा कर्‌या,
वैठा करताई उवासी आई तिणवार।
सत तवे पचखायो सथारो चोविहारी जावजीव रो,
सरध लियो तो भरावो हुकार ।।

---

१ मघवागणी को विठाने व सुलाने का कार्य प्राय मुनि मगनलालजी करते थे। वे इस कार्य मे विशेष दक्ष थे।

२२. दोय वार मस्तक हलायो दिराया सरणा अरिहंत सिद्ध साधु धर्म ना,
तुज सरणो होज्यो मुज वारवार।
सरण गणी ने दिराया ते सरधाया दीसै गणपति,
मोतीजी स्वामी गाया नवी जोड़ सुणाई तिणवार॥

मोतीजी कृत

ढाल

२३. *'धी नो'[1] धणी सुरगिर सो धीर, अंतरजांमी स्वयंभू सो गंभीर।
होजी जयवर शिष्य तू जीवन जीको, राजैजी स्वामी त्रिभुवन जण टीको।
गजब गुण ग्यान गणाधिप जी को हो॥ध्रुपदं॥
२४. पंचम पट विरद जगताधिप को, धार्‌यो हो गणी तारण भव जीव को हो।
हो म्हारा स्वांमी जय वर के लाल, लागो छो म्हानै प्राण जिसा न्हाला॥
२५. अहो तुझ क्षाति क्षंति मुक्ति, आर्जव मृदु लाघवता उक्ति।
'विदु नामी पट मत में मानी'[2], 'वेता पट वाक्य समय जा'नी'॥
२६. 'कदर दार्नी'[4] कहा कहियै थारी, 'देवद्रुम'[5] जैसी रिजवारी।
पावत 'प्रारब्ध'[6] अनुसारी, हो मारा स्वांमी जय वर कै लाल॥

२७. +ओर संत पिण जांणी आ वांणी विध-विध वागरै,
अहो अनाथा रां नाथ।
आप कही जे वातां ए माता हिय मे दोहिली,
आ विवध समय रस आथ।
२८. धिन-धिन मघवा स्वामी विसरांमी छा भव जीव नै,
तारक विरद दयाल।
सखर गुणे कर धांमी ए कामी पंचम गति तणा,
मुनियां मडन माल।

---

*लय—हो म्हांरा स्वामी वोलो नीं वाहला सजन...

१. बुद्धि का।

२. पट् दर्शनों के अनुयायियो मे माननीय विद्वान्।

३. छ दर्शनो के सिद्धातों के विशेषज्ञ।

४. गुणग्राहिता।

५. कल्पवृक्ष।

६ भाग्य।

+लय—अंवरियो तो गाजै हो भटियाणी।

२६. जिम चर्म जिनंद चर्म काले 'वर साले'[1] वाणी वागरी,
जिम मघवा गणी आप।
इत्यादिक वहु वाणी आ कहाणी जुगोजुग होय रही,
सुजश रह्यो जग व्याप।

३०. आप जिसा इण आरी अवतारी होणा दोहिला,
मुनिया छत्र गणेश।
निर्मल नीत सुध किरिया गुण-दरिया सायर सारखा,
ज्ञाता दाता 'दरेस'[2]।

३१. माफ करण मा ताता विख्याता जग ए जाणता,
वले पाता ज्ञान 'पडूर'[3]।
गणी जश नी केइ वाता गाता याद आवो सदा,
ए 'जाता वना'[4] दे सूर।

३२. अनुज पूरणमल केरा ए देहरा सुर गिर सारखा,
सतिय गुलाव ना वीर।
जिन मग मे भला गाज्या, विराज्या गादी जय तणी,
अघ दल हणवा वीर।

३३. सुरगिर जेम सधीरा ए वीरा कर्म काटण थया,
वाधी वहु विध 'मेर'[5]।
ए ओपम जग मे आछी जे जाची देऊं आपनैं,
वुध अल्प थी न सँकु 'हेर'[6]।

३४. या सरस रसे कर आखी काइ भाखी सथारा तणी,
गणी साहमो रह्या संत भाल।
अंत काल ओ देखी विसेखी संता नै थयो,
विरह पचीसमी ढाल।

---

१. चातुर्मास मे।
२. दरवेस—महान् आत्मा।
३. निर्मल।
४. वन्नाजी के पुत्र मघवा।
५. मर्यादा।
६. खोज।

ढाल २६

दोहा

१. सम दम खम उपसम गुणे, त्राता दाता स्वांम।
ग्रहाता गुण माता जगे, राता ज्ञान रु ध्यान ।।

२. विमल निमल 'प्रज्ञा रली'[1], भली मिली मति मोड़।
धिन धिन धिन हो स्वांम जी, वंदै विहु कर जोड ।।

३. प्रवल प्रतापी अति सुजश, जग जश लीधो धाप।
भव भव मे आसान तुज, करि मुनियां सिर छाप ।।

४. उपगारी सिर सैहरो, देहरो जिन मग खेम।
इण भरते जाहर हुंतो, अहो विलावे केम ।।

५. पिण सूरपणो गणि देख नै, संत रहै समभाव।
'मणिधारी'[2] पुन्य पोरसा, अहो मुनिया ना राव ।।

*धिन धिन मघवा मुनिराया हो मन भाया भवियण जीव रे,
आप जिसा इण आर।
हुवा ने वले होसी हो जे जोसी उत्तम जीवड़ा,
'पिण हिवडा'[3] विरह अपार ।।ध्रुपदं।।

६. संता कर सारे वैठा गणी गुण पेठा सहु नै मने,
संत साहमो जोय रह्या तिणवार।
हू अने कालुजी मोतीजी स्वांमी भीम गोविंद जुहारजी स्वामी भला,
गणेसलाल छवील स्वामी सुखकार ।।

७ उदेरामजी इसरजी फोजमलजी नवल हजारी छजमल सिवकरणजी,
अभेराज पनालाल चादमल ताहि।
शिवराज आणंदमल चूनीलाल हरखचंद रावतमल मोड़जी,
लिखमीचद सेवगणी माहि ।।

---

१. प्रतिभा का वैभव।
२. शिरोमणि।
३ इस समय।
*लय—आज भलो दिन उगो जी सीमंदर स्वाम जी नै वांदै...

८. उदेचंद पनालाल मगनजी कालुजी 'डालचंदजी'[१] चोथमलजी,
चिरंजी भीम छगन जणाय।
नवलाजी जेठाजी मुखाजी सतिया एक सौ सात सेवा में भली,
उण निश सहु संत चालीस सेवा रे माय।।

९. देखत देखत प्रदेस खंच्या संत कहै स्वाम जाये सही,
देख्या दोहरी लागी अत्यत।
काल सू जोर कछु नांही गणिराई अपहर लियो तदा,
इम जाणी सम रहै संत।।

१० साधा तन वोसरायोजी दिल ल्यायो अरिहत देव नैं,
फुन गणधर आदि गिणाय।
इम जाणी समरस पीधो जी रस लीधो वर वैराग नो,
चिहु लोगस्स काउसग ठाय।।

धिन मघवा मणिधारी सुधारी सारी आपरी,
कुमीय न राखी काय।
मिथ्यामत कियो 'रंको'[२] जी ओ डंको दीधो 'जेत'[३] रो,
ओ जश तंबू धरा रह्यो छाय।।ध्रुपदं।।

११. छठ दिवस उपवासो सुविमासो संत सती किया,
गुरु चरण में लीन सवाय।
गणपति गुण ना दरिया भरिया ज्ञान अम्बू करी,
याद आया हियो हुलसाय।।

१२ मुज सू उपगार अति कीधो प्रसिद्धो ते कठा तक कहूं,
गणी ज्ञान चरण दातार।
आछा आछा कारज भला गुरुदेव प्रसाद थी,
सेवा साज्या गुण आवै अपार।।

१३. अंत समय गणी देखी पेखी मन मे आई घणी,
आयु तीर्थंकरादिक नो न रहाय।
लौकिक ओछव वहु कीधो जश लीधो यो एह लोक रो,
वाकवी रूप कहाय।।

---

१. मुनि डायमलजी (पहले डालचदजी नाम था पर डालगणी के पदासीन होने पर डायमलजी रख दिया गया)।

२. सुस्त।

३. विजय।

१४. दिन उगां जन वहु आई वणाई मंडी अति नवी,
विराजण विच सिघासण कराय ।
फिरणी तिवारा वारे हो साइवान खंच्या तिहां,
थंभा जरी साटणकनारचां सू मंढाय ।।
१५. 'मुगज'[1] इकावन सोना रूपा रा कलस तूरा सहीत एकाणवै,
चोतरफ किरण वादला ताय ।
इकचाली गगा जमनी गुवज साटण कनारी सू मंड्या,
सवा सौ धजा पताका लहकाय ।।
१६. पूठे चंद्रवो जरी बूटां को सिघासण रै साचा मोती लड लटकती,
जांणै देव विमाण सो देखाय ।
जरी मुखमुल तणां तकिया गादी तिण उपर महाराज सरीर वैसावियो,
स्नान विलेपन अंतर फुलेल लगाय ।।
१७. रेसमी वस्त्र सपेत जरी की चदर जरी दुसालो ओढ़ावियो,
मुखपती जड़ाउ सोना मे वंधाय ।
साचा मोत्या नो तिलकज नवकरवाली मोत्या री हाथ मे,
नेत्र खुल्या निलाड घणो भलकाय ।।
१८. श्रीजी सरीर विमाण वैसाणी चिहुं पासे चामर वीजता,
आगे नृत्य डंडोल करता जाण ।
हजारा जन वृंद आगे लवाजमो आयो राज सू,
वाजा छडी कोतल नगांरा निसाण ।।
१९. रसालदार थाणादार सिपाई चिराका घणां मंडाण सू,
सिरे वाजार दोफांरा करता उछाल ।
टिकड़ी सोना री रुपइया हजांरा जय जय शब्द जन मुख वोलता,
अन्यमति स्वमति वोलता वांण रसाल ।।
२०. ए तो जीवत शास्वत अमर दरस देख्यांई होवै भलो,
अनुक्रम सिवरामजी आचलिया री छतरया आय ।
विमाण सहित सरीर संस्कारचो केसर किस्तूरी अगर तगर कपूर घृत खोपरा,
'आसरै नव सहस नाणो'[2] लगाय ।।

---

१. गुम्बज—गोलाकार छत की तरह ।

२. लगभग नौ हजार रुपये ।

२१. लोकिक ओछव वहु करायो दरसायो देखी जिसी वारता,
नही धर्म पुन्य तिण माहि।
चर्म कल्याण प्रभु नो सूत्रे दाख्यो तिम भाख्यो गणी नो म्है सही,
ओर प्रयोजन नाहि॥

२२. पिण मघवा गणी सारो गुणक्यारो सार सभाल मे,
गण प्रतिपाल गोवाल।
आचार दृष्टि अति तीखीजी मति नीकी अति महाराज नी,
दिल नो दरियो दयाल॥

२३. शंख अश्व हरि जाणो पिछाणो गज भट सिंह गिरी,
कोठार तरु रवि चंद।
द्रह समंद जल भरियो 'निरयो'[1] नीर गगा तणो,
हद वृपभ अने नर-इंद॥

२४. ए षट दस ओपम वाची काइ जाची कही सिद्धत मे,
तिम साची गणपति सोय।
मोह किलो वस कीधो काइ लीधो रस समय तणो,
अति हुसियारी होय॥

२५, आचार 'सूत्र' वपु, वचना काइ रचना सूत्र वाचनी,
मति विचारणा जोय।
प्रयोग संपदा भारी वले सारी संग्रह करण मे,
वले सारण वारण सोय॥

२६. एह संपदा सोहै जन जोवै सादृश जिन तणो,
सही मार्ग ए आज।
मघवा गजेन्द्र सा राजा 'दिवाजा'[2] करता जगत मे,
भविजन रक्षक लाज॥

२७ ए छवीसमी ढालो रसालो चर्म कल्याण नी,
मतिवंता गणिराय।
सो पिण स्वर्ग सिधाया जश छाया रही संसार मे,
भवि रह्या सुख पाय॥

---

१. नीरज (निर्मल)।
२. पडाव।

ढाल २७

दोहा

१. दिख्या लेइ गणी किया सहु, चोमासा इकचालीस।
गुरुकुल वासे तीस वरस रह्या, इग्यारा वर्ष स्वइछा विचरया गणीस ।।
२. जवर संघयण सु स्वाम नो, जांणै समचउरंस संठाण उदार।
आचार्य नी संपदा, सोभ घणी श्रीकार ।।
३. किण देसे विचरिया, किहां किहा किध चोमास।
संकलना खेत्रा तणी, वर्णवूं, गुण जश-वास ।।

*मुणियै मघवा गणि चोमास ।।ध्रुपदं।।

४. नवकै अठाइसे सैतीसे, अडतीसे जयनगरे किया जय संग।
अड़तालीसै पाट विराज नै, कीधो धरी उमंग ।।
५. श्रीजी दुवारे दसको चोमासो, इग्यारे रतलाम कीध।
वारे उदेपुर वली तयालीसे, पाली तेरे वावीस प्रसीध ।।
६. चवदे सतरे तेवीसे छवीसे, गुणतीसे फुन तीसे पेतीसे छतीस।
गुणचाली चमाली सैताली, वीदासर इग्यार चोमास जगीस ।।
७. सप्त चोमासा किया लाडणू, पनरे ठारे सतावीस।
वतीसे तेतीसे चोतीसे, छयालीसे सू खेत्र सुरग जगीस ।।
८. सुजाणगढ़ मे च्यार चोमासा, सोले उगणीसे चउवीसे इकतीस।
चूरू वीसे चालीसे कीधो, जोधपुर इकवीसे पचीसे वैयालीस ।।
९. सिरदारसैहर मे दोय चोमासा, इकतालीसे पैंतालीस।
चर्म चोमासो रत्नगढ गुणचासे, थयो धर्म उद्योत जगीस ।।
१०. वारै सैहर में इकतालीस चोमासा, अड़तीसा तांई करचा जय संग।
इग्यार चोमास स्व इछा कीधा, पंच देसा में विचर उमंग ।।
११. देस प्रदेस विचर गणाधिप, तार्‌या जिम जिनराज।
जिन मग ने वर सोभ चढ़ाई, सार्‌या भविक ना काज ।।
१२. ज्ञान ध्यान उद्यम अति कीधो, लीधो लाभ अपार।
समय वतीस वाच्या वहु वेला, थिर वुध घणी श्रीकार ।।
१३. चद्र प्रभा जिनेद्र व्याकरण, भरी माघ किरात।
'विदग्ध मुखमडन' नैपध दुर्घट, काव्य केइ वाच्या सुजात।

भजलै मघवा परम दयाल ।।ध्रुपदं।।

---

*लय—सीता आवै रे धर राग...

१४. ज्ञान-सूर्योदय नाटक सखरो, भरत वाहुवली गेय।
महाकाव्य ते सुगम पणे करी, व्याख्यान वहु देय ॥
१५. न्यायदीपिका परीक्षा मुखमंडन, समाधि तत्र पिछाण।
योगशास्त्र नैं चंपू नाटक, ग्रंथा ना केइ जांण ॥
१६. छंद रत्नावली स्तोत्र केई जात रा, वले पइन्ना ताम।
इत्यादिक वहु ग्रंथ तणां म्है, लेऊं कितायक नाम ॥
१७. टीका सस्कृत प्राकृत फुन, ज्यारा ग्रंथ अनेक उदार।
केइ पूरण केइ 'वाकवी-रूपज',[1] धारण अन्यमति ग्रंथ अपार ॥
१८. उत्तराध्येन रु दशवैकालिक, आवश्यक धुर आचारंग।
वेदकल्प ओर सूत्र नी गाथा, किया कंठाग्रे धरी उमंग ॥
१९. पूर्वार्द्ध सारस्वत नो, उत्तरार्द्ध चद्रिका नो जांण।
पद्य हजांरा लिखणो कीधो, गणी अक्षर श्रेष्ठ पिछांण ॥
२० झीणी-झीणी रहस्य समय नी, वलें भागा विवध पिछांण।
कठिन कठिन थल अति ही ऊंडा, ते जाण्या गणी भाण ॥
२१. धारणा शक्ति अति ही जवरी, कंठे पिण वहु होय।
प्रश्न पूछ्या जाव तुरत ही, मधुर वचन दे सोय ॥
२२. रामचरित्र ने जंबूकुमर, सालभद्र प्रदेसी जांण।
अमरकुमर सुरसुदर नेमचरित्र, कठाग्र किया आदि वखाण ॥
२३. जयसुजस ने गुलावसुजश, 'चउढालां'[2] त्रिहु जाण।
'वना' दलीचद मयाचंद स्वामी ना, ढाला गुलाव सती नी पिछाण ॥
२४. तेरस सातम पूनम मोछव री, ढाला अनेक पिछाण।
संत सत्या तपस्या चोमासा री, वणाया प्रश्न उत्तर केइ जाण ॥
२५. सस्कृत अरु श्लोक भाषा ना, जोड्या केइ गणीराज।
फुटकर कलस मानतुग सोधी, पठन पाठन दियो केइ साज ॥
२६. अष्ट संपदा सहित गणाधिप, गुणषट तीस उदार।
वहुश्रुति नी षोडस ओपम, 'फावत'[3] गणी श्रीकार ॥
२७. गणी गुण-धारक भव-दधि तारक, कारक वर मर्याद।
दायक शिवसुख लायक लज्जा, सहायक ग्यान ध्यान अहलाद ॥

---

१. जानकारी रूप मे।
२. चौढालिया—जिसकी चार ढालें होती है।
३. शोभित होती है।

२८. सूरवीर धीर गिरवर सो, सायर जेम गंभीर।
'हीर'[1] 'कीर'[2] सम उज्जवल नाणयुग, परिसह् जीतण गणि वीर ॥

२९. ज्ञान सू दाता ध्यांन सू ध्याता, त्राता पट काया व्रत-पाल।
जिन वच राता ज्ञान सू पाता, माता सासण करण संभाल ॥

३० सोम वदन सुंदर हृद सोहै, मोहै भविक मराल।
वाणी इमरत घन जिम गूंजै, इर्य्या धुन हस्ती सम चाल ॥

३१. मिथ्या तिमर हरण गणी भानू, मानू जिम महावीर।
'शरद शशाक समो'[3] मुख शीतल, प्राक्रम धर 'कंठीर'[4] ॥

३२. गण वृध करण सु सारण वारण, खलता खोड मिटाय।
सीख सुमत दे निर्मल कीयो, वारू शासण सोभ चढ़ाय ॥

३३. परम पूज ना अथग अनंत गुण, 'रवि रसना'[5] केम कहाय।
गणि गुण गाता गिनाता अंगे कह्यु, तीर्थंकर गोत बंधाय ॥

३४. मुज सू उपगार कियो अति मोटो, ते कह्यो कठा लग जाय।
ग्यांन सु आपी दृढ़ पद थापी, वलि विवध कुरव वधाय ॥

३५. गणी गुण मूर्त्ति याद आयां ही, हृदय कमल विकसाय।
पूरण भाग्य उदय थी पांम्या, मघवा जिसा गणीराय ॥

३६. संत छतीस थया गणी वारे, समणी तंयासी जांण।
स्वहस्त वावीस नें पैताली, तार्‌या गणि गुण भांण ॥

३७. नमो-नमो श्री मघव गणाधिप, तारण तिरण जिहाज।
संत एकोतर सत्यां शत त्राणुं, म्हेली सार्‌या आतम काज ॥

३८. इकतालीस वर्ष पूणा च्यार मासज, आराध्यो चरण उदार।
सर्व आउ तेपन वर्ष मठेरो, गणी पाल्यो पुन्य प्रकार ॥

३९. गणी मघवा गुण नो ग्रंथ रच्यो ए, कितियक सुणी लिखाई वात।
केइ निजरा देख्या गणी नां गुण, ते प्रगट किया विख्यात ॥

४०. अधिको ओछो आयो ह्वै को, विरुध वचन आयो ह्वै कोय।
कहता असत्य लागो ह्वै कोई, तो 'मिच्छामी दुकड़ं' मोय ॥

---

१. हीरा।
२. सफेद रग का सुआ।
३. शरद् ऋतु के चन्द्रमा के समान।
४. सिंह।
५. एक जीभ।

३ ५ ६ १

४१. संध्या बाण ग्रह शशी संवत्, कार्तिक शुक्ल गुरुवार।
अष्टमी दिन वर जोड रची ए, बीदासर सैहर मझार॥

४२. श्रमण पनरै श्रमणी तीसज, तप जप इधक जगीस।
वखाण वाणी वाचण विचारण, सारण वारण निश दीस॥

४३. ढाल भली ए सतावीसमी, भिक्षु भारीमाल ऋषिराय।
जय मघवा प्रसाद कियो जश, मघवा पाटोधर धरि उच्छाह॥

गीतक-छंद

४४. इम करी रचना मघव गुण नी, अधिक मन उलट धरी।
घणां दिवस मुज उच्छाह हुंतो, आज ते सफली करी॥
सुखदयण रयण गणी वयण साचा, धारिया शिव पाव ही।
गणीराज सरण सु विघ्न हरणज, रट्या मंगल माल ही॥